卐 दो शब्द 卐

सिद्धचक्र विधान का समाज मे काफी प्रचलन है। गत २०-२५ वर्षों मे इसका प्रचार काफी बढा है। फलत विभिन्न प्रकाशको द्वारा अनेक बार यह पूजा छप चुकी है। पर हर सस्करण मे अशुद्धिया रह ही गई हैं। एक बार अशुद्ध छपजाने पर उसका सशोधन नहीं होपाता। हम इस प्रयत्न मे थे कि इसका किसी शुद्ध प्रतिसे मिलान करके छापे तो ठीक हो। नकुड निवासी श्रीमान् सेठ नरेशचन्द्रजी साहब जैन रईस सर्राफ से इस सम्वन्ध मे पत्र व्यवहार हुआ। और हम उनके अत्यन्त आभारी हैं कि उनने कवि सतलालजी की स्व-हस्त लिखित प्रति से मिलान करके एक मुद्रित प्रति हमारे पास भेजी जिसके अनुसार हम इस पुस्तक मे सशोधन कर पाये हैं। हमारे यहा से प्रकाशित पूर्व सस्करण के समाप्त होजाने से पुस्तक पुन छपाने की जल्दी थी, अत नकुड से सशोधित प्रति आने से पूर्व पुस्तक प्रेस मे छपने देदी गई। १२८ पृष्ठ छप जाने के वाद हमे वह प्रति मिली—अत शुद्धि पत्र देना पडा है—पाठक उससे शुद्ध करने के बाद ही पूजन पढें—ऐसा विनम्र निवेदन है।

इस भाषा सिद्धचक्र विधान के रचयिता कवि सन्तलालजी हैं जो सहारनपुर के कस्बा नकुड के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम श्री सज्जनकुमारजी था। ये सहारनपुर के

प्रतिष्ठित घराने मे लाला शीलचन्दजी के वशज थे । कविवर का जन्म सन् १८३४ मे हुआ । कवि के सस्कार प्रारभ से ही धार्मिक थे जो माता पिता से विरासत मे मिले थे । परिवार के सब लोग धर्मात्मा थे । आपने रुडकी कालेज मे अध्ययन किया । साहित्य से आपको प्रेम था । सिद्धचक्र की हिन्दी पूजा न होनेसे आपने इसका विचार किया और प्रस्तुत रचना कर डाली । इस पूजन मे जगह जगह जो जैन सिद्धान्त सम्बन्धी विवरण आया है—उमसे आपके सैद्धान्तिक ज्ञान का भली प्रकार परिचय मिलता है । आप विद्वान् थे, कवि थे और भक्त थे । जैन धर्म पर किसी प्रकार का आघात आप सहन नही करते थे । आर्य समाज के साथ कई बार आपके शास्त्रार्थ हुए—जिसमे आप विजयी रहे । आप स्वतत्र व्यवमायी थे, आपने नौकरी नही की । आप सुधारवादी विचारो के थे—समाज मे व्याप्त कई रूढियो और कुरीतियो के निवारण मे आप और आपके परिवार ने काफी योगदान किया है । जैन विवाहविधि के अनुसार विवाह कराने की परिपाटी उस प्रान्त मे आपने चलाई । मिथ्यात्व वर्धक कई रूढियो को आपने मिटाया । आप अधिक नही जिये अन्यथा और कई कार्य आप कर जाते । ५२ वर्ष की आयु मे जून सन् १८८६ मे आपका स्वर्गवास हो गया । आपने सिद्ध-चक्र मडल विधान के अतिरिक्त भी कुछ पूजाये एव अनेक भजन लिखे हैं । भजनो का सग्रह नकुड मे श्री नरेशचन्दजी साहव रईस के पास है—जिसे प्रकाशित करना चाहिए ।

हमे यह सक्षिप्त परिचय श्री नरेशचन्दजी द्वारा ही प्राप्त हुआ है । हम उनके अत्यन्त

सिद्ध॰ वि॰ ४

आभारी है। कवि की अन्य रचनाओ एवं परिचय के बारे मे और सामग्री एकत्र की जाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, ताकि उनका पूरा जीवन परिचय और उनकी साहित्य सेवाओ का मूल्याकन होसके। अन्त मे एक बार पुन श्री नरेशचन्दजी साहब को धन्यवाद अर्पण है कि उनने एक सशोधित प्रति और यह परिचय भेजा।

पाठको से भी निवेदन है कि इस प्रकार पूर्ण ध्यान रखते हुए भी अनेक अशुद्धिया इस पुस्तक मे छप गई होगी—कृपया उन्हे सूचित करे। ताकि आगामी सस्करण शुद्ध छप सके। प्रारभिक पृष्ठो मे सशोधन करने मे पूजको को कष्ट होगा—उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

दीपावली स० २०३०
वी० नि० २५००

प्रकाशक

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	११	सरेफ हकार	सुरेफ सुविंदु हकार
५	१	ह्रीकार	अन्त ह्री
७	१३	इस शुभ	इम धरि
८	४	दर्पं	दर्वं
"	१२	कर्मनशाय युग प्रकृति	क्रमावर्तनशाय युगपत
"	१४	अछेद	अदूज
९	१	ज्ञेय	गेह
१०	१	इन्द्रिय नाही	इन्द्रिय ताही
१०	१३	(जाप्य मंत्र यहा न पढकर जयमाला के वाद मे करे)	
१२	५	दुखकरण	उपकरण
"	"	वाध	व्याध
"	१४	विकारहुतं	पर का विकार
१३	५	सरेफ विंदु हकार	सुरेफ सुविंदु हकार
१३		(हासियापर प्रथम पूजा आदि कई जगह गलत छप गई हैं, पूजानुसार ठीक करले)	
१५	१२	को कहा	हो कहाँ
	१३	उधार	उधार
१७	१	करि	वर
१७	५	अछेद	अदूज
	६	चाहूँ, ज्ञेय	चहुँ गुण गेह
१९	२	अविकार	विकार
२०	९	अधिकार्थं	अधिकाय
	१४	(जाप्य यहा के वजाय जयमाला के अन्त मे देना चाहिए)	
२२	११	सरेफ विन्दु हकार	सुरेफ सुविंदु हकार
२३	१०	प्रभु पूजो	तुम पूजो (टेर मे ठीक करे)
२६	१२	अछेद	अदूज
"	१३	चाहूँ, ज्ञेय	चहुँ गुण गेह
३३	७	काम	पाप
	९	(जयमाला यही से चालू करे)	
	१२	(यहा अर्घ नही चढाना तथा जाप्यमत्र जय माला के वाद पढन)	
	८	दहन कौ	दहन दौ
३५	५	विंदु हकार	सुविंदु हकार
३७	५	भूखा	भूखा
३८	८	(पृष्ठ ५१ मे छपा 'निर्मल सलिल ...' आदि अर्घं यहा बोलें)	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२	५	जतु जियही	ततु जिय
४४	१४	सुख धामको	सुर बामको
४५	१४	तन	मन
४६	१०	करती	करत ही
५१	१०	(निर्मल सलिल पृष्ठ ३८ मे पढ़ें)	
५२	३	चाहैं, ज्ञेय	चहुँ गुण गेह
,,	४	(यहा जाप्य न देकर जयमाला के वाद देवें)	
,,	१०	निरसता	सरसता
	१२	जिन	निज
५४	८	बिंदु हकार	सुबिंदु हकार
	११	नत्र	मत्र
	१२	नाशको	नाग को
५५	११	सुमरण	सुरगण
५६	७	विलास	विशाल
५७	२	करी	सुरी
५८	७	अछेद	अदूज
	८	चाहूँ, ज्ञेय	चहुँ गुण गेह
	९–१०	हैडिंग से पहले अर्घ चढाने का मत्र पढे	
६२	४	नित नत	निज अनन्त
६३	२२	नोथा	नोथा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७३	६	जिन	निज
७५	४	भावी	भाषो
८०	१३	जिन	बिन
८२	८	विनवै	बिलसै
	१५	भवछेदकाय	वध छेदकाय
८५	१०	(यहा से जयमाला प्रारभ है)	
८६	१	(जाप्यमत्र जयमाला के अन्त मे दे)	
८७	३	शरीर	सरीख
८८	३	विन्दु हकार	सुविन्दु हकार
९०	८	तान	ताग
९३	१	अभेय चाहैं	अभेय चहुँ गुण
९७	१३	समय	सम्यक्
१०४	६	त्रिजग की	तिर्यग् की
१०५	३	निर्मल	निर्वल
१०९	२	नाही	ताही
१२२	९	निजवासधात	निजवासघात
१२२	१०	प्रका राथिर	प्रकाराऽथिर
१२८	१	भाग	काज
१५१	७	विंदु हकार	सुविन्दु हकार
१५६	४	अछेद	अदूज
२३१	१३	हो	ही

श्री सिद्धचक्र विधान का महत्व एवं उसकी विधि

जैनो की आवश्यक क्रियाओ मे देव पूजा का प्रमुख स्थान है। आचार्य कुन्दकुन्द ने दान और पूजा को श्रावक की मुख्य क्रियाओ मे गिनाया है। जैन शास्त्रो मे अनेक पूजा विधान वर्णित है, उन सबका उद्देश्य मानव की शाति के लिए है। शुद्ध भावो से की गई पूजा-आराधना से भावो मे निर्मलता आती है जो मनुष्य को वीतरागता की ओर ले जाती है तथा इस लोक एव परलोक मे सुख शान्ति प्राप्त कराती है। सिद्धचक्र पूजा भी उनमे से एक है। वैसे यह पूजा पर्व विशेप की न होकर नित्य पूजा ही है। पूजा के पाच भेदो मे से नित्य पूजा मे ही इसको समझा जाना चाहिए किन्तु सिद्धचक्र विधान को अष्टाह्निका पर्व मे ही करने का समाज मे प्रचलन है। ये दिन पवित्र होते हैं। सती मैना सुन्दरी ने इस विधान को अष्टाह्निका पर्व मे किया था और उससे श्रीपाल आदि का कुष्ठ रोग दूर हुआ था। इसीसे लोग इसे अष्टाह्निका पर्व मे करने लग गये हैं। वैसे अष्टाह्निका का सम्बन्ध नन्दीश्वर विधान से है। अस्तु ! पूजा किसी भी समय मे की जाय, शुभ फल देने वाली ही है।

यह पूजा सिद्ध भगवान के गुणो की पूजा है। सिद्धचक्र का अर्थ है 'मुक्त आत्माओ का चक्र-मण्डल-समूह'। सिद्ध भगवान के आठ गुणो को लेकर प्रथम पूजा है। फिर कर्म प्रकृ-तियो की व्युच्छित्ति की अपेक्षा से द्विगुणित द्विगुणित अर्घ बढते जाते हैं। अर्थात् दूसरे दिन

१६, फिर ३२, ६४, १२८, २५६, ५१२ एवं १०२४ क्रमश बढते जाते हैं। अष्टाह्निका में अष्टमी से लेकर पूर्णमासी तक यह पूजा की जाती है और नवें दिन जाप्य, शाति विसर्जन होम आदि किया जाता है।

पूर्ण विधान करने वाले सज्जनो को पूजन प्रारम्भ करने के साथ ही जाप्य पहले प्रारम्भ कर देना चाहिए। उत्कृष्ट जाप्य सवालाख माना गया है। जाप्य एक व्यक्ति अथवा कई व्यक्ति कर सकते हैं। प्रतिदिन निश्चित सख्या मे जाप्य करके नवें दिन पूर्ण करके हवन करना चाहिए। जाप्य करने वाला शुद्ध वस्त्र पहन कर मनसा वाचा कर्मणा शुद्ध होकर जाप्य करे। इन दिनो सयम व ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे, मर्यादित भोजन करे तथा जमीन या तख्त पर सोवे। जाप्य प्रात एव सायं दोनो बार किये जा सकते हैं। जाप्य प्रारम्भ करने मे जो बैठे उन्हे ही जाप्य पूरे करने चाहिए। यदि सवा लाख न कर सके तो एक लाख अथवा ५१ हजार अथवा कम से कम ८००० तो करे ही। जाप्य मत्र—'ॐ ह्री अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै नम' अथवा 'ॐ ह्री अ सि आ उ सा नम' होने चाहिए।

मडल गोलाकार वनाना चाहिए जैसा छपे हुए नक्शे मे दिया गया है। त्रिकोण मंडल भी होते हैं। मडल के वीच मे सिंहासन मे यत्रराज स्थापित करना चाहिए और चारो कोनो मे चार अक्षत सुपारी हल्दो आदि मागलिक द्रव्यो से युक्त मगल कलश रखने चाहिए। वे

लाल कपडे और श्रीफल से ढके हुए होना चाहिए। मडप को अष्ट प्रातिहार्य, छत्र, चवर आदि से सजाया जा सकता है।

पूजा अभिषेक पूर्वक यदि करना हो तो अभिषेक पाठ पढकर अभिषेक करे, फिर दैनिक पूजा करके यह पूजा प्रारम्भ करे। सामग्री मडल पर न चढा कर थाल रकावी मे ही चढाना चाहिए। आठ दिन तक मडल पर सामग्री पडी रहने से जीवोत्पत्ति हो जाती है।

आठ दिन पूजा करने के पश्चात् नवे दिन पूर्णाहूति करे। उस दिन कु ड वनावे १ चौकोर (तीर्थंकर) कु ड एक हाथ (मुट्ठिवाधे) लम्वा चौडा और गहरा होना चाहिए। इसमे तीन कटनिया हो —पहली ५ अगुन की ऊ ची चौडी, दूसरी ४ अगुल ऊ ची चौडी तथा तीसरी ३ अगुल की हो। चौकोर कुण्ड बीच मे हो, उसके उत्तर की ओर गोल कुण्ड (गणधर कुण्ड) हो और दक्षिण की ओर त्रिकोण कुण्ड (सामान्य केवली कुण्ड) हो। यदि ऐसा सम्भव न हो तो एक कुण्ड मे भी तीनो आकार बनाये जा सकते है। कुण्डो के चारो ओर लकडीकी खूटियाँ गाडकर अथवा कलश रखकर मौली वाधना चाहिए। "उस समय ॐ ह्री अर्हं पचवर्णं सूत्रेण त्रीन् वारान् वेप्टयामि" यह मत्र पढना चाहिए।

जितने जाप्य किये जावे उसके दशमाश जाप्य मत्र की आहूतिया दी जानी चाहिए। यदि सवालाख जाप्य किये हो तो साढे बारह हजार आहूतिया दी जानी चाहिए। हवन की

सामग्री शुद्ध आक, ढाक, पलास आदि की समिध, दशाग धूप, छाड, छवीला, खस आदि सुगन्धित द्रव्य, मेवा, बूरा, घृत आदि शक्त्यनुसार लेना चाहिए। यह सक्षेप मे इस विधान की विधि है।

अभिषेक पूर्वक विधान

सिद्धचक्र विधान की विधि ऊपर बताई जा चुकी है। जिन्हे अभिषेक आदि पूर्वक विधान करना हो वे निम्न प्रकार से करे —सर्व प्रथम जल शुद्धि करना चाहिए।

॥ जल शुद्धि मन्त्र ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केसरि-पुण्डरीक-महापुंडरीक-गंगा-सिंधु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकांता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता-सुवर्णरूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-पयोधि-शुद्ध-जल-सुवर्ण-घट-प्रक्षिप्त-नवरत्न-गंधाक्षत-पुष्पार्चितमामोदक पवित्र कुरु कुरु झ्रं झ्रं झ्रौं झ्रौं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा ॥

अङ्ग शुद्धि—सौगंध्य-संगत-मधुव्रत-झंकृतेन संवर्ण्यमानमिव गंधमनिन्द्यमादौ। १०
आरोपयामि विबुधेश्वर-वृन्द-वन्द्यं पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम् ॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां

द्री द्री द्रावय द्रावय स ह क्ष्वी क्ष्वी ह स स्वाहा । ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असिआउसा अस्य सर्वाङ्गशुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।। गन्ध आरोपयामि ।। (सारे शरीर पर हाथ फेरे) ।

वस्त्र शुद्धि— धौतान्तरीयं विधु-कान्ति-सूत्रैः सद्ग्रन्थित धौत-नवीन-शुद्धम् ।
नग्नत्व-लब्धिर्न भवेच्च यावत् सधार्यते भूषरामूरुभूम्याः ।।
सव्यानमचद्दशया विभान्तमखड-धौताभिनव-मृदुत्वम् ।
सधार्यते पीत-सिताशु-वर्णमंशोपरिष्टाद् धृत-भूषराकम् ।।

तिलक—पात्रेऽर्पितं चदनमौषधोशं शुभ्रं सुगंधाहृत-चचरीक ।
स्थाने नवाके तिलकाय चर्च्यं न केवलं देह-विकार-हेतोः ।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असिआउसा मम सर्वाङ्गशुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

रक्षा बधन (कटक)—सम्यक्-पिनद्ध-नव-निमल-रत्न-पक्तिरोचिर्वृहद्वलय-जात-बहु-प्रकार
कल्यारानिर्मितमह कटक जिनेश-पूजा-विधान-ललिते स्वकरे करोमि ।
ॐ ह्री णमो अरहताण रक्ष रक्ष स्वाहा इति ककरण अवधारयामि ।

(मुद्रिका धारण)-प्रत्युप्त-नील-कुलिशोपल-पद्म-राग-निर्यत्कर-प्रकरबद्ध-सुरेन्द्रचापम् ।
जनाभिषेक-समयेऽगुलि-पर्व-मूले रत्नागुलीयकमह विनिवेशयामि ।।
ॐ ह्री रत्नमुद्रिका अवधारयामि स्वाहा । (अनामिका मे अगूठी पहरे)

(यज्ञोपवीतधारण)–पूर्वं पवित्रतर-सूत्र-विनिर्मितं यत् प्रीतः प्रजापतिरकल्पयदंगसगि ।
सद्भूषणं जिनमहे निजकन्धरायां यज्ञोपवीतमहमेष तदाऽऽतनोमि ।।

ॐ नम परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाह रत्नत्रयस्वरूप यज्ञोपवीनं दधामि, मम गात्र पवित्र भवतु अर्हं नम स्वाहा ।

(मुकुटधारण)–पुन्नाग-चंपक-पयोरुह-किंकरात-जाति-प्रसून-नव-केशर-कुन्दमाद्यम् ।
देव ! त्वदीय-पद-पकज-सत्प्रसादात् मूर्ध्नि प्रणामवति शेखरक दधेऽहम् ।।

ॐ ह्री मुकुट अवधारयामि स्वाहा ।

कुण्डल धारण–एकत्र भास्वानपरत्र सोमः सेवा विधातुं जिनपस्य भक्त्या ।
रूप परावृत्य च कुण्डलस्य मिषादवाप्ते इव कुण्डले द्वे ।।

ॐ ह्री कु डल अवधारयामि स्वाहा ।

हार धारण–मुक्तावली-गोस्तन-चन्द्रमाला-विभूषणान्युत्तम-नाक-भाजां ।
यथार्हं-संसर्गमतानि यज्ञ-लक्ष्मी-समालिगन-कृद्दधेऽहम् ।।

ॐ ह्री हार अवधारयामि स्वाहा ।

इस प्रकार अलकार आभूपण धारण करके स्नान योग्य भूमि का प्रक्षालन निम्न प्रकार करना चाहिए ।

भूमि शुद्धि विधान

डाभ के पूले से निम्न प्रकार मत्र पढकर भूमि का शोधन करे।

ॐ ह्री वातकुमाराय सर्व–विघ्नविनाशाय मही पूता कुरु कुरु ह्लू फट् स्वाहा।

इसके पश्चात् निम्न श्लोक एव मत्र पढकर डाभ के पूले को जल मे भिगोकर भूमि पर छिडकते समय यह मन्त्र पढे ।

ये संति केचिदिह दिव्य-कुल-प्रसूता नागा प्रभूत-बल-दर्प-युता विबोधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ।।

ॐ क्षा क्षी क्षू क्षौ क्ष ॐ ह्री अर्हं मेघकुमाराय वरा प्रक्षालय प्रक्षालय र अ ह त स्व झ य क्ष पट् स्वाहा।

इसके बाद मडप रक्षार्थ चार प्रकार के देव तथा दिक्पालो को बुलावे और मडप के चारो ओर पुष्पक्षेपण करे।

चतुर्णिकायामरसंघ एष आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम् ।
स्वीकृत्य भक्त्या हि यथार्हदेशे सुस्था भवंत्वान्हिक-कल्पनायाम् ।।

हमारे इस जिन पूजा विधान मे हे भवनवासी, व्यतर, ज्योतिष्क एव कल्पवासी देवो। पधार कर अपने नियोग को स्वीकार करो और जिन सेवा मे तत्पर हो तिष्ठो।

(पुष्पक्षेपण करे)

तत्पश्चात् वास्तुकुमार जातिके देवो को कहे और पुष्पक्षेपण करे।

आयात वास्तु-विधिषूद्भूट-सन्निवेशा योग्यांश-भाग-परिपुष्ट-वपु प्रदेशा ।
अस्मिन्मखे रुचिर-सुस्थित-भूषणाके सुस्था यथार्हं-विधिना जिन-भक्ति-भाज. ॥

हे वास्तु कुमार जाति के देवो ! हमारे इस पूजा विधान मे स्वकीय योग्य अंश भाग से परिपुष्ट शरीर युक्त एव सुन्दर आभूषणो को धारण करके भगवान की भक्ति मे सलग्न हो पधारो एव समुचित स्थान पर विराजो ।

बाद मे पवनकुमार जाति के देवो को कहे और पुष्पक्षेपण करे ।

आयात मारुतसुराः पवनोद्भूटाशाः, सघट्ट-सलसित-निर्मलतातरोक्षा ।
वात्यादि-दोष-परिभूत-वसुन्धरायां, प्रत्यूह-कर्म-निखिल परिमार्जयन्तु ॥

आकाश एव दिशाओ को पवन द्वारा शुद्ध करने वाले हे वायुकुमार देवो ! हमारे इस पूजा विधान यज्ञ मे आकर वायु सम्बन्धी विघ्नो को दूर करो ।

फिर मेघकुमार जाति के देवो से कहे और पुष्पक्षेपण करे ।

आयात निर्मलनभःकृतसन्निवेशा मेघासुरा प्रमदभारनमच्छिरस्काः ।
अस्मिन्मखे विकृतविक्रियया नितांते सुस्था भवन्तु जिनभक्तिमुदाहरन्तु ॥

स्वच्छ आकाश से युक्त हे मेघकुमार जाति के देवो ! हमारे इस पूजा विधान मे आकर तिष्ठो एव मेघ सम्बन्धी समस्त उपद्रवो को दूर करो ।

तत्पश्चात् अग्निकुमार देवो से कहे और पुष्पक्षेपण करे ।

आयात पावक-सुराः सुर-राजपूज्य-सस्थापना-विधिषु सस्कृत-विक्रियार्हाः ।
स्थाने यथोचितकृते परिबद्ध-कक्षाः संतु श्रिय लभत पुण्य-समाज-भाजा ॥

हे अग्निकुमार जाति के देवो ! इन्द्रो द्वारा पूजनीय भगवान के इस पूजा विधान मे आकर तिष्ठो एव अग्नि सम्बन्धी समस्त उपद्रवो को दूर करो।

फिर नागकुमार देवो को कहे और पुष्पक्षेपण करे ।

नागाःसमाविशत भूतल-संनिवेशाः स्वा भक्तिमुल्लसित-गात्रतया-प्रकाश्य !
आशी-विषादि-कृत-विघ्नविनाश-हेतो' स्वस्था भवतु निज-योग्य-महासनेषु ॥

भूतल मे निवास करने वाले हे नागकुमार जाति के देवो ! हमारे इस पूजा विधान मे आशीविप आदि सर्व विघ्नो को दूर करो एव उचित स्थान पर तिष्ठो ।

भूमि शोधन के प्रश्चात् जहा श्री जी लाकर विराजमान करना हो वहा पीठ प्रक्षाल निम्न श्लोक बोलकर करे ।

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः प्रक्षालितं सुर-वरैर्यदनेक-वारम् ।
अत्युद्यमद्य तदहं जिनपाद-पीठ प्रक्षालयामि भव-सभव-ताप-हारि ॥

पीठ स्थापन के पश्चात् उसके आगे दश दिग्पालो की स्थापना निम्न श्लोक बोलकर करे और दश दिशाओ मे पुष्पक्षेपण करे ।

इन्द्राग्नि-दडधर-नैऋत-पाशपाणि--वायूत्तरेण-शशिमौलि-फणीन्द्र-चन्द्रा ।
आगत्य यूयमिह सानुचरा सचिन्हाः स्वं स्वं प्रतीच्छत बलि जिनपाभिषेके ॥

ॐ इन्द्र ! आगच्छ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्ने ! आगच्छ अग्नेय स्वाहा, ॐ यम ! आगच्छ यमाय स्वाहा, ॐ नैऋत्य ! आगच्छ नैऋत्याय स्वाहा, ॐ वरुण ! आगच्छ वरुणाय स्वाहा, ॐ पवन ! आगच्छ पवनाय स्वाहा, ॐ धनद ! आगच्छ धनदाय स्वाहा, ॐ ईशान ! आगच्छ ईशानाय स्वाहा, ॐधरणेन्द्र ! आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा, ॐसोम ! आगच्छ सोमाय स्वाहा ।

तत्पश्चात् जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति लाकर पूजा स्थान पर रकावी या जलोठ मे विराजमान करे और प्राशुक जल से निम्न श्लोक बोलकर ह्लवन करे। तत्पश्चात् वेदी मे विराजमान करे।

दूरावनम्र-सुरनाथ-किरीट-कोटी—संलग्न-रत्न-किरण-च्छवि-धूसरांघ्रिम् ।
प्रस्वेद-ताप-मलमुक्तमपि प्रकृष्टैर्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिचे ।।

ॐ ह्रीं श्रीमत भगवन्त कृपालुसन्त वृषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकर-परमदेवा-भिषेकसमये आद्याना आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे · देशे · · · नाम्नि नगरे श्रीशुभसम्वत्सरे··· मासानामुत्तमे मासे ·· · पक्षे · ·· पर्वणि·· शुभदिने मुनि-आर्यिकाश्रावकश्राविकाणा सकलकर्म-क्षयार्थं जलेनाभिषिचे नम (भगवानके शिरपरजलधारा)

इसके वाद सिद्धयन्त्र प्रक्षाल निम्न मत्र पढते हुए करना चाहिए ।

ॐ भूर्भुव स्वरिह एतद्विघ्नौघवारक यन्त्रमह परिषिंचयामि । इस प्रकार ह्लवन करके यन्त्र को मडल मे सिंहासन पर विराजमान करदे । तत्पश्चात् जपस्थान मे वैठकर जो जाप्य जपना हो उसकी एक माला फेरे । जाप्य मत्र निम्न दो मे से कोई एक हो ।

'ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र असिआउसा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा' अथवा 'ॐ ह्री अर्हं असिआउसा नम'।

फिर निम्न प्रकार श्लोक बोलकर नित्यनियम पूजा, वेदी मे विराजमान भगवान की पूजा, पचमेरु नदीश्वर आदि पूजाये करके सिद्धचक्रयत्र पूजा प्रारभ करे। ८ दिन तक पूजा करके नवे दिन होम करे।

श्रीमन्मदरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते, पीठे मुक्तिवर निधाय रचित त्वत्पादपुण्पस्रज।
इंद्रोहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीत दधे, मुद्रा-कंकण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ।।

यन्त्र—पूजा

परमेष्ठिन् जगत्त्राण-करणे मङ्गलोत्तम। शरण्येतस्तिप्ठतु मे सन्निहितोऽस्तु पावन।
ॐह्री अर्हन् असिआउसा मगलोत्तमशरणभूता अत्रावतरतावरतरत सवौपट् आह्वाननम्।
ॐह्री अर्हन् असिआउसा मगलोत्तमशरणभूता अत्र तिष्ठत तिप्ठत ठ ठ स्थापनम् ।।
ॐह्री अर्हन् असिआउसा मगलोत्तमशरणभूता अत्र मम सन्निहिता भवत २ वपट् सन्निधापनम्।

पकेरुहायात-पराग-पुञ्जै सौगन्ध्यमद्भि सलिलै. पवित्रै ।
अर्हत्पदाभापित-मगलादीन प्रत्यूह-नाशार्थमह यजामि ।।
ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य जल निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर-कर्पूर-कृत-द्रवेण, ससार-तापापहृतौ युतेन ।
अर्हत्पदाभापित-मगलादीन प्रत्यूह-नाशार्थमह यजामि ।।
ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेप्ठिभ्य चदन निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्यक्षतैरक्षत-मूर्तिमद्भि-रब्जादि-वासेन सुगन्धवद्भि ।
अर्हत्पदाभाषित-मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य अक्षत निर्वपामीति स्वाहा ।

कदम्ब-जात्यादिभवै सुरद्रु मैर्जातैर्मनोजात-विपाश-दक्षै ।
अर्हत्पदाभाषित-मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ।

पीयूप-पिण्डैश्च शशाक-काति—स्पर्शद्भिरिष्टैर्नयन-प्रियैश्च ।
अर्हत्पदाभाषित-मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वस्ताधकार-प्रसरै प्रदीपैर्कृतोद्भवै-रत्न-विनिर्मितैर्वा ।
अर्हत्पदाभापित-मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य दीप निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वकीय-धूमेन नभोवकाश-व्याप्तैश्चहृद्यै श्च सुगन्ध-धूपै ।
अर्हत्पदाभाषित-मगलादीन्, प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

नारग-पूगादि-फलैरनर्घ्यैर्हृन्मानसादि-प्रियतर्पकैश्च ।
अर्हत्पदाभाषित-मगलादीन् , प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्री मगलोत्तम-शरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य फल निर्वपामीति स्वाहा ।

(शार्दूल वि०)—अभश्चदनतन्दुलाक्षत—तरूद्भूतैर्निवेद्यै र्वरै ।
दीपैर्धूप-फलोत्तमै समुदितैरेभि सुवर्ण-स्थितै ॥

अर्हंत्-सिद्ध-सुसूरि-पाठक-मुनीन्, लोकोत्तमान् मगलान् ।
प्रत्यूहौघ-निवृत्तये शुभकृत, सेवे शरण्यानहम् ॥
ॐ ह्री मगलोत्तमशरणभूतेभ्य पचपरमेष्ठिभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रत्येक पूजनम्

कल्याण-पञ्चक-कृतोदयमाप्तमीश,-मर्हंतमच्युत-चतुष्टय-भासुरागम् ।
स्याद्वाद-वागमृत-सिन्धु-शशाक-कोटि,-मर्चे जलादिभिरनत-गुणालय तम् ॥
ॐ ह्री अनन्तचतुष्टय-समवसरणादि-लक्ष्मी बिभ्रते अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा
कर्माष्टकेध्मचयमुत्पथमाशु हुत्वा, सद्ध्यानवह्निविसरे स्वयमात्मवन्तम् ।
नि श्रेयासामृतसरस्यथ सनिनाय, त सिद्धमुच्चपदद परिपूजयामि ॥
ॐ ह्री अष्टकर्म-काष्ठगण-भस्मीकृते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
स्वाचारपचकमपि स्वयमाचरति, ह्याचारयति भविकान् निज-शुद्धि-भाज ।
तानर्चयामि विविधै सलिलादिभिश्च, प्रत्यूह-नाशन-विधौ निपुणान् पवित्रै ॥
ॐ ह्री पचाचार-परायणाय आचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अगाग-बाह्य-परिपाठन-लालसाना,-मष्टाग-ज्ञान-परिशीलन-भावितानाम् ।
पादारविन्द-युगल खलु पाठकाना, शुद्धैर्जलादि-वसुभि परिपूजयामि ॥
ॐ ह्री द्वादशाग-पठनपाठनोद्यताय उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आराधना-सुखविलास-महेश्वराणा, सद्धर्म-लक्षणमयात्मविकस्वराणां ।
स्तोतु गुणान् गिरिवनादि-निवासिना वै, एपोऽर्घत चरणपीठ-भुवय जामि ।।
ॐ ह्री त्रयोदश-प्रकार-चारित्राराधक-साधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
अर्हन्मङ्गलमर्चामि जगन्मगलदायकम् । प्रारब्ध-कर्म-विघ्नौघ-प्रलय-प्रदमब्मुखै ।।
ॐ ह्री अर्हन्मङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
चिदानन्द-लसद्वीचिमालिन गुणशालिनम् । सिद्ध-मगलमर्चेह सलिलादिभिरुज्ज्वलै ।।
ॐ ह्री सिद्धमगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
बुद्धि-क्रिया-रस-तपोविक्रियौषधि-मुख्यका । ऋद्धयो य न मोहन्ति साधु-मगलमर्चये ।।
ॐ ह्री साधुमङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
लोकालोक-स्वरूपज्ञ-प्रज्ञप्त धर्ममगलम् । अर्चे वादित्र-निर्घोप-पूरिताश वनादिभि ।।
ॐ ह्री केवलिप्रज्ञप्त-धर्ममङ्गलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
लोकोत्तमोऽर्हन् जगता भव-बाधा-विनाशक । अर्च्यतेऽर्घ्येण स मया कुकर्म-गण-हानये ।।
ॐ ह्री अर्हं-लोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
विश्वाग्र-शिखर-स्थायी सिद्धो लोकोत्तमो मया । मह्यते महसामदचिदानन्दथु-मेदुर ।
ॐ ह्री सिद्धलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
राग-द्वेष-परित्यागी साम्यभावावबोधक । साधु लोकोत्तमोऽर्घ्येण पूज्यते सलिलादिभि ।।
ॐ ह्री साधुलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम-क्षमया भास्वान् सद्धर्मो विष्टपोत्तम । अनत-सुख-सस्थान यज्यतेऽम्भोऽक्षतादिभि ।।
ॐ ह्री केवली-प्रज्ञप्त-धर्म-लोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदाहन् शरण मन्ये नान्यथा शरण मम । इति भाव-विशुद्धचर्थमर्हयामि जलादिभि ॥
ॐ ह्री अर्हच्छरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
व्रजामि सिद्ध-शरण परावर्तन-पचक । भित्वा स्वसुख-सदोह-सपन्नमिति पूजये ॥
ॐ ह्री सिद्धशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
आश्रये साधु-शरण सिद्धात-प्रतिपादनै । न्यक्कृताज्ञान-तिमिरमिति शुद्धया यजामि तम् ॥
ॐ ह्री साधुशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
धर्म एव सदा बन्धु स एव शरण मम । इह वान्यत्र ससारे इति तं पूजयेऽधुना ॥
ॐ ह्री केवलि-प्रज्ञप्त-धर्मशरणाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।
(वसततिलका)—ससार-दुख-हनने निपुण जनाना, नाद्यन्त-चक्रमिति सप्त-दश-प्रमाणम् ।
सपूजये विविध-भक्तिभरावनम्र शातिप्रद भुवन-मुख्य-पदार्थ-सार्थैं ॥
ॐ ह्री अर्हदादि-सप्त-दश-मन्त्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला

विघ्न-प्रणाशन-विधौ सुरमर्त्यनाथा, अग्रेसर जिन वदति भवंतमिष्टम् ।
अनाद्यनन्त-युग-वर्तिनमत्र कार्ये, गार्हस्थ्य-धर्म-विहितेऽहमपि स्मरामि ॥
विनायक सकल-धर्मि-जनेषु धर्म द्वेधा नयत्यविरत दृढ-सप्त-भग्या ।
यद्धयानतो नयन-भाव-समुज्झनेन, बुद्ध स्वय सकल-नायक-इत्यवाप्ते ॥
(भुजगप्रयात)—गणाना मुनीनामधीशस्त्वतस्ते, गणेशाख्यया ये भवन्त स्तुवति ।
सदा विघ्न-सदोह-शातिर्जनाना, करे सलुठत्यायत-श्रेयसानाम् ॥

त्वं मंगलाना परम जिनेन्द्र ! समादृतं मंगलमस्ति लोके ।
त्वंत् पूजकानामपयान्ति विघ्ना क्षिप्र गुरुन्मत्सविधे व सर्पा ॥
तव प्रसादात् जगता सुखानि, स्वय समायान्ति न चात्र चित्रम् ।
सूर्योदये नाशमुपैति नून तमो विशाल प्रवल च लोके ॥
यतस्त्वमेवास्मि विनायको मे दृष्टेष्ट–योगानवरुद्ध–भाव. ।
त्वन्नाम–मात्रेण पराभवति विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥
घत्ता—जय जय जिनराज त्वद्गुणान्को व्यनक्ति, यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोटि-वर्ष-प्रमाणम् ॥
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्, कथमिह हि मनुष्य. स्वल्प-बुद्ध्या-समेत ॥
ॐ ह्री अर्हदादि-सप्तदश-मन्त्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
श्रिय बुद्धिमनाकुल्य धर्म-प्रीति-विवर्द्धन । गृहि-धर्मे स्थितिर्भूयात् श्रेयासि मे दिशत्वरा ॥
इत्याशीर्वाद ।

हवन

जैसा ऊपर बताया जा चुका है तदनुसार तीन कुण्ड पहले दिन ईट आदि से तैयार करा लिये जावे और उन्हे रगो से सुसज्जित कर दिया जावे । कुण्डो की तीनो कटनियो पर साथिये बनाये जावे । तथा तीनो कटनियो पर चार चार लकडी की खूंटिया गाडकर उनमे मौली लपेटी जावे । मौली लपेटते समय 'ॐ ह्री अर्हं पचवर्ण सूत्रेण त्रीन् वारान् वेष्टयामि' बोले । कुण्डो के पास ही दक्षिण या पश्चिम मे वेदिका मे सिद्धयत्र विराजमान किया जाना चाहिए । और पास मे चौकी पर अक्षत बिछाकर उस पर मगल कलश स्थापित करे । पत्पश्चात् जल शुद्धि करें । जल शुद्धि के लिए निम्न मत्र बोले—

जल शुद्धि मंत्र

ओ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केसरि-पुण्डरीक-महा-पुण्डरीक-गगा-सिंधु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकाता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकाता-सुवर्णरूप्य-कूलारक्ता-रक्तोदा-पयोधि-शुद्ध-जल-सुवर्ण-घट-प्रक्षिप्त-नवरत्न-गधाक्षत-पुष्पार्चितमामोदक पवित्र कुरु कुरु झ्रं झ्रं झ्रौं झ्रौं व व ह ह स स त त प प द्रा द्रा द्री द्री ह स स्वाहा ॥

मगल कलश स्थापन करते समय निम्न मत्र वोले—

ॐ ह्री अर्हं स्वस्तये मंगल—कुंभं स्थापयामि स्वाहा ।

फिर कुण्डो के कोणो पर चार छोटे कलश स्थापित करें, और निम्न मत्र पढे—

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कलशान् स्थापयामि स्वाहा ।

उक्त चारो कलशो पर या अलग चार घृत के दीपक स्थापित करे तव निम्न श्लोक व मत्र वोले

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकल-लोक-सुखाकरमुज्ज्वलं ।
तिमिर-ध्वान्तिहरं प्रकटं सदा, ननु दधामि सुमंगलकं मुदा ।

ॐ ह्री अज्ञान-तिमिरहरं दीपकं संस्थापयामि ।

फिर 'ॐ ह्रीं नीरजसे नमः' यह वोल कर भूमि को पवित्र करे तथा 'ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः' यह पढ कर डाभ का आसन विछावे ।

ॐ ह्रीं पवित्रतरजलेन द्रव्य—शुद्धि करोमि स्वाहा । यह पढकर हवन सामग्री को शुद्ध करे ।

ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः ।

यह पढकर प्रासुक जल से चारों ओर छीटे देवे । फिर यंत्र का प्रक्षाल निम्न मत्र बोल कर करे और यत्र पूजा करे ।

ॐ भूर्भुवः स्वरिह एतद् विघ्नौघवारकं यंत्रमहं परिषिंचयामि स्वाहा ।

चौकोर तीर्थंकर कुण्ड मे साथिया या ॐ लिखे और निम्न मत्र पढकर समिध रखे ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वाहा ।

तत्पश्चात् निम्न मत्र पढते हुए कपूर और डाभ के पूले से अग्नि प्रज्वलित करे ।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि स्थापयामि स्वाहा ।

इसी प्रकार क्रमश गोल गणधर कुण्ड एव त्रिकोण सामान्य केवली कुंड मे साथिया या ॐ लिखे और उक्त मत्र पढते हुए समिध व अग्नि स्थापित करे । चौकोर कुण्ड से अग्नि लेकर गोल मे और गोल मे से अग्नि लेकर त्रिकोण मे स्थापित करे ।

तीनो कुण्डो मे निम्न पाठ कर एक एक अर्घ्य चढावे और आहूतिया चालू करे ।

बसन्ततिलका—श्रीतीर्थ-नाथ-परिनिर्वृति-पूज्य-काले, आगत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः ।
वह्निव्रजैर्जिनपदेऽहमुदार-भक्त्या, देहुस्तमग्निमहमर्चयितुं दधामि ॥

ॐ ह्रीं प्रथमे चतुरस्रे तीर्थंकर कुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपजाति —गणाधिपानां शिव-याति-कालेऽग्नीन्द्रोत्तमाङ्ग—स्फुरदग्निरेषः ।
संस्थाप्य पूज्यः स मयाह्वनीयो, विधानशांत्यै विधिना हुताशः ।

ॐ ह्री द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपजाति —श्रीदक्षिणाग्निः परकल्पितश्च—, किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवैः ।
निर्वाण-कल्याणक-पूतकाले, तमर्चये विघ्न—विनाशनाय ॥

ॐ ह्री त्रिकोणे सामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं नि० अव निम्न आहूतिया चालू करे ।

अथ पीठिका मन्त्र

ॐ सत्यजाताय नम ॥१॥ ॐअर्हज्जाताय नम ॥२॥ ॐपरमजाताय नम ॥३॥ ॐ अनुपमजाताय नम ॥४॥ ॐ स्वप्रधानाय नम ॥५॥ ॐ अचलाय नम ॥६॥ ॐ अक्षयाय नम ॥७॥ ॐ अव्यावाधाय नम ॥८॥ ॐ अनन्तज्ञानाय नम ॥९॥ ॐ अनन्तदर्शनाय नम ॥१०॥ ॐ अनन्तवीर्याय नम ॥११॥ ॐ अनन्तसुखाय नम ॥१२॥ ॐ नीरजसे नम ॥१३॥ ॐ निर्मलाय नम ॥१४॥ ॐ अच्छेद्याय नम ॥१५॥ ॐ अभेद्याय नम ॥१६॥ ॐ अजराय नम ॥१७॥ ॐ अमराय नम ॥१८॥ ॐ अप्रमेयाय नम ॥१९॥ ॐ अगर्भवासाय नम ॥२०॥ ॐ अक्षोभाय नम ॥२१॥ ॐ अविलीनाय नम ॥२२॥ ॐ परमघनाय नम ॥२३॥ ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नम ॥२४॥ ॐ लोकाग्रवासिने नमो नम ॥२५॥ ॐ परमसिद्धेभ्यो नम ॥२६॥ ॐ अर्हन्सिद्धेभ्यो नमो नम ॥२७॥ ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नम ॥२८॥ ॐ अतकृत्सिद्धेभ्यो नमो नम ॥२९॥ ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमो नम ॥३०॥ ॐ अनादिपरम्परासिद्धेभ्यो नमो नम ॥३१॥ ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः ॥३२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्न भव्यनिर्वाणपूजार्ह-अग्नीद्राय स्वाहा ॥३३॥

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

जातिमन्त्र

ॐ सत्यजन्मन शरण प्रपद्ये ॥१॥ ॐ अर्हज्जन्मन शरणं प्रपद्ये ॥२॥ ॐ अर्हन्मातु शरण प्रपद्ये ॥३॥ ॐ अर्हत्सुतस्य शरण प्रपद्ये ॥४॥ ॐ अनादिगमनस्य शरण प्रपद्ये ॥५॥ ॐ अनुपमजन्मन शरण प्रपद्ये ॥६॥ ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये ॥७॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्त्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ॥८॥

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरण भवतु स्वाहा ॥

निस्तारकमन्त्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ षट्कर्मणे स्वाहा ॥३॥ ॐ ग्रामपतये स्वाहा ॥४॥ ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥५॥ ॐ स्नातकाय स्वाहा ॥६॥ ॐ श्रावकाय स्वाहा ॥७॥ ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥९॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१०॥ ॐसम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा ॥११॥ सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरण भव तुस्वाहा ॥

ऋषिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नम ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नम. ॥२॥ ॐ निर्ग्रन्थाय नम ॥३॥ ॐ वीतरागाय नम ॥४॥ ॐ महाव्रताय नम ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नम ॥६॥ ॐ महायोगाय नम ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नम ॥८॥ ॐ विविधर्द्धये नम ॥९॥ ॐ अङ्गधराय नम. ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नम. ॥११॥ ॐ गणधराय नम ॥१२॥ ॐ परमर्षिभ्यो नमो नम ॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमो नम. ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते

नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा ।।१५।।
सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु समाधि मरण भवतु स्वाहा ।

सुरेन्द्रमन्त्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ।।१।। ॐ अर्हंज्जाताय स्वाहा ।।२।। ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ।।३।। ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा ।।४।। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ।।५।। ॐ सौधर्माय स्वाहा ।।६।। ॐकल्पाधिपतये स्वाहा ।।७।। ॐअनुचराय स्वाहा ।।८।। ॐपरपरेन्द्राय स्वाहा ।।९।। ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा ।।१०।। ॐ परमार्हताय स्वाहा ।।११।। ॐ अनुपमाय स्वाहा ।।१२।। ॐसम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन्स्वाहा।।१३।।
सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरण भवतु स्वाहा ।

परमराजादि मन्त्र

ॐ सत्याजाय नम. ।।१।। ॐ अर्हंज्जाताय स्वाहा ।।२।। ॐअनुपमेन्द्राय स्वाहा ।।३।। ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा ।।४।। ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ।।५।। ॐ परमजाताय स्वाहा ।।६।। ॐ परमार्हताय स्वाहा ।।७।। ॐ अनुपमाय स्वाहा ।।८।। ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेज उग्रतेज दिशाजन दिशाजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ।।९।।
सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरण भवतु स्वाहा ।

परमेष्ठी मन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ।।१।। ॐ अर्हंज्जाताय नम ।।२।। ॐ परमजाताय नम ।।३।। ॐ परमार्हताय नम ।।४।। ॐ परमरूपाय नम. ।।५।। ॐ परमतेजसे नमः ।।६।। ॐ परम-

गुणाय नम ॥७॥ ॐ परमस्थानाय नम॰ ॥८॥ ॐ परमयोगिनेनम॰ ॥९॥ ॐ परमभाग्याय नम ॥१०॥ ॐ परमर्द्धये नम ॥११ ॐ परमप्रसादाय नम॰ ॥१२॥ ॐ परमकांक्षिताय नम ॥१३॥ ॐ परमविजयाय नम॰ ॥१४॥ ॐ परमविज्ञानाय नम॰ ॥१५॥ ॐपरमदर्शनाय नम ॥१६॥ ॐ परमवीर्याय नम ॥१७॥ ॐ परमसुखाय नम॰ ॥१८॥ ॐ परमसर्वज्ञाय नम ॥१९॥ ॐ अर्हते नम ॥२०॥ ॐ परमेष्ठिने नम॰ ॥२१॥ ॐ परमनेत्रे नमो नम ॥२२॥ ॐमम्यग्दृष्टे २ त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्यविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे २ स्वाहा ॥२३॥

सेवाफल पट्परमम्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरण भवतु स्वाहा।

धूपै सन्धूपितानेक–कर्मभिर्धूपदायिनः, अर्चयानि जिनाधोश–सदागमगुरून् गुरून् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनश्रुतगुरुभ्यो नम धूपम्।

सुरभी-कृत-दिग्व्रातैर्धूपधूमैर्जगत-प्रियै। यजामि जिनसिद्धेश-सूर्य्युपाध्यायसद्-गुरुन्॥२॥

ॐ ह्रीं पचपरमेष्ठिभ्यो नम धूपम्।

मृद्वग्नि-सगम-समुज्वलनोरुधूमै, कृष्णागुरु-प्रभृति-सुन्दर-वस्तु-धूपै।
प्रीत्या नटद्भिरिव ताण्डव-नृत्यमुच्चै, कर्मारि-दारु-दहन जिनमर्चयामि ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नम धूपम्।

गोत्र-क्षय-सभव-सतत-सभव-सद्गुरु-लघुता-रूप-परम्।
सर्गमसर्गमपीतमनुक्षण—मुज्झित-सर्गासग-भरम् ॥
कृष्णागुरुधूपै सुरभितभूपैर्धूमै स्पष्टहरिद्रूपै
यायजम सिद्ध सर्वविशुद्ध बुद्धमरुद्ध गुणरुद्धम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नम धूपम्।

हुत्वा स्वमप्यगुरुभि सुरभीकृताशै—रग्नौ समुच्छलित-सभृत-वृन्द-धूपै ।
सधूपयामि चरण शरण शरण्य, पुण्य भव-भ्रमहरैर्गणिनाम् मुनीनाम् ।।५।।

ॐ ह्री आचार्य परमेष्ठिने नम धूपम् ।

सधूपिताखिल-दिशोघनशङ्कयेह, वर्हिव्रज स्वनटनादिव नर्तयद्भि ।
मृद्वग्निसगतिततागुरुधूपधूमै श्री पाठक क्रमयुग वयमाह्वयाम ।।६।।

ॐ ह्री उपाध्यायपरमेष्ठिने नम. धूपम् ।

स्वमग्नौ विनिक्षिप्य दौर्गंध्यबधम्, दशाशास्यमुच्चै करोति त्रिसध्यम् ।
तदुद्दामकृष्णागुरुद्रव्यधूपै , यजे साधुसघ नटद्व्यक्त-रूपै ।।७।।

ॐ ह्री साधुपरमेष्ठिने नम धूपम् ।

धूपै सधूपितानेक-कर्मभिर्धूप-दायिन वृषभादि-जिनाधीशान्, वर्द्धमानान्तकान्यजे ।।८।।

ॐ ह्री वृपभादिवीरान्त-चतुर्विंशतिजिनेभ्यो नम धूपम् ।

इसके पश्चात् जिस मन्त्र की जितनी जाप की है उसके दशमाश उस मन्त्र की आहूति देनी चाहिये। तत्पश्चात् निम्न शान्तिकरण पढे ।

शान्तिधारा

आचार्य अपने हाथमे कलश लेकर जलकी धारा देता हुआ नीचे लिखा पुण्याहवाचन पढे–

ॐ पुण्याह पुण्याह लोकोद्योतनकरा अतीत-काल-सजाता निर्वाण-सागर-महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्त-अमलप्रभ-उद्धर-अग्नि–सन्मति-शिव–कुसुमाजलि–शिवगण–उत्साह-ज्ञानेश्वर-परमेश्वर-विमलेश्वर-यशोधर-कृष्णमति-ज्ञानमति-शुद्धमति-श्रीभद्र-शाताश्चेति चतुर्विंशति-भूत-परमदेवाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।। धारा ।। १ ।।

ॐ सप्रति-काल-श्रेयस्कर-स्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञान-निर्वाण-कल्याण-विभूषित-महाभ्युदया श्रीवृषभ-अजित-शभव-अभिनदन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चद्रप्रभ-पुष्पदत-शीतल-श्रेयो-वासुपूज्य-विमल-अनत-धर्म-शाति-कु थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमानाश्चेति-वर्तमानचतुर्विंशतिपरमदेवाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।। धारा।।२

ॐ भविष्यत्-कालाभ्युदय-प्रभवा महापद्म-सुरदेव-सुप्रभ-स्वयप्रभ-सर्वायुध-जयदेव-उदयदेव-प्रभादेव-उदङ्कदेव-प्रश्नकीर्ति-जयकीर्ति-पूर्णबुद्ध-नि कपाय-विमलप्रभ-बहलगुप्त-निर्मलगुप्त-चित्रगुप्त-समाधिगुप्त-स्वयभू-कदर्प-जयनाथ-विमलनाथ-दिव्यवाक-अनतवीर्याश्चेति चतुर्विंशति-भविष्यत्परम-देवाश्च व प्रीयता प्रीयन्ताम् ।। धारा ।। ३ ।।

ॐ त्रिकालवर्ति-परमधर्माभ्युदया सीमधर-युगमधर-बाहु-सुबाहु-सजातक स्वयप्रभ-ऋषभेश्वर-अनतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चद्रानन-चद्रबाहु-भुजगेश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-जयदेव-अजीत-वीर्याश्चेति पच-विदेह-क्षेत्र-विहरमाणा विंशति-परमदेवाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।। धारा ।। ४ ।।

ॐ वृषभ-सेनादि गणधर-देवा व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।। धारा ।। ५ ।।

ॐकोष्ठ-बीज-पादानुसारि-बुद्धि-सभिन्न-श्रोत्र-प्रज्ञा-श्रवणाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्त म्।।धारा।।६।।

ॐआमर्ष-क्ष्वेड-जल्लविड्डुत्सर्ग-सर्वोपधि-ऋद्धयश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।। धारा ।।७।।

ॐजल-फल-जघा-तन्तु-पुष्प-श्रेणि-पत्राग्नि-शिखाकाश-चारणाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम्।।धारा।। ३०

ॐ आहार-रसवदक्षीण-महानसलयाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।।धारा।। ९ ।।

ॐ उग्र-दीप्त-तप्त-महाघोरानुपम-तपसश्च व प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् ।।धारा।।१०।।

ॐ मनोवाक्काय-बलिनश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।।धारा।।११।।

ॐ क्रिया-विक्रिया-धारिणश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम् ।।धारा।।१३।।

ॐअगाग-वाह्य-ज्ञान-दिवाकरा कुन्दकुन्दाद्यनेक-दिगबर-देवाश्च व प्रीयन्ता प्रीयन्ताम्धारा।१४।

इह वाऽन्यनगर-ग्रामदेवता-मनुजा सर्वे गुरुभक्ता जिनधर्म-परायणा भवतु ।।धारा।।१५।।

दान-तपो-वीर्यानुष्ठान नित्यमेवास्तु ।।धारा।।१६।।

मातृ-पितृ-भ्रातृ-पुत्र-पौत्र-कलत्र-सुहृत्स्वजन-सवधि-सहितस्य अमुकस्य ते घन-धान्यैश्वर्य-बल-द्युति-यश प्रमोदोत्सवा प्रवर्द्धन्ताम् ।। धारा ।। १७ ।।

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्य-मस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । इष्टसपत्तिरस्तु । काममागल्योत्सवा सन्तु । पापानि शाम्यन्तु । घोराणि शाम्यतु । पुण्य वर्द्धता । धर्मो वर्द्धता । कुल गोत्र चाभिवर्धता, स्वस्ति भद्र नास्तु क्ष्वी क्ष्वी ह स स्वाहा । श्रीमज्जिनेन्द्र-चरणारविदेष्वानन्द-भक्ति सदास्तु ।

इसके पश्चात् निम्नलिखित मगलाष्टक बोलना चाहिए ।

।। श्री मंगलाष्टक ।।

श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा । भास्वत्पाद-नखेन्दव प्रवचनाम्भोधीदव. स्थायिन ।। ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठका साधव । स्तुत्या योगिजनैश्च पचगुरव कुर्वन्तु ते मगल ।।१।। नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रि-भुवन-ख्याताश्चतुर्विशति । श्रीमन्तो भरते-श्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।। ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लागलधरा सप्तत्तोराविशति—स्त्रैलोक्ये-प्रथितास्त्रिपष्ठि-पुरुपा कुर्वन्तु ते मगलम् ।। २ ।। ये पञ्चौषधि-ऋद्धय श्रुततपो वृद्धिगता पच ये । ये चाष्टाग-महा-निमित्त-कुशलाश्चाष्टौविधाश्चारिणा ।। पञ्चज्ञान-धराश्च

येपि विपुला ये बुद्धिऋद्धीश्वरा । सप्तैते सकलाश्च ते मुनिवरा कुर्वन्तु ते मगलम् ।। ३ ।। ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामर-गृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिता । जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।। इष्वाकार-गिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे । शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वन्तु ते मगलम् ।।४।। कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिरभूत् वीरस्य पावापुरे । चम्पाया वसुपूज्य–सज्जिनपते सम्मेदशैलेऽर्हंता ।। शेषाणामपि चोर्ज्जयन्त–शिखरे नेमीश्वरस्यार्हत । निर्वाणावनय प्रसिद्धमहिता कुर्वन्तु ते मगलम् ।।५।। यो गर्भावतरोत्सवेऽप्यर्हंता जन्माभिषेकोत्सवे । यो जात परिनिष्क्रमस्य विभवे य केवल-ज्ञान-भाक् ।। य कैवल्य-पुर-प्रवेश-महिमा सभावित स्वर्गिभि । कल्याणानि च तानि पञ्च सतत कुर्वन्तु ते मगलम् ।। ६ ।। जायन्ते जिन-चक्रवर्ति-बलभृद्भोगीन्द्र-कृष्णादयो । धर्मादेव दिगगनाग-विलसच्छश्वद्यशश्चन्दना ।। तद्धीना नरकादि-योनिषु नरा दुख सहन्ते ध्रुवम् । स स्वर्गात्सुखरामणीयक-पद कुर्वन्तु ते मगलम् ।।७।। सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते ।सपद्य त रसायन विषमपि प्रीति विधत्ते रिपु ।। देवा यान्ति वश प्रसन्न-मनस किं वा बहु ब्रूमहे । धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगै कुर्वन्तु ते मगल ।।८।। इत्थ श्री जिन–मगलाष्टकमिद सौभाग्यसम्पत्करम् । कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणा–मुखा ।। ये शृण्वति पठति ते च सुजना.धर्मार्थ–कामान्विता । लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता कुर्वन्तु ते मगलम् ।। ९ ।।मगलम् भगवान् वीरो, मगलम् गौतमो गणी । मगलम् कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मगलम् ।।

।। इति मङ्गलाष्टकम् ।।

सिद्धचक्र की आरती एव भजन पुस्तक के अन्त मे है । वहा पाठक देखे ।

ॐ नम. सिद्धेभ्य ।

कविवर पं० सन्तलालजी कृत

सिद्ध चक्र विधान ।

.·. मंगलाचरण .·.

दोहा:—जिनाधीश शिवईश नमि, सहसगुणित विस्तार ।
सिद्धचक्र पूजा रचौं, शुद्ध त्रियोग संभार ॥ १ ॥
नीत्याश्रित धनपति सुधी, शीलादिक गुन खान ।
जिनपद अम्बुज भ्रमर मन, सो प्रशस्त यजमान ॥ २ ॥
देश काल विधि निपुणमति, निर्मल भाव उदार ।
मधुरबैन नयना सुघर, सो याजक निरधार ॥ ३ ॥

रत्नत्रयमंडित महा, विषय कषाय न लेश
संशय हरण सुहित करन, करत सुगुरु उपदेश ।। ४ ।।

छप्पय छंदः—निर्मल मंडप भूमि दरव-मंगल करि सोहत ।
सुरभि सरस शुभ पुष्प-जाल मंडित मन मोहत ।।
यथायोग्य सुन्दर मनोज्ञ, चित्राम अनूपा ।
दीरघ मोल सुडोल, वसन झखझोल सरूपा ।।
हो वित्तसार प्रासुक दरब, सरब अंग मनको हरै ।
सो महाभाग आनंद सहित, जो जिनेन्द्र अर्चा करै ।।५।।

दोहाः—सुर मुनि मन आनन्द कर, ज्ञान सुधारस धार ।
सिद्धचक्र सो थापहूं, विधि-दव-जल उनहार ।। ६ ।।

अडिल्लः—अर्हं शब्द प्रसिद्ध अर्द्ध मात्रिक कहा,
अकारादि स्वर मंडित अति शोभा लहा ।
अति पवित्र अष्टांग अर्घ करि लायके,
पूरव दिशि पूजे अष्टांग नमायके ।। ७ ।।

ॐ ह्री अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नम, पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठाः—वर्ण कवर्ग महान, अष्ट पूर्वविधि अर्घ ले ।
भक्ति भाव उर ठान, पूजो हो आग्नेय दिशि ॥ ८ ॥

ॐ ह्री अर्हं क ख ग घ ङ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये अग्निदिशि अर्घ्यं नि० स्वाहा

वर्ण चवर्ग प्रसिद्ध, वसुविधि अर्घ उतारिके ।
मिलि है वसुविधि रिद्धि, दक्षिण दिशि पूजा करौ ॥ ९ ॥

ॐ ह्री अर्हं च छ ज झ ञ अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये दक्षिणदिशि अर्घ्यं नि० ।

वर्ण टवर्ग प्रशस्त, जलफलादि शुभ अर्घ ले ।
पाऊँ सब विधि स्वस्ति, नैऋत्य दिशि अर्चा करो ॥ १० ॥

ॐ ह्री अर्हं ट ठ ड ढ ण अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये नैऋत्यदिशि अर्घ्यं नि० ।

वर्ण तवर्ग मनोग, यथायोग्य कर अर्घ धरि ।
मिलि है सब शुभ योग, पूजन करि पश्चिम दिशा ॥ ११ ॥

ॐ ह्री अर्हं त थ द ध न अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये पश्चिमदिशि अर्घ्यं नि० ।

वर्ग पवर्ग सुभाग, करूं आरती अर्घ ले।
सब विधि आरति त्याग, वायव दिशि पूजा करों ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये वायव्यदिशि अर्घ्यं नि०।

वर्ण यवर्गी सार, दर्व अर्घ वसु द्रव्य करि।
भाव अर्घ उर धार, उत्तर दिशि पूजा करों ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि अर्घ्यं नि०।

शेष वर्ण चउ अन्त, उत्तम अर्घ बनाइकें।
नशे कर्म वसु भंत, पूजो हो ईशान दिशि ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहतपराक्रमाय सिद्धाधिपतये ईशानदिशि अर्घ्यं नि०।

स्थापना (छप्पय छन्द)

ऊरध अधो सरेफ बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधि धर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥

पुनि ह्रींकार बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणं ।

दोहा:—सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्म रहित निःरोग ।
सकल सिद्ध पूजों सदा, मिटैं उपद्रव योग ॥

इति यन्त्रस्थापनार्थं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

॥ अथाष्टक—(चाल-नन्दीश्वर द्वीप पूजा की) ॥

शीतल शुभ सुरभि सु नीर, कञ्चन कुम्भ भरों ।
पाऊँ भवसागर तीर, आनन्द भेंट धरो ॥
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं ।
नमूं सिद्धचक्र शिव–भूप, अचल विराजत हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसमत्तणाण–दंसण–वीरज सुहमत्तहेव अवग्गाहणं अगुरुलघुमव्वावाह अष्टगुणमयुक्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

चन्दन तुम वन्दन हेत, उत्तम मान्य गिना ।

नातर सब काष्ट समेत, ईंधन ही थपना ॥
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपमेष्ठिने नम. श्रीसमत्तणाणदसणवीरज सुहमत्तहेंव अवगाहण अगुरुलघुमव्वाह अष्टगुण-सयुक्ताय चन्दनम् नि० ॥२॥

दीरघ शशि किरण समान, अक्षत ल्यावत हूँ।
शशिमंडल सम बहुमान, पूज रचावत हूँ ॥
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ॥अक्षतं ।३।
तुम चरण चन्द्र के पास, पुष्प धरे सोहैं।
मानूं नक्षत्रन की रास, सोहत मन मोहैं ॥
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत है।
नमूँ सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है ।पुष्पं०॥४॥
उत्तम नेवज बहु भांति, सरस सुधा साने।

अहिमिन्द्रन मन ललचाय, भक्षण उमगाने।
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं। नैवेद्यं ॥५॥
फैली दीपन की जोति, अति परकाश करै।
जिम स्याद्वाद उद्योत संशय तिमिर हरै।
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत है।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं॥ दीपं० "६॥
धरि अग्नि धूप के ढेर, गंध उडावत हूँ।
कर्मों की धूप बखेर, ठोंक जरावत हूँ॥
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत है।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत है॥ धूपं० ॥७॥
जिन धर्म वृक्षकी डाल, शिवफल सोहत है।
इस शुभ फल कंचन थाल,, भविजन मोहत हैं।
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।

नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप, अचल विराजत हैं ॥८॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नमः श्रीसम्मत्तणाणदसंण-वीरज सुहमत्तहेव अवग्गाहण्ण अगुरुलघुमव्वाबाह अष्टगुणसयुक्ताय फल निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

करि दर्प अर्घ वसु जात, यातैं ध्यावत हूँ।
अष्टांग सुगुण विख्यात, तुम ढिग पावत हूँ।
अन्तरगत अष्ट स्वरूप, गुणमई राजत हैं।
नमूं सिद्धचक्र शिव-भूप अचल विराजत हैं ॥६॥ अर्घ्यं०

गीता छन्द-निर्मल सलिल शुभवास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं, चरु प्रचुरस्वाद सुविधि घनी।
करि दीपमाल उजाल धूपायन, रसायन फल भले।
करि अर्घ सिद्धसमूह पूजत, कर्म दल सब दलमले ॥१॥
ते कर्म नशाय युगप्रकृति, ज्ञान निर्मलरूप हैं।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप हैं॥
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती।

मुनि ध्येय सेय अमेय चहुं गुण, ज्ञेय द्यो हम शुभमती ।२।

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये नम: सम्मत्तणाणादि अट्ठगुणाण अनर्घ्य पदप्राप्तये महार्घ्यम् ।

अथ अष्टगुण अर्घ (चौपाई १६ मात्रा)

मिथ्या त्रय चउ आदि कषाया, मोहनाश छायक गुण पाया ।
निज अनुभव प्रत्यक्ष सरूपा, नमूं सिद्ध समकित गुणभूपा ॥१॥

ॐ ह्री सम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं ॥ १ ॥

सकल त्रिधा षट् द्रव्य अनन्ता, युगपत जानत हैं भगवंता ।
निर आवरण विशद स्वाधीना, ज्ञानानन्द परम रस लीना ॥२॥

ॐ ह्री अनन्तज्ञानाय नम अर्घ्यं ॥ २ ॥

चक्षु अचक्षु अवधि विधि नाशी, केवल दर्श ज्योति परकाशी ।
सकल ज्ञेय युगपत अवलोका, उत्तम दर्श नमूं सिद्धों का ॥३॥

ॐ ह्री अनन्तदर्शनाय नम: अर्घ्यं ॥ ३ ॥

अन्तराय विधि प्रकृति अपारा, जीवशक्ति घाते निरधारा ।
ते सब घात अतुल बल स्वामी, लसत अखेद सिद्ध प्रणमामी ॥४॥

ॐ ह्री अनन्तवीर्याय नमः अर्घ्यं ॥ ४ ॥

रूपातीत मन इन्द्रिय नाहीं, मनपर्यय हू जानत नाहीं।
अलख अनूप अमित अधिकारी, नमूं सिद्ध सूक्षम गुणधारी ॥५॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वाय नम अर्घ्यं ।५॥

एक क्षेत्र अवगाह स्वरूपा, भिन्न भिन्न राजै चिद्रूपा।
निज परघात विभाग विडारा, नमूं सुहित अवगाह अपारा ॥६॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वाय नम अर्घ्यं ॥६॥

परकृत ऊँच नीच पद नाहीं, रमत निरंतर निज पद माहीं।
उत्तम अगुरुलघु गुण भोगी, सिद्धचक्र ध्यावै नित योगी ॥७॥

ॐ ह्रीं अगुलघुत्वात्मकजिनाय नम अर्घ्यं ॥७॥

नित्य निरामय भव भय भंजन, अचल निरंतर शुद्ध निरंजन।
अव्याबाध सोई गुण जानो, सिद्धचक्र पूजन मन मानो ॥८॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वाय नमः अर्घ्यं ॥८॥

यहां १०८ बार 'ओ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः' मन्त्र का जप करें।

अथ जयमाला

दोहा—जग आरत भारत महा, गारत करि जय पाय।
विजय आरती तिन कहूं, पुरुषारथ गुणगाय ॥१॥

पद्धरी छन्द

जय करण कृपाण सुप्रथमवार, मिथ्यात सुभट कीनो प्रहार ।
दृढ कोट विपर्यय मति उलंघि, पायो समकित थलथिर अभंग ॥१॥
निज पर विवेक अंतर पुनीत, आतम रुचि वरती राजनीत ।
जग विभव विभाव असार एह, स्वातम सुखरस विपरीत देह ॥२॥
तिन नाशन लीनो दृढ संभार, शुद्धोपयोग चित चरण सार ।
निर्ग्रन्थ कठिन मारग अनूप, हिंसादिक टारण सुलभ रूप ॥३॥
द्वयबीस परीषह सहन वीर, बहिरंतर संयम धरण धीर ।
द्वादश भावन दशभेद धर्म, विधि नाशन बारह तपसु पर्म ॥४॥
शुभ दयाहेत धरि समिति सार, मन शुद्धकरणत्रय गुप्त धार ।
एकाकी निर्भय निःसहाय, विचरो प्रमत्त नाशन उपाय ॥५॥
लखि मोहशत्रु परचंड जोर, तिस हनन शुकल दल ध्यान जोर ।
आनन्द वीररस हिये छाय, क्षायक श्रेणी आरम्भ थाय ॥६॥
बारम गुण थानक ताहि नाश, तेरम पायो निजपद प्रकाश ।

नव केवललब्धि विराजमान, दैदीप्यमान सोहे सुभान ॥७॥
तिस मोह दुष्ट आज्ञा एकांत, थी कुमति स्वरूप अनेक भांति।
जिनवाणी करि ताको विहंड, करि स्याद्वाद आज्ञा प्रचंड ॥८॥
बरतायो जग में सुमति रूप, भविजन पायो आनन्द अनूप।
थे मोह नृपति दुखकरण शेष, चारों अघातिया विधि विशेष ॥९॥
है नृपति सनातन रीति एह, अरि विमुख न राखे नाम तेह।
यो तिन नाशन उद्यम सु ठानि, आरंभ्यो परम शुकल सु ध्यान ।१०।
तिस बलकरि तिनकी थिति विनाश, पायो निर्भय सुखनिधि निवास।
यह अक्षय जोति लई अबाधि. पुनि अंश न व्यापो शत्रु बाध ॥११॥
शास्वत स्वाश्रित सुखश्रेय स्वामि, है शांति संत तुम कर प्रणाम।
अंतिम पुरुषारथ फल विशाल. तुम विलसौ सुखसौ अमित काल ।१२।

ॐ ह्रीं सम्मत्तणाणादि-अष्टगुणसंयुक्तसिद्धेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

घत्ता—परसमय विदूरित पूरित निजसुख समयसार चेतनरूपा।
नानाप्रकार विकार हुतै सब टार लसै सब गुणभूषा ॥

ते निरावर्ण निर्देह निरुपम सिद्धचक्र परसिद्ध जजूं ।
सुर मुनि नित ध्यावै आनन्द पावैं, मैं पूजत भवभार तजूं ॥

इत्याशीर्वाद: ॥ इति प्रथम पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ द्वितीय पूजा ।

छप्पय छन्द—ऊरध अधो सरेफ बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वरलिप्त कर्णिका अन्त सु छाजै ।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम. सुर ध्यावत अरि नागको
ह्वै केहरिसम पूजन निमित. सिद्धचक्र मंगल करो १

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाण श्रीसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम: षोडशगुणसयुक्तसिद्धपरमेष्ठिन् अत्राव-तरावतर सवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ: स्थापन । अत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

दोहा—सूक्ष्मादि गुण सहित है, कर्म रहित नीरोग ।
सिद्धचक्र सो थापहूं, मिटै उपद्रव जोग ॥

॥ अथाष्टक ॥

गीता छंद—हिमशैल धवल महान् कठिन पाषाण तुम जस रासते,
शरमाय अरु सकुचाय द्रव ह्वै बहो गंगा तासतै।
सम्बन्ध योग चितार चित भेटार्थ झारी मे भरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥१॥

ॐ ह्री णमोसिद्धपरमेष्ठिने नम श्रीसमत्तणाणदसणवीर्यसुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलगुमव्वावाह् षोडशगुणसयुक्ताय जल निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर चन्दन आदि अन्तर बाह्य बहुविधि तप हरै,
यह कार्य कारण लखि नमित मम भाव हू उद्यम करै।
मै हूं दुखी भवताप से घसि मलय चरणन ढिग धरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥२॥

ॐ ह्री णमोसिद्धाण श्रीसिद्धपरमेष्ठिने नम श्रीसमत्तणाण दसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह् षोडशगुणसयुक्ताय चन्दन नि०।

सौरभि चमक जिस सह न सकि अम्बुज वसै सरताल मे,
शशि गनन बसि नित होत कृश अहिनिश भ्रमै इस ख्यालमे।

सो अक्षतौघ अखण्ड अनुपम पुंज धरि सन्मुख धरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ।। अक्षतं ।।३।।
जग प्रकट काम सुभट विकट कर हट करत जिय घट जगा,
तुम शील कटक सुघट निकट सरचाप पटक सुभट भगा ।
इम पुष्पराशि सुवास तुम ढिंग कर सुयश बहु उच्चरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ।।पुष्पं।। ४ ।।
जीवन सतावत नहिं अघावत क्षुधा डाइनसी बनी ।
सो तुम हनी तुम ढिग न आवत जान यह विधि हम ठनी ।
नैवेद्यके संकेत करि निज क्षुधानाशन विधि करूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं।। नैवेद्यं ।।५।।
मै मोह अन्ध अशक्त अरु यह विषम भववन है महा,
ऐसे रुले को ज्ञानदुति बिन पार निवरण को कहा ।
सो ज्ञान चक्षु उधार स्वामी दीप ले पायनि परूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ।।दीपं।।६।।

प्रासुक सुगंधित द्रव्य सुन्दर दिव्य घ्राण सुहावनो,
धरि अग्नि दश दिश वास पूरित ललित धूम्र सुहावनो ।
तुम भक्ति भाव उमंग करत प्रसंग धूप सु विस्तरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥धूपं॥७॥
चित हरन अर्चित सुरंग रसपूरित विविध फल सोहने,
रसना लुभावन कल्पतरुके सुर असुर मन मोहने ।
भरिथाल कंचन भेट धरि संसार फल तृष्णा हरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥फलं॥८॥
शुभ नीर वर काश्मीर चंदन धवल अक्षत युत अनी,
वर पुष्पमाल विशाल चरु सुरमाल दीपक दुति मनी ।
वर धूप पक्क मधुर सुफल लै अर्घ अठ विधि संचरूं,
षोडश गुणान्वित सिद्धचक्र चितार उर पूजा करूं ॥अर्घ्यं॥९॥
निर्मल सलिल शुभवास चंदन धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमै चरु प्रचुर स्वाद सुविधि घनी ।

करि दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत कर्मदल सब दलमले ॥
ते कर्मवर्त नशाय युगपत ज्ञान निर्मलरूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण सूक्षम सरूप अनूप है।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य अछेद शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अमेय चाहूं, ज्ञेय द्यो हम शुभमती ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नम सम्मतणाणादि-गुणसयुक्ताय महार्घ्यं।

अथ सोलहगुण सहित अर्घ (त्रोटक छन्द)

दर्शन आवर्णी प्रकृति हनी, अथिता अवलोक सुभाव बनी।
इक साथ समान लखो सब ही, नमु सिद्ध अनंत दृगन अबही ॥१॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाय नमः अर्घ्यं।

विधि ज्ञानावर्णी विनाश कियो, निज ज्ञान स्वभाव विकास लियो।
समयांतर सर्व विशेष जनों. नमु ज्ञान अनंत सु सिद्ध तनो ॥२॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानाय नम अर्घ्यं।

सुख अमृत पीवत स्वेद न हो, निज भाव विराजत खेद न हो ।
असमान महाबल धारत है, हम पूजत पाप बिडारत है ॥३॥
ॐ ह्री अतुलवीर्याय नम. अर्घ्यं ।

विपरीत सभीत पराश्रितता, अतिरिक्त धरै न करै थिरता ।
परकी अभिलाष न सेवत है, निज भाविक आनन्द बेवत हैं ॥४॥
ॐ ह्री अनन्तसुखाय नम अर्घ्यं ।

निज आत्म विकाशक बोध लह्यो, भ्रम को परवेश न लेश कह्यो ।
निजरूप सुधारस मग्न भये, हम सिद्धन शुद्ध प्रतीति नये ॥५॥
ॐ ह्री अनन्तसम्यक्त्वाय नमः अर्घ्यं ।

निज भाव विडार विभाव न हो, गमनादिक भेद विकार न हो ।
निजथान निरूपम नित्य बसे, नमुं सिद्ध अनाचल रूप लसै ॥६॥
ॐ ह्री अचलाय नम अर्घ्यं ।

चौपई—गुणपर्यय परणतिके भेद, अति सूक्षम असमान अखेद ।
ज्ञान गहे, न कहै जड़ बैन, नमो सिद्ध सूक्षम गुण ऐन ॥७॥
ॐ ह्री अनन्तसूक्ष्मत्वाय नम. अर्घ्यं ।

जन्म मरण युत धरे न काय, रोगादिक संक्लेश न पाय।
नित्य निरंजन निर अविकार, अव्याबाध नमो सुखकार ।८।

ॐ ह्री अव्याबाधाय नम अर्घ्यं ।

एक पुरुष अवगाह प्रजंत, राजत सिद्ध समूह अनंत।
एकमेक बाधा नहिं लहै, भिन्न भिन्न निजगुण में रहै ॥६॥

ॐ ह्री अवगाहनगुणाय नम अर्घ्यं ।

काययोग पर्यापति प्रान, अनवधि छिन छिन होवे हान।
जरा कष्ट जग प्रानी लहै, नमों सिद्ध यह दोष न सहै ॥१०॥

ॐ ह्री अजराय नमः अर्घ्यं ।

काल अकाल प्राणको नाश, पावै जीव मरणको त्रास।
तासौ रहित अमर अविकार, सिद्ध समूह नमूं सुखकार ॥११॥

ॐ ह्री अमराय नम. अर्घ्यं ।

गुण गुण प्रति है भेद अनन्त, यो अथाह गुणयुत भगवंत।
है परमाण अगोचर तेह, अप्रमेय गुण बंदूं एह ॥१२॥

ॐ ह्री अप्रमेयाय नमः अर्घ्यं ।

भुजगप्रयात छन्द ।

अनुक्रमतें फर्स वर्णादि जानो, किसी एक वीशेषको किं प्रमानो ।
पराधीन आवर्ण अज्ञान त्यागी, नमूं सिद्ध विगतेन्द्रिय ज्ञान भागी ।१३।

ॐ ह्री अतीन्द्रियज्ञानधारकाय नम अर्घ्यं ।

त्रिधा भेद भावित महा कष्टकारे, रमण भावसो आकुलित जीव सारे ।
निजानंद रमणीय शिवनारस्वामी, नमो पुरुष आकृति सबै सिद्ध नामी।।

ॐ ह्री अवेदाय नम अर्घ्यं ।

विशेषं सकल चेतना धार मांही, भये लै भली विधि रहौ भेद नाहीं ।
तथाहीन अधिकार्थको भाव टारी, नमो सिद्ध पूरणकला ज्ञानधारी।१५।

ॐ ह्री अभेदाय नम अर्घ्यं ।

निजानन्दरस स्वादमे लीन अंता, मगन हो रहै रागवर्जित निरंता ।
कहांलो कहूँ आपको पार नाहीं, धरो आपको आपही आपमाहीं ।१७।

ॐ ह्री निजाधीनजिनाय नम· अर्घ्यं ।

यहा १०८ बार जाप देना चाहिये ।

अथ जयमाला

दोहा—पंच परम परमात्मा, रहित कर्मके फंद ।
जगत प्रपंच रहित सदा, नमो सिद्ध सुखकंद ॥

त्रोटक छन्द ।

दुखकारन द्वेष विडारन हो, वश डारन राग निवारन हो ।
भवितारन पूरणकारण हो, सब सिद्ध नमों सुखकारण हो ॥१॥
समयामृत पूरित देव सही, पर आकृत मूरति लेश नहीं ।
विपरीत विभाव निवारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारण हो ॥२॥
अखिना अभिना अछिना सुपरा, अभिदा अखिदा अविनाशवरा ।
यम–जाम जरा दुखजारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारण हो ॥३॥
निर आश्रित स्वाश्रित वासित हो, परकाश्रित खेद विनाशित हो ।
विधि धारन हारन पारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारण हो ॥४॥
अमुधा अछुधा अद्विधा अविधं, अकुधा सुसुधा सुबुधा सुसिधं ।
विधि कानन दहन हुताशन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारणहो ॥५॥

शरणं चरणं वरणं करणं, धरणं चरणं मरणं हरणं ।
तरनं भव वारिधि तारन हो, सब सिद्ध नमों सुखकारण हो ॥६॥
भववास-त्रास विनाशन हो, दुखरास विनास हुताशन हो ।
निज दासन त्रास निवारन हो सब सिद्ध नमों सुखकारन हो ॥७॥
तुम ध्यावत शाश्वत व्याधि दहै, तुम पूजत ही पद पूजि लहै ।
शरणागत संत उभारन हो, सब सिद्ध नमो सुखकारण हो ॥८॥
दोहा—सिद्धवर्ग गुण अगम है, शेष न पावै पार ।
हम किह विधि वरणन करै, भक्ति भाव उर धार ॥९॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनज्ञानादिषोडश-गुण युक्त-सिद्धेभ्यो महार्घ्यं नि० । इति द्वितीय पूजा सम्पूर्णम् ।

अथ तृतीय पूजा बत्तीस गुणसहित

छप्पय छन्द—ऊरध अधो सरेफ बिन्दु हंकार बिराजै,
अकारादि स्वर लिप्तकर्णिका अंत सु छाजै ।
वर्गनिपूरित वसुदल अम्बुजतत्व संधिधर,
अग्रभाग में मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥

पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको ।
ह्वैं केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् बत्तीस गुण सहित विराजमान अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

दोहा—सूक्ष्मादि गुण सहित है, कर्म रहित नीरोग ।
सकल सिद्ध सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग ॥

इति यंत्रस्थापन ।

अथाष्टक

प्रभु पूजोरें भाई, सिद्धचक्र बत्तीसगुण, प्रभु पूजोरे भाई ।
भवत्रासित आकुलित रहै, भवि कठिन मिटन दुखताई ॥
विमल चरण तुम सलिल धार दे, पायो सहज उपाई ॥प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहणा अगुरुलघमव्वावाहं बत्तीसगुणमयुक्ताय जन्मजरारोगविनाशनाय जल ॥ १ ॥

जगवंदन परसत पद चन्दन, महाभाग उपजाई ।
हरिहर आदि लोकवर उत्तम, कर धर शीश चढाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह् बत्तीसगुणसयुक्ताय समारतापविनाशनाय चन्दनं० ।। २ ।।

शिवनायक पूजन लायक हैं, यह महिमा अधिकाई ।
अक्षयपद दायक अक्षत यह, सांचो नाम धराई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह् बत्तीसगुणसयुक्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ।। ३ ।।

*कामदाह अति ही दुखदायक, मम उरसे न टराई ।
ताहि निवारण पुष्प भेट धरि, मांगू वर शिवराई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीय सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाहं बत्तीसगुणसयुक्ताय कामबाणविनाशनाय पुष्प ।। ४ ।।

चरुवर प्रचुर क्षुधा नहीं मेटत पूर परौ इन ताई ।

---

* । आप आप कर पुष्पचाप धर मम उर शरण उपाई ।
यह निश्चय करि पुष्प भेट धरि मांगू वर शिवराई ।। ऐसा पाठ भी है ।

भेंट करत तुम इनहूं न भेटूं, रहूँ चिरकाल अघाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्नी नमो सिद्धाण श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह बत्तीसगुणसयुक्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य ।। ५ ।।

दिव्य रत्न इस देश कालमे, कहै कौन है नांई ।
तुम पद भेटे दीप प्रकट यह चिंतामणि पद पाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्नी नमो सिद्धाण श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह बत्तीसगुणसयुक्ताय मोहाधकार विनाशनाय दीप ।। ६ ।।

धूप हुताशन वासनमे धर, दसदिश वास वसाई ।
तुम पद पूजत या विधि वसु विधि, ईधन जर हो छाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्नी नमो सिद्धाण श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह बत्तीसगुणसयुक्ताय अष्टकर्मदहनाय धूप ।। ७ ।।

सर्वोत्तम फल द्रव्य ठान मन, पूजूं हूं तुम पाई ।
जासौ जजै मुक्तिपद पइये, सर्वोत्तम फलदाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्नी नमो सिद्धाण श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह बत्तीसगुणसयुक्ताय मोक्षफलप्राप्ताय फल ।। ८ ।।

वसुविधि अर्घ देऊं तुम मम द्यौ, वसुविधि गुण सुखदाई ।
जासु पाय वसु त्रास न पाऊं, "सन्त" कहे हर्षाई ।।प्रभु पूजोरे०

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण श्रीसिद्धपरमेष्ठिने श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह बत्तीसगुणसयुक्ताय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं ।। ६ ।।

गीता छन्द ।

निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमे चरु प्रचुर स्वाद सुविधि घनी ।
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले ।।
ते कर्म प्रकृति नसाय युगपत, ज्ञान निर्मल रूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है ।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अमेय चाहूं, ज्ञेय द्यो हम शुभमती ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धचक्राधिपतये नमः सम्मत्तणाणादि अष्टगुणाय महार्घ्यं ।

अथ भिन्न २ बत्तीस गुणों के अर्घ । पद्धड़ी छन्द

चेतन विभाव पुद्गल विकार, है शुद्ध बुद्ध तिस निमित टार ।
दृगबोध सुरूप सुभाव एह, नमूं शुद्ध चेतना सिद्ध देह ॥१॥

ॐ ह्रीं शुद्ध चेतनाय नम अर्घ्यं ।

मति आदि भेद विच्छेद कीन, छायक विशुद्ध निज भाव लीन ।
निरपेक्ष निरन्तर निर्विकार, नमूं शुद्ध ज्ञानमय सिद्ध सार ॥२॥

ॐ ह्रीं शुद्धज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

सर्वांग चेतना व्याप्तरूप, तुम हो चेतन व्यापक सरूप ।
परलेश न निज परदेश मांहि, नमूं सिद्ध शुद्ध चिद्रूप ताहि ॥३॥

ॐ ह्रीं शुद्धचिद्रूपाय नम अर्घ्यं ।

अन्तरविधि उदय विपाक टार, तुम जातिभेद बाहिज विडार ।
निज परिणतिमे नहीं लेश शेष, नमूं शुद्धरूप गुणगण विशेष ॥५॥

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

रागादिक परिणतिको विध्वंश, आकुलित भाव राखो न अंश ।

पायो निज शुद्ध स्वरूप भाव, नमूं सिद्धवर्ग धर हिये चाव ॥५॥

ॐ ह्री परम शुद्धस्वरूपभावाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—तिहूं काल मे ना डिगे, रहै निजानन्द थान ।
नमूं शुद्ध दृढ़ गुण सहित, सिद्धराज भगवान ॥६॥

ॐ ह्री शुद्धदृढाय नम अर्घ्यं ।

निज आवर्तकमे बसे, नित ज्यो जलधि कलोल ।
नमूं शुद्ध आवर्तकी, करि निज हिये अडोल ॥७॥

ॐ ह्री शुद्धआवर्तकाय नम अर्घ्यं ।

परकृत कर उपज्यो नहीं, ज्ञानादिक निज भाव ।
नमो सिद्ध निज अमलपद, पायो सहज सुभाव ॥८॥

ॐ ह्री शुद्धस्वयंभवे नम अर्घ्यं ।

पद्धरी छन्द–निजसिद्ध अनन्त चतुष्ट पाय, निजशुद्ध चेतना पुंजकाय ।
निजशुद्ध सबै पायो संयोग, तुम सिद्धराज सुशुद्ध जोग ॥९॥

ॐ ह्री शुद्धयोगाय नम अर्घ्यं ।

एकेन्द्रिय आदिक जातभेद, हीनाधिक नामा प्रकृति छेद ।
संपूरण लब्धि विशुद्ध जात, हम पूजैं है पद जोर हाथ ।।१०।।

ॐ ह्री शुद्धजाताय नम अर्घ्यं ।

दोहा—महातेज आनन्दघन, महातेज परताप ।
नमो सिद्ध निजगुण सहित, दीपै अनूपम आप ।।११।।

ॐ ह्री शुद्धतपसे नम अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द-वर्णादिकको अधिकार नाहिं, संथान आदि आकार नाहिं ।
अति तेजपिंड चेतन अखंड, नमूं शुद्ध मूर्तिक कर्म खंड ।।१२।।

ॐ ह्री शुद्धमूर्तये नम अर्घ्यं ।

बाहिज पदार्थ को इष्ट मान, नहिं रमत ममत तासो जु ठान ।
निज अनुभवरसमें सदालीन, तुम शुद्धसुखी हम नमन कीन ।१३।

ॐ ह्री शुद्धसुखाय नम. अर्घ्यं ।

दोहा—धर्म अर्थ अरु काम बिन, अन्तिम पौरुष साध ।
भये शुद्ध पुरुषारथी, नमूं सिद्ध निरबाध ।।१४।।

ॐ ह्री शुद्धपौरुषाय नम अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द-पुद्गल निरमापित वर्ण युक्त, विधि नाम रचित तासो विमुक्त
पुरुषांकित चेतनमय प्रदेश, ते शुद्ध शरीर नमूं हमेश ॥१५॥
ॐ ह्री शुद्धशरीराय नमः अर्घ्यं ।

दोहा——पूरण केवल ज्ञान–गम्य, तुम स्वरूप निर्बाध ।
और ज्ञान जाने नहीं, नमो सिद्ध तज आध ॥१६॥
ॐ ह्री शुद्धप्रमेयाय नम अर्घ्यं ।

दरशन ज्ञान सुभेद है, चेतन लक्षण योग ।
पूरण भई विशुद्धता, नमों शुद्ध उपयोग ॥१७॥
ॐ ह्री शुद्धोपयोगाय नम. अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द-परद्रव्य जनित भोगोपभोग, ते खेदरूप प्रत्यक्ष योग ।
निजरस स्वादन है भोगसार, सो भोगो तुम हम नमस्कार ॥
ॐ ह्री शुद्धभोगाय नम. अर्घ्यं ।

दोहा——निर्ममत्व युगपद लखो, तुम सब लोकालोक ।
शुद्ध ज्ञान तुमकों लखो, नमों शुद्ध अवलोक ॥१८॥
ॐ ह्री शुद्धावलोकाय नमः अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द-निरइच्छुक मन वेदी महान, प्रज्वलित अग्नि है शुक्लध्यान।
निर्भेद अर्घ दें मुनि महान, तुम ही पूजत अर्हंत जान ॥२०॥

ॐ ह्री अर्हं प्रज्वलितशुक्लध्यानाग्निजिनाय नम· अर्घ्यं ।

दोहा—आदि अन्त वर्जित महा, शुद्ध द्रव्य की जात।
स्वयं सिद्ध परमात्मा, प्रणमूं शुद्ध निपात ॥२१॥

ॐ ह्री शुद्धनिपाताय नम अर्घ्यं ।

लोकालोक अनन्तवे, भाग बसो तुम आन।
ये तुमसो अति भिन्न हैं, शुद्ध गर्भ यह जान ॥२२॥

ॐ ह्री शुद्धगर्भाय नम अर्घ्यं ।

लोकशिखर शुभ थान है, तथा निजातम वास।
शुद्ध वास परमात्मा, नमों सुगुण की रास ॥२३॥

ॐ ह्री शुद्धवासाय नम· अर्घ्यं ।

अति विशुद्ध निज धर्म में, वसत नशत सब खेद।
परम वास नमि सिद्धको, वासी वास अभेद ॥२४॥

ॐ ह्री विशुद्धपरमवासाय नमः अर्घ्यं ।

बहिरंतर द्वै विधि रहित, परमातम पद पाय।
निरविकार परमात्मा, नमूं नमूं सुखदाय ॥२५॥
ॐ ह्रीं शुद्धपरमात्मने नम. अर्घ्यं।

हीन अधिक इक देशको, विकल विभाव उछेद।
शुद्ध अनन्त दशा लई, नमूं सिद्ध निरभेद ॥२६॥
ॐ ह्रीं शुद्धअनन्ताय नम. अर्घ्यं।

त्रोटक छन्द-तुमराग विरोध विनाश कियो, निजज्ञान सुधारस स्वाद लियो।
तुमपूरण शांतिविशुद्ध धरो, हमको इकदेश विशुद्ध करो ॥२७॥
ॐ ह्रीं शुद्धशाताय नम अर्घ्यं।

विद पंडित नाम कहावत है, विद अन्त जु अन्तहि पावत है।
निजज्ञान प्रकाश सु अन्त लहो, कुछ अंश न जानन माहिं रहो ॥
ॐ ह्रीं शुद्धविदताय नमः अर्घ्यं।

वरणादिक भेद विडारन हो, परिणाम कषाय निवारन हो।
मन इन्द्रिय ज्ञान न पावत हो, अति शुद्ध निरूपम ज्योति मही ।२६।
ॐ ह्रीं शुद्धज्योतिजिनाय नम. अर्घ्यं।

जन्मादिक व्याधि न फेरि धरो, मरणादिक आपद नाहिं वरो ।
निर्वाण महान विशुद्ध अहो, जिन शासन में परसिद्ध कहो ॥३०॥

ॐ ह्री शुद्धनिर्वाणाय नम. अर्घ्यं ।

करि अन्त न गर्भ लियो फिरके, जनमे शिववास जनम धरके ।
जिनको फिर गर्भ न हो कबहूं, शिवराय कहाय नमूं अब हूं ।३१।

ॐ ह्री शुद्धसंदर्भगर्भाय नम. अर्घ्यं ।

जगजीवन काम नशायक हो, तुम आप महा सुखनायक हो ।
तुम मंगल मूरति शांति सही, सब पाप नशै तुम पूजत हीं ॥३२॥

ॐ ह्री शुद्धशाताय नम अर्घ्यं ।

दोहा—पंच परमपद ईश है, पंचमगति जगदीश ।
जगत प्रपंच रहित बसे, नमूं सिद्ध जग ईश ॥ ३३ ॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये नम· महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।यहा १०८ बार जाप देना चाहिये

अथ जयमाला

दोहा—परम ब्रह्म परमातमा, परम ज्योति शिवथान ।
परमातम पद पाइयो, नमो सिद्ध भगवान ॥१॥

छन्द कामिनी मोहन मात्रा २०

जन्ममरणकष्टको टारि अमरा भये,जरादिरोग व्याधिपरिहार अजराभये
जयद्विविधि कर्ममल जार अमला भये, जयदुर्विधिटार संसार अचला भये
जय जगतवासतज जगतस्वामी भये,जय विनाशनाम थिरपरम नामी भये
जयकुबुद्धिरूपतजि सुबुधिरूपा भये,जय निषधदोष तज सुगुण भूपा भये ॥
कर्मरिपु नाशकर परम जय पाइए, लोकत्रयपूरि तुम सुजस घन छाइये ।
इन्द्रनागेन्द्र धर शीश तुम पद जजै, महा बैरागरसपाग मुनिगण भजै॥
विघनवन दहनकौं अघनघन पौन हो,सघन गुणरासके,बासको भौनहो ।
शिवतिय वशकरन मोहिनी मंत्र हो, काल छयकार वैताल के यंत्र हो ॥
कोटिथित क्लेशको मेटि शिवकर रहो,उपलकोनकलहोअचलइकथल रहो
स्वप्नमें हू न निजअर्थको पावही, जे महा खलन तुमध्यानधरि ध्यावही
आपके जाप बिन पाप सब भेंट ही, पापकी तापको पाप कब मेंटही ।
"संत" निज दासकी आस पूरी करो, जगतसे काढ निजचरणमें ले धरो।
घता—जय अमल अनूपं शुद्ध, स्वरूपं, निखिल निरूपं धर्म धरा ।

जय विघन नशायक मंगलदायक, तिहुँ जगनायक परमपरा ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये नम. द्वात्रिंशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नम पूर्ण र्घ्यं नि०।

अथ चतुर्थ पूजा चौसठ गुण सहित

अथ चतु.षष्ठि दलोपरि चतुर्थ पूजा उच्यते ।

छप्पय छन्द—ऊरध अधो सुरेफ बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे ।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्व संधिधर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥
फुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण। परिपुष्पाजलिं क्षिपेत्

दोहा—सूक्ष्मादिक गुण सहित है, कर्मरहित नीरोग ।
सिद्धचक्र (सकल सिद्ध) सो थापहूं, मिटै उपद्रव योग ॥

इति यंत्र स्थापन ।

अथाष्टकं । चाल लावनी

सिद्धगण पूजो हरषाई, चौंसठि गुणनामा विधिमाला—
सुमरों सुखदाई, सिद्धगण पूजोरे भाई ॥ आंचली ॥
त्रिभुवन उपमा वास लखै, तुम पद अम्बुज के माई ।
निर्मल जलकी धार देहु, अवशेष करण ताई ॥ सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतु षष्ठिगुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह जन्मजरारोगविनाशनाय जल ॥१॥

तुम पद अम्बुज वास लेन मनु, चन्दन मन माई ।
निजसो गुणाधिक्य संगतिको, लहिय न हर्षाई ॥सिद्ध०॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतु षष्ठिगुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह ससारतापविनाशनाय चदन नि० ॥२॥

क्षीरज धान सुवासित नीरज, करसों छरलाई ।
अंगुलसे तंदुलसो पूजत, अक्षय पद पाई ॥ सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुःषष्ठिगुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि० ॥३॥

धूलि सार छवि हरण विवर्जित, फूलमाल लाई ।
काम शूल निरमूल करणकों, पूजहूं तुम पाई ।। सिद्ध० ।।

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुषष्ठि गुणसहित श्री समत्तणाणदंसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वाबाह कामवाणविनाशनाय पुष्प नि० ।। ४ ।।

भूखा गार अक्षीण रसी हू, पूरति है नाई ।
चारुमाल तुम पद पूजत हों पूरन शिवराई ।। सिद्ध० ।।

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुषष्ठि-गुणसहित श्री समत्तणाणदंसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वाबाह क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ।। ५ ।।

दीपनि प्रति तुम पद नित पूजत, शिव मारग दरशाई ।
घोर अंध संसार हरण को, भली सूझ पाई ।।सिद्ध०।।

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुषष्ठि गुणसहित श्री समतणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वाबाहं मोहांधकारविनाशनाय दीप नि० ।। ६ ।।

कृष्णागरु कर्पूर पूर घट, अगनीसे प्रजलाई ।
उडै धूम यह, उडे किधों जर करमनकी छाई ।।सिद्ध०।।

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुषष्ठि गुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहणं अगुरुलघुमव्वाबाह अष्टकर्मदहनाय धूप नि० ।। ७ ।।

मधुर मनोग सुप्रासुक फलसो, पूजो शिवराई ।
यथायोग विधि फलको दे गुण, फलको अधिकाई ॥सिद्ध०॥

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुर्षष्ठि गुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवगाहण अगुरुलघुमव्वाबाह मोक्षफलप्राप्तये फल ॥ ८ ॥

निरघ उपावन पावन वसुविधि, अर्घ हर्ष ठाई ।
भेट धरत तुम पद पाऊं पद,—निर आकुलताई ॥ सिद्ध० ॥

ॐ ह्री सिद्धपरमेष्ठिने चतुर्षष्ठि गुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवगाहण अगुरुलघुमव्वाबाह सवसुखप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । ९ ॥

अथ चौसठि गुण सहित अर्घ ।

चाल छन्द ।

चउ घाती कर्म नशायो, अरहंत परम पद पायो ।
द्वै धर्म कहो सुखकारा, नमूं सिद्ध भए अविकारा ॥१॥

ॐ ह्री अरहन्त-जिनसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

संक्लेश भाव परिहारी, भए अमल अवधि बलधारी ।
सो अतिशय केवलज्ञाना, उपजाय लियो शिवथाना ॥२॥

ॐ ह्री अवधिजिनसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

निर्मल चारित्र समारा, परमावधि पटल उधारा ।
केवल पायो तिस कारण, नमूं सिद्ध भये जग तारण ॥३॥

ॐ ह्री णमो परमावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

वर्द्धमान विशद परिणामी, सर्वावधिके हो स्वामी ।
अन्तिम वसुकर्म नसाया, नमूं सिद्ध भये सुखदाया ॥४॥

ॐ ह्री सर्वावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

जिस अन्त अवधिको नाहीं, तुम उपजायो पद ताहीं ।
निर्मल अवधी गुणधारी, सब सिद्ध नमूं सुखकारी ॥५॥

ॐ ह्री अनन्तावधिजिनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

तप बल महिमा अधिकाई, बुद्धि कोष्ठ रिद्धि उपजाई ।
श्रुत ज्ञान कोष्ठ भंडारी, नमूं सिद्ध भये अविकारी ॥६॥

ॐ ह्री कोष्ठबुद्धि ऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

ज्यो बीज फले बहुरासी, त्यों छिनही बहु अभ्यासी ।
यह पावत ही योगीशा, भये सिद्ध नमूं शिव ईशा ॥७॥

ॐ ह्री बीजबुद्धिऋद्धि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

पदमात्र समस्त चितारे, है रिधि यह पद अनुसारे।
यह पाय यतीश्वर ज्ञानी, भये सिद्ध नमूं शिवथानी ॥८॥
ॐ ह्री पादानुसारिणीऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

जो भिन्न भिन्न इक लारै, शब्दन सुन अर्थ विचारै।
यह ऋद्धि पाय सुखदाता, नमूं सिद्ध भये जगत्राता ॥९॥
ॐ ह्री सभिन्नश्रोतृऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

मति श्रुत अर अवधि अनूपा, विन गुरुके सहज सरूपा।
भयो स्वयंबुद्ध निज ज्ञानी, नमूं सिद्ध भये सुखदानी ॥१०॥
ॐ ह्री स्वयबुद्धेभ्यो नम· अर्घ्यं।

जो पाय न पर उपदेशा, जाने तप ज्ञान विशेषा।
प्रत्येक बुद्ध गुण धारी, भये सिद्ध नमूं हितकारी ॥११॥
ॐ ह्री प्रत्येकबुद्धऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

गणधरसे समकित धारी, तुग दिव्यध्वनि अनुसारी।
ज्ञानिनि सिरताज कहाये, भये सिद्ध सुजस हम गाये ॥१२॥
ॐ ह्री अर्हं बोधबुद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं।

मन योग सरलता धारै, तिस अन्तर भेद उघारै।
यो होय ऋजुमति ज्ञानी, नमूं सिद्ध भये सुखदानी ॥१३॥

ॐ ह्री ऋजुमतिऋद्धि सिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं।

बांके मनकी सब बातां, जाने सो विपुल कहाता।
तुम पाय भये शिवधामी, नमूं सिद्धराज अभिरामी ॥१४॥

ॐ ह्री विपुलमतिऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

सुर विद्याको नहीं चाहै, निज चारित विरद निवाहै।
दस पूर्व ऋद्धि यह पायो, भये सिद्ध मुनिन गुण गायो ॥१५॥

ॐ ह्री दशपूर्वऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

चौदह पूरव श्रुतज्ञानी, जाने परोक्ष परमानी।
प्रत्यक्ष लखो तिस सारूं, भये सिद्ध हरो अघ म्हारूं ॥१६॥

ॐ ह्री चौदहपूर्वऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

सुन्दरी छन्द।

ज्योतिषादिक लक्षण जानकैं, शुभ अशुभ फल कहत बखानिकैं।
निमित ऋद्धि प्रभाव न अन्यथा, होय सिद्ध भये प्रणमूं यथा ॥१७॥

ॐ ह्री अष्टागनिमित्त ऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

बहु विधि अरिणमादिक ऋद्धि जू, तप प्रभाव भई तिन सिद्धिजू ।
निष्प्रयोजन निजपद लीन है, नमूं सिद्ध भये स्वाधीन हैं ॥१८॥

ॐ ह्री विवर्णऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

भूमि जल जंतु जिय ही ना हरै, नमूं ते मुनि शिव कामिनि वरै ।
नेक नहीं बाधा परिहार हो, नमूं सिद्ध सभी सुखकार हो ॥१९॥

ॐ ह्री विज्जाहरणऋद्धि सिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

जंघपर दो हाथ लगावहीं, अन्तरीक्ष पवनवत जावहीं ।
पाय ऋद्धि महामुनि चारणी, यथायोग्य विशुद्ध विहारणी ॥२०॥

ॐ ह्री चारणऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

खग समान चलै आकाश में, लीन नित निज धर्म प्रकाश मे ।
शुद्ध चारण करि निज सिद्धता, पाइयो हम नमन करै यथा ॥२१॥

ॐ ह्री आकाशगामिनीऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

वाद विद्या फुरत प्रमानही, वज्रसम परमतगिरि हानही ।
सब कुपक्षी दोष प्रगट करै, स्यादवाद महाद्युतिको धरै ॥२२॥

ॐ ह्री परामर्शऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

विषम जहर मिला भोजन करै, लेत ग्रासहिं तिस शक्ती हरै ।
ते महामुनि जग सुखदाय जू, हम नमैं तिन शिवपद पाय जू ॥२३॥

ॐ ह्री आशीविषऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

जो महाविष अति परचण्ड हो, दृष्टि करि तिन कीने खण्ड हो ।
सो यतीश्वर कर्म विडारकै, भये सिद्ध नमूं उर धारकै ॥२४॥

ॐ ह्री दृष्टिविषविषऋद्धिसिद्धेभ्यो नम· अर्घ्यं ।

अनशनादिक नित प्रति साधना, मरणकाल तई न विराधना ।
उग्र तप करि वसुविधि नासतै, हम नमैं शिवलोक प्रकाशतै ॥२५॥

ॐ ह्री उग्रतपऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

बढति नित प्रति सहज प्रभावना, उग्र तप करि क्लेश न पावना ।
दीप्ति तप करि कर्म जरायकै, भये सिद्ध नमूं सिर नायकै ॥२६॥

ॐ ह्री दीप्ततपऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अन्तराय भये उत्सव बढे, बाल चन्द्र समान कला चढे ।
वृद्ध तपकी ऋद्धि लहै यती, भये सिद्ध नमत सुख हो अती ॥२७॥

ॐ ह्री तपोवृद्धि ऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

सिंहक्रीडित आदि विधानतें, नित बढावत तप विधि मानते ।
महामुनीश्वर तप परकाशते, नमूं मुक्ति भये जगवासते ॥२८॥

ॐ ह्री महातपोऋद्धिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

शिखरि-गिरि ग्रीषम, हिम सर—तटै, तरु निकट पावस निजपद रटै ।
घोर परिषह करि नाहीं हटै, भये सिद्ध नमत हम दुख कटै ॥२९॥

ॐ ह्री घोरतपोऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

महाभयंकर निमित मिलै जहां, निरविकार यती तिष्ठै तहां ।
महापराक्रम गुणकी खान है, नमो सिद्ध जगत सुखदान है ॥३०॥

ॐ ह्री घोरगुणऋद्धिसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

सघन गुणकी रास महायती, रत्नराशि समान दिपै अती ।
शेष जिन वर्णन करि थकि रहै, नमूं सिद्ध महापदको लहै ॥३१॥

ॐ ह्री घोर गुणपरिक्रमाण ऋद्धि सिद्धेभ्यो नम' अर्घ्यं ।

अतुल वीर्य धनी हन कामको, चलत मन न लखत सुख धामको ।
बालब्रह्मचारी योगीश्वरा, नमूं सिद्ध भये वसुविधि हरा ॥३२॥

ॐ ह्री ब्रह्मचर्य ऋद्धिसिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

सकल रोग मिटै संस्पर्शते, महायतीश्वर के आमर्शते ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३३॥

ॐ ह्री आमर्षऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

मूत्रमे अमृत अतिशय बसे, जा परसतै सब व्याधी नसै ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३४॥

ॐ ह्री आमोसिय औषधिऋद्धि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

तन पसीजत जल-कण लगतही,रोग व्याधि सर्व जन भगत ही ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३५॥

ॐ ह्री जलोसियऋद्धि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

हस्त पादादिक नखकेश मे, सर्व औषधि है सब देशमे ।
औषधी यह ऋद्धि प्रभावना, भये सिद्ध नमत सुख पावना ॥३६॥

ॐ ह्री सर्वोसियऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अडिल्लः—तन सम्बन्धी वीर्य बढ़े अतिशय महा,
एक महूरत अन्तर श्रुत चिंतवन लहा ।

मनोबली यह ऋद्धि भई सुखदाइ जू
भये सिद्ध सुखदाय जजूं नित पांय जू ॥३७॥

ॐ ह्रीं मनोबली ऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

भिन्न भिन्न अति शुद्ध उच्चस्वर उच्चरै, एक महूरत अन्तर श्रुत वर्णनकरै ।
बचनवलीयह ऋद्धि भई सुखदायजू भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांयजू ॥

ॐ ह्रीं बचनवली ऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

खड्गासन इक अंगमासद्वैमासलौं अचलरूप थिररहै छिनक खेदित न हो ।
कायबली यह ऋद्धिभई सुखदाय जू, भयेसिद्ध सुखदाय जजो तिन पांयजू

ॐ ह्रीं कायबली ऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अतिअरस चरु क्षीरहोय करधरतही, बचनखिरत पर-श्रवणतुष्टताकरती
क्षीरश्रावि यह ऋद्धिभई सुखदाय जू, भयेसिद्धसुखदाय जजूं तिन पायजू

ॐ ह्रीं क्षीरश्रावी ऋद्धि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

रूखेभोजनसे करमें घृतरस श्रवै, वचनसुनत परको घृतसम स्वादित ह्वै
सर्पिश्रावि यहऋद्धिभई सुखदाय जू, भये सिद्धसुखदाय जजूं तिन पायजू

ॐ ह्रीं सर्पिश्रावीऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

हस्तकमलमें अन्न मधुर रसदेत है, मधुकर सम जिय वचन गंधको लेत है।
मधुश्रावी यहऋद्धिभई सुखदायजू, भये सिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांयजू॥

ॐ ह्री मधुस्रावी ऋद्धि ऋद्धेभ्यो नम॰ अर्घ्यं.।

अमृतसमआहार होय कर आयके, वचनामृत दै सुक्ख श्रवणमे जायके।
आमियरसयहऋद्धिभई सुखदायजू, भयेसिद्ध सुखदाय जजूं तिन पांयजू॥

ॐ ह्री आमियरसऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

जिस बासन जिस थान आहारकरै यती, चक्री सेना खाय अखै होवे अती।
अक्षीणरसी यहऋद्धि भई सुखदायजू, भयेसिध्द सुखदाय जजूं तिनपांयजू॥

ॐ ह्री अक्षीणरसऋद्धि सिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

सोरठा—सिद्धरास सुखदाय, वर्धमान नितप्रति लसे।
नमूं ताहि सिर नाय, वृद्ध रूप गुण अगम है ॥४५॥

ॐ ह्री बड्ढमाण सिद्धेभ्यो नम॰ अर्घ्यं।

रागादिक परिणाम, अन्तरके अरि नाशके।
लहि अरहंत सु नाम, नमों सिद्ध पद पाइया ॥४६॥

ॐ ह्री अरहन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं।

दो अन्तिम गुणथान, भाव सिद्ध इस लोक मे ।
तथा द्रव्य शिव थान, सर्व सिद्ध प्रणमूं सदा ॥४७॥
ॐ ह्री णमो लोए सव्वसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

शत्रु व्याधि भय नाहिं, महावीर धीरज धनी ।
नमूं सिद्ध जिननाह, संतनिके भवभय हरैं ॥४८॥
ॐ ह्री भगवते महावीरवड्ढमाणाय नम अर्घ्यं ।

क्षपकश्रेणि आरूढ़, निजभावी योगी यथा ।
निश्चय दर्श अमूढ़, सिद्ध योग सब ही जजो ॥४९॥
ॐ ह्री णमो योगसिद्धाय नम अर्घ्यं ।

वीतराग परधान, ध्यान करे तिनको सदा ।
सोई ध्येय महान, णमो सिद्ध हम अघ हरो ॥५०॥
ॐ ह्री णमो ध्येयसिद्धाण नम अर्घ्यं ।

लोक शिखर शिव थान, अचल विराजत सिद्ध जन ।
लोकवास सर्वान, भये सिद्ध प्रणमूं सदा ॥५१॥
ॐ ह्री णमो सव्वसिद्धाण नम अर्घ्यं ।

औरन करत कल्याण, आप सर्व कल्याणमय ।
सोई सिद्ध महान, मंगलहेतु नमूं सदा ॥५२॥

ॐ ह्री णमो स्वस्तिसिद्धाण नम॰ अर्घ्यं ।

तीन लोकके पूज, सर्वोत्तम सुखदाय है ।
जिन सम और न दूज, तिनपद पूजों भावयुत ॥५३॥

ॐ ह्री अर्हं सिद्धाण नमः अर्घ्यं ।

लोकोत्तम परधान, तिन पद पूजत हैं सदा ।
तातै सिद्ध महान, सर्व पूज्य के पूज्य हो ॥५४॥

ॐ ह्री अर्हं सिद्ध सिद्धाण नमः अर्घ्यं ।

परम धरम निज साध, परमातम पद पाइयो ।
सोई धर्म अबाध, पूजत हमको दीजिये ॥५५॥

ॐ ह्री परमात्मसिद्धाण नम अर्घ्यं ।

सर्वा ऋद्धि नव निद्ध, सिद्ध भये नहिं सिद्ध हो ।
निजपद साधत सिद्ध, होत सही तिनको णमो ॥५६॥

ॐ ह्री परमसिद्धाण नमः अर्घ्यं ।

परमागमकी शाख, परम अगम गुणगण सहित ।
सोई मनमें राख, श्रद्धायुत पूजा करो ॥५७॥
ॐ ह्रीं परमागमसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

गुण अनंत परकाश, महा विभवमय लसत है ।
आवर्णित पद नाश, ते पूजूं प्रणमूं सदा ॥५८॥
ॐ ह्रीं प्रकाशमानसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

स्वयं सिद्ध भगवान, ज्ञानभूत परकाश मय ।
लसत नमूं मन आन, मम उर चिंता दुख हरो ॥५९॥
ॐ ह्रीं णमो स्वयंभूसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

मन इन्द्रियसों भिन्न, मनइन्द्री परकाश कर ।
सोई ब्रह्म अखिन्न, साधित सिद्ध भये नमूं ॥६०॥
ॐ ह्रीं णमो ब्रह्मसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

द्रव्य अनन्त गुणात्म, परणामी परसिद्ध के ।
सोई पद निज आत्म, साधत सिद्ध अनंत गुण ॥६१॥
ॐ ह्रीं णमो अनन्तगुणसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

सर्व तत्त्वमय पर्म, गुण अनंत परमातमा ।
सो पायो निजधर्म, परम सिद्ध तिनको नमूं ॥६२॥

ॐ ह्रीं णमो परमानन्तसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

लोक शिखर के वास, पायो अविचल थान निज ।
सर्व लोक परकाश, ज्ञानज्योति तिनको नमों ॥६३॥

ॐ ह्रीं लोकवाससिद्धाय नम. अर्घ्यं ।

काल विभाग अनादि, शास्वत रूप विराजते ।
यातैं नहिं सो आदि, नमि अनादि सिद्धान को ॥६४॥

ॐ ह्रीं णमो अनादिसिद्धाय नमः अर्घ्यं ।

गीता छन्द—निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमै चरु, प्रचुर स्वाद सुविधि घनी ।
वर दीप माल उजाल धूपायन, रसायन फल भलै,
करि अर्घं सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥ १ ॥
ते कर्मप्रकृति नसाय युगपत, ज्ञान निर्मल रूप है,

दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है।
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अमेय चाहूँ, ज्ञेय द्यो हम शुभमती ॥ २ ॥

ॐ ह्री अर्हंतजिनादिसिद्धेभ्यो नम: पूर्णार्घ्यं। (यहा १०८ बार जाप देनी चाहिये)

अथ जयमाला।

दोहा—तीर्थंकर त्रिभुवन धनी, जापद करत प्रणाम।
हम किह मुख वर्णन करै, तिन महिमा अभिराम ॥१॥

चौपाई।

जय भवि कुमुदन मोदन चंदा, जय दिनन्द त्रिभुवन अरविंदा।
भव तप हरण शरण रस कूपा, मद ज्वर जरन हरण घन रूपा॥२॥
अकथित महिमा अमित अथाई, निर उपमेय निरसता नांई।
भावलिंग बिन कर्म खिपाई, द्रव्य लिंग बिन शिव पद पाई ॥३॥
नय विभाग बिन वस्तु प्रमाणा, दया भाव बिन जिन कल्याणा।
पंगु सुमेरु चूलिका परसै, गुंग गान आरम्भे स्वरसै ॥४॥

यों अजोग कारज नहीं होई, तुम गुण कथन कठिन है सोई।
सर्व जैन शासन जिनमाहीं, भाग अनन्त धरै तुम नाहीं ॥ ५ ॥
गोखुर मे नहिं सिंधु समावे, वायस लोक अन्त नहीं पावै।
ताते केवल भक्ति भाव तुम, पावन करो अपावन उर हम ॥६॥
जे तुम यश निज मुख उच्चारै, ते तिहुँ लोक सुजस विस्तारै।
तुम गुण गान मात्र कर प्रानी, पावै सुगुण महा सुखदानी ॥७॥
जिन चित ध्यान सलिल तुम धारा, ते मुनि तीरथ हैं निरधारा।
तुम गुण हंस तुम्हीं सरवासी, वचन जाल में लेत न फांसी ॥८॥
जगत बंधु गुणसिंधु दयानिधि, बीजभूत कल्याण सर्वसिधि।
अक्षय शिव स्वरूप श्रिय स्वामी, पूरण निजानन्द विश्रामी ॥९॥
शरणागत सर्वस्व सुहितकर, जन्म मरण दुख आधि व्याधि हर।
संत भक्ति तुम हो अनुरागी, निश्चै अजर अमर पद भागी ॥१०॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानन्द छन्द ।

जय जय सुखसागर, सुजस उजागर, गुणगण आगर, तारण हो ।
जय संत उधारण, विपति विडारण, सुख विस्तारण, कारण हो ॥
तुम गुण गान परम फलदान, सो मंत्र प्रमान विधान करूं ॥
जहरी कर्मनि वैरी की कहरी, असहैरी भवकी व्याधि हरूं ॥

इत्याशीर्वाद । इति चतुर्थपूजा सम्पूर्णं ॥

अथ पंचम पूजा

छप्पय छन्द—ऊरध अधो सरेफ विंदु हंकार विराजै,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजै ।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर;
अग्रभागमें नंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥
फुनि अन्त ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नाशको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् अष्टविंशत्यधिकशत १२८ गुण सहित अत्र मम ... सवौषट् आह्वानन, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।

दोहा—सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित नीरोग ।
सिद्धचक्र सो थापहूँ, मिटै उपद्रव योग ।

इति यन्त्र स्थापन ।

(अथाष्टकं, चाल बारहमासा छन्द)

चन्द्रवर्ण लखि चन्द्रकांतमणि, मनतें श्रवै हुलसधारा हो ।
कंज सुवासित प्रासुक जलसो, पूजूं अंतर अनुसारा हो ।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचरण उरधारा हो ।
चौसठि दुगुण सुगुण मणि सुवरण सुमिरत ही भवपारा हो ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने एकसो अट्ठाईस गुणसयुक्ताय श्री समत्तणाण-दसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहणं अगुरुलघुमव्वावाह जन्मजरारोग विनाशनाय जल ॥१॥

सुमरण मणिधर जास वास लहि, मद तजि गंध लुभावत है ।
सो चंदन नंदनवन भूषण, तुमपद कमल चढ़ावत है ॥लोकाधीश०

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्ध परमेष्ठिने एकसो अट्ठाईसगुणसयुक्ताय श्री समत्तणाण दसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहणं अगुरुलघुव्वावाह ससारतापविनाशनाय चन्दन नि० ॥

चंपक ही के भ्रम भ्रमरावलि, भ्रमत चकित चकराज भए,

शशि मण्डल जानो सो अक्षत, पुंजधार पद कंज नये ॥
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उरधारा हो ।
चौसठि दुगुणसुगुण मणि सुवरन; सुमरत ही भवपारा हो ॥

ॐ ह्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसहित श्रीसमत्तणाण दसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह अक्षयपदप्राप्तये अक्षत निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

मदन वदन दुतिहरन वरन रति लोचन अलिगण छाय रहे ।
पुष्पमाल वासित विलास सो, भेंट धरत उर काम दहे ॥लोकाधीश०

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह कामवाणविनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

चितवत मन वरणत रसना रस, स्वाद लेत ही तृप्त थये ।
जन्मांतरहू छुधानिवारै, सो नेवज तुम भेट धरै ॥लोकाधीश०

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसहित श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥

लवमणिप्रभा अनूपम सुर निज शीश धरणकी रास करै ।
या विन तुच्छ विभव निजजाने, सो दीपक तुम भेटधरै ॥लोकाधीश०

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसयुक्ताय श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव

अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाहं मोहांधकारविनाशनाय दीप० ॥६॥

नीलंजसा करी नभमें ज्यो, ऋषभ भक्तिकर नृत्य कियो ।
सो तुम सन्मुख धूप उड़ावत, तिस छविको नहीं भाव लियो ।
लोकाधीश शीश चूड़ामणि, सिद्धचक्र उरधारा हो ।
चौसठि दुगुण सुगुण सुवरन सुमिरत ही भवपारा हो ॥

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसयुक्ताय श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह अष्टकर्मदहनाय धूप० ॥७॥

सेव रंगीले अनार रसीले, केलाकी लै डाल फली ।
डाली हू नृपमाली हूँ, नातर प्रासुकताका रीति भली ॥लोकाधीश०

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १२८ गुणसयुक्ताय श्री समत्तणाणदसणवीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह मोक्षफलप्राप्तये फलम् ॥८॥

एकसे एक अधिक सोहत वसु, जाति अर्घ करि चरण नमूं ।
आनंद आरति आरत तजिकै, परमारथ हित कुमति बमूं ॥लोका०

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्टिने १२८ गुणसयुक्ताय श्री समत्तणाणदसणवीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं० ॥ ९ ॥

गीता छन्द—निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी,
शुभ पुष्प मधुकर नित रमें, चरु प्रचुर स्वाद सुधि घनी।
वर दीपमालं उजाल धूपाइन रसायन फल भले,
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमले॥
ते कर्मप्रकृति नसाय युगपत, ज्ञान निर्मल रूप है,
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम स्वरूप अनूप है।
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती,
मुनि ध्येय सेय अमेय चाहूँ, ज्ञेय द्यो हम शुभमती॥

अथ एक सौ अठाईस गुण सहित अर्घ।

ॐ ह्री अष्टाविंशति अधिकशतगुणयुक्त सिद्धेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं।

त्रोटक छन्द।

निरबाध सु तत्व सरूप लखो, इक लेश विशेष न शेष रखो।
अति शुद्ध सुभाविक छायक है, नमूं दर्श महासुखदायक है॥१॥

ॐ ह्री सम्यग्दर्शनाय नमः अर्घ्यं।

निरमोह अकोह अबाधित हो, परभाव थकी न बिराधित हो ।
निरशंस चराचर जानत है, हम सिद्ध सु ज्ञान प्रमानत हैं ॥२॥
ॐ ह्री सम्यग्ज्ञानाय नम. अर्घ्यं ।

सब राग विरोध निवारन है, निज भाव थकी निज धारन है ।
परमें न कभू निज भाव वहै, अति सम्यक्चारित्र नाम यहै ॥३॥
ॐ ह्री सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं ।

उतपाद विनाश न बाध धरै, परनाम सुभाव नहीं निसरै ।
तुम धारत हो यह धर्म महा, हम पूजत है पद शीश यहां ॥४॥
ॐ ह्री अस्तित्वधर्माय नम अर्घ्यं

निज भावनतै व्यतिरिक्त न हो, प्रनमों गुणरूप गुणात्मन हो ।
यह वस्तु सुभाव सदा विलसो, हम पूजत है सब पाप नसो ॥५॥
ॐ ह्री वस्तुत्वधर्माय नम अर्घ्यं ।

परमाण न जानत है तिनको, छिन रोग न आवत है जिनकों ।
अप्रमेय महागुण धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥ ६ ॥
ॐ ह्री अप्रमेयधर्माय नम. अर्घ्यं ।

गुणपर्य प्रमाण दसा-नित ही, निजरूप न छांडत है कित ही।
जिन वैन प्रमाण सु धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥ ७ ॥
ॐ ह्री अगरुलघुधर्माय नम अर्घ्यं।

जितने कछु है परिणाम विषै, सब चित्त स्वरूप सुजान तिसै।
मुख चेतनता गुण धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥ ८ ॥
ॐ ह्री चेतनत्वधर्माय नम अर्घ्यं।

जिन अंग उपंग शरीर नहीं, जिन रंग प्रसंग सु तीर नहीं।
नभसार अमूरति धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥९॥
ॐ ह्री अमूर्तित्वधर्माय नम अर्घ्यं।

परको न कदाचित धर्म गहै, निजधर्म स्वरूप न छांडत हैं।
अति उत्तम धर्म सु धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥१०॥
ॐ ह्री समकितधर्माय नम अर्घ्यं।

जितने कछु हैं परिणाम विषैं, सब ज्ञान स्वरूप सु जान तिसै।
सुख ज्ञानमई गुण धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥११॥
ॐ ह्री ज्ञानधर्माय नम अर्घ्यं।

चिन्मय चिन्मूरति जीव सही, अति पूरणता बिन भेद कही ।
निज जीव सुभाव सुधारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥१२॥
ॐ ह्री जीवधर्माय नम॰ अर्घ्यं ।

मनको नहिं बेग लखावत है, जिस बैन नहीं बतलावत है ।
अति सूक्षम भाव सु धारत है, हम पूजत पाप विडारत है ॥१३॥
ॐ ह्री सूक्ष्मधर्माय नम॰ अर्घ्यं ।

परघात न आप न घात करैं, इक खेत समूह अनन्त वरै ।
अवगाह सरूप सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१४॥
ॐ ह्री अवगाहधर्माय नमः अर्घ्यं ।

अविनाश सुभाव विराजत है, बिन बाध स्वरूप सु छाजत है ।
यह धर्म महागुण धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१५॥
ॐ ह्री अव्याबाधधर्माय नमः अर्घ्यं ।

निजसों निजको अनभूति करैं, अपनो परसिद्ध सुभाव वरै ।
निज ज्ञान प्रतीति सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१६॥
ॐ ह्री स्वसवेदनज्ञानाय नम॰ अर्घ्यं ।

निज ज्योति स्वरूप उद्योतमई, तिसमें परदीप्त रहै नित ही ।
यह ताप स्वरूप उधारत है, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१७॥
ॐ ह्री स्वरूपतापतपसे नम. अर्घ्यं ।

नित नंत चतुष्टय राजत है, दृग ज्ञान बला सुख छाजत है ।
यह आप महागुण धारत हैं, हम पूजत पाप विडारत हैं ॥१८॥
ॐ ह्री अनन्तचतुष्टयाय नमः अर्घ्यं ।

सुख समकित आदि महागुण को, तुम साधित सिद्ध भये अबहो ।
यह उत्तम भाव सुधारत हैं, हम पूजत पाप विडारत है ॥१९॥
ॐ ह्री सम्यक्त्वादिगुणात्मकसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

दोहा—निश्चय पंचाचार सब, भेद रहित तुम साध ।
चेतनकी अति शक्तिमें, सूचत सब निरबाध ॥२०॥
ॐ ह्री पंचाचाराचार्येभ्यो नम. अर्घ्यं ।

चौपाई—सब विकलप तजि भेद स्वरूपी, निज अनभूतिमगन चिद्रूपी ।
निश्चय रत्नत्रय परकासो, पूजूं भाव भेद हम नासो ॥२१॥
ॐ ह्री रत्नत्रयप्रकाशाय नमः अर्घ्यं ।

करण भेद रत्नत्रय धारी, कर्म भेद निज भाव संवारी ।
करता भेद आप परणामी, भेदाभेद रूप प्रणमामी ॥२२॥

ॐ ह्रीं स्वस्वरूपसाधकसर्वसाधुभ्यो नम. अर्घ्यं ।

मनोयोग कृत जिय संसारी, क्रोधारम्भ करत दुखकारी ।
तासों रहित सिद्ध भगवाना, अंतर शुद्ध करूं तिन ध्याना ॥२३॥

ॐ ह्रीं अकृतमनः क्रोधसरम्भमनोगुप्तये नम' अर्घ्यं ।

परके मन क्रोधी संरम्भा, करत मूढ नाना आरम्भा ।
सिद्धराज प्रणमूँ तिस त्यागी, निर्विकल्प निज गुणके भागी॥२४॥

ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्माय नम अर्घ्यं ।

छन्द भुजगप्रान

मनोयोग रंभा प्रशंसीक रोधा, निजानंद को मान ठाने अबोधा ।
महानिंदनी भावको त्याग दीना, निजानंदको स्वाद ही आप लीना ।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनः क्रोधसरम्भसानन्दधर्माय नम' अर्घ्यं ।

मनोयोग क्रोधी समारंभ धारी, सदा जीव भोगे महाखेद भारी ।
महानंद आख्यातको भाव पायो, नमों सिद्ध सो दोष नाहीं उपायो ।

ॐ ह्रीं अकृतमनक्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नम अर्घ्यं ।

दोहा——समारम्भ क्रोधित सुमन, परकारित दुख नाहिं ।
परमातम पद पाइयो, नमूं सिद्ध गुण ताहिं ॥२७॥

ॐ ह्रीं अकारितमन क्रोधसमारम्भपरमानन्दाय नम. अर्घ्यं ।

भुजगप्रयात छन्द ।

समारम्भ क्रोधी मनोयोग माहीं, धरे मोदना भाव को जीव ताहीं ।
भये आप संतुष्ट ये त्याग भावा, नमूं सिद्ध सो दोष नाहीं उपावा ॥२८॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमन'क्रोधसमारम्भपरमानन्दसतुष्टाय नम' अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

निज क्रोधित मन आरम्भ ठान, जग जिय दुखमे सुख रहै मान ।
सो आप त्याग संक्लेश भाव, भये सिद्ध नमूं धर हिये चाव ॥२९॥

ॐ ह्रीं अकृतमन: क्रोधारम्भस्वसस्थानाय नम अर्घ्यं ।

क्रोधित मनसों आरम्भ हेत, पर प्रेरित निज अपराध लेत ।
जग जीवनकी विपरीत रीति, तुम त्याग भये शिव वर पुनीत ॥३०॥

ॐ ह्रीं अकारितमनः क्रोधारम्भबन्धसस्थानाय नमः अर्घ्यं ।

क्रोधित मनसों आरंभ देख, जिय मानत है आनन्द विशेष ।

तुम सत्य सुखी इह भाव क्षार, भये सिद्ध नमूं उर हर्ष धार ॥३१॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमन क्रोधारम्भसस्थानाय नम अर्घ्यं ।

दोहा——मान योग मन रंभमे, वरतत हैं जगजीव ।
भये सिद्ध संक्लेश तजि, तिन पद नमूं सदीव ॥३२॥

ॐ ह्री अकृतमनोमानारम्भसाधर्माय नमः अर्घ्यं ।

मान उदय मन योगते, परको रम्भ करान ।
त्याग भये परमातमा, नमूं सरन पर हान ॥३३॥

ॐ ह्रीं अकारितमनो मानसरम्भअनन्यशरणाय नम· अर्घ्यं ।

मान सहित मन रंभमे, जगजिय राखै चाव ।
नमो सिद्ध परमातमा, जिन त्यागो इह भाव ॥३४॥

ॐ ह्री नानुमोदितमनोमानमरम्भसुगतभावाय नम अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द ।

समारंभ परिवर्तमान युत मन धरे, विकल्पमई उपकरण विधि इकठे करै ।
महा कष्टको हेत भाव यह ना गहो, प्रणमूं सिद्ध अनंत सुखातम गुण लहौ ॥

ॐ ह्री अकृतमनोमानसमारम्भ सुखात्मगुणाय नमः अर्घ्यं ।

मान सहित मनयोग द्वार चितवन करै, समारंभ पर कृत्य करावन विधि वरै
तहां कष्टको हेत भाव यह ना गहो, प्रणमूं सिद्ध अनन्तगुणातम पद लहौ

ॐ ह्रीं अकारितमनो मानसमारम्भ-अनन्यगताय नम. अर्घ्यं ॥३६॥

जोड़े चितन समाजविविध जिस काजमे, समारंभतिसनाम सोम जिनराजमें
माने मानी मन आनंद सु निमित्तसे, नमूं सिद्ध है अतुल वीर्य त्यागत तिसे।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो मानसमारम्भअनन्तवीर्याय नम अर्घ्यं ॥३७॥

अशुभकाज परिवर्त नाम आरंभको, मान सहित मन द्वार तास उद्यम गहो
जगवासीजिय नितप्रतिपापउपाय है, णमो सिद्ध या रहित अतुलसुखरायहै

ॐ ह्रीं अकृतमनोयोगमानारम्भ-अनन्तसुखाय नम· अर्घ्यं ॥३८॥

दोहा—मनो मान आरम्भके, भये अकारित आप।
अतुल ज्ञान धारी भये, नमत नसै सब पाप ॥३९॥

ॐ ह्रीं अकारितमनो मानारम्भअनन्तज्ञानाय नम अर्घ्यं।

मनो मान आरम्भमे, नानुमोदि भगवंत।
गुण अनंत युत सिद्ध पद, पूजत है नित संत ॥४०॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनो मान-आरम्भ-अनतगुणाय नमः अर्घ्यं।

गीताछन्द जो अशुभ काज विकल्प हो, संरम्भ मनयुत कुटिलता।
कर कर अनादित रंक जिय, बहु भांति पाप उपावता ॥
सो त्याग सकल विभाव यह तुम, सिद्ध ब्रह्मस्वरूप हो।
हम पूजि है नित भक्ति युत, तुम भक्ति वत्सलरूप हो ॥४१॥

ॐ ह्री अकृतमनो मायासरम्भब्रह्मस्वरूपाय नम अर्घ्यं।

दोहा—मायावी मनतें नहीं, कबहुँ आरम्भ कराय।
सिद्ध चेतना गुण सहित, नमूं सदा मन लाय ॥४२॥

ॐ ह्री अकारितमनोमायासरम्भचेतनाय नम अर्घ्यं।

मायावी मनतें कभी, रंभानन्द न होय।
सिद्ध अनन्य सुभाव युत, नमूं सदा मद खोय ॥४३॥

ॐ ह्री नानुमोदितमनोमायासरम्भ अनन्यस्वभावाय नमः अर्घ्यं।

पद्धडी छन्द।

मायावी मनतें समारंभ, नहिं करत सदा हो अचल खंभ।
तुम स्वानुभूति रमणीय संग, नित नमन करो धरि मन उमंग ॥४४॥

ॐ ह्री अकृतमनोमाया समारम्भस्वानुभूतिरताय नमः अर्घ्यं।

मन वक्र द्वार उपकर्ण ठान, विधि समारंभ को नहिं करान ।
निज साम्य धर्ममे रहो लिप्त, तुम सिद्ध नमों पद धार चित्त ।।४५।।

ॐ ह्री अकारितमनो-माया-समारंभसाम्यधर्माय नम अर्घ्यं ।

दोहा—मायावी मनमे नहीं, समारंभ आनन्द ।
नमो सिद्ध पद परम गुरु, पाऊं पद सुख वृन्द ।।४६।।

ॐ ह्री नानुमोदितमनो माया समारंभगुरवे नम अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

बहु विधिकार जोडै अशुभ काज, आरम्भ नाम हिंसा समाज ।
मायावी मन द्वारै करेय, तुम सिद्ध नमूं यह विधि हरेय ।।४७।।

ॐ ह्री अकृत मनो मायारम्भपरमशाताय नमः अर्घ्यं ।

पूर्वोक्त अकारित विधि सरूप, पायो निर आकुल सुख अनूप ।
सर्वोत्तम पद पायो महान, हम पूजत हैं उर भक्ति ठान ।।४८।।

ॐ ह्री अकारित-मनोमायारभनिराकुलाय नम अर्घ्यं ।

दोहा—मायावी आरम्भ करि, मनमे आनन्द मान ।
सो तुम त्यागो भाव यह, भये परम सुख खान ।।४९।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारंभ-अनन्तसुखाय नम अर्घ्यं ।

लोभी मन द्वारे नहीं, करै सदा समरंभ ।
हम अनन्त दृग सिद्धपद, पूजत हैं मनथंभ ॥५०॥

ॐ ह्रीं अकृतमनो लोभसरम्भअनन्तदृगाय नम अर्घ्यं ।

लोभी मन समरंभ को, परसों नांहि कराय ।
दृगानन्द भावातमा, सिद्ध नमूं मन लाय ॥५१॥

ॐ ह्रीं अकारितमन लोभसरम्भदृगानन्दभावाय नम. अर्घ्यं ।

लोभी मन समरंभमे, मानै नहीं आनन्द ।
नमूं नमूं परमातमा, भये सिद्ध जगवंद ॥५२॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसरम्भसिद्धभावाय नम' अर्घ्यं ।

समारम्भ नांहि करत हैं, लोभी मनके द्वार ।
चिदानंद चिद्देव तुम, नमूं लहूं पद सार ॥५३॥

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भचिद्देवाय नमः अर्घ्यं ।

पर सो भी पूर्वोक्त विधि, कबहूं नहीं कराय ।
निराकार परमातमा, नमूं सिद्ध हर्षाय ॥५४॥

ॐ ह्लीं अकारितमनो-लोभसमारभ-अनाकाराय नमः अर्घ्यं ।

ऐसे ही पूर्वोक्त विधि, हर्षित होवे नाहिं ।
चित्सरूप साकारपद, धारत हूँ उरमाहिं ॥५५॥

ॐ ह्लीं नानुमोदितमनो लोभसमारम्भसाकाराय नम. अर्घ्यं ।

रचना हिंसा काजकी, लोभी मनके द्वार ।
नहीं करै है ते नमूं, चिदानंद पद सार ॥५६॥

ॐ ह्लीं अकृतमनोलोभारभचिदानन्दाय नमः अर्घ्यं ।

लोभी मन प्रेरित नहीं, परको आरंभ हेत ।
चिन्मय रूपी पद धरै, नमूं लहूँ निज खेत ॥५७॥

ॐ ह्लीं अकारितमनोलोभारम्भचिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

मन लोभी आरंभमें, आनन्द लहे न लेश ।
निजपदमें नित रमत है, ध्याऊं भक्ति विशेष ॥५८॥

ॐ ह्लीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द ।

क्रोधित जिय वचयोग द्वार उपयोगको, रचनाविधिसंकल्पनाम समरंभ सौ

तामे धरैं प्रवृत्ति पाप उपजावते, नमूँ सिद्ध या विन वचगुप्ति उपावते ।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसरम्भवाग्गुप्तये नमः अर्घ्यं ।।६०।।

क्रोध अग्नि करि निज उपयोग जरावही, वचनयोग करि विधि संरंभ करावही।
सो तुम त्याग विभाव सुभाव सरूप हो, नमूं उरानंदधार चिदानंदरूप हो।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरम्भस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सोरठा—क्रोधित निज वच द्वार, मोदित हो संरंभमें ।
सो तुम भाव विडार, नमूं स्वानुभव लब्धियुत ।।६१।।

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन क्रोधसरम्भस्वानुभवलब्धये नमः अर्घ्यं ।

दोहा—क्रोध सहित वाणी नहीं, समारंभ परवृत्त ।
स्वानुभूति रमणी रमण, नमूं सिद्ध कृतकृत्य ।।६२।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारम्भस्वानुभूतिरमणाय नमः अर्घ्यं ।

समारंभ क्रोधित जिये, प्रेरित पर वच द्वार ।
नमूं सिद्ध इस कर्म बिन, धर्मधरा साधार ।।६३।।

ॐ ह्रीं अकारित वचनक्रोधसमारभसाधारणधर्माय नमः अर्घ्यं ।

समारंभ मय वचन करि, हर्षित हो युत क्रोध ।

नमूं सिद्ध या विन लहो, परम शांति सुख बोध ॥६४॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारभपरमशाताय नम. अर्घ्यं ।

छन्द मोतियादाम ।

वैर वचयोग धरैं जियरोष, करैं विधि भेद अरम्भ सदोष ।
तजो यह सिद्ध भये सुखकार, नमूं परमामृत तुष्ट अवार ॥६५॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारम्भपरमामृततुष्टाय नम॰ अर्घ्यं ।

अकारित बैन सदा युत क्रोध, महा दुखकार अरम्भ अबोध ।
भये समरूप महारस धार, नमै हम सिद्ध लहै भवपार ॥६६॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधारम्भसमरसाय नम. अर्घ्यं ।

दोहा—नानुमोद आरम्भमे, क्रोध सहित वच द्वार ।
परम प्रीति निज आतमरति, नमूं सिद्ध सुखकार ॥६७॥

ॐ ह्रीं नानुमोदिनवचनक्रोधारभपरमप्रीतये नमः अर्घ्यं ।

अडिल्ल ।

वचन द्वार संरम्भ मानयुत जे करैं, जोड़ करन उपकरण मानसो ऊचरैं
नानाविधिदुखभोग निजातमको हरैं, नमूं सिद्ध या विन अविनशवर पदधरै

ॐ ह्री अकृतवचनमानसरम्भ-अविनश्वरधर्माय नम: अर्घ्यं ॥६८॥

मान प्रकृति करि उदै करावै ना कदा, वचनन करि संरंभ भेद वरणूं यदा।
मन इन्द्रिय अव्यक्तस्वरूप अनूप हो, नमूं सिद्धगुणसागर स्वातम रूपहो।

ॐ ह्री अकारित वचनमानसरम्भ अव्यक्तस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥६९॥

सोरठा—नानुमोद वच योग, मान सहित संरम्भ मय ।
दुर्लभ इन्द्री भोग, परम सिद्ध प्रणमूं सदा ॥७०॥

ॐ ह्री नानुमोदितवचनमानसरम्भदुर्लभाय नमः अर्घ्यं ।

चौपई ।

समारम्भ जिन वैन न द्वार, करत नहीं है मान संभार ।
ज्ञान सहित चिन्मूरति सार, परम गम्य है निर आकार ॥७१॥

ॐ ह्री अकृतवचनमानसमारभपरमगम्यनिराकाराय नमः अर्घ्यं ।

वचन प्रवृत्ति मानयुत ठान, समारम्भ विधि नाहिं करान ।
शुद्ध स्वभाव परम सुखकार, नमूं सिद्ध उर आनन्द धार ॥७२॥

ॐ ह्री अकारितवचनमानसमारभपरमस्वभावाय नम अर्घ्यं ।

वचन प्रवृत्ति मानयुत होय, समारम्भ मय हर्षित सोय ।

त्यागत एक रूप ठहराय, नमूं एकत्व गती सुखदाय ॥७३॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनसमारम्भएकत्वगताय नमः अर्घ्यं ।

मानी जिय निज वचन उचार, वरतत हैं आरम्भ मझार ।
परमातम हो तजि यह भाव, नमूं धर्मपति धर्म स्वभाव ॥७४॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारम्भ परमात्मधर्मराजधर्मस्वभावाय नमः अर्घ्यं ।

सोरठा—मानी बोले बैन, परप्रेरण आरम्भमें ।
सो त्यागो तुम ऐन, शाश्वत सुख आतम नमूं ॥७५॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशाश्वतानन्दाय नमः अर्घ्यं ।

हर्षित वचन उचार, मान सहित आरम्भमय ।
सो तुम भाव विडार, निजानन्द रस घन नमूं ॥७६॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारम्भ-अमृतपूरणाय नमः अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

धरि कुटिल भाव जो कहत बैन, संरम्भ रूप पापिष्ट एन ।
तुम धन्य धन्य यही रीति त्याग, हो बेहद धर्मस्वरूप भाग ॥७७॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासरम्भअनन्तधर्मैकरूपाय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत वचननको प्रयोग, संरम्भ करावत अशुभ भोग ।
तुम यह कलंक नहीं धरो लेश, हो अमृत शशि पूजूं हमेश ॥७८॥

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासरम्भ अमृतचन्द्राय नमः अर्घ्यं ।

वच मायायुत संरम्भ कीन, सो पापरूप भावी मलीन ।
तिस त्याग अनेक गुणात्म रूप, राजत अनेक मूरत अनूप ॥७९॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासरम्भअनेकमूर्तये नमः अर्घ्यं ।

तुम समारम्भकी विधि विधान, नहिं करत कुटिलता भेद ठान ।
हो नित्य निरंजन भाव युक्त, मैं नमूं सदा संशय विमुक्त ॥८०॥

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारभनित्यनिरजनस्वभावाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—मायायुत निज बैनतैं, समारंभके हेत ।
नहिं प्रेरित परको नमूं, निजगुण धर्म समेत ॥८१॥

ॐ ह्रीं अकारित वचनमायासमारभआत्मैकधर्माय नमः अर्घ्यं ।

मायाकरि बोलत नहीं, समारंभ हर्षाय ।
सूक्ष्म अतीन्द्रिय वृष नमूं, नमूं सिद्ध मन लाय ॥८२॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचन मायासमारभआत्मैकधर्माय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत आरंभ की, वचन प्रवृत्ति नशाय ।
नमूं अनन्त अवकाश गुण, ज्ञान द्वार सुखदाय ॥८३॥

ॐ ह्नी अकृतवचनमायारभअनन्तावकाशाय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत आरंभ मय, मेट वचन उपदेश ।
भये अमल गुण ते नमूं, रागद्वेष नहीं लेश ॥८४॥

ॐ ह्नी अकारितवचनमायारभअमलगुणाय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत आरम्भ मय, मेट वचन आनन्द ।
भये अनन्त सुखी नमूं, सिद्ध सदा सुखवृन्द ॥८५॥

ॐ ह्नी नानुमोदितवचनमायारभनिरवधिसुखाय नम अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द ।

जो परिग्रहको चाह लोभ सों मानिये, विधि विधान ठानत संरंभ बखानिये
वचन द्वार नहीं करे नमूं परमातमा, सब प्रत्यक्षलखें व्यापक धर्मातमा ।

ॐ ह्नी अकृतवचनलोभसरम्भव्यापकधर्माय नम· अर्घ्यं ।

वर्तावन संरम्भ हेत परके तईं,
लोभ उदै करि वचन कहै हिंसामई ।

नमूं सिद्ध पद यह विपरीति सु जिन हरो,
सकल चराचर ज्ञानी व्यापक गुण वरो ॥८७॥
ॐ ह्री अकारितवचनलोभसरम्भव्यापकगुणाय नम' अर्घ्यं ।

लोभी वच संरम्भ हर्ष परकाशनं, नाना विधि संचरे पाप दुख नाशनं ।
सोतुमनाशतशाश्वतध्रुवपदपाइयो, नमूं अचलगुणसहितसिद्धमन भाइयो
ॐ ह्री नानुमोदितवचनलोभसरम्भ-अचलाय नम अर्घ्यं ।

सोरठा—समारम्भ के बेन, लोभ सहित पर आसरै ।
तज निरलम्बी ऐन, नमूं सिद्ध उर धारिके ॥८९॥
ॐ ह्री अकृतवचनलोभसमारम्भनिरालबाय नमः अर्घ्यं ।

समारंभ उपदेश, लोभ उदै थिति मेटिकें ।
पायो अचल स्वदेश, नमूं निराश्रय सिद्ध गुण ॥९०॥
ॐ ह्री अकारितवचनलोभसमारम्भनिराश्रयाय नम. अर्घ्यं ।

नानुमोद वच लोभ, समारंभ परवृत्त में ।
नमूं तिन्है तजि क्षोभ, नित्य अखण्ड विराजते ॥९१॥
ॐ ह्री नानुमोदितवचनलोभसमारम्भ-अखण्डाय नम. अर्घ्यं ।

दोहा—लोभ सहित आरम्भ को, करत नहीं व्याख्यान ।
नूतन पंचम गति लहो, नमूं सिद्ध भगवान ॥९२॥
ॐ ह्री अकृतवचनलोभारभपरीतावस्थाय नम अर्घ्यं ।

लोभ वचन आरम्भ को, कहत न पर के हेत ।
समयसार परमातमा, नमत सदा सुख देत ॥९३॥
ॐ ह्री अकारितवचनलोभारभसमयसाराय नम अर्घ्यं ।

सोरठा—नानुमोद वच द्वार, लोभ सहित आरम्भमय ।
अजर अमर सुखदाय, नमूं निरन्तर सिद्धपद ॥९४॥
ॐ ह्री नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरतराय नम अर्घ्यं ।

अडिल्ल—क्रोधित रूप भयंकर हस्तादिक तनी,
करत समस्या सो संरम्भ प्रकाशनी ।
सो तुम नाशो काय गुप्ति करि यह तदा ।
दृष्टि अगोचर काय गुप्ति प्रणमूं सदा ॥९५॥
ॐ ह्री अकृतकायक्रोधसरम्भकायगुप्तये नम अर्घ्यं ।

सोरठा—पर प्रेरण निज काय, क्रोध सहित संरम्भ तज ।

चेतन मूरति पाय, शुध काय प्रणमूं सदा ॥९६॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसरम्भ शुद्धकायाय नमः अर्घ्यं ।

हर्षित शीश हिलाय, क्रोध उदय संरम्भ मे ।

त्यागत भये अकाय, नमूं सिद्ध पद भावयुत ॥९७॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसरम्भ-अकायाय नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ विधि मेटि, कायिक चेष्टा क्रोध की ।

स्वै गुणपर्य समेट, भक्ति सहित प्रणमूं सदा ॥९८॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारम्भस्वान्वयगुणाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—समारम्भ विधि क्रोध युत, तनसो नहीं कराय ।

नित प्रति रति निजभाव मे, बंदूं तिनके पाय ॥९९॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावरतये नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ सो कायसो, क्रोध सहित परसंस ।

स्वै अभिन्न पद पाइयो, नमूं त्याग सरवंस ॥१००॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमारम्भस्वान्वयधर्माय नमः अर्घ्यं ।

क्रोधित कायारम्भ तजि, परसो रहित स्वभाव ।

शुद्ध द्रव्य मे रत नमूं, निज सुख सहज उपाव ॥१०१॥

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारम्भशुद्धद्रव्यरताय नमः अर्घ्यं ।

क्रोधित कायारम्भ नहिं, रंच प्रपंच कराय ।
पंचरूप संसार हनि, नमूं, पंचमगति राय ॥१०२॥

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारम्भससार-छेदकाय नमः अर्घ्यं ।

क्रोधित कायारम्भ मे हर्ष विषाद विडार ।
अनेकांत वस्तुत्व गुण, धरै नमों पद सार ॥१०३॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारम्भजैनधर्माय नमः अर्घ्यं ।

मान सहित संरंभकी, तनसों रचना त्याग ।
पर प्रवेश विन रूप जिन, लियो नमूं बढ़भाग ॥१०४॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकायसरम्भस्वरूपायगुप्तये नम अर्घ्यं ।

मान उदय संरम्भ विधि, तनसो नहीं कराय ।

ध्यान योग निज ध्येय पद, भावित नमूं अशेष ॥१०६॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमानकायसरम्भ-ध्येयभावाय नमः अर्घ्यं ।

मदयुत तनसों रंच भी, समारंभ विधि नाहिं ।

परमाराधन योगपद, पायो प्रणमूं ताहिं ॥१०७॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकाय-समारम्भ-परमाराधनाय नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ निज कायसों, मदयुत नहीं कराय ।

ज्ञानानन्द सुभाव युत, प्रणमूं शीश नवाय ॥१०८॥

ॐ ह्रीं अकारितमानकायसमारम्भानदगुणाय नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ मय विधि सहित, तनसों हर्ष न होय ।

निजानन्द नन्दित तिन्हैं, नमूं सदा मद खोय ॥१०९॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनकायसमारम्भस्वानदनन्दिताय नमः अर्घ्यं ।

अर्द्ध चौपई ।

अकृत मानारंभ शरीर, पर अनिंद्य बन्दूं धर धीर ॥११०॥

ॐ ह्रीं अकृतमानकायारम्भसतोपाय नमः अर्घ्यं ।

कायारंभ अकारित मान, स्व सरूप-रत बन्दूं तान ॥१११॥

ॐ ह्रीं अकारितमानकायारम्भस्वरूपरताय नमः अर्घ्यं ।

मानारंभ अनन्दित काय, प्रणमूं विमल शुद्ध पर्याय ॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायारम्भशुद्धपर्यायाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—मायायुत संरंभ विधि, तनसों करत न आप ।
गुप्त निजामृत रस लहैं, नमूं तिन्हैं तज पाप ॥११२॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासरम्भ-अमृतगर्भाय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत संरम्भ विधि, तनसों नहीं कराय ।
मुख्य धर्म चैतन्यता, बिनवै प्रणमूं पाय ॥११३॥

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्याय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत संरम्भ मय, नानुमोदयुत काय ।
वीतराग आनन्द पद, समरस भावन भाय ॥११४॥

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायसरम्भ-समरसीभावाय नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ माया सहित, अकृत तन विच्छेद ।
बन्ध दशा निज पर द्विविध, नमत नसै भव खेद ॥११५॥

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भभवच्छेदकाय नमः अर्घ्यं ।

समारम्भ तन कुटिलसों, भये अकारित स्वामि ।
निज परिणति परिणमन विन, गुण स्वातंत्र नमामि ॥११६॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारम्भस्वातन्त्र्यधर्माय नमः अर्घ्यं ।

नानुमोदित तन कुटिलता, समारम्भ विधि देव ।
गुण अनन्त युत परिणमूं, धर्म समूही एव ॥११७॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय नमः अर्घ्यं ।

मायायुत निज देहसों, नहीं आरम्भ करेह ।
परमातम सुख अक्ष विन, पायो बन्दूं तेह ॥११८॥
ॐ ह्रीं अकृतकायमायारम्भपरमात्मसुखाय नमः अर्घ्यं ।

मायारम्भ शरीर करि, परसों नहीं करान ।
निष्ठातम स्वस्थित नमूं, सिद्धराज गुणखान ॥११९॥
ॐ ह्रीं अकारितकायमायारम्भनिष्ठात्मने नमः अर्घ्यं ।

मायारम्भ शरीरसों, नानुमोद भगवन्त ।
दर्शज्ञानमय चेतना, सहित नमें नित सन्त ॥१२०॥
ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय नमः अर्घ्यं ।

अर्द्ध पद्धडी ।

संरम्भ चाह नहिं काययोग, चित परिणति नमि शुद्धोपयोग ॥१२१॥

ॐ ह्री अकृतकायलोभसरम्भपरमचित्परिणताय नम अर्घ्यं ।

संरम्भ अकारित लोभदेह । निज आतम रत स्वसमेय तेह ॥१२२॥

ॐ ह्री अकारितकायलोभसरम्भ–स्वसमयरताय नमः अर्घ्यं ।

संरम्भ लोभ तन हर्ष नाश । नमि व्यक्त धर्म केवल प्रकाश ॥१२३॥

ॐ ह्री नानुमोदितकायलोभसरम्भ-व्यक्तधर्माय नम· अर्घ्यं ।

सोरठा—लोभी योग शरीर, समारम्भ विधि नाशके ।
ध्रुव आनन्द अतीव, पायो पूजूं सिद्धपद ॥१२४॥

ॐ ह्री अकृतकायलोभसमारम्भ-नित्यसुखाय नमः अर्घ्यं ।

लोभ अकारित काय, समारम्भ निज कर्म हनि ।
पायो पद अकषाय, सिद्ध वर्ग पूजूं सदा ॥१२५॥

ॐ ह्री अकारितकायलोभसमारम्भ-अकषायाय नम. अर्घ्यं ।

पूर्ववर्तनानन्द, परिग्रह इच्छा मेटिकें ।
पायो शौच स्वछन्द, नमूं सिद्ध पद भक्ति युत ॥१२६॥

ॐ ह्री नानुमोदितकायलोभसमारम्भ-शौचगुणाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—काय द्वार आरम्भको, लोभ उदय विधि नाश ।
नमो चिदातम पद लियो, शुद्ध ज्ञान परकाश ॥१२७॥

ॐ ह्री अकृतलोभारम्भचिदात्मने नम अर्घ्यं ।

काय द्वार आरम्भ विधि, लोभ उदय न कराय ।
निज अवलम्बित पद लियो, नमूं सदा तिन पाय ॥१२८॥

ॐ ह्री अकारितकायलोभनिरालबाय नम॰ अर्घ्यं ।

लोभी तन आरम्भ में, आनन्द रीती भेंट ।
नमूं सिद्ध पद पाइयो, निज आतम गुण श्रेष्ठ ॥१२९॥

ॐ ह्री नानुमोदितकायलोभारम्भात्मने नमः अर्घ्यं ।

सवैया इकतीसा

जेते कछु पुदगल परमाणु शब्दरूप, भये हैं अतीत काल आगे होनहार हैं
तिनको अनंत गुण करत अनंतवार, ऐसे महाराशि रूप धरैं विसतार हैं
सब हो एकत्र होय सिद्ध परमातमके, मानो गुण गण उचरन अर्थधार हैं
तौभी इक समयके अनंत भागअनंदको, कहत न कहैं हम कौन परकार हैं

ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशतगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।
१०८ वार जाप देना चाहिये ।

अथ जयमाला ।

दोहा—शिवगुण सरधा धार उर, भक्ति भाव है सार ।
केवल निज आनन्द करि, करूं सुजस उच्चार ॥

पद्धडी छन्द ।

जय मदन कदन मन करण नाश, जय शांतिरूप निज सुख विलास ।
जय कपट सुभट पट करन सूर, जय लोभ क्षोभ मद दम्भचूर ॥१॥
पर परणति सो अत्यन्त भिन्न, निज परिणति सो अति ही अभिन्न ।
अत्यन्त विमल सब ही विशेष, मल लेश शोध राखो न शेष ॥२॥
मणि दीप सार निर्विघन ज्योत, स्वाभाविक नित्य उद्योत होत ।
त्रैलोक्य शिखर राजत अखण्ड, सम्पूरण द्युति प्रगटी प्रचण्ड ॥३॥
मुनि मन मन्दिर को अन्धकार, तिस ही प्रकाशसौं नशत सार ।
सो सुलभ रूप पावै निजार्थ, जिस कारण भव भव भूमे व्यर्थ ॥४॥

जो कल्प काल में होत सिद्ध, तुम छिन ध्यावत लहिये प्रसिद्ध ।
भवि पतितन को उद्धार हेत, हस्तावलम्ब तुम नाम देत ॥५॥
तुम गुण सुमिरण सागर अथाह, गणधर शरीर नहीं पार पाह ।
जो भवदधि पार अभव्य रास, पावे न वृथा उद्यम प्रयास ॥६॥
जिन मुख द्रहसो निकसी अभंग, अति वेग रूप सिद्धान्त गंग ।
नय सप्त भंग कल्लोल मान, तिहुँ लोक बही धारा प्रमान ॥७॥
सो द्वादशांग वाणी विशाल, ता सुनत पढ़त आनन्द विशाल ।
याते जग मे तीरथ सुधाम, कहिलायो है सत्यार्थ नाम ॥८॥
सो तुम ही सो है शोभनीक, नातर जल सम जु वहै सु ठीक ।
निजपर आतम हित आत्म-भूत, जबसे है जब उतपत्ति सूत ॥९॥
ज्यो महाशीत ही हिम प्रवाह, है मेटन समरथ अगिन दाह ।
त्यों आप महामंगल स्वरूप, पर विघन विनाशन सहज रूप ॥१०॥
है सन्त दीन तुम भक्ति लीन, सो निश्चय पावै पद प्रवीण ।
तातै मन वच तन भाव धार, तुम सिद्धनकूं मम नमस्कार ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशत्यधिकशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

दोहा—जो तुम ध्यावैं भावसों, ते पावैं निज भाव ।
अगनि पाक संयोग करि, शुद्ध सुवर्ण उपाय ॥१२॥

इत्याशीर्वादः ।

इति पञ्चमी पूजा सम्पूर्णं ।

* अथ श्री षष्ठमी पूजा २५६ गुण सहित *

छप्पय छन्द ।

ऊरध अधो सरेफ बिन्दु हंकार विराजै,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्तसु छाजै ।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधि धर,
अग्रभागमें मंत्र अनाहत सोहत अतिवर ॥
पुनि अन्त ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित, सिद्धचक्र मंगल करो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् २५६ गुण सहित विराजमान अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरणं ।

दोहा——सूक्ष्मादिक गुण सहित हैं, कर्म रहित निररोग ।
सकल सिद्ध सो थापहूँ, मिटे उपद्रव योग ॥२॥

इति यंत्रस्थापन ।

अथाष्टक ।

गीता छन्द ।

अति नम्रता तिहुँ योगमें निज भक्ति निर्मल भावहीं ।
यह गुप्त जल प्रत्यक्ष निर्मल सलिल तीरथ लावहीं ॥
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं ।
द्वै अर्द्धशत षट अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्तणाण दसण वीर्य सुहमत्तदेव अवग्गाहणं अगुरुलघुमव्वावाह जन्मजरारोगविनाशनाय जल नि ॥१॥

अति वास विषय न वासनायुत मलय शील सुभावहीं ।
अरु चंदनादि सुगन्ध द्रव्य मनोग्य प्राशुक लावहीं ।
यह उभय० ॥द्वै अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्य सुहमत्तदेव

अवग्गाहरण अगुरुलघुमव्वावाहं संसारतापविनाशनाय चन्दन ॥२॥

परिणाम धवल सुवर्ण अक्षत मलिन मन न लगावहीं,
तिसं सार अक्षय अखय स्वच्छ सुवास पुंज बनावहीं।
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावहीं॥
ह्रौं अर्ध शत षट अधिक नाम उचार विरद सु गावहीं॥

ॐ ह्री श्रीसिद्ध परमेष्ठिने दो सौ छप्पन गुण सहित विराजमान श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहरण अगुरुलघुमव्वावाह अक्षयपद प्राप्तये अक्षत निर्वपामोति स्वाहा।

मन पाग भक्त्यनुराग आनन्द तान माल पुरावही।
तिस भाग कुसुम सुहाग अर सुर नागबास सु लावही॥
यह उभय०। ह्रौं अर्द्ध शत षट०॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने दो सौ छप्पन गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्य सुहमत्तहेव अवग्गाहरण अगुरुलघुमव्वावाह कामवाण विनाशनाय पुष्प निवपामीति स्वाहा।

जिन भक्ति रसमें तृप्तता मन आन स्वाद न चावही।
अंतर चरू बाहिज मनोहर रसिक नेवज लावही॥
यह उभय०। ह्रौं अर्द्ध शत षट०॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥

सरधान दीप प्रदीप्त अंतर मोह तिमिर नशावही ।
मणिदीप जगमग ज्योति तेज सुभास भेंट धरावही ॥
यह उभय० । ह्रैं अर्द्ध शत षट० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि० ॥६॥

आनन्द धर्म प्रभावना मन घटा धूम् सु छावहीं ।
गंधित दरव शुभ घ्राण प्रिय अति अग्नि संग जरावहीं ॥
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावही ।ह्रैं अर्द्ध ०।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वावाह अष्ट कर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

शुभ चिंतवन फल विविध रस युत भक्ति तरु उपजावही ।
*रसना लुभावन कल्पतरुके सुर असुर मन भावही ॥
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावही । ह्रैं अर्द्ध ०।

*"केला नरगी विल्व आम्र सु चारु कमरख लावही" ऐसा पाठ भी है ।

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुणसहित श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वाबाह मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

समकित विमल वसु अंग युत करि अर्घ अन्तर भावही।
वसु दरव अर्घ बनाय उत्तम देहु हर्ष उपावही॥
यह उभय द्रव्य संयोग त्रिभुवन पूज्य पूज रचावही।
द्वै अर्द्ध शत षट् अधिक नाम उचार विरद सुगावही॥

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने २५६ गुणसहित श्री समत्तणाणदसण वीय सुहमत्तहेव अवग्गाहण अगुरुलघुमव्वाबाह अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

गीताछंद—निर्मल सलिल शुभ वास चंदन, धवल अक्षय युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं, चरु प्रचुर स्वादसुविधि घनी॥
वर दीपमाल उजाल, धूपायन रसायन फल भलै।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै॥
ते कर्म प्रकृति नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है॥
कर्माष्ट बिन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती।

मुनि ध्येय सेय अभेय चाहूं, गेह द्यो हम शुभमती ॥१॥

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धचक्राधिपतये समत्तणाणादि अट्ठगुणमहिताय पूर्णार्घ्यं ।

अथ २५६ गुण सहित नामावली अर्घ ।

चौपाई–मिथ्यातम कारण दुखकारा, नित्य निरंजन विधि संसारा।
तिस हनि समरथ अतिशय रूपा, केवल पाय नमूं शिव भूपा ॥१

ॐ ह्री चिरतर ससारकारण ज्ञाननिद्धूं तोद्भूत केवलज्ञानातिशयसपन्नाय सिद्धाधिपतये नम.अर्घ्य

मन इन्द्रियनिमित मति ज्ञाना, योग देश तिष्ठत पद जाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥२॥

ॐ ह्री अभिनिवोधवारकविनाशकाय नम अर्घ्यं ।

द्वादश अंगरूप अज्ञाना, श्रुत आवरणी भेद वखाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥३॥

ॐ ह्री द्वादशागश्रुतावरणीकर्मविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

है असंख्य लोकावधि जेते, अवधिज्ञान के भेद सु तेते ।

क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥४॥

ॐ ह्रीं असंख्यभेदलोक अवधिज्ञानावरण विमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

है असंख्य परमान प्रमाना, मनपर्यय के भेद बखाना ।
क्षय उपशम आवर्ण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥५॥

ॐ ह्रीं असंख्यप्रकारमनपर्ययज्ञानावरणीकर्मविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

निखिल रूप गुणपर्यय ज्ञानं, सत स्वरूप प्रत्यक्ष प्रमानं ।
केवल आवर्णी विधि नाशों, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥६॥

ॐ ह्रीं निखिलरूप-गुणपर्याय-बोधक-केवलज्ञानावरणविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

द्वारपती भूपति के ताईं, रोक रहै देखन दे नाहीं ।
सोई दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥७॥

ॐ ह्रीं सकलदर्शनावरणीकर्मविनाशकाय नमः अर्घ्यं ।

मूर्तीक पदको प्रतिभासन, नेत्र द्वार होवै परकाशन ।
चक्षु दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥८॥

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरणकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

दृगविन अन्य इन्द्री मन द्वारे, वस्तुरूप सामान्य उघारे ।

अहग दर्शनावरणविनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥९॥

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरणरहिताय नमः अर्घ्यं ।

देशकाल द्रव भाव प्रमानं, अवधि दर्श होवे सब ठानं ।
अवधि दर्श आवरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१०॥

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरणरहिताय नम अर्घ्यं ।

विन मर्याद सकल तिहु काल, होय प्रकट घटपट तिहं हाल ।
केवल दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥११॥

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरणरहिताय नम अर्घ्यं ।

बैठे खडै पडै घुम्मरिया, देखे नहीं निद्राकी विरिया ।
निद्रा दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१२॥

ॐ ह्रीं निद्राकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

सावधानि कितनी की जावे, रंच नेत्र उघड़न नहीं पावे ।
निद्रा निद्रा कर्म विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ॥१३॥

ॐ ह्रीं निद्रानिद्राकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

मंदरूप निद्रा का आना, अवलोकै जाग्रतहि समाना ।

प्रचला दर्शनावरण विनाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ।।१४।।

ॐ ह्रीं प्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

मुखसों लार बहै अति भारी, हस्त पाद कंपत दुखकारी ।
प्रचला प्रचला वर्ण विकाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ।।१५।।

ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचलाकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

सोता हुआ करै सब काजा, प्रगटावै प्राकर्म समाजा ।
यह स्त्यानगृद्धि विधि नाशो, नमो सिद्ध स्वज्ञान प्रकाशो ।।१६।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जे पदार्थ हैं इन्द्रिय योग, ते सब वेदे जिय निज जोग ।
सोई नाम वेदनी होई, नमूं सिद्ध तुम नासो सोई ।।१७।।

ॐ ह्रीं वेदनीकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

रतिके उदय भोग सुखकार, भोगै जिय शुभ विविध प्रकार ।
साता भेद वेदनी होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय ।।१८।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

अरति उदय जिय इन्द्री द्वार, विषयभोग वेदे दुखकार ।

एही भेद असाता होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय ॥१९॥

ॐ ह्री असातावेदनीकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

ज्यों असावधानी मदपान, करत मोह विधिते सो जान ।
ता विधि करि निज लाभ न होय, नमूं सिद्ध तुम नाशो सोय ॥२०॥

ॐ ह्री मोहकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

जाके उदय तत्त्व परतीत, सत्य रूप नहीं हो विपरीत ।
पंच भेद मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२१॥

ॐ ह्री मिथ्यात्वकर्मविनाशनाय नम अर्घ्यं ।

प्रथमोपशम समकित जब गले, मिथ्या समकित दोनों मिले ।
मिश्र भेद मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२२॥

ॐ ह्री सम्यक्मिथ्यात्वकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

दर्शनमे कुछ मल उपजाय, करै समल नहिं मूल नसाय ।
समय प्रकृति मिथ्यात निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२३॥

ॐ ह्री सम्यक्त्वप्रकृतिमिथ्यात्वरहिताय नम अर्घ्य ।

धर्म मार्ग मे उपजे रोष, उदय भये मिथ्यात सदोष ।



यह अनन्त अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२४॥

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीक्रोधकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

देव धर्म गुरुसों अभिमान, उदय भये मिथ्या सरधान ।
यह अनन्त अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२५॥

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीमानकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

छलसो धर्म रीति दलमलै, उदय होय मिथ्या जब चलै ।
यह अनन्त अनुबंध निवार, प्रणमूं सिद्ध महासुखकार ॥२६॥

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीमायाकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

लोभ उदय निर्मालय दर्ब, भक्षे महानिंद मति सर्व ।
यह अनन्त अनुबंध निवार, भये सिद्ध प्रणमूं सुखकार ॥२७॥

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीलोभकर्मरहिताय नम· अर्घ्यं ।

सुन्दरी छन्द ।

क्रोध करि अणुव्रत नहिं लीजिये, चारित मोह प्रकृति सु भनीजिए ।
है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥२८॥

ॐ ह्री अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

मान करि अणुवृत न हो कदा, रहै अवृत युत दर्शन सदा ।
है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥२६॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमानकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

देशवृती श्रावक नहीं होत है, वक्रताको जहं उद्योत है ।
है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥३०॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमायाविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

मोह लोभ चरित जे जिय बसे, देशवृत श्रावक नहीं ते लसै ।
है अप्रत्याख्यानी कर्म सो, भये सिद्ध नमूं तिन नासियो ॥३१॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द ।

प्रत्याख्नानी क्रोध सहित जे आचरे, देशवृती सो सकल वृत्त नाहीं धरे ।
चारितमोहसुप्रकृति रूप तिह नाम है, नाश कियोमैं नमूं सिद्ध शिवधाम है ।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोधविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ॥३२॥

प्रत्याख्यानभिमान महान न शक्ति है, जास उदय पूरणसंयम अव्यक्त है ।
चारित मोह सु प्रकृति रूप तिह नाम है, नाश कियोमैं नमूं सिद्ध शिवधाम है ।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमानरहिताय नमः अर्घ्यं ॥३३॥

प्रत्याख्यानी माया मुनि पदको हतै, श्रावकव्रत पूरण नहीं खंडे जासतै ।
चारितमोहसुप्रकृतिरूपतिह नामहै, नाशकियो मैं नमूं सिद्ध शिवधामहै

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमायारहिताय नम अर्घ्यं । ॥३४॥

श्रावक पदमे जास लोभको वास है, प्रत्याख्यानी श्रुतमें संज्ञा तास है ।
चारितमोह सुप्रकृतिरूप तिह नाम है,नाशकियो मैं नमूं सिद्ध शिवधामहै

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभरहिताय नम अर्घ्यं ॥ ३५ ॥

भुजगप्रयात छन्द ।

यथाख्यात चारित्रको नाश कारा, महावृत्त को जासमे हो उजारा ।
यही संज्वलन क्रोध सिद्धांत गाया, नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥३६

ॐ ह्रीं सज्वलनावरणक्रोधरहिताय नम अर्घ्यं ।

रहै संज्वलन रूप उद्योत जेते, न हो सर्वथा शुद्धता भाव तेते ।
यही संज्वलन मान सिद्धांत गाया, नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥३७

ॐ ह्रीं सज्वलनावरणमानरहिताय नमः अर्घ्यं ।

वहै संज्लनकी जहां मंद धारा, लहै है तहां शुक्लध्यानी उभारा ।

यह संज्वलनमाया सिद्धांत गाया, नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ।३८॥

ॐ ह्रीं सज्वलनावरणमायारहिताय नम अर्घ्य ।

जहां संज्वलन लोभ है रंच नाहीं, निजानन्दको वास होवे तहांही ।
यही संज्वलन लोभ सिद्धांतगाया, नमूं सिद्धके चरण ताको नसाया ॥३९

ॐ ह्रीं सज्वलनावरणलोभरहिताय नम अर्घ्यं ।

मोदक छन्द ।

जा करि हास्य भाव जुत होतहिं, हास्य किये परकी यह पातहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४०॥

ॐ ह्रीं हास्यकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

प्रीत करै पर सो रति मानहिं, सो रति भेद विधी तिस जानहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीश नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४१॥

ॐ ह्रीं रतिकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ॥

जो परसों परसन्न न हो मन, आरति रूप रहै निज आनन ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४२

ॐ ह्रीं अरतिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जो करि पावत इष्ट वियोगहिं, खेदमई परिणाम सु शोकहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४३॥

ॐ ह्रीं शोककर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

हो उद्वेग उच्चाटन रूपहिं, मन तन कंपित होत अरूपहिं ।
सो तुम नाश कियो जगनाथहिं, शीस नमूं तुमको धरि हाथहिं ॥४४

ॐ ह्रीं भयकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

सवैया—जो परको अपराध उघारत, जो अपनो कछु दोष न जाने,
जो परके गुण औगुण जानत, जो अपने गुण को प्रगटाने ।
सो जिनराज बखान जुगुप्सित, है जियनो विधिके वश ऐसो,
हे भगवंत ! नमूं तुमको तुम, जीति लियो छिन में अरि तैसो ।

ॐ ह्रीं जुगुप्साकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जो नर नारि रमावन की, निजसों अभिलाष धरै मनमाहीं ।
सो अति ही परकाश हिये नित, काम की दाह मिटै छिन माहीं।
सो जिनराज बखान नपुंसक, वेद हनो विधिके वश ऐसो,

हे भगवंत ! नमूं तुमको तुम जीति लियो छिन मे अरि तैसो ।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदरहिताय नमः अर्घ्यं ॥४६॥

जो तिय संग रमें विधि यो मन, औरन से कछु आनन्द माने ।
किंचित् काम जगै उरमें नित, शांति सुभावन की शुधि ठाने ॥
सो जिनराज बखानत हैं नर, वेद हनो विधिके वश ऐसो ।
हे भगवन्त ! नमूं तुमको तुम, जीत लियो छिन में अरि तैसो ॥

ॐ ह्रीं पुरुषवेदरहिताय नमः अर्घ्यं ॥४७॥

जो नर संग रमें सुख मानत, अन्तर गूढ न जानत कोई ।
हाव विलास हि लाज धरै मन, आतुरता करि तृप्त न होई ॥
सो जिनराज बखानत हैं तिय, वेद हनो विधिके वश ऐसो ।
हेभगवन्त! नमूं तुमको तुम,जीतलियो छिनमे अरितैसो ॥४८॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेदरहिताय नमः अर्घ्यं ।४८।

वसन्ततिलका छन्द ।

आयु प्रमाण दृढ़ बंधन और नाहीं, गत्यानुसार थिति पूरण कर्णनाहीं ।

सोई विनाश कीनो तुम देवनाथा, वंदूं तुम्हे तरणकारण जोर हाथा ॥

ॐ ह्री आयूकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ॥४६॥

जो है कलेश अवधिसब होत जासो, तेतीससागर रहे थिति नर्कतासों ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा, वंदूं तुम्हें तरण कारण जोर हाथा ॥

ॐ ह्री नरकायुरहिताय नम अर्घ्यं ॥५०॥

याही प्रकार जितने दिन देव देही, नासै अकाल नहिं जे सुर आयुसेही ।
सोई विनाश कीनो तुम देव नाथा, वंदूं तुम्हे तरण कारण जोर हाथा ॥

ॐ ह्री देवायूरहिताय नम अर्घ्यं ॥५१॥

जासो करे त्रिजगकी थितिआउ पूरी, सोई कहो त्रिजगआयुमहालघूरी ।
सोईविनाशकीनोतुमदेव नाथा, वंदूं तुम्हें तरणकारण जोरहाथा॥५२॥

ॐ ह्री तिर्यचायुरहिताय नम अर्घ्यं ॥५२॥

जेते नरायु विधि दे रस आप जाको, तेते प्रजाय नर रूप भुगाय ताको ।
सोई विनाश कीनों तुम देव नाथा, वंदूं तुम्हें तरण कारण जोर हाथा ।

ॐ ह्री मनुष्यायुरहिताय नम अर्घ्यं ॥५३॥

पद्धड़ी छंद—जो करे जीवको बहु प्रकार, ज्यो चित्रकार चित्राम सार ।

सो नाम कर्म तुम नाश कीन, मै नमूं सदा उर भक्ति लीन ।५४।

ॐ ह्लीं नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जासो उपजे तिर्यंच जीव, रहै ज्ञान हीन निर्मल सदीव ।
सो तिर्यग्गति तुम नाश कीन, मै नमूं सदा उर भक्तिलीन ॥५५॥

ॐ ह्लीं तिर्यंचगतिरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जो उदय नारकी देह पाय, नाना दुख भोगे नर्क जाय ।
सो नरकगती तुम नाश कीन, मै नमूं सदा उर भक्तिलीन ॥५६॥

ॐ ह्लीं नरकगतिरहिताय नमः अर्घ्यं ।

चउ विधि सुरपद जासो लहाय, विषयातुर नित भोगे उपाय ।
सो देवगती तुम नाश कीन, मै नमूं सदा उर भक्तिलीन ॥५७॥

ॐ ह्लीं देवगतिकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जा उदय भये मानुष्य होत, लहै नीच ऊंच ताको उद्योत ।
सो मानुष गति तुम नाश कीन, मै नमूं सदा उर भक्ति लीन ॥५८॥

ॐ ह्लीं मनुष्यगतिरहिताय नमः अर्घ्यं ।

कामीनीमोहन छन्द।

एक ही भाव सामान्यका पावना, जीवकी जातिका भेद सोगावना।
होत जो थावरा एक इन्द्री कहो, पूज हूँ सिद्धके चरण ताको दहो ॥

ॐ ह्री एक-इन्द्रिय जातिरहिताय नम अर्घ्यं ॥५९॥

फर्सके साथमे जीभ जो आमिलें, पायसो आपने आप भूपर चलें।
गामिनी कर्म सो दोय इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्धके चरण ताको दहो ॥

ॐ ह्री द्वि-इन्द्रिय-जातिरहिताय नम अर्घ्यं ॥६०॥

नाक हो और दो आदिके जोड़ मे, हो उदय चालना योगसों दोल में।
गामिनी कर्म सो तीन इन्द्री कहों, पूजहूँ सिद्धके चरण ताको दहो ॥

ॐ ह्री त्रीन्द्रिय-जातिरहिताय नम अर्घ्यं ॥६१॥

आंख हो नाक हो जीभ हो फर्श हो, कानके शब्दका ज्ञान जामे न हो।
गामिनी कर्मसो चार इन्द्री कहो, पूजहूँ सिद्धके चरण ताको दहो ॥६२॥

ॐ ह्री चतुरिन्द्रियजातिरहिताय नम· अर्घ्यं।

कान भी आमिलै जीव जा जाति में, हो असंज्ञी सुसंज्ञी दो भांति में।
गामीनी कर्मको पंच इन्द्री कहों, पूजहुँ सिद्धकेचरण ताको दहो ॥६३॥

ॐ ह्री पचेन्द्रियजातिरहिताय नम अर्घ्यं ।

छंदलावनी—हो उदार जो प्रगट उदारिक, नाम कर्मकी प्रकृति भनी,
लहै औदारिक देह जीव तिस, कर्म प्रकृतिके उदय तनी।
भये अकाय अमूरति आनंद,—पुंज चिदातम ज्योति बनी,
नमूं तुम्हैं कर जोरयुगलतुम सकल रोगथल काय हनी ॥६४।

ॐ ह्री औदारिकशरीरविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

निज शरीरको अणिमादिक करि, बहु प्रकार प्रणमाय वरे,
वैक्रिय तन कहलावे है यह, देव नारकी मूल धरे ।
भए अकाय अमूरति आनन्द,—पुंज चिदातम ज्योति घनी,
नमूं तुम्हैं करजोरयुगलतुम, सकल रोगथलकायहनी ॥६५॥

ॐ ह्री वैक्रियिकशरीरविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

धवल वर्ण शुभ योगी संशय-हरण आहारकका पुतला,
औ· प्रमत्त गुणथानक मुनिके, देह औदारिकसो निकला।
भए अकाय० ॥नमूं तुम्है० ॥६६॥

ॐ ह्रीं आहारकशरीररहिताय नम. अर्घ्यं ।

पुद्गलीक तन कर्म वर्गणा, कारमाण परदीप्त करण,
तैजस नाम शरीर शास्त्रमे, गावत है नहिं तेज वरण ।
भए अकाय० ॥नमूं तुम्हैं० ॥६७॥

ॐ ह्रीं तेजसशरीररहिताय नम अर्घ्यं ।

पुद्गलीक वरगणा जीवसों, एक क्षेत्र अवगाही है,
नूतन कारण करण मूल तन, कारमाण तिस नाम कहै ।
भए अकाय० ॥नमूं तुम्हैं० ॥६८॥

ॐ ह्रीं कार्माणशरीररहिताय नम अर्घ्यं ।

इन्द्रवज्रा छन्द ।

जेते प्रदेशा तन बीच आवै, सारे मिलै जोड़ न छिद्र पावे ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥६९॥

ॐ ह्रीं औदारिकसंघातरहिताय नम अर्घ्यं ।

ऐसे प्रकारा तनमें अहारा, संधी मिलाया कर वेतसारा ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्हैं सिद्ध यह कर्म भानो ॥७०॥

ॐ ह्री आहारकसघातरहिताय नम· अर्घ्यं ।

वैक्रिय के जोड़ जो होत नाहीं, संघातनामा जिन बैन माहीं ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्है सिद्ध यह कर्म भानो ॥७१॥

ॐ ह्री वैक्रियकसघातरहिताय नम. अर्घ्यं ।

तेजस्सके अंग उपंग सारे, संधी मिलाया तिस मांहि धारे ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्है सिद्ध यह कर्म भानो ॥७२॥

ॐ ह्री तैजसमघातरहिताय नम अर्घ्यं ।

ज्ञानादि आवर्ण वो कर्म काया, ताको मिलाया श्रुत मांहि गाया ।
संघात नामा जिय देह जानो, पूजूं तुम्है सिद्ध यह कर्म भानो ॥७३॥

ॐ ह्री कार्माणसघातरहिताय नम अर्घ्यं ।

चौबोलाछन्द—पुद्गलीक वर्गणा जोग तै जब जिय करत अहारा ।
प्रणवावे तिनको एकत्र करि, बंध उदय अनुसारा ॥
यही औदारिक बन्धन तुमने, छेद किये निरधारा ।
भए अबंध अकाय अनूपम, जजूं भक्ति उर धारा ॥७४॥

ॐ ह्री औदारिकनबन्धनरहिताय नम अर्घ्यं ।

वैक्रियक तनु परमाणु मिल, परस्परा अनिवारा ।
हो स्कन्ध रूप पर्याई, यह बन्धन परकारा ॥
वैक्रियिक तनु बन्धन तुमने, छेद कियो निरधारा ।
भये अबंध अकाय अनूपम जजूं भक्ति उर धारा । भए०।७५

ॐ ह्री वैक्रियिकबन्धनछेदकाय नम. अर्घ्यं ।

मुनि शरीरसो बाहिज निसरे, संशय नाशनहारा ।
ताको मिले प्रदेश परस्पर, हो सम्बन्ध अवारा ॥
यही अहारक बन्धन तुमने, छेद कियो निरधारा ।भए०।७६।

ॐ ह्री आहारकबन्धनछेदकाय नम. अर्घ्यं ।

दीप्त जोति जो कारमाणकी, रहै निरन्तर लारा ।
जहां तहां नहिं बिखरै कन ज्यो, बहै एक ही धारा ॥
तैजस नामा बंधक तुमने छेद कियो निरधारा ।।भए।।७७।।

ॐ ह्री तैजसबन्धनरहिताय नम अर्घ्यं ।

द्रव्य कर्म ज्ञानावरणादिक, पुद्गल जाति पसारा ।
एक क्षेत्र अवगाही जियको, दुर्विधि भाव करतारा ॥

कारमाण यह बंधन तुमने, छेद कियो निरधारा ।भए०।७८।

ॐ ह्री कार्माणबन्धनरहिताय नम. अर्घ्यं ।

छन्द रोला—तन आकृत संस्थान आदि, समचतुरस्र बखानो,
ऊपर तले समान यथाविधि सुन्दर जानो ।
यह विपरीत स्वरूप त्याग, पायो निजातम पद,
बीजभूत कल्याण नमूं, भव्यनि प्रति सुखप्रद ॥७९॥

ॐ ह्री समचतुरस्रसंस्थानविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

ऊपर से हो थूल तले हो न्यून देह जिस, परिमण्डलनिग्रोध नाम वरणो
सिद्धांत तिस । यह विपरीत० ॥बीजभूत कल्याण० ॥८०॥

ॐ ह्री न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थानरहिताय नम अर्घ्यं ।

नीचेसे हो थूल न्यून होवे उपराही, बमई सम वामीक देह जिन
आज्ञा माही । यह विपरीत० ॥बीजभूत कल्याण० ॥८१॥

ॐ ह्री वामीकसंस्थानरहिताय नम अर्घ्यं ।

जो कूबड़ आकार रूप पावे तन प्राणी, कुब्ज नाम संस्थान ताहि
बरणै जिन वानी । यह विपरीत० ॥बीजभूत कल्याण० ॥८२॥

ॐ ह्रीं कुब्जकनामसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं ।

लघुसों लघु ठिगना रूप एम तन होवे जाको, वामन है परसिद्ध
लोकमें कहिये ताको। यह विपरीत स्वरूप त्याग,पायो निजात्मपद ।
बीजभूत कल्याण नमूं भव्यनि प्रति सुखप्रद ॥८३॥

ॐ ह्रीं वामनसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जिततित बहु आकार कहीं नहिं हो यकसारू,
हुँडक अति असुहावन पाप फल प्रगट उघारू ।
यह विपरीत०, बीजभूत कल्याण० ॥८४॥

ॐ ह्रीं हुँडकसंस्थानरहिताय नमः अर्घ्यं ।

लक्ष्मीधरा छन्द ।

जीवआपभावसो जुकर्मकी क्रियाकरेत,अंगवाउपंग सो शरीरकेउदयसमेत
सो औदारिकीशरीरअंगवाउपंगनाश, सिद्धरूपहोनमोसुपाइयोअबाधवास

ॐ ह्रीं औदारिकआंगोपांगरहिताय नमः अर्घ्यं ॥८५॥

देवनारकीशरीर मांसरक्तसे नहोत,तासको अनेकभांतिआप देसकैउद्योत
वैक्रियिक सो शरीरअंगवाउपंगनाश,सिद्धरूपहो नमो सुपाइयोअबाधवास

ॐ ह्रीं वैक्रियिकआंगोपांगरहिताय नम अर्घ्यं ।

साधुके शरीर मूलतें कढ़े प्रशंसयोग, संशयकोविध्वंसकार केवलीसुलेतभोग
आहारक सो शरीर अंगवा उपंगनाश, सिद्धरूपहो नमोसुपाइयोअबाधवास

ॐ ह्रीं आहारकआंगोपांगरहिताय नम अर्घ्यं ।८७।

गीता छंद—संहनन बन्धन हाड होय अभेद वज्र सो नाम है,
नाराच कीली वृषभ डोरी बांधने की ठाम है ।
है आदिको संहनन जो जिम वज्र सब परकार हो ।
यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनन्द धार हो ।।८८।।

ॐ ह्रीं वज्रर्षभनाराचसंहननरहिताय नम अर्घ्यं ।

ज्यो वज्रकी कीली ठुकी हो हाड संधी मे जहां,
सामान वृषभ जु जेवरी ताकरि बंधाई हो तहां ।
है दूसरा संहनन यह नाराज वज्र प्रकार हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो ।।८९।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराचसंहननरहिताय नम. अर्घ्यं ।

नहिं वज्रकी हो वृषभ अरु नाराच भी नहीं वज्र हो,

सामान कीली करि ठुकी सब हाड वज्र समान हो ।
है तीसरा संहनन जो नाराच ही परकार हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो ॥६०॥

ॐ ह्रीं नाराचसहननरहिताय नमः अर्घ्यं ।

हो जडित छोटी कीलिका, सो संधि हाडो की जबै,
कछु ना विशेषण वज्र के, सामान्य ही होवे सबै ।
है चौथवां संहनन जो, नाराच अर्द्ध प्रकार हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो, परम आनंद धार हो ॥६१॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराचसहननरहिताय नमः अर्घ्यं ।

जो परस्पर जडित होवे, संधि हाडनकी जहां,
नहिं कीलिका सो ठुकी होवे, साल संधी के तहां ।
है पांचवां संहनन जो, कीलक नाम कहाय हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो, परम आनंद धार हो ॥६२॥

ॐ ह्रीं कीलिकसहननरहिताय नमः अर्घ्यं ।

कछु छिद्र कछुक मिलाप होवे, संधि हाड़ोमय सही,

केवल नसासों होय बेढी, मॉससों लतपत रही ।
अंतिम स्फाटिक संहनन यह, हीन शक्ति असार हो,
यह त्याग बंध अबंध निवसो परम आनंद धार हो ।।९३।।

ॐ ह्री स्फटिकसहननरहिताय नम' अर्घ्य ।

दोहा—वर्ण विशेष न स्वेत है, नामकर्म तन धार ।
स्वच्छ स्वरूपी हो नमूं, ताहि कर्मरज टार ।।९४।।

ॐ ह्री स्वेतनामकर्मरहिताय नम' अर्घ्यं ।

वर्ण विशेष न पीत है, नामकर्म तन धार ।।स्वच्छ०।।९५।।

ॐ ह्री पीतनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

वर्ण विशेष न रक्त है, नामकर्म तन धार ।।स्वच्छ०।।९६।।

ॐ ह्री रक्तनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

वर्ण विशेष न हरित है, नामकर्म तन धार ।।स्वच्छ०।।९७।।

ॐ ह्री हरितनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

गंध विशेष न कृष्ण है, नामकर्म तन धार ।।स्वच्छ०।।९८।।

ॐ ह्री कृष्णनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

गंध विशेष न शुभ कहो, नामकर्म तन धार ।।स्वच्छ०।।९९।।



ॐ ह्रीं सुगन्धनामकर्मरहिताय नय अर्घ्यं ।

गंध विशेष न अशुभ है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१००॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्धनामकर्मरहिताय नम: अर्घ्यं ।

स्वाद विशेष न तिक्त है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०१॥

ॐ ह्रीं तिक्तरसरहिताय नम अर्घ्यं ।

स्वाद विशेष न कटुक है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०२॥

ॐ ह्रीं कटुकरसरहिताय नम: अर्घ्यं ।

स्वाद विशेष न आम्ल है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०३॥

ॐ ह्रीं आम्लरसरहिताय नम अर्घ्यं ।

स्वाद विशेष न मधुर है, नामकर्म तन धर ॥स्वच्छ०॥१०४॥

ॐ ह्रीं मधुररसरहिनाय नम अर्घ्यं ।

स्वाद विशेष न कषाय है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०५॥

ॐ ह्रीं कषायरसरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न नर्म है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०६॥

ॐ ह्रीं मृदुत्वस्पशरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न कठिन है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ॥१०७॥

ॐ ह्रीं कठिनस्पर्शरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न भार है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०८॥

ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शरहिताय नम॰ अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न अगुरु है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१०९॥

ॐ ह्रीं लघुस्पर्शरहिताय नम॰ अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न शीत है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥११०॥

ॐ ह्रीं शीतस्पर्शरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न उष्ण है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥१११॥

ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न चिकण है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ॥११२॥

ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शरहिताय नम अर्घ्यं ।

फर्स विशेष न रूक्ष है, नामकर्म तन धार ॥स्वच्छ०॥११३॥

ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शरहिताय नम अर्घ्यं ।

छंद मरहठा—हो जो प्रजाप्त वर पणइन्द्रीधर जाय नर्क निरधार,
विग्रहसु चाल मे अंतराल मे धरै पूर्व आकार ।
सो नर्क मानकरि गावत गणधर आनुपूर्वी सार ।

तुम ताहि नशायो शिवगति पायो नमित लहूँ भवपार ॥११४॥

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्व्वीछिदकाय नम. अर्घ्यं ।

निजकाय छांडकरि अंत समय मरि होय पशू अवतार,
विग्रहसु चाल में अन्तराल मे धरै पूर्व आकार ।
सो तिर्यंच नाम करि गावत गणधर आनुपूर्वी सार ।
तुम ताहि नशायो शिवगति पायो नमित लहूँ भवपार ॥११५

ॐ ह्री तिर्यंचगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।

समकितसों मर वा कलेश करि धरहि देवगति चार,
विहग्रसु चाल मे अन्तराल मे धरै पूर्व आकार ॥
सो देव नामकरि गावत० ॥तुम ताहि नशायो० ॥११६॥

ॐ ह्री देवगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

हो मिश्र प्रणामी वा शिवगामी वरै मनुष्यगति सार,
विग्रहसु चाल मे अन्तराल मैं धरै पूर्व आकार ।
सो मनुष्य नाम करि गावत गणधर अनुपूर्वी सार ।

तुम ताहि नशायो शिवगति पायो नमित लहूँ भवपार ॥॥११७॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीविमुक्ताय नम अर्घ्यं।

छन्द त्रोटक।

तनभार भए निज घात ठने, तिसकी कछु विधि ऐसी जु बने।
अपाघत सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भए तसु मूल हनो ॥११८॥

ॐ ह्रीं अपघातकर्मरहिताय नम अर्घ्यं।

विष आदि अनेक उपाधि धरै, पर प्राणनिको निर्मूल करै।
परघाति सु कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भए तसु मूल हनो ॥११९॥

ॐ ह्रीं परघातनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं।

अति तेजमई, परदीप्त महा, रवि बिंब विषै जिय भूमि लहा।
यह आतप कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२०॥

ॐ ह्रीं अतितेजमयी आताप-नामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं।

परकासमई जिम बिंब शशी, पृथिवी जिय पावत देह इसी।
द्युति नाम सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२१

ॐ ह्रीं उद्योतनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

तनकी थिति कारण स्वास गहै, स्वर अन्तर बाहर भेद वहै ।
यह स्वास सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनो ॥१२२॥

ॐ ह्रीं स्वासकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

शुभ चाल चलै अपनी जिसमें, शशिज्यो नभ सोहत है तिसमें ।
नभमे गति कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२३॥

ॐ ह्रीं विहायोगतिकर्मविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

इक इन्द्रिय जात विरोध मई, चतुरांति सुभावक प्राप्त भई ।
त्रस नाम सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२४॥

ॐ ह्रीं त्रसनामकर्मविमुक्ताय नम अर्घ्यं ।

इक इन्द्रिय जातहि पावत है, अरु शेष न ताहि धरावत है ।
यह थावर कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२५॥

ॐ ह्रीं थावरनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

परमे परवेश न आप करै, परको निजमे नहिं थाप धरै ।
यह बादर कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२६॥

ॐ ह्रीं वादरनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

जलसो दवसो नहीं आप मरै, सब ठौर रहै परको न हरैं ।
यह सूक्षम कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२७॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

जिसते परिपूरणता करि है, निज शक्ति समान उदय धरि है ।
पर्याप्त सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तिस मूल हनो ॥१२८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

परिपूरणता नहिं धार सके, यह होत सभी साधारण के ।
अपरयापति कर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनो ॥१२९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

जिम लोह न भार धरै तनमे, जिम आकन फूल उड़े बनमे ।
है अगुरुलघु यह भेद भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनो ॥१३०॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

इक देह विषै इक जीव रहै, इकलो तिसको सब भोग लहै ।
परतेक सुकर्म सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनो ॥१३१॥

ॐ ह्रीं प्रत्येककर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

इक देह विषैं बहु जीव रहै, इक साथ सभी तिस भोग लहैं ।
यह भेद निगोद सिद्धांत भनो, जग पूज्य भये तसु मूल हनो ॥१३२॥

ॐ ह्रीं साधारणनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

उपेन्द्रवज्रा छन्द ।

चले न जो धातु तजै न वासा, यथाविधि आप धरै निवासा ।
यही प्रकारा थिर नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३३॥

ॐ ह्रीं स्थिरनामकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

अनेक थानं सुख गौण धातं, चलंति धारं निजवास धातं ।
यही प्रकारा थिर नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३४॥

ॐ ह्रीं अस्थिरनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

यथाविधी देह विशाल सोहै, सुखारविंदादिक सर्व मोहै ।
यही प्रकारा शुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३५॥

ॐ ह्रीं शुभनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

असुन्दराकार शरीर मांहीं, लखो जहाँसो विडरूप ताहीं ।

यह प्रकारा अशुभ नाम भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३६॥

ॐ ह्री अशुभनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

अनेक लोकोत्तम भावधारी, करै सभी तापर प्रीति भारी ।
सुभगताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३७॥

ॐ ह्री सुभगनामकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

धरै अनेका गुण तो न जासो, करै कभी प्रीति न कोई तासों ।
दुर्भाग ताको यह भेद भासो, नमामि देवं तिस देह नासो ॥१३८॥

ॐ ह्री दुर्भगकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

ध्वनि वीन भाति ज्यो मधुर बैन, निसरै पिक आदिक सुरस दैन ।
यह सुस्वर नाम प्रकृति कहाय, तुम हनो नमूं निज शीसलाय ॥१३९॥

ॐ ह्री सुस्वरनामकर्मरहिताय नम. अर्घ्यं ।

*गर्दभस्वर जैसो कहो भास, तैसो रव अशुभ कहो सु भास ।
यह दुस्वर नाम प्रकृत कहाय, तुम हनो नमूं निज शीस लाय ॥१४०॥

* अस्पष्ट भूतवानी समान, असुहावन भयकर शब्द जान । ऐसा भी पाठ है ।

ॐ ह्री दुस्वरनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द—होत प्रभा मई कांति महारमणीक जू ।
जग जनमन भावन माने यह ठीक जू ।
यह आदेय सुप्रकृति नाश निजपद लहो ।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हैं हम अघ दहो ॥१४१॥

ॐ ह्री आदेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

रूखो मुखको वरण लेश नहिं कांतिको ।
रूखे केश नखाकृति तन बढ़ भाँतिको ॥
अनादेय यह प्रकृति नाश निजपद लहो ।
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्हैं हम अघ दहो ॥१४२॥

ॐ ह्री अनादेयनामकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

होत गुप्त गुण तौ भी जगमे विस्तरैं ।
जगजन सुजस उचारत ताकी थुति करैं ॥
यह जस प्रकृति विनाश सुभावी यश लहो ।

ध्यावत है जगनाथ तुम्है हम अघ दहो ॥१४३॥

ॐ ह्री यश प्रकृतिछेदकाय नम अर्घ्यं ।

जासु गुणनको औगुण कर सब ही ग्रहै ।
करत काज परशंसित पण निंदित कहै ॥
अपयश प्रकृति विनाश सुभावी यश लहो ।
ध्यावत है जगनाथ तुम्है हम अघ दहो ॥१४४॥

ॐ ह्री अपयशःनामकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

योग थान नेत्रादिक ज्योके त्यों बनों ।
रचित चतुर कारीगर करते है तनो ।
यह निर्माण विनाश सुभावी पद लहो,
ध्यावत हैं जगनाथ तुम्है हम अघ दहो ॥१४५॥

ॐ ह्री निर्माणनामकर्मरहिताय नय अर्घ्यं ।

पंचकल्याणक चोतिस अतिशय राज ही,
प्रातिहार्य अठ समोसरण द्युति छाज ही ।

तीर्थंकर विधि विभव नाश निज पद लहो,
ध्यावत है जगनाथ तुम्है हम अघ दहो ॥१४६॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृतिरहिताय नम अर्घ्यं।

चाल छंद— जो कुम्भकार की नाई, छिन घट छिन करत सराई।
सो गोत कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४७॥
ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय नम अर्घ्यं।

लोकनिमें पूज्य प्रधाना, सब करत विनय सनमाना।
यह ऊंच गोत्र परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४८॥
ॐ ह्रीं ऊंचगोत्रकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं।

जिसको सब कहत कमीना, आचरण धरे अति हीना।
यह नीच गोत्र परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१४९॥
ॐ ह्रीं नीचगोत्रकर्मरहिताय नम अर्घ्यं।

ज्यो दे न सके भण्डारी, परधनको हो रखवारी।
यह अन्तराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५०॥
ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं।

हो दान देनको भावा, दे सके न कोटि उपावा ।
दानांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५१॥

ॐ ह्री दानातरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

मन दानलेन को भावे, दातार प्रसंग न पावै ।
लाभांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५२॥

ॐ ह्री लाभातरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

पुष्पादिक चाहै भोगा, पर पाय न अवसर योगा ।
भोगांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५३॥

ॐ ह्री भोगातरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

तिय आदिक बारम्बारा, नहिं भोग सके हितकारा ।
उपभोगांतराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५४॥

ॐ ह्री उपभोगातरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

चेतन निज बल प्रकटावे, यह योग कभू नहिं पावे ।
वीर्यान्तराय परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५५॥

ॐ ह्री वीर्यान्तरायकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

ज्ञानावरणादिक नामी, निज भाग उदय परिणामी ।
अठ भेद कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५६॥
ॐ ह्री अष्टकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

इकसो अड़ताल प्रकारी, उत्तर विधि सत्ता धारी ।
सब प्रकृति कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ।१५७।
ॐ ह्री एकशताष्टचत्वारिंशत् कर्मप्रकृतिरहिताय नम अर्घ्यं ।

परणाम भेद संख्याता, जो वचन योग मे आता ।
संख्यात कर्म परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१५८॥
ॐ ह्री सख्यातकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

है वचननसो अधिकाई, परिणाम भेद दुखदाई ।
विधि असंख्यात परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ।१५९।
ॐ ह्री असख्यातकर्मरहिताय नम अर्घ्यं ।

अविभाग प्रछेद अनन्ता, जो केवलज्ञान लहन्ता ।
यह कर्म अनन्त परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१६०॥
ॐ ह्री अनन्तकर्मरहिताय नम· अर्घ्यं ।

सब भाग अनन्तानन्ता, यह सूक्ष्मभाव धारंता ।
विधि नन्तानन्त परजारा, हम पूज रचो सुखकारा ॥१६१॥

ॐ ह्ली अनन्तानन्तकर्मरहिताय नमः अर्घ्यं ।

मोतीयादाम छन्द ।

न हो परिणाम विषै कछु खेद, सदा इकसा प्रणवै बिन भेद ।
निजाश्रित भाव रमै सुखधाम, करूं तिस आनन्दकों परिणाम[1] ॥

ॐ ह्ली आनन्दस्वभावाय नम अर्घ्यं ॥१६२॥

धरै जितने परिणामन भेद, विशेषनि तै सब ही बिन खेद ।
पराश्रितता बिन आनन्द धर्म, नमूं तिन पाय लहूं पद शर्म ॥

ॐ ह्ली आनन्दधर्माय नमः अर्घ्यं ॥१६३॥

न हो परयोग निमित्त विभाव, सदा निवसे निज आनन्द भाव ।
यही वरणो परमानन्द धर्म, नमूं तिन पाय लहूं पद पर्म ॥

ॐ ह्ली परमानन्दधर्माय नम अर्घ्यं ॥१६४॥

कभूं परसो कछु द्वेष न होत, कभूं फुनि हर्ष विशेष न होत ।
रहै नित ही निज भावन लीन, नमूं पद साम सुभाव सु लीन ॥

ॐ ह्ली साम्यस्वभावाय नमः अर्घ्यं ॥१६५॥

[१ परिणाम=प्रणाम=नमस्कार]

निजाकृति में नहिं लेश कषाय, अमूरति शांतिमई सुखदाय ।
आकुलता बिन साम्य स्वरूप, नमूं तिनको नित आनंद रूप ॥

ॐ ह्रीं साम्यस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥१६६॥

अनन्त गुणातम द्रव्य पर्याय, यही विधि आप धरै बहु भाय ।
सभी कुमति करि हो अलखाय, नमूं जिनवैन भली विधि गाय ॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय नमः अर्घ्यं ॥१६७॥

अनन्त गुणातम रूप कहाय, गुणी गुण भेद सदा प्रणमाय ।
महागुण स्वच्छमयी तुम रूप, नमूं तिनको पद पाइ अनूप ॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ॥१६८।

अभेद सुभेद अनेक सु एक, धरो इन आदिक धर्म अनेक ।
विरोधित भावनसों अविरुद्ध, नमूं जिन आगम की विधि शुद्ध ॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्माय नमः अर्घ्यं ॥१६९॥

रहै धर्मी नित धर्म सरूप, न हो परदेशनसों अन्यरूप ।
चिदातम धर्म सभी निजरूप, धरो प्रणमूं मन भक्ति स्वरूप ॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥१७०॥

चौपई—हीनाधिक नहीं भाव विशेष, आतमीक आनन्द हमेश ।
सम स्वभाव सोई सुखराज, प्रणमूं सिद्ध मिटै भववास ॥१७१॥

ॐ ह्रीं समस्वभावाय नमः अर्घ्यं ॥१७१॥

इष्टानिष्ट मिटो भ्रम जाल, पायो निज आनन्द विशाल ।
साम्य सुधारसको नित भोग, नमूं सिद्ध सन्तुष्ट मनोग ॥

ॐ ह्रीं सतुष्टाय नम अर्घ्यं ॥१७२॥

पर पदार्थ को इच्छुक नाहिं, सदा सुखी स्वातम पद माहिं ।
मेटो सकल राग अरु दोष, प्रणमूं राजत सम सन्तोष ॥

ॐ ह्रीं समसंतोषाय नम अर्घ्यं ॥१७३॥

मोह उदय सब भाव नसाय, मेटो पुद्गलीक पर्याय ।
शुद्ध निरंजन समगुण लहो, नमूं सिद्ध परकृत दुख दहो ॥

ॐ ह्रीं साम्यगुणाय नमः अर्घ्यं ॥१७४।

निजपदसों थिरता नहिं तजै, स्वानुभूत अनुभव नित भजै ।
निराबाध तिष्ठै अविकार, साम्यस्थाई गुण भण्डार ॥

ॐ ह्रीं साम्यस्थाय नमः अर्घ्यं ॥१७५॥

भव सम्बन्धी काज निवार, अचल रूप तिष्ठै समधार।
कृत्याकृत्य साम्य गुण पाइयो, भक्ति सहित हम शीश नाइयो ॥
ॐ ह्रीं साम्यकृत्याकृतगुणाय नम अर्घ्यं ॥१७६॥

छन्द झूलना।

भूल नहीं भय करै छोभ नाहीं धरै, गैरकी आसको त्रास नाहीं धरै।
शरण काकी चहै सबनको शरण है, अन्यकी शरण बिन नमूं ताही वरैं ॥
ॐ ह्रीं अनन्यशरणाय नमः अर्घ्यं ॥१७७॥

द्रव्य षट्में नहीं आप गुण आप ही, आपमें राजते सहज नीको सही।
स्वगुण अस्तित्वता वस्तुकी वस्तुता, धरत हो मैं नमूं आपही को स्वता ॥
ॐ ह्रीं अनन्यगुणाय नम. अर्घ्यं ॥१७८॥

गैरसे गैर हो आपमे रमाइयो, स्वचतुर खेतमे वास तिन पाइयो।
धर्म समुदाय हो परमपद पाइयो, मैं तुम्हैं भक्तियुत शीश निज नाइयो ॥
ॐ ह्रीं अनन्यधर्माय नमः अर्घ्यं ॥१७९॥

साधना जबतईं होत है तबतईं, दोउ परिमाणको काज जामे नहीं।
आप निजपद लियो तिन जलांजलि दियो

अन्य नहीं चहत निज शुद्धता मे लियो ॥

ॐ ह्री परिमाणविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ॥१८०॥

तोमर छन्द—दृग ज्ञान पूरणचन्द्र, अकलंक ज्योति अमन्द ।
निरद्वन्द ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप ॥१८१॥

ॐ ह्री ब्रह्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सब ज्ञानमयी परिणाम, वर्णादिको नहिं काम ।
निरद्वन्द ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप ॥१८२॥

ॐ ह्री ब्रह्मगुणाय नमः अर्घ्यं ।

निज चेतनागुण धार, बिन-रूपहो अविकार ।
निरद्वन्द ब्रह्मस्वरूप, नित पूजहूँ चिद्रूप ॥१८३॥

ॐ ह्री ब्रह्मचेतनाय नम अर्घ्यं ।

सुन्दरी छन्द ।

अन्य रूप सु अन्य रहै सदा, पर निमित्त विभाव न हो कदा ।
कहत हैं मुनि शुद्ध सुभावजी, नमूं सिद्ध सदा तिन पायजी ॥१८४॥

ॐ ह्री शुद्धस्वभावाय नम. अर्घ्यं ।

पर परिणामनसो नहिं मिलत है, निज परिणामनसो नहिं चलत है ।
परिणामी शुद्ध स्वरूप एह, नमूं सिद्ध सदा नित पांय तेह ॥१८५॥
ॐ ह्री शुद्धपारिणामिकाय नम अर्घ्यं ।

वस्तुता व्यवहार नहीं अहै, उपस्वरूप असत्यारथ कहै ।
शुद्ध स्वरूप न ताकरि साध्य है, निर्विकल्प समाधि अराध्य है ॥१८६॥
ॐ ह्री-अशुद्धरहिताय नम. अर्घ्यं ।

द्रव्य पर्यायार्थिक नय दोऊ, स्वानुभव में विकलप नहिं कोऊ ।
सिद्ध शुद्धाशुद्ध अतीत हो, नमत तुम तिनपद परतीत हो ॥१८७॥
ॐ ह्री शुद्धाशुद्धरहिताय नमः अर्घ्यं ।

चौपाई—क्षय उपशम अवलोकन टारो, निज गुण क्षाइक रूप उघारो ।
युगपत सकल चराचर देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा॥१८८॥
ॐ ह्री अनन्तदृगस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

जब पूरण अवलोकन पायो, तब पूरण आनन्द उपायो ।
अविनाभाव स्वयं पद देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा ॥१८९॥
ॐ ह्री अनन्तदृगानन्दस्वभावाय नमः अर्घ्यं ।

नाश सु पूर्वक हो उतपादा, सत लक्षण परिणति मरजादा ।
क्षय उपशम तन क्षायक पेखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा ॥१६०॥
ॐ ह्रीं अनन्तगुणाकाराय नमः अर्घ्यं ।

नित्य रूप निज चित पद माहीं, अन्य रूप पलटन हो नाहीं ।
द्रव्य-दृष्टिमें यह गुण देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा ॥१६१॥
ॐ ह्रीं अनन्तध्रुवाय नमः अर्घ्यं ।

कर्म नाश जो स्व-पद पावै, रञ्च मात्र फिर अन्त न आवै ।
यह अव्यय गुण तुममें देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा ॥१६२॥
ॐ ह्रीं अनन्ताव्ययाय नमः अर्घ्यं ।

पर नहीं व्यापै तुमपद मांहीं, परमें रमण भाव तुम नाहीं ।
निज करि निजमें निज लय देखा, ध्यावत हूँ मन हर्ष विशेषा ॥१६३॥
ॐ ह्रीं अनन्तनिजधाराय नमः अर्घ्यं ।

गननारो छन्द ।

अनंताभिधानो, गुणाकार जानो । धरो आप सोई, नमूं मानखोई ।१६४।
ॐ ह्रीं अनन्तगुणाकाराय नमः अर्घ्यं ।

अनंता स्वभावा, विशेषन उपावा । धरोआपसोई, नमूं मान खोई ॥१९५॥

ॐ ह्रीं अनन्तस्वभावाय नम अर्घ्यं ।

विनाकाररूपा यहचिन्मयस्वरूपा । धरोआपसोई, नमूं मानखोई ॥१९६॥

ॐ ह्रीं चिन्मयस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सदा चेतनामे, न हो अन्यतामें । धरो आप सोई, नमूं मानखोई ॥१९७॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—जो कुछ भाव विशेष हैं, सब चिद्रूपी धर्म ।
असाधारण पूरण भये, नमत नशें सब कर्म ॥१९८॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नम अर्घ्यं ।

परकृति व्याधि विनाशके, निज अनुभव की प्राप्त ।
भई, नमूं तिनको, लहूँ, यह जगवास समाप्त ॥१९९॥

ॐ ह्रीं स्वानुभवोपलब्धिरमाय नम अर्घ्यं ।

निरावरण निज ज्ञान करि, निज अनुभव की डोर ।
गहो लहो थिरता रहो, रमण ठोर नहीं और ॥२००॥

ॐ ह्रीं स्वानुभूतरताय नम. अर्घ्यं ।

सरवोत्तम लौकीक रस, सुधा कुरस सब त्याग।
निज पद परमामृत रसिक, नमूं चरण बड़भाग ॥२०१॥
ॐ ह्रीं परमामृतरताय नमः अर्घ्यं।

विषयामृत विषसम अरुचि, अरस अशुभ असुहान।
जान निजानन्द परमरस, तुष्ट सिद्ध भगवान ॥२०२॥
ॐ ह्रीं परमामृततुष्टाय नमः अर्घ्यं।

शंकातीत अतीतसो, धरे प्रीति निज मांहि।
अमल हिये संतनि प्रिये, परम प्रीति नमूं ताहि ॥२०३॥
ॐ ह्रीं परमप्रीताय नम अर्घ्यं।

अक्षय आनन्द भाव युत, नित हितकार मनोग।
सज्जन चित वल्लभ परम, दुर्जन दुर्लभ योग ॥२०४॥
ॐ ह्रीं परमवल्लभयोगाय नम अर्घ्यं।

शब्द गन्धरसफरश नहिं, नहीं वरण आकार।
बुद्धि गहै नहिं पार तुम, गुप्त भाव निरधार ॥२०५॥
ॐ ह्रीं अव्यक्तभावाय नमः अर्घ्यं।

सर्व दर्वसो भिन्न है, नहिं अभिन्न तिहुँ काल ।
नमूं सदा परकाश धर, एकहि रूप विशाल ॥२०६॥

ॐ ह्री एकत्वस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सर्व दर्वते भिन्नता, निज गुण निजमें वास ।
नमूं अखंड परमातमा, सदा सुगुण की राश ॥२०७॥

ॐ ह्री एकत्वगुणाय नम॰ अर्घ्यं ।

सर्व दर्व परिणामसों, मिलै न निज परिणाम ।
नमूं निजानंद ज्योति घन, नित्य उदय अभिराम ॥२०८॥

ॐ ह्री एकत्वभावाय नम अर्घ्यं ।

चौपई—पर संयोग तथा समवाय, यह संवाद न हो द्वै भाय ।
नित्य अभेद एकता धरो, प्रणमूं द्वैत भाव हम हरो ॥२०९॥

ॐ ह्री द्वैतभावविनाशकाय नम अर्घ्यं ।

पूर्व पर्याय नासियो सोई, जाको फिर उतपाद न होई ।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१०॥

ॐ ह्री शाश्वताय नमः अर्घ्यं ।

निर्विकार निर्मल निजभाव, नित्य प्रकाश अमन्द प्रभाव ।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२११॥
ॐ ह्रीं शाश्वतप्रकाशाय नमः अर्घ्यं ।

निरावरण रवि बिम्ब समान, नित्य उद्योत धरो निज ज्ञान ।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१२॥
ॐ ह्रीं शाश्वतोद्योताय नम. अर्घ्यं ।

ज्ञानानन्द सुधाकर चन्द्र, सोहत पूरण ज्योति अमन्द ।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१३॥
ॐ ह्रीं शाश्वतामृतचन्द्राय नम. अर्घ्यं ।

ज्ञानानन्द सुधारस धार, निरविच्छेद अभेद अपार ।
अव्यय अविनाशी अभिराम, शाश्वत रूप नमूं सुखधाम ॥२१४॥
ॐ ह्रीं शाश्वतअमूर्तये नम अर्घ्यं ।

पद्धड़ी छंद—मन इन्द्रिय ज्ञान न पाय जेह, है सूक्षम नाम सरूप तेह ।
मनपर्यय जाकूं नाहिं पाय, सो सूक्षम परम सुगुण नमाय ॥२१५॥
ॐ ह्रीं परमसूक्ष्माय नम. अर्घ्यं ।

बहु राशि नभोदरमें समाय, प्रत्यक्ष स्थूल ताकों न पाय ।
इकसों इककों बाधा न होहि, सूक्षम अविकाशी नमों सोहि ॥२१६॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय नम॰ अर्घ्यं ।

नभ गुण ध्वनि हो यह जोग नांहि, हो जिसो गुणी गुण तिसो तांहि ।
सो राजत हो सूक्षम स्वरूप, नमहूँ तुम सूक्षम गुण अनूप ॥२१७॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मगुणाय नमः अर्घ्यं ।

तुम त्याग द्वैतताको प्रसंग, पायौ एकाकी छबि अभंग ।
जाको कबहूँ अनुभव न होय, नमूं परम रूप है गुप्त सोय ॥२१८॥

ॐ ह्रीं परमरूपगुप्ताय नम. अर्घ्यं ।

छंदत्रोटक—सर्वार्थविमानिक देव तथा, मन इन्द्रिय भोगन शक्ति यथा
इनके सुखको इक सीम सही, तुम आनंदको पर अन्त नहीं ॥२१९॥

ॐ ह्रीं निरवधिसुखाय नम. अर्घ्यं ।

जग जीवनिको नहिं भाग्य यहै, निज शक्ति उदय करि व्यक्ति लहै ।
तुम पूरण क्षायक भाव लहो, इम अन्त विना गुणरास गहो ॥२२०॥

ॐ ह्रीं निरवधिगुणाय नम. अर्घ्यं ।

भवि-जीव सदा यह रीति धरे, नित नूतन पयं विभाव ध॰ .
तिस कारणको सब व्याधि दहो, तुम पाइ सुरूप जु अन्त न हो ॥२२१॥

ॐ ह्री निरवधिस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ।

अवधि मनःपर्यय सु ज्ञान महा, द्रव्यादि विषै मरजाद लहा ।
तुम ताहि उलंघ सुभावमई, निजबोध लहो जिस अन्त नहीं ॥२२२॥

ॐ ह्री अतुलज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

तिहुँ काल तिहूँ जगके सुखको, कर वार अनंत गुणा इनको ।
तुम एक समय सुखकी समता, नहीं पाय नमूं मन आनंदता ॥२२३॥

ॐ ह्री अतुलसुखाय नमः अर्घ्यं ।

नाराच छन्द—सर्व जीव राशके सुभाव आप जान हो,
आपके सुभाव अंश औरकौ न ज्ञान हो ।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास 'संत' हो ॥२२४॥

ॐ ह्री अतुलभावाय नम अर्घ्यं ।

आपकी गुणौघ वेलि फैलि है अलोकलों,

शेषसे भ्रमाय पत्रकी न पाय नोकलों ।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास "सन्त" हो ॥२२५॥

ॐ ह्री अतुलगुणाय नम. अर्घ्यं ।

सूर्यको प्रकाश एक देश वस्तु भास ही,
आपको सुज्ञान भान सर्वथा प्रकाश ही ।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास "सन्त" हो ॥२२६॥

ॐ ह्री अतुलप्रकाशाय नमः अर्घ्यं ।

तास रूपको गहो न फेरि जास नाश हो,
स्वात्मवासमें विलास आस त्रास नाश हो ।
सो विशुद्ध भाव पाय जासकौ न अन्त हो,
राज हो सदीव देव चरण दास "सन्त" हो ॥२२७॥

ॐ ह्री अचलाय नमः अर्घ्यं ।

सौरठा—मोहादिक रिपु जीति, निजगुण निधि सहजे लहो ।
विलसो सदा पुनीति, अचल रूप बन्दो सदा ॥२२८॥

ॐ ह्री अचलगुणाय नम अर्घ्यं ।

उत्तम क्षाइक भाव, क्षय उपशम सब गये विनशि ।
पायो सहज सुभाव, अचल रूप बन्दो सदा ॥२२९॥

ॐ ह्री अचलगुणाय नमः अर्घ्यं ।

अथिर रूप संसार, त्याग सुथिर निज रूप गहि ।
रहो सदा अविकार, अचल रूप बन्दों सदा ॥२३०॥

ॐ ह्री अचलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

मोतीयादाम छन्द ।

निराश्रित स्वाश्रित आनंद धाम, परै परसो न परै कछु काम ।
अबिन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद बंद रहूँ सुखवृन्द ॥२३१॥

ॐ ह्री निरालम्बाय नम अर्घ्यं ।

अराग अदोष अशोक अभोग, अनिष्ट संयोग न इष्ट वियोग ।
अबिन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद बंद रहूं सुखवृन्द ॥२३२॥

ॐ ह्री आलम्बरहिताय नमः अर्घ्यं ।

अजीव न जीव न धर्म अधर्म, न काल अकाश लहै तिस धर्म ।
अबिन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद-वंद रहूं सुखवृन्द ॥२३३॥
ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं ।

अवर्ण अकर्ण अरूप अकाय, अयोग असंयमता अकषाय ।
अबिन्दु अबंधु अबंध अमंद, करूं पद-वंद रहूं सुखवृन्द ॥२३४॥
ॐ ह्रीं निष्कषाय नम अर्घ्यं ।

न हो परसों रुष राग विभाव, निजातममे अवलीन स्वभाव ।
अबिन्दु अबंधु अबंध अमन्द, करूं पदवन्द रहूं सुखवृन्द ॥२३५॥
ॐ ह्रीं आत्मरतये नमः अर्घ्यं ।

दोहा—निज स्वरूपमे लीनता, ज्यों जल पुतली खार ।
गुप्त स्वरूप नमूं सदा, लहूँ भवार्णव पार ॥२३६॥
ॐ ह्रीं स्वरूपगुप्ताय नम. अर्घ्यं ।

जोहै सोहै और नहिं, कछु निश्चय व्यवहार ।
शुद्ध द्रव्य परमातमा, नमूं शुद्धता धार ॥२३७॥
ॐ ह्रीं शुद्धद्रव्याय नम अर्घ्यं ।

पूर्वोत्तर सन्तति तनी, भव भव छेद कराय ।
असंसार पदको नमूं, यह भव वास नशाय ॥२३८॥

ॐ ह्री असंसाराय नम अर्घ्यं ।

नागरूपिणी तथा अर्धनाराच छन्द ।

हरो सहाय कर्णको, सुभोगता विवर्णको ।
निजातमीक एक ही, लहो अनन्द तास ही ॥२३९॥

ॐ ह्री स्वानन्दाय नमः अर्घ्यं ।

न हो विभावता कदा, स्वभाव मे सुखी सदा ।
निजातमीक एक ही, लहो अनन्द तास ही ॥२४०॥

ॐ ह्री स्वानन्दभावाय नम अर्घ्यं ।

अछेद रूप सर्वथा, उपाधिकी नहीं व्यथा ।
निजातमीक एक ही, लहो अनन्द तास ही ॥२४१॥

ॐ ह्री स्वानन्दस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

दुभेदता न वेद हो, सचेतना अभेद ही ।
निजातमीक एक ही, लहो अनन्द तास ही ॥२४२॥

ॐ ह्री स्वानन्दगुणाय नम. अर्घ्यं ।

न अन्यकी प्रवाह है, अचाह है न चाह है।
निजातमीक एक ही, लहो अनन्द तास ही ॥२४३॥
ॐ ह्री स्वानन्दसतोषाय नम अर्घ्यं ।

सोरठा—रागादिक परिणाम, है कारण संसार के।
नाश, लियो सुखधाम, नमत सदा भव भय हरूँ ॥२४४॥
ॐ ह्री शुद्धभावपर्यायाय नम. अर्घ्यं ।

उदइक भाव विनाश, प्रगट कियो निज धर्मको।
स्वातम गुण परकाश, नमत सदा भव भय हरूँ ॥२४५॥
ॐ ह्री स्वतन्त्रधर्माय नमः अर्घ्यं ।

निजगुण पर्ययरूप, स्वयं—सिद्ध परमातमा।
राजत हैं शिव भूप, नमत सदा भव भय हरूँ ॥२४६॥
ॐ ह्री आतमस्वभावाय नमः अर्घ्य ।

विमल विशद निज ज्ञान, है स्वभाव परिणतिमई।
राजे हैं सुखखानि, नमत सदा भव भय हरूँ ॥२४७॥
ॐ ह्री परमचित्परिणामाय नम अर्घ्य ।

दर्श–ज्ञानमय धर्म, चेतन धर्म प्रगट कहो।
भेदाभेद सुपर्म, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४८॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपधर्माय नम अर्घ्यं।

दर्शज्ञान गुणसार, जीवभूत परमातमा।
राजत सब परकार, नमत सदा भव भय हरूं ॥२४९॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय नम अर्घ्यं।

अष्ट कर्म मल जार, दीप्तरूप निज पद लहो।
स्वच्छ हेम उनहार, नमत सदा भव भय हरूं ॥२५०॥
ॐ ह्रीं परमस्नातकाय नमः अर्घ्यं।

रागादिक मल सोध, दोऊ विविध विधान विन।
लहो शुद्ध प्रतिबोध, नमत सदा भव भय हरूं ॥२५१॥
ॐ ह्रीं स्नातकधर्माय नम अर्घ्यं।

विधि आवरण विनाश, दर्श ज्ञान परिपूर्ण हो।
लोकालोक प्रकाश, नमत सदा भव भय हरूं ॥२५२॥
ॐ ह्रीं सर्वावलोकाय नमः अर्घ्यं।

निजकर निजमे वास, सर्व लोकसो भिन्नता ।
पायो शिव सुख रास, नमत, सदा भव भय हरू ॥२५३॥
ॐ ह्री लोकाग्रस्थिताय नमः अर्घ्यं ।

ज्ञान–भानकी जोति, व्यापक लोकालोकमे ।
दर्शन विन उद्योग, नमत सदा भव भय हरू ॥२५४॥
ॐ ह्री लोकालोक व्यापकाय नम अर्घ्यं ।

जो कुछ धरत विशेष, सब ही सब आनन्दमय ।
लेश न भाव कलेश, नमू सदा भव भय हरू ॥२५५॥
ॐ ह्री आनन्द विधानाय नम. अर्घ्यं ।

जिस आनन्दको पार, पावत नहिं यह जगतजन ।
सो पायो हितकार, नमत सदा भव भय हरू ॥२५६॥

दोहा—इत्यादिक आनन्द गुण, धारत सिद्ध अनन्त ।
तिन पद आठो दरवसों, पूजत हो निज सन्त ॥
ॐ ह्री आनन्द पूर्णाय नम. अर्घ्यं ।

अथ जयमाला ।

दोहा—थावर शब्द विषय धरै, त्रस थावर पर्याय ।
यो न होय तो तुम सुगुण, हम किहविधि वर्णाय ॥१॥
तिसपर जो कछु कहत हैं, केवल भक्ति प्रमान ।
बालक जल शशिबिंबको, चहत ग्रहण निज पान ॥२॥

पद्धडी छन्द ।

जय पर निमित्त व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्ध स्वरूप भाग ।
जय जग पालन विन जगत देव, जय दयाभाव विन शांतिभेव ॥१॥
परसुख दुखकरण कुरीति टार, परसुख दुख कारण शक्ति धार ।
फुनि फुनि नव नव नित जन्मरीत, बिन सर्वलोक व्यापी पुनीत ॥२॥
जय लीला रास विलास नाश, स्वाभाविक निजपद रमण वास ।
शयनासन आदि क्रिया कलाप, तज सुखी सदा शिवरूप आप ॥३॥
विन कामदाह नहिं नार भोग, निरद्वंद निजानंद मगन योग ।
वरमाल आदि शृंगार रूप, विन शुद्ध निरंजन पद अनूप ॥४॥

जय धर्म भर्म वन हन कुठार, परकाश पुंज चिद्रूपसार।
उपकरण हरण दव सलिलधार, निज शक्ति प्रभाव उदय अपार।५।
नभ सीम नहीं अरु होत होउ, नहीं काल अन्त लहो अन्त सोउ।
पर तुम गुण रास अनंत भाग, अक्षय विधि राजत अवधि त्याग ॥६॥
आनन्द जलधि धारा प्रवाह, विज्ञानसुरी सुखद्रह अथाह।
निज शांति सुधारस परम खान, समभाव बीज उत्पत्ति थान ॥७॥
निज आत्मलीन विकलप विनाश, शुद्धोपयोग परिणति प्रकाश।
दृग ज्ञान असाधारण स्वभाव, स्पर्श आदि परगुण अभाव ॥८॥
निज गुणपर्यय समुदाय स्वामि, पायो अखण्ड पद परम धाम।
अव्यय अबाध पद स्वयं सिद्ध, उपलब्धि रूप धर्मी प्रसिद्ध ॥९॥
एकाग्ररूप चिन्ता निरोध, जे ध्यावै पावै स्वयं बोध।
गुण मात्र 'संत' अनुराग रूप, यह भाव देहु तुम पद अनूप ॥१०॥

दोहा—सिद्ध सुगुण सुमरण महा, मंत्रराज है सार।
सर्व सिद्ध दातार है, सर्व विघन हर्तार ॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट्पचाशदधिकद्विशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं नि० ।

तीन लोक चूड़ामणी, सदा रहो जयवन्त ।
विघन हरण मंगल करण, तुम्हैं नमैं नित 'संत' ॥१२॥

इत्याशीर्वादः । इति षष्ठी पूजा सम्पूर्णं ।

[यहाँ "ॐ ह्रीं असिआउसा नमः" का १०८ बार जाप करे]

अथ सप्तमी पूजा प्रारम्भ ।

छप्पय छंद—ऊरध अधो सुरेफ बिंदु हंकार विराजे,
अकारादि स्वर लिप्त कर्णिका अन्त सु छाजे ।
वर्गन पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधि धर,
अग्रभागमे मन्त्र अनाहत सोहत अतिवर ।
पुनि अंत ह्रीं बेढ्यो परम, सुर ध्यावत अरि नागको ।
ह्वै केहरि सम पूजन निमित्त, सिद्धचक्र मंगल करो ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् ! द्वादशाधिकपचशत ५१२ गुणसयुक्त विराजमान अत्रावतरावतर संवौषट् (आह्वानन) अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापन) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरण) ।

दोहा—सूक्ष्मादि गुण सहित हैं, कर्म रहित नीरोग ।
सिद्धचक्र सो थाप हूँ, मिटै उपद्रव योग ।

अथाष्टक । चाल बाराहमासा छन्द ।

सुरमणि कुम्भ क्षीरभर धारत, मुनि मन शुद्ध प्रवाह बहावहिं ।
हम दोऊ विधि लाइक नाहीं, कृपा करहु लहि भवतट भावहिं ॥
शक्ति सारु सामान्य नीरसो, पूजूं हूँ शिवतियके स्वामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥१॥

ॐ ही श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सहित श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहणं अगुरुलघुमव्वावाह जन्म जरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नतु कोऊ चन्दन नतु कोऊ केसरि, भेट किये भवपार भयो है ।
केवल आप कृपा दृग ही सों, यह अथाह दधि पार लयो है ॥
रीति सनातन भक्तन की लख, चन्दनकी यह भेट धरामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥२॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्रीसमत्तणाणदसण वीर्य सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह ससारतापविनाशनाय चन्दन नि० ।

इन्द्रादिक पद हूँ अनवस्थित, दीखत अन्तर रुचि न करैं है ।
केवल एकहि स्वच्छ अखण्डित, अक्षयपदकी चाह धरैं है ॥
ताते अक्षतसों अनुरागी, हूँ सो तुम पद पूज करामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्य सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि० ।

पुष्प वाण ही सो मन्मथ जग, विजई जगमें नाम धरावै ।
देखहु अद्भुत रीति भक्तकी, तिस ही भेट धर काम हनावे ॥
शरणागतकी चूक न देखी, तातैं पूज्य भये शिरनामी ।
द्वादश अधिक पचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्य सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह कामवाणविनाशनाय पुष्प नि० ।

हनन असाता पीर नहीं यह, भीर परैं चरु भेटन लायो ।
भक्त अभिमान मेट हो स्वामी, यह भव कारण भाव सतायो ॥
मम उद्यम करि कहा आप ही, सो एकाकी अर्थ लहामी ।

द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥५॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ।

पूरण ज्ञानानन्द ज्योति घन, विमल गुणातम शुद्ध स्वरूपी ।
हो तुम पूज्य भये हम पूजक, पाय विवेक प्रकाश अनूपी ॥
मोह अन्ध विनसो तिह कारण, दीपनसों अर्चूं अभिरामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥६॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह मोहान्धकारविनाशनाय दीप नि० ।

धूप भरै उघरे प्रजरें मणि, हेम घरें तुम पदपर वारूं ।
बार बार आवर्त जोरि करि, धार धार निज शीश न हारूं ॥
धूम्र धार समतन रोमांचित, हर्ष सहित अष्टांग नमामी ।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥७॥

ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह अष्टकर्मदहनाय धूप नि० ।

तुम हो वीतराग निज पूजन, बन्दन थुति परवाह नहीं है।
अरु अपने समभाव वहै कछु, पूजा फलकी चाह नहीं है।
तौभी यह फल पूजि फलद, अनिवार निजानन्द कर इच्छामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह मोक्षफलप्राप्तये फल नि०।

तुमसे स्वामीके पद सेवत, यह विधि दुष्ट रंक कहा कर है।
ज्यो मयूरध्वनि सुनि अहि निज बिल, विलय जाय छिन बिलम न धर है।
तातैं तुम पद अर्घ उतारण, विरद उचारण करहुँ मुदामी।
द्वादश अधिक पंचशत संख्यक, नाम उचारत हूँ सुखधामी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने ५१२ गुण सयुक्ताय श्री समत्तणाणदसण वीर्यं सुहमत्तहेव अवग्गहण अगुरुलघुमव्वावाह सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं नि०।

गीता छन्द—निर्मल सलिल शुभ वास चन्दन, धवल अक्षत युत अनी।
शुभ पुष्प मधुकर नित रमैं, चरु प्रचुर स्वादसुविधि घनी॥
वर दीपमाल उजाल धूपायन, रसायन फल भलैं।

करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्म प्रकृति नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है ।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है ॥
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अमेय चहुगुण, गेह द्यो हम शुभ मती ॥

ॐ अर्हत्सिद्धचक्राधिपतये नमः समत्तणाणादि अट्ठगुणाणं पूर्णपदप्राप्तये महार्घ्यं ।

पाँचसै बाहर गुण सहित नाम अर्घ ।

अर्द्ध छन्द जोगीरासा ।

लोकत्रय करि पूज्य प्रधाना, केवल ज्योति प्रकाशी ।
भव्यन मन तम मोह विनाशक, बन्दूं शिव थल वासी ॥१॥

ॐ ह्रीं अरहताय नम अर्घ्यं ।

सुरनर मुनिमन कुमुदन मोदन, पूरण चन्द्र समाना ।
हो अर्हंत जात जन्मोत्सव, बन्दूं श्री भगवाना ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय नम. अर्घ्यं ।

केवल दर्श ज्ञान किरणावलि, मंडित तिहुँ जग चन्दा ।
मिथ्यातप हर जल आदिक करि, बन्दू पद अरविन्दा ॥३॥
ॐ ह्री अर्हंच्चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं ।

घाति कर्म रिपु जारि छारकर, स्व चतुष्टय पद पायो ।
निज स्वरूप चिद्रूप गुणातम, हम तिन पद शिर नायो ॥४॥
ॐ ह्री अर्हंच्चिद्रूपगुणाय नमः अर्घ्यं ।

ज्ञानावरणी पटल उघारत, केवल भान उगायो ।
भव्यन को प्रतिबोध उधारे, बहुरि मुक्ति पद पायो ॥५॥
ॐ ह्री अर्हंज्ज्ञानाय नम अर्घ्यं ।

धर्म अधर्म तास फल दोनों, देखो जिम कर–रेखा ।
बतलायो परतीत विषय करि, यह गुण जिनमें देखा ॥६॥
ॐ ह्री अर्हद्दर्शनाय नमः अर्घ्यं ।

मोह महा दृढ बंध उघारो, कर विषतन्तु समाना ।
अतुल बली अरहंत कहायो, पाय नमूं शिवथाना ॥७॥
ॐ ह्री अर्हंद्वीर्याय नमः अर्घ्यं ।

करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते कर्म प्रकृति नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है।
दुख जन्म टाल अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप है ॥
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अछेद शिव कमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अमेय चहुगुण, गेह द्यो हम शुभ मती ॥

ॐ अर्हत्सिद्धचक्राधिपतये नमः समत्तणाणादि अट्ठगुणाण पूर्णपदप्राप्तये महार्घ्यं ।

पाँचसै बाहर गुण सहित नाम अर्घ ।

अर्द्ध छन्द जोगीरासा ।

लोकत्रय करि पूज्य प्रधाना, केवल ज्योति प्रकाशी।
भव्यन मन तम मोह विनाशक, बन्दूं शिव थल वासी ॥१॥

ॐ ह्रीं अरहताय नम अर्घ्यं ।

सुरनर मुनिमन कुमुदन मोदन, पूरण चन्द्र समाना ।
हो अर्हंत जात जन्मोत्सव, बन्दूं श्री भगवाना ॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हंज्जाताय नमः अर्घ्यं ।

केवल दर्श ज्ञान किरणावलि, मंडित तिहुँ जग चन्दा ।
मिथ्यातप हर जल आदिक करि, बन्दू पद अरविन्दा ॥३॥
ॐ ह्री अर्हंच्चिद्रूपाय नमः अर्घ्यं ।

घाति कर्म रिपु जारि छारकर, स्व चतुष्टय पद पायो ।
निज स्वरूप चिद्रूप गुणातम, हम तिन पद शिर नायो ॥४॥
ॐ ह्री अर्हच्चिद्रूपगुणाय नमः अर्घ्यं ।

ज्ञानावरणी पटल उघारत, केवल भान उगायो ।
भव्यन को प्रतिबोध उधारे, बहुरि मुक्ति पद पायो ॥५॥
ॐ ह्री अर्हज्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

धर्म अधर्म तास फल दोनों, देखो जिम कर–रेखा ।
बतलायो परतीत विषय करि, यह गुण जिनमें देखा ॥६॥
ॐ ह्री अर्हद्दर्शनाय नम. अर्घ्यं ।

मोह महा दृढ बंध उघारो, कर विषतन्तु समाना ।
अतुल बली अरहंत कहायो, पाय नमूं शिवथाना ॥७॥
ॐ ह्री अर्हद्वीर्याय नम अर्घ्यं ।

युगपति लोकालोक विलोकन, है अनन्त दृगधारी ।
गुप्तरूप शिवमग दरसायो, तिनपद धोक हमारी ॥८॥

ॐ ह्री अर्हद्दर्शनगुणाय नम अर्घ्यं ।

घटपटादि सब परकाशत जद, हो रवि किरण पसारा ।
तैसो ज्ञान भान अरहतको, ज्ञेय अनन्त उघारा ॥९॥

ॐ ह्री अर्हज्ज्ञानगुणाय नमः अर्घ्यं ।

आसन शयन पान भोजन बिन, दीप्त देह अरहंता ।
ध्यान वान कर तान हान विधि, भए सिद्ध भगवंता ॥१०॥

ॐ ह्री अर्हद्वीर्यगुणाय नमः अर्घ्यं ।

सप्त सत्त्व षट् द्रव्य भेद सब, जानत संशय खोई ।
ताकरि भव्य जीव संबोधे, नमूं भये सिद्ध सोई ॥११॥

ॐ ह्री अर्हत्सम्यक्त्वगुणाय नम अर्घ्यं ।

ध्यान सलिलसों धोय लोभमल, शुद्ध निजातम कीनो ।
परम शौच अरहंत स्वरूपी, पाय नमूं शिव लीनो ॥१२॥

ॐ ह्री अरहतशौचगुणाय नम अर्घ्यं ।

नय प्रमाण श्रुतज्ञान प्रकारा, द्वादशांग जिनवानी ।
प्रगटायो परतक्ष ज्ञानमे, नमूं भये शिव थानी ॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हद्द्वादशांगाय नम. अर्घ्यं ।

मन इन्द्रिय बिन सकल चराचर, जगपद करि प्रकटायो ।
यह अरहंत मती कहलायो, बन्दूं तिन शिव पायो ॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हदभिन्नबोधकाय नम अर्घ्यं ।

अनुभव सम नहीं होत दिव्यध्वनि, ताको भाग अनन्ता ।
जानो गणधर यह श्रुत अवधी, पाइ नमूं अरहंता ॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हत्श्रुतावधिगुणाय नम अर्घ्यं ।

सर्वावधि निधि वृद्धि प्रवाही, केवल सागर मांही ।
एक भयो अरहंत अवधि यह, मुक्त भए नमि ताही ॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हदवधिगुणाय नमः अर्घ्यं ।

अति विशुद्ध मय विपुलमती लहि, हो पूर्वोक्त प्रकारा ।
यह अरहंत पाय मन–पर्यय, नमूं भए भवपारा ॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्वंच्छुद्धमन:पर्ययभावाय नम. अर्घ्यं ।

मोहमलिनता जग जिय नाशै, केवलता गुण पावै ।
सर्व शुद्धता पाइ नमत हैं, हम अरहंत कहावै ॥१८॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्केवलगुणाय नम अर्घ्यं ।

मोह जनित सो रूप विरूपी, तिस विन केवलरूपा ।
श्री अरहन्त रूप सर्वोत्तम, बन्दूं हो शिवभूपा ॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्केवलस्वरूपाय नम अर्घ्यं

तास विरोधी कर्म जीति करि, केवल दरशन पायो ।
इस गुण सहित नमत तुम पद प्रति, भावसहित शिरनायो।२०।

ॐ ह्रीं अर्हंत्केवलदर्शनाय नम अर्घ्यं ।

निर आवरण करण विन जाको, शरण हरण नहीं कोई ।
केवल ज्ञान पाय शिव पायो, पूजत है हम सोई ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्केवलज्ञानाय नम अर्घ्यं ।

अगम अतीर भवोदधि उतरे, सहज ही गोखुर मानो ।
केवल बल अरहन्त नमें हम, शिव थल बास करानो ॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्केवलवीर्याय नम अर्घ्यं ।

सब विधि अपने विघ्न निवारण, औरन विघ्न विडारी ।
मंगलमय अर्हत सर्वदा, नमूं मुक्ति पदधारी ॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलाय नमः अर्घ्यं ।

चक्षु आदि सब विघन विदूरित, छाइक मंगलकारी ।
यह अर्हत दर्श पायो मैं, नमूं भये शिव कारी ॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगदर्शनाय नमः अर्घ्यं ।

निजपर संशय आदि पाय विन, निरावरण विकसानो ।
मंगलयय अरहंत ज्ञान है, बन्दूं शिव सुख थानो ॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

परकृत जरा आदि संकट विन, अतुल बली अर्हंता ।
नमूं सदा शिवनारी के संग, सुखसों केलि करंता ॥२६॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलवीर्याय नमः अर्घ्यं ।

पापरूप एकान्त पक्ष विन, सर्व तत्त्व परकाशी ।
द्वादशाग अरहन्त कहो मैं, नमूं भये शिववासी ॥२७॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलद्वादशागाय नमः अर्घ्यं ।

विन प्रतक्ष अनुमान सुबाधित, सुमतिरूप परिणामा ।
मंगलमय अर्हंतमती मैं, नमूं देउ शिवधामा ॥२८॥

ॐ ह्रीं अर्हंन्मगल अभिनिबोधकाय नमः अर्घ्यं ।

नय विकलप श्रुत अंग पक्षके, त्यागी है भगवन्ता ।
ज्ञाता दृष्टा वीतराग, विख्यात नमूं अरहंता ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हंन्मगलश्रुतात्मकजिनाय नमः अर्घ्यं ।

मंगलमय सर्वावधि जाकरि, पावै पद अरहन्ता ।
बन्दूं ज्ञान प्रकाश नाश भव, शिव थल वास करंता ॥३०॥

ॐ ह्रीं अर्हंन्मगलावधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

वर्धमान मनपर्यय ज्ञान करि, केवल भानु उगायो ।
भव्यनि प्रति शुभ मार्ग बतायो, नमूं सिद्ध पद पायो ॥३१॥

ॐ ह्रीं अर्हंन्मगलमनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

ता विन और अज्ञान सकल, जग कारण बंध प्रधाना ।
नमूं पाइ अरहन्त मुक्ति पद, मंगल केवलज्ञाना ॥३२॥

ॐ ह्रीं अर्हंन्मगलकेवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

निरावरण निरखेद निरन्तर, निराबाधमई राजै ।
केवलरूप नमूं सब अघहर, श्री अरहन्त विराजै ॥३३॥
ॐ ह्रीं अर्हंन्मंगलकेवलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

चक्षु आदि सब भेद विघन हर, क्षायक दर्शन पाया ।
श्री अरहन्त नमूं शिववासी, इह जग पाप नशाया ॥३४॥
ॐ ह्रीं अर्हंन्मंगलकेवलदर्शनाय नमः अर्घ्यं ।

जग मंगल सब विघ्न रूप है, इक केवल अरहन्ता ।
मंगलमय सब मंगलदायक, नमूं कियो जग अन्ता ॥३५॥
ॐ ह्रीं अर्हंन्मंगलकेवलाय नमः अर्घ्यं ।

केवलरूप महामंगलमय, परम शत्रु छयकारा ।
सो अरहन्त सिद्ध पद पायो, नमूं पाय भवपारा ॥३६॥
ॐ ह्रीं अर्हंन्मंगलकेवलरूपाय नमः अर्घ्यं ।

शुद्धातम निजधर्म प्रकाशी, परमानन्द विराजै ।
सो अरहन्त परम मंगलमय, नमूं शिवालय राजै ॥३७॥
ॐ ह्रीं अर्हंन्मंगलधर्माय नमः अर्घ्यं ।

सब विभावमय विघन नाशकर, मंगल धर्म स्वरूपा ।
सो अरहन्त भये परमातम, नमूं त्रियोग निरूपा ।।३८।।

ॐ ह्री अर्हंमगलधर्मस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

सर्व जगत सम्बन्ध विघन नहीं, उत्तम मंगल सोई ।
सो अरहन्त भये शिववासी, पूजत शिवसुख होई ।।३९।।

ॐ ह्री अर्हंमगलउत्तमाय नमः अर्घ्यं ।

लोकातीत त्रिलोक पूज्य जिन, लोकोत्तम गुणधारी ।
लोकशिखर सुखरूप विराजैं, तिनपद धोक हमारी ।।४०।।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोतमाय नमः अर्घ्यं ।

लोकाश्रित गुण सब विभाव हैं, श्रीजिनपदसो न्यारे ।
तिनको त्याग भये शिव बन्दूं, काटो बन्ध हमारे ।।४१

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमगुणाय नम· अर्घ्यं ।

मिथ्या मतिकर सहित ज्ञान, अज्ञान जगतमें सारो ।
ता विनाशि अरहन्त कहो, लोकोत्तम पूज हमारो ।।४२।।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमज्ञानाय नम अर्घ्यं ।

क्षायक दरशन है अरहन्ता, और लोकमे नाहीं ।
सो अरहन्त भये शिववासी, लोकोत्तम सुखदाई ॥४३॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमदर्शनाय नमः अर्घ्यं ।

कर्मबली ने सब जग बांध्यो, ताहि हनो अरहन्ता ।
यह अरहन्त वीर्य लोकोत्तम, पायो सिद्ध अनंता ॥४४॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घ्यं ।

अक्षअतीत ज्ञान लोकोत्तम, परमातम पद मूला ।
यह अरहन्त नमूं शिवनाइक, पाऊँ भवदधि कूला ॥४५॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नमः अर्घ्यं ।

परमावधि ज्ञान सुखखानी, केवलज्ञान प्रकाशी ।
यहै अवधि अरहन्त नमूं मैं, संशय तुमको नाशी ॥४६॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमअवधिज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

जो अरहन्त धरै मनपर्यय, सो केवल के मांहीं ।
साक्षात् शिवरूप नमो मैं, अन्य लोकमे नाहीं ॥४७॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमनःपर्ययज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

तीन लोकमें सार सु श्री—अरहन्त स्वयंभू ज्ञानी ।
नमूं सदा शिवरूप आप हो, भविजन प्रति सुखदानी ॥४८॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

सर्वोत्तम तिहुँ लोक प्रकाशित, केवलज्ञान स्वरूपी ।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥४९॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानाय नमः अर्घ्यं ।

ज्ञान तरंग अभंग वहै, लोकोत्तम धार अरूपी ।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५०॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलपर्यायाय नम अर्घ्यं ।

सहित असाधारण गुण पर्यय, केवलज्ञान सरूपी ।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५१॥
ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तकेवलद्रव्याय नम. अर्घ्यं ।

जगजिय सर्व अशुद्ध कहो, इक केवल शुद्ध सरूपी ।
सो अरहन्त नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५२॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमकेवलाय नम अर्घ्यं ।

विविध कुरूप सर्व जगवासी, केवल स्वयं सरूपी ।
सो अरहंत नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५३॥

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

हीनाधिक धिक धिक जग प्राणी, धन्य एक ध्रुवरूपी ।
सो अरहंत नमूं शिवनायक, सुखप्रद सार अनूपी ॥५४॥

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमध्रुवभावाय नमः अर्घ्यं ।

दोहा—संसारिनके भाव सब, बन्ध हेत वरणाय ।
मुक्तिरूप अरहंतके, भाव नमूं सुखदाय ॥५५॥

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमभावाय नमः अर्घ्यं ।

कबहुँ न होय विभावमय, सो थिर भाव जिनेश ।
मुक्तिरूप प्रणमूं सदा, नाशे विघन विशेष ॥५६॥

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमस्थिरभावाय नम अर्घ्यं ।

जा सेवत वेवत स्वसुख, सो सर्वोत्तम देव ।
शिववासी नाशी त्रिजग—फांसी नमहूँ एव ॥५७॥

ॐ ह्रीं अर्हंच्छरणाय नमः अर्घ्यं ।

जिन ध्यायो तिन पाइयो, निस्सय सो सुखरास ।
शरण स्वरूपी जिन नमूं, करै सदा शिववास ॥५८॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय नम. अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

स्वाभाविक गुण अरहंत गाय, जासों पूरण शिवसुख लहाय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनंद पाय ।५९।

ॐ ह्री अर्हद्गुणशरणाय नमः अर्घ्यं ।

विन केवलज्ञान न मुक्ति होय, पायो है श्री अरहन्त जोय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनंद पाय ।६०।

ॐ ह्री अर्हन् ज्ञानशरणाय नम अर्घ्यं ।

प्रत्यक्ष देख सर्वज्ञ देव, भाख्यो है शिव मारग असेव ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनंद पाय ।६१।

ॐ ह्री अर्हद्दर्शनशरणाय नमः अर्घ्यं ।

संसार विषम बन्धन उछेद, अरहन्त वीर्य पायो अखेद ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।६२।

ॐ ह्री अर्हद्वीर्यशरणाय नम. अर्घ्यं ।

सब कुमति विगल मत जिन प्रतीत, हो जिसते शिवसुख दे अभीत।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।६३।

ॐ ह्री अर्हद्द्वादशागायश्रुतगणशरणाय नम अर्घ्यं।

अनुमानादिक साधित विज्ञान, अरहन्त मती प्रत्यक्ष जान।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।६४।

ॐ ह्री अर्हदभिनिबोधकाय शरणाय नमः अर्घ्यं।

जिन भाषित श्रुत सुनि भव्य जीव, पायो शिव अविनाशी सदीव।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनन्द पाय।६५।

ॐ ह्री अर्हतश्रुतशरणाय नम अर्घ्यं।

प्रतिपक्षी सब जीते कषाय, पायो अवधी शिवसुख कराय।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।६६।

ॐ ह्री अर्हदवधिबोधशरणाय नम अर्घ्यं।

मुनि लहै गहै परिणाम श्वेत, जिन मन मनपर्यय शिव वास देत।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।६७।

आवरण रहित प्रत्यक्ष ज्ञान, शिवरूप केवली जिन सुजान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनन्द पाय ।६८।

ॐ ह्री अर्हत्केवलशरणाय नमः अर्घ्यं ।

मुनि केवलज्ञानी जिन अराध, पावै शिव–सुख निश्चय अबाध ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।६९।

ॐ ह्री अर्हत्केवलशरणस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ।

शिव–सुखदायक निज आत्म–ज्ञान, सो केवल पावै जिन महान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।७०।

ॐ ह्री अर्हत्केवलधर्मशरणाय नम अर्घ्यं ।

यह केवल गुण आतम स्वभाव, अरहन्तन प्रति शिव–सुख उपाय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।७१।

ॐ ह्री अर्हत्केवलगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।

संसार रूप सब विघन टार, मंगल गुण श्री जिन मुक्तिकार ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।७२।

ॐ ह्री अर्हन्मंगलगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।

छय उपशम ज्ञानी विघन रूप, ता विन जिन ज्ञानी शिव सरूप।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।७३।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलज्ञानशरणाय नम अर्घ्यं।

अरहंत दर्श मंगल स्वरूप, तासो दरशै शिव-सुख अनूप।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।७४।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलदर्शनशरणाय नम. अर्घ्यं।

अरहन्त बोधं है मंगलीक, शिव मारग प्रति वरते अलीक।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।७५।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलबोधशरणाय नम. अर्घ्यं।

निज ज्ञानानन्द प्रवाह धार, वरते अखण्ड अव्यय अपार।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय।७६।

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलकेवलशरणाय नम अर्घ्यं।

जा विन तिहुँ लोक न और मान, भव सिंधु तरण तारण महान।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनंद पाय।७७।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमशरणाय नम अर्घ्यं।

स्वाभाविक भव्यन प्रति दयाल, विच्छेद करण संसार जाल ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनंद पाय ।७८।

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमशरणाय नम अर्घ्यं ।

तुम विन समरथ तिहुँ लोकमांहि, भवसिंधु उतारण और नाहिं ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनन्द पाय ।७९।

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमवीर्यशरणाय नम· अर्घ्यं ।

बिन परिश्रम तारण तरण होय, लोकोत्तम अद्भुत शक्ति सोय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनंद पाय ।८०।

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।

अप्रसिद्ध कुनय अल्पज्ञ भास, ताको विनाश शिवमग प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनन्द पाय ।८१।

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमद्वादशांगशरणाय नमः अर्घ्यं ।

सब कुनय कुपक्ष कुसाध्य नाश, सत्यारथ-मत कारण प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं संत आनन्द पाय ।८२।

ॐ ह्रीं अर्हंल्लोकोत्तमाभिनिबोधकाय नम. अर्घ्यं ।

मिथ्यारत प्रकृति अवधि विनाश, लोकोत्तम अवधीको प्रकाश ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।८३।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमावधिशरणाय नम अर्घ्यं ।

मनपर्यय शिव मंगल लहाय, लोकोत्तम श्रीगुरु सो कहाय ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।८४।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तममनपर्ययशरणाय नम अर्घ्यं ।

आवरणातीत प्रत्यक्ष ज्ञान, है सेवनीक जगमे प्रधान ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'सन्त' आनंद पाय ।८५।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमकेवलज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं ।

हो बाह्य विभवसुरकृत अनूप, अन्तर लोकोत्तम ज्ञानरूप ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।८६।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमविभूतिप्रधानशरणाय नम अर्घ्यं ।

रतनत्रय निमित मिलो अबाध, पायो निज आनन्द धर्म साध ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमै 'संत' आनन्द पाय ।८७।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमविभूतिधर्मशरणाय नमः अर्घ्यं ।

सुख ज्ञान वीर्य दर्शन सुभाव, पायो सब कर प्रकृती अभाव ।
हम शरण गही मन वचन काय, नित नमैं 'संत' आनन्द पाय ।८८।

ॐ ह्री अर्हल्लोकोत्तमअनन्तचतुष्टयशरणाय नम अर्घ्यं ।

अडिल्ल छन्द ।

दर्श ज्ञान सुख बल निजगुणये चार है, आतमीक परधान विशेष अपार है
इनहींसो है पूज्य सिद्ध परमेश्वरा, हम हूँ यह गुणपाय नमन यातैं करा ।।

ॐ ह्री अर्हदनन्तगुणचतुष्टाय नमः अर्घ्यं ।। ८६ ।।

क्षयोपशम सम्बाधित ज्ञान कलाहरी, पूरण ज्ञायक स्वयं बुद्धि श्रीजिनवरी
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा, हम हूँ यह गुणपाय नमनयातै करा ।।

ॐ ह्री अर्हन्निजज्ञानस्वयभुवे नम अर्घ्यं ।। ६० ।।

जनमतही दश अतिशय शासनमें कही, स्वयंशक्तिभगवानआपतिनकोलही
इनहींसों है पूज्य सिद्ध परमेश्वरा, हम हूँ यह गुणपाय नमनयातै करा ।।

ॐ ह्री अर्हद्दशातिशयस्वयभुवे नमः अर्घ्यं ।। ६१ ।।

ये दश अतिशय घातिकर्म छयको करैं, महा विभवको पायमोक्ष नारीवरै
इनहींसो हैं पूज्य सिद्ध परमेश्वरा, हमहूँ यह गुणपाय नमनयातै करा ।।

ॐ ह्री अर्हद्दशअतिशयाय नमः अर्घ्यं ।। ६२ ।।

केवलविभवउपाय प्रभूजिनपदलहो, चौदह अतिशयदेवनकरिसेवनकियो
इनहींसो है पूज्य सिद्धपरमेश्वरा, हमहूँ यह गुणपाय नमन यातै कारा ॥

ॐ ह्री अर्हद्चतुर्दशअतिशाय नमः अर्घ्य ॥६३॥

चौतिस अतिशयजेपुराणबरणे महा, मुक्ति समाज अनूपम श्रीगुरुने कहा।
इनहींसो है पूज्य सिद्ध परमेश्वरा, हमहूँ यह गुणपाय नमन यातैकरा ॥

ॐ ह्री अर्हच्चतुस्त्रिंशतअतिशयविराजमानाय नमः अर्घ्यं ॥६४।

डालर छन्द।

लोकालोक अणु सम जानो, ज्ञानानंत सुगुण पहिचानो।
सो अरहंत सिद्ध पद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥६५॥

ॐ ह्री अर्हज्ज्ञानानन्दगुणाय नमः अर्घ्यं।

समरस सुस्थिर भाव उघारा, युगपति लोकालोक निहारा।
सो अरहंत सिद्धपद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥६६॥

ॐ ह्री अर्हद्ध्यानानन्तध्येयाय नम अर्घ्यं।

इक इक गुणका भाव अनन्ता, पर्ययरूप सो है अरहन्ता।
सो अरहंत सिद्धपद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥६७॥

ॐ ह्री अर्हदनतगुणाय नमः अर्घ्यं।

उत्तर गुण सब लख चौरासी, पूरण चारित भेद प्रकाशी।
सो अरहंत सिद्धपद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥९८॥

ॐ ह्रीं अर्हत्तपअनन्तगुणाय नमः अर्घ्यं ।

आतम शक्ति जास करि छीनी, तास नाश प्रभुताई लीनी।
सो अरहंत सिद्धपद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥९९॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमात्मने नमः अर्घ्यं ।

निज गुण निज ही मांहि समाया, गणधरादि बरनन न कराया।
सो अरहंत सिद्धपद पायो, भाव सहित हम शीश नवायो ॥१००॥

ॐ ह्रीं अर्हस्वरूपगुप्ताय नमः अर्घ्यं ।

दोधक छन्द।

जो निज आतम साधु सुखाई, सो जगतेश्वर सिद्ध कहाई।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी ।१०१।

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

सर्व विशुद्ध विरूप सरूपी, स्वातम रूप विशुद्ध अनूपी।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भाव सहित तुमको प्रणमामी ।१०२।

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

पराश्रित सर्व विभाव निवारा, स्वाश्रित सर्व अबाध अपारा ।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी ।१०३।

ॐ ह्रीं सिद्धगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ।

आकुलता सब ही विधि नाशी, ज्ञायक लोकालोक प्रकाशी ।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी ।१०४।

ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानेभ्यो नम· अर्घ्यं

जीव अजीव लखे अविचारा, हो नहीं अन्तर एक प्रकारा ।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी ।१०५।

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अन्तर बाहिर भेद उघारी, दर्श विशुद्ध सदा सुखकारी ।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी ।१०६।

ॐ ह्रीं सिद्धशुद्धसम्यक्त्वेभ्यो नम अर्घ्यं ।

एक अणू मल कर्म लजावै, सोय निरंजनता नहिं पावै ।
लोक शिरोमणि है शिवस्वामी, भावसहित तुमको प्रणमामी ।१०७।

ॐ ह्रीं सिद्धनिरजनेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अर्धरोला छन्द—चारों गति को भ्रमण नाशकर थिरता पाई ।
निज स्वरूपमें लीन, अन्य सो मोह नशाई ॥१०८॥
ॐ ह्रीं सिद्धाचलपदप्राप्ताय नमः अर्घ्यं ।

रत्नत्रय आराधि साधि, निज शिवपद पायो ।
संख्या भेद उलंघि, शिवालय वास करायो ॥१०९॥
ॐ ह्रीं संख्यातीतसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

असंख्यात मरजाद, एक ताहू सो बीते ।
विजयी लक्ष्मीनाथ, महाबल सब विधि जीते ॥११०॥
ॐ ह्रीं असंख्यातसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

काल आदि मर्याद अनादि, सो इह विधि जारी ।
भए अनन्त दिगम्बर साधु जु, शिवपद धारी ॥१११॥
ॐ ह्रीं अनन्तसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

पुष्करार्द्ध सागर लों, जे जल थान बखानो ।
देव सहाइ उपाइ, ऊर्ध्व गति गमन करानो ॥११२॥
ॐ ह्रीं जलसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

वन गिरि नगर गुफादि, सर्व थलसो शिव पाई ।
सिद्धक्षेत्र सब ठौर बखानत, श्री जिनराई ॥११३॥

ॐ ह्री स्थलसिद्धेभ्यो नम' अर्घ्यं ।

नभही मे जिन शुक्लध्यान, बल कर्म नाश किये ।
आउ पूर्ण वश ततछिन, ही शिववास जाय लिये ।११४।

ॐ ह्री गगनसिद्धेभ्यो नम' अर्घ्यं ।

आयु स्थिति सम अन्य कर्म—कारण परदेशा ।
परसै पूरण लोक, आत्म, केवली जिनेशा ॥११५॥

ॐ ह्री समुद्घात-सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

केवलि जिन विन समुद्घात, शिववास लिया है ।
स्वते स्वभाव समान, अघाती कर्म किया है ॥११६॥

ॐ ह्री असमुद्घातसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

उल्लाला छन्द ।

तिन विशेष अतिशय रहित, सामान्य केवली नाम है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतें, तिनके पद परिणाम है ॥११७॥

ॐ ह्री साधारणसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

त्रिभुवन में नहीं पावतो, जो जिन गुण अभिराम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है॥११८॥

ॐ ह्री असाधारणसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

गर्भ कल्याण आदि युत, तीर्थंकर सुखधाम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है॥११९॥

ॐ ह्री तीर्थंकरसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

तीर्थंकर के समय मे, केवली जिन अभिराम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतैं, तिनके पद परिणाम है॥१२०॥

ॐ ह्री तीर्थंकरअन्तरसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं।

पंच शतक पच्चीस फुनि, धनुषकाय अभिराम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है॥१२१॥

ॐ ह्री उत्कृष्टअवगाहनसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

आदि अन्त अन्तर विषे, मध्यवगाहन नाम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है॥१२२॥

ॐ ह्री मध्यमअवगाहनसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं।

तीन अर्ध तन केवली, हस्त प्रमाण कहाय है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है ॥१२३॥

ॐ ह्री जघन्यअवगाहनसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

देव निमित्त मिलो जहां, त्रिजग केवली धाम है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है ॥१२४॥

ॐ ह्री त्रिजगलोकसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

षट्विध परिणति कालकी, तिन अपेक्ष यह नाम है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है ॥१२५॥

ॐ ह्री षट्विधकालसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अन्त समय उपसर्गतै, शुकल ध्यान अभिराम है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है ॥१२६॥

ॐ ह्री उपसर्गसिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

पर उपसर्ग मिलै नहीं, स्वतः शुक्ल सुख धाम है ।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम है ॥१२७॥

ॐ ह्री निरुपसर्गसिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

अन्तर द्वीप मही जहां, देवन के अभिराम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम हैं ॥१२८॥

ॐ ह्री द्वीपसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं।

देव गये ले सिंधु जब, कर्म छयो तिह ठाम है।
सिद्ध भये तिहुँ योगतै, तिनके पद परिणाम हैं ॥१२९॥

ॐ ह्री उदधिसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं।

भुजगप्रयात छन्द।

धरे जोग आसन गहै शुद्धताई, न हो खेद ध्यानाग्नि सों कर्म छाई।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा[1] नमः सिद्धकाजा ॥

ॐ ह्री स्वस्थित्यासनसिद्धेभ्यो नम· अर्घ्यं ॥१३०॥

महा शांति मुद्रा पलौथी लगाये, कियो कर्म को नाश ज्ञानी कहाये।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमःसिद्ध काजा ॥

ॐ ह्री पर्यंकासनसिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ॥१३१॥

लहै आदिको संहनन पुरुष देही, लखायो परारंभ मे भाव ते ही।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमःसिद्ध काजा ॥

ॐ ह्री पुरुषवेदसिद्धेभ्यो नम. अर्घ्यं ॥१३२॥

। १, नाजा=स्त्री

खपायो प्रथम सात प्रकृति विमोहा, गहो शुद्ध श्रेणी क्षयोकर्मलोहा ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमःसिद्ध काजा ॥
ॐ ह्री क्षपकश्रेणीसिद्धेभ्य नम. अर्घ्यं ॥१३३॥

समय एक मे एक वासौ भनंता, धरो आठ तापं यही भेद अन्ता ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा यही मोक्ष नाजा नमःसिद्ध काजा ॥
ॐ ह्री एकसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥ १३४ ॥

किसी देशमे वा किसी काल माहीं, गिने दो समयमें तथा अंतराई ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा ॥
ॐ ह्री द्विसमसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं ॥ १३५ ॥

समय एक दो तीन धाराप्रवाही, कियो कर्म छय अन्तराय होय नाहीं ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमःसिद्ध काजा ॥
ॐ ह्री त्रिसमयसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥१३६॥

हुवे हो सु होगे सु हो है अबारी, त्रिकालं सदा मोक्ष पंथा विहारी ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा ॥
ॐ ह्री त्रिकालसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥१३७॥

तिहूं लोक के शुद्ध सम्यक्त्व धारी, महा भार संजम धरै है अबारी ।
भये सिद्ध राजा निजानंद साजा, यही मोक्ष नाजा नमः सिद्ध काजा ।।

ॐ ह्री त्रिलोकसिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं ।। १३८ ।।

(मरहठा छंद)—तिहुँ लोक निहारा, सब दुखकारा पापरूप संसार ।
ताको परिहारा सुलभ सुखारा, भये सिद्ध अविकार ।।
हे जगत्रय—नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मै नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तप हर शशि उनहार ।१३९।

ॐ ह्री सिद्धमगलेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

तिहुँ कर्म कालिमा लगी जालिमा, करै रूप दुखदाय ।
तुम ताको नाशो स्वयं प्रकाशो, स्वातम रूप सुभाय ।।
हे जगत्रय—नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मै नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ।।१४०।।

ॐ ह्री सिद्धमगलस्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

तिहुँ जगके प्राणी सब अज्ञानी, फंसे मोह जंजाल ।
हो तिहुँ जगत्राता पूरण ज्ञाता, तुम ही एक खुशहाल ।।

हे जगत्रय–नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ।१४१।

ॐ ह्री सिद्धमगलज्ञानेभ्यो नम अर्घ्यं ।

यह मोह अन्धेरी छई घनेरी, प्रबल पटल रहो छाय ।
तुम ताहि उघारो सकल निहारो, युगपत् आनन्ददाय ।।
हे जगत्रय–नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ।।१४२।।

ॐ ह्री सिद्धमगलदर्शनेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

निजबंधन डोरी छिन मे तोरी, स्वयं शक्ति परकाश ।
निरभय निरमोही, परम अछोही, अन्तरायविधि नाश ।।
हे जगत्रय–नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ।।१४३।।

ॐ ह्री सिद्धमगलवीर्येभ्यो. नम। अर्घ्यं ।

जाके प्रसादकर सकल चराचर, निजसों भिन्न लखाय ।
रुष राग निवारा सुख विस्तारा, आकुलता विनशाय ।।

हे जगत्रय—नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४४॥

ॐ ह्री सिद्धमगल सम्यक्त्वेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

अस्पर्श अमूरति चिनमय मूरति, अरस अलिंग अनूप ।
मन अक्ष अलक्षं ज्ञान प्रत्यक्षं शुभ अवगाह स्वरूप ॥
ले जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४५॥

ॐ ह्री सिद्धमंगलावगाहनेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

अव्यक्त स्वरूपं अमल अनूपं, अलख अगम असमान ।
अवगाह उदर धर वास परस्पर भिन्न भिन्न परनाम ॥
हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४६॥

ॐ ह्री सिद्धमंगलसूक्ष्मत्वेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अनुभूति विलासी समरस रासी, हीनाधिक विधि नाश ।
विधि गोत्र नाशकर पूरण पदधर, असंबाध परकाश ॥

हे जगत्रय—नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मै नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४७॥

ॐ ह्री सिद्धमगल अगगुरुलघुभ्यो नम. अर्घ्यं ।

पुद्गल कृत सारी विविधि प्रकारी, द्वैतभाव अधिकार ।
सब भांति निवारी निज सुखकारी, पायो पद अविकार ॥
हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मै नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४८॥

ॐ ह्री सिद्धमगलअव्याबाधितेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अवगाह प्रणामी ज्ञानीरामी, दर्शन वीर्य अपार ।
सूक्षम अवकाशं अज अविनाशं, अगुरुलघू सुखकार ॥
हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मै नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१४९॥

ॐ ह्री सिद्धमगलाष्टगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ।

शुद्धातम सारं अष्ट प्रकारं, शिव स्वरूप अनिवार ।
निज गुणपरधानं सम्यकज्ञानं, आदि अन्त अविकार ॥

हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१५०॥
ॐ ह्रीं सिद्धमगल-अष्टरूपेभ्यो नम अर्घ्यं ।

मंगल अरहन्तं अष्टम भन्तं, सिद्ध अष्ट गुण भास ।
ये ही बिलसावै, अन्य न पावै, असाधारण परकाश ॥
हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१५१॥
ॐ ह्रीं सिद्धमगल अष्टप्रकाशकेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

निर आकुलताई सुख अधिकाई, परम शुद्ध परिणाम ।
संसार निवारण बन्ध विडारन, यही धर्म सुखधाम ॥
हे जगत्रय नायक मंगलदायक, मंगलमय सुखकार ।
मैं नमूं त्रिकाला हो अघ टाला, तपहर शशि उनहार ॥१५२॥
ॐ ह्रीं सिद्धमगलधर्मेभ्यो नम अर्घ्यं ।

(चूलिका छंद)—तीनकाल तिहुँलोकमे तुमगुण और न माहिं लखाने ।
लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख साज बखाने ॥१५३॥
ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमगुणेभ्यो नमः अर्घ्य ।

लोकत्रय शिर छत्र मणि लोकत्रय वर पूज्य प्रधाने ।
लोकोत्तम परसिद्ध हो परसिद्धराज, सुखसाज बखाने ॥१५४॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमेभ्यो नम अर्घ्यं ।

अमल अनूप तेजघन, निरावरण निजरूप प्रमाने ।
लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख साज बखाने ॥१५५॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमस्वरूपाय नम' अर्घ्यं ।

लोकालोक प्रकाश कर, लोकातीत प्रत्यक्ष प्रमाने ।
'लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख साज बखाने ॥१५६॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमज्ञानाय नम अर्घ्यं ।

सकल दर्शनावरण विन, पूरन—दरसन जोत उगाने ।
लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख साज बखाने ॥१५७॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमदर्शनाय नम अर्घ्यं ।

अतुल अतीन्द्रिय वीरजकर, भोग तिन शिवनारि अघाने ।
लोकोत्तम परसिद्ध हो, सिद्धराज सुख साज बखाने ॥१५८॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमवीर्याय नमः अर्घ्यं ।

लोकत्रय शिर छत्रमणि, लोकत्रय वर पूज्य बखाने–यह पाठ भी मिलता है ।

त्रोटक छन्द ।

विनकारण ही सबके मितु हो, सर्वोत्तम लोकविषै हितु हो ।
इनहीं गुणमें मन पागत हैं, शिववास करो शरणागत है ॥१५९॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तमशरणाय नम अर्घ्यं ।

तुम रूप अनूपम ध्यान किये, निज रूप दिखावत स्वच्छ हिये ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६०॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपशरणाय नमः अर्घ्यं ।

निरभेद अछेद विकासित है, सब लोक अलोक विभासित है ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६१॥

ॐ ह्रीं सिद्धदर्शनशरणाय नम अर्घ्यं ।

निरबाध अगाध प्रकाशमई, निरद्वन्द अबंध अभय अजई ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६२॥

ॐ ह्रीं सिद्धज्ञानशरणाय नमः अर्घ्यं ।

हित कारण तारण तरण कहै, अप्रमाद प्रमाद प्रकाशन है ।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६३॥

ॐ ह्रीं सिद्धवीर्यशरणाय नम अर्घ्यं ।

अविरुद्ध विशुद्ध प्रसिद्ध महा, निज आतम—तत्त्व प्रबोध लहा ।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६४॥

ॐ ह्रीं सिद्धसम्यक्त्वशरणाय नम अर्घ्यं ।

जिनको पूर्वापर अन्त नहीं, नित धार—प्रवाह बहै अति ही ।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६५॥

ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तशरणाय नम अर्घ्यं ।

कबहूँ नहीं अन्त समावत है, सु अनन्त—अनन्त कहावत है ।
इनही गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६६॥

ॐ ह्रीं सिद्धअनन्तानन्तशरणाय नमः अर्घ्यं ।

तिहुँ काल सु सिद्ध महा सुखदा निजरूप विषैं थिर भाव सदा ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं ॥१६७॥

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिकालशरणाय नम· अर्घ्यं ।

तिहुँ लोक शिरोमणि पूजि महा, तिहुँ लोक प्रकाशक तेज कहा ।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६८॥

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकशरणाय नमः अर्घ्यं ।

गिनती परमाण जु लोक धरे, परदेश समूह प्रकाश करे।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१६९॥
ॐ ह्रीं सिद्धासख्यातशरणाय नमः अर्घ्यं।

पूर्वापर एकहि रूप लसे, नित लोक सिंहासन वास बसै।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७०॥
ॐ ह्रीं सिद्धध्रौव्यगुणशरणाय नम अर्घ्यं।

जगवास पर्याय विनाश कियो, अब निश्चय रूप विशुद्ध भयो।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७१॥
ॐ ह्रीं सिद्धोत्पादगुणशरणाय नमः अर्घ्यं।

परद्रव्यथकी रुष राग नहीं, निज भाव बिना कहुँ लाग नहीं।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७२॥
ॐ ह्रीं सिद्धसाम्यगुणशरणाय नम· अर्घ्यं।

विन कर्म कलंक विराजत हैं, अति स्वच्छ महागुण राजत हैं।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७३॥
ॐ ह्रीं सिद्धस्वच्छगुणशरणाय नमः अर्घ्यं।

मन इन्द्रिय आदि न व्याधि तहाँ, रुष राग कलेश प्रवेश न ह्वां ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७४॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वस्थितगुणशरणाय नम॰ अर्घ्यं ।

निज रूप विषै नित मगन रहै, परयोग वियोग न दाह लहै ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७५॥

ॐ ह्रीं सिद्धसमाधिगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।

श्रुतज्ञान तथा मतिज्ञान वऊ, परकाशत है यह व्यक्त सऊ ।
इनहीं गुणमे मन पागत है, शिववास करो शरणागत हैं ॥१७६॥

ॐ ह्रीं सिद्धव्यक्तगुणशरणाय नम॰ अर्घ्यं ।

परतक्ष अतीन्द्रिय भाव महा, मन इन्द्रिय बोध न गुह्य कहा ।
इनहीं गुणमें मन पागत है, शिववास करो शरणागत है ॥१७७॥

ॐ ह्रीं सिद्धअव्यक्तगुणशरणाय नम॰ अर्घ्यं ।

निजगुणवरस्वामी शुद्धसंबोधनामी, परगुणनहिंलेशाएकहीभावशेषा ।
मनवचतनलाई पूजहों भक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धगुणस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ॥१७८॥

सबविधिमलजाराबन्धसंसारटारा, जगजियहितकारीउच्चतापायसारी
मनवचतन लाई पूजहोभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमात्मस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥१७६॥

पर-परणतिखण्डंभेदबाधाविहण्डं, शिवसदननिवासी नित्यस्वानंदरासी
मनवचतन लाई पूजहोंभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धाखण्डस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ १८० ॥

च्छितसुखविलसानंआकुलंभावहानं, निज अनुभवसारं द्वैतसंकल्पटारं ।
मनवचतन लाई पूजहोभक्तिभाई, भविभवभय चूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचिदानन्द स्वरूपपाय नम. अर्घ्य ॥ १८१ ॥

परकरणनिवारं भाव संभाव धारं, निजअनुपमज्ञानं सुक्खरूपंनिधानं ।
मनवचतन लाई पूजहोभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धसहजानदाय नमः अर्घ्यं ॥ १८२ ॥

विधिवशसबप्रानीहीनआधिक्यठानी, तिसकरणनिर्मूलापायरूपाधरूला
मनवचतन लाई पूजहोभक्तिभाई, भविभवभय चूरं शाश्वतं सुक्खपूरं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धअच्छेदरूपाय नम अर्घ्यं ॥ १८३ ॥

जबलगपरजाया भेदनानाधराया, इकशिवपदमांही भेदआभासनाहीं।
मनवचतन लाई पूजहोंभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूर ॥

ॐ ह्री सिद्धअभेदगुणाय नम अर्घ्यं ॥ १८४ ॥

अनुपमगुणधारीलोकसंभावटारी, सुरनरमुनि ध्यावैसोनहींपारपावै।
मनवचतन लाई पूजहोंभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्री सिद्धअनुपमगुणाय नम अर्घ्य ॥ १८५ ॥

जिस अनुभवसरसैधारआनदंवरसैं अनुपमरससोई स्वाद जासो न कोई।
मनवचतन लाई पूजहोंभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्री सिद्ध-अमृततत्त्वाय नम अर्घ्यं ॥ १८६ ॥

सबश्रुतविस्तारा जास माहींउजारा, यहनिजपदजानोआत्मसंभावमानो।
मनवचतनलाई पूजहोभक्तिभाई, भविभवभयचूरं शाश्वतंसुक्खपूरं ॥

ॐ ह्री सिद्धश्रुतप्राप्ताय नमः अर्घ्यं ॥ १८७ ॥

दोधक छन्द।

जीव अजीव सबै प्रतिभासी, केवत जोति लहो तम नाशी।
सिद्ध समूह नमूं शिरनाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१८८॥

ॐ ह्री सिद्धकेवलप्राप्ताय नमः अर्घ्यं।

चेतन रूप सदेश बिराजै, आकृतिरूप अलिंग सु छाजै ।
सिद्ध समूह नमूं शिरनाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१८९॥
ॐ ह्रीं सिद्धसाकारनिराकाराय नम अर्घ्यं ।

नाहि गहै पर आश्रित जानो, जो अवलम्ब बिना पद मानो ।
सिद्ध समूह जजो मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९०॥
ॐ ह्रीं निरालम्बाय नमः अर्घ्यं ।

राग विषाद बसै नहिं जामे, जोग वियोग भोग नहिं तामै ।
सिद्ध समूह जजो मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९१॥
ॐ ह्रीं सिद्धनिष्कलंकाय नमः अर्घ्यं ।

ज्ञान प्रभाव प्रकाश भयो है, कर्म समूह विनाश भयो है ।
सिद्ध समूह जजो मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९२॥
ॐ ह्रीं सिद्धतेजःसपन्नाय नम. अर्घ्यं ।

आतम लाभ निजाश्रित पाया, द्वैत विभाव समूह नसाया ।
सिद्ध समूह जजो मन लाई, पाप कलाप सबै खिर जाई ॥१९३॥
ॐ ह्रीं सिद्धआत्मसपन्नाय नमः अर्घ्यं ।

मोतीयादाम छन्द ।

चहूँ गति काय स्वरूप प्रत्यक्ष, शिवालय वास अनूप अलक्ष ।
भजो मन आनन्दसों शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ ।१६४।

ॐ ह्री सिद्धगर्भवासाय नम॰ अर्घ्यं ।

निजानन्द श्रीयुत ज्ञान अथाह, सुशोभित तृप्त भयो सुख पाय ।
भजो मन आनन्दसों शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ ।१६५।

ॐ ह्री सिद्धलक्ष्मीसतर्पकाय नम. अर्घ्यं ।

सुभाव निजातम अन्तर लीन, विभाव परातम आपद कोन ।
भजो मन आनन्दसो शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ ।१६६।

ॐ ह्री सिद्धान्तराकाराय नम॰ अर्घ्यं ।

जहां लग द्वेष प्रवेश न होय, तहाँ लग सार रसायन होय ।
भजो मन आनन्दसो शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ ।१६७।

ॐ ह्री सिद्धसाररसाय नम: अर्घ्यं ।

जिसो निरलेप हुए विषतुंब्य, तिसो जग अग्र निराश्रय लुंब्य ।
भजो मन आनंदसो शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ ।१६८।

ॐ ह्री सिद्धशिखरमण्डनाय नम: अर्घ्यं ।

तिहूँ जग शीश बिराजित नित्य, शिरोमणि सर्व समाज अनित्य।
भजो मन आनंदसो शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ।१९९।

ॐ ह्रीं सिद्धत्रिलोकाग्रनिवासिने नमः अर्घ्यं।

अकाय अरूप अलक्ष अवेद, निजातम लीन सदा अविछेद।
भजो मन आनंदसो शिवनाथ, धरो चरणांबुजको निज माथ।२००।

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूपगुप्तेभ्यो नमः अर्घ्यं।

अडिल्ल छन्द।

ऋषभआदिचितधारिप्रथमदीक्षाधरी, केवलज्ञानउपायधर्मविधिउच्चरी
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहै, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहै

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो नमः अर्घ्यं॥२०१॥

निजहीनिजउरधारहेतसामर्थहै, आत्मशक्तिकरव्यक्तिकरणविधिव्यर्थ है
निज स्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहै, परमारथआचार्यसिद्धसुखकार है

ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं॥२०२॥

साधन साधक साध्य भाव सबहीगयो, भेदअगोचररूपमहासुखसंचयो
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहै, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहै

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूपगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं॥२०३॥

तत्त्वप्रतीत निजातमरूप अनुभवकला, पायोसत्यानंदकुमारग दलमला
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं
ॐ ह्रीं सूरिसम्यक्त्वगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ॥ २०४ ॥

वस्तु अनंत धर्म प्रकाशक ज्ञान है, एकपक्ष हट गृहित निपटअसुहान है
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ॥ २०५ ॥

वस्तुधर्मसमान ताहि अवलोकना, शुद्ध निजातमधर्मताहि नहीं लोपना
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनगुणेभ्यो नम अर्घ्य ॥ २०६ ॥

अतुलअकम्पअखेदशुद्धपरिणतिधरै, जगतरूपव्यापार न इक छिन आदरै
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ॥२०७ ॥

षट्त्रिंशतिगुणसूरि मोक्षफल पाइयो, तातैं हम इन गुणकरहीजशगाइयो
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्य सिद्धसुखकारहैं
ॐ ह्रीं सूरिषट्त्रिंशतगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ॥ २०८ ॥

पंचाचार आचारसाधशिवपदलियो, वास्तव में येगुणनिजमें परगटकियो
सिद्ध० निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकार है

ॐ ह्रीं सूरिपंचाचारगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥२०९॥

वि०
२०० गुणसमुदायसरूपद्रव्य आतममहा, परसोंभिन्न अभेद निजातमपदलहा।
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्यगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥२१०॥

वीतरागपरणतिरचहीसुखकारजू, परमशुद्धस्वयंसिद्ध भयो अनिवारजू
निजस्वरूपथितिकरणहरणविधिचारहैं, परमारथआचार्यसिद्धसुखकारहैं

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं ॥२११॥

(छन्द चचला, एक ह्रस्व एक दीर्घ)

आप सुक्खरूप हो सु, और सौख्यकार होत।
ज्यूं घटादिको प्रकाश कार है सुदीप जोत॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एकही अभेद पक्षमान॥२१२॥

ॐ ह्रीं सूरिमगलेभ्यो नम अर्घ्यं।

संस अंश भान वस्तु भावको प्रकाशमान ।
ज्ञान इन्द्रियाअनिन्द्रिया कहै उभै प्रमाण ॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान ।
मै नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१३॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानमगलेभ्यो नम अर्घ्यं ।

लोक उत्तमा सु वसु कर्मको प्रसंग टार ।
शुद्ध बुद्ध रिद्ध पाय लोक वेदना निवार ॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान ।
मै नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१४॥
ॐ ह्रीं सूरिलोकोत्तमेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

लोकभीत सो अतीत आदि अन्त एक रूप ।
लोकमें प्रसिद्ध सर्व भावको अनूप भूप ॥
सूरि धर्मको प्रकाश सिद्ध धर्म रूप जान ।
मै नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१५॥
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानलोकोत्तमेभ्यो नम. अर्घ्यं ।

बीच में न अन्तराय, आप ही सुखाय धाय।
या अबाध धर्मको प्रकाशमें करै सहाय ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१६॥
ॐ ह्रीं सूरिदर्शनलोकोत्तमेभ्यो नम. अर्घ्यं।

मोह भारको निवार, शुद्ध चेतना सुधार।
यह वीर्यता अपार लोकमे प्रशंसकार ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१७॥
ॐ ह्रीं सूरिवीर्यलोकोत्तमेभ्यो नम. अर्घ्यं।

धर्म केवली महान, मोह अन्ध तेज भान।
सप्त तत्त्वको बखानि, मोक्ष—मार्ग को निधान ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१८॥
ॐ ह्रीं केवलधर्माय नम अर्घ्यं।

शील आदि पूर भेद कर्मके कलाप छेद ।
आतम-शक्तिको प्रकाश शुद्ध चेतना विलास ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, शुद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२१९॥
ॐ ह्री सूरितपेभ्यो नम: अर्घ्यं ।

लोक चाहकी न दाह, द्वेष को प्रवेश नाह ।
शुद्ध चेतना प्रवाह, वृद्धता धरै अथाह ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२२०॥
ॐ ह्री सूरिपरमतपेभ्यो नम अर्घ्यं ।

मोह को न जोर जाय, घोर आपदा नसाय ।
घोरतें तपो सु लोक—शीश जाय मुक्ति पाय ॥
सूरि धर्मको प्रकाश, सिद्ध धर्म रूप जान ।
मैं नमूं त्रिकाल एक ही अभेद पक्षमान ॥२२१॥
ॐ ह्री सूरितपोघोरगुणेभ्यो नम: अर्घ्यं ।

कामिनी मोहन छन्द, मात्रा २० ।

वृद्धपरवृद्धगुणगहननितहोजहाँ, शाश्वतं पूर्णता सातिशयगुण तहां ।
सूरि सिद्धांत के पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ।।

ॐ ह्री सूरिघोरगुणपराक्रमेभ्यो नम अर्घ्यं ।।२२२।।

एक सम-भाव सम और नहीं ऋद्धि है, सर्वही ऋद्धिजाके भये सिद्ध है ।
सूरि सिद्धांत के पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ।।

ॐ ह्री सूरिऋद्धिऋषिभ्यो नम अर्घ्यं ।। २२३ ।।

जोगके रोकसे कर्मका रोक हो, गुप्तसाधनकिये साध्य शिवलोक हो ।।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ।।

ॐ ह्री सूरिसुयोगिनेभ्यो नम. अर्घ्यं ।। २२४ ।।

ध्यान बल कर्मके नाशके हेतु है, कर्मको नाश शिववास ही देत है ।
सूरि सिद्धांत के पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ।।

ॐ ह्री सूरिध्यानेभ्यो नम अर्घ्यं ।। २२५ ।।

पंचधाचारमे आत्म अधिकार है, बाह्य आधार आधेय सुविकार है ।
सूरि सिद्धांत के पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ।।

ॐ ह्री सूरिधात्रिभ्यो नम- अर्घ्यं ।। २२६ ।।

सूर सम आप परतेज करतार है, सूरही मोक्षनिधि पात्र सुखकार है
सूरि सिद्धांत के पारगामी भये, मै नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥

ॐ ह्री सूरिपात्रेभ्यो नम. अर्घ्य ॥ २२७ ॥

बाह्य छत्तीस अन्तर अभेदातमा, आप थिर रूप है सूर परमातमा ।
सूरि सिद्धांत केपारगामी भये, मै नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥

ॐ ह्री सूरिगुणशरणाय नम अर्घ्यं ॥ २२८ ॥

ज्ञान उपयोग में स्वस्थिता शुद्धता, पूर्ण चारित्रता पूर्ण ही बुद्धता ।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये, मै नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥

ॐ ह्री सूरिधर्मगुणशरणाय नमः अर्घ्यं ॥ २२९ ॥

शरण दुख हरण पर आपही शर्ण हैं, आपने कार्य मे आपही कर्ण है।
सूरि सिद्धांतके पारगामी भये, मैं नमूं जोरकर मोक्षधामी भये ॥

ॐ ह्री सूरिशरणाय नमः अर्घ्यं ॥ २३० ॥

दोहा—ज्यों कन्चन विन कालिमा, उज्ज्वल रूप सुहाय ।
त्योंही कर्म-कलंक बिन, निज स्वरूप दरसाय ॥२३१॥

ॐ ह्री सूरिस्वरूपशरणाय नम. अर्घ्यं ।

भेदाभेद सु नय थकी, एक ही धर्म विचार।
पायो सूरि सुबोध करि, भवदधि करि उद्धार ॥२३२॥
ॐ ह्री सूरिधर्मस्वरूपशरणाय नमः अर्घ्यं ।

अन्य समस्त विकल्प तजि, केवल निजपद लीन ।
पूरण ज्ञान स्वरूप यह, पायो सूरि सुधीन ॥२३३॥
ॐ ह्री सूरिज्ञानस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

सुखाभास इन्द्रीजनित, त्यागी सूरि महन्त ।
पूरण सुख स्वाधीन निज, साध्य भये सुखवन्त ॥२३४॥
ॐ ह्री सूरिसुखस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

अनेकात तत्त्वार्थ के, ज्ञाता सूरि महान ।
निरावर्ण निजरूप लखि, पायो पद निरवाण ॥२३५॥
ॐ ह्री सूरिदर्शनस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

मोहादिक रिपु नाशिके, सूर्य महा सामर्थ ।
शिव भामिन भरतार नित, रमै साध निज अर्थ ॥२३६॥
ॐ ह्री सूरिवीर्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

पद्धडी छन्द ।

जिन निज आतम निष्पाप कीन, ते सन्त करे पर पाप छीन ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३७॥
ॐ ह्रीं सूरिमंगलशरणाय नमः अर्घ्यं ।

रत्नत्रय जीव सुभावभाय, भवि पतित उधारण हो सहाय ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३८॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्मशरणाय नमः अर्घ्यं ।

तपकर ज्यो कंचन अग्नि जोग, ह्वै शुद्ध निजातम पद मनोग ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२३९॥
ॐ ह्रीं सूरितपशरणाय नमः अर्घ्यं ।

एकाग्र-चित्त चिन्ता निरोध, पावै अबाध शिव आतम बोध ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४०॥
ॐ ह्रीं सूरिध्यानशरणाय नमः अर्घ्यं ।

केवलज्ञानादि विभूति पाइ, ह्वै शुद्ध निरंजन पद सुखाइ ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४१॥
ॐ ह्रीं सूरिसिद्धशरणाय नमः अर्घ्यं ।

तिहुँ लोकनाथ तिहुँ लोक मांहिं, या सम दूजो सुखदाय नाहिं ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४२॥
ॐ ह्री सूरित्रिलोकशरणाय नम अर्घ्यं ।

आगत अतीत अरु वर्तमान, तिहुँ काल भव्य पावै निर्वाण ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४३॥
ॐ ह्री सूरित्रिकालशरणाय नम अर्घ्यं ।

मधि अधो उर्द्ध तिहुँ जगत मांहि, सब जीवन सुखकर और नाहिं ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४४॥
ॐ ह्री सूरित्रिजगन्मगलाय नम. अर्घ्यं ।

तिहुँ लोकमांहिं सुखकार आप, सत्यारथ मंगल हरण पाप ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४५॥
ॐ ह्री सूरित्रिलोकमगलशरणाय नम अर्घ्यं ।

उत्तम मंगल परमार्थ रूप, जग दुख नासे शिवसुख स्वरूप ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४६॥
ॐ ह्री सूरित्रिजगन्मगलोत्तमशरणाय नम अर्घ्यं ।

शरणागत दुखनाशन महान, तिहुँ जगहित कारण सुख निधान ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४७॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिजगन्मंगलशरणाय नम अर्घ्यं ।

तिहुँ लोकनाथ तिहुँ लोक पूज्य, शरणागत प्रतिपालन अदूज्य ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४८॥
ॐ ह्रीं सूरित्रिलोकमण्डनशरणाय नमः अर्घ्यं ।

अव्यय अपूर्व सामर्थ युक्त, संसारातीत विमोहमुक्त ।
शिवमग प्रगटन आदित्य सूर, हम शरण गही आनंद पूर ॥२४९॥
ॐ ह्रीं सूरिऋद्धिमण्डल शरणाय नम अर्घ्यं ।

त्रोटक छन्द ।

जिन रूप अनूप लखें सुख हो, जगमे यह मंत्र महान कहो ।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिववास करै सुखदा ।२५०।
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

जिम नागदेव वश मंत्र विधि, भव वास हरण तुम नाम निधि । धरि०
ॐ ह्रीं सूरिमंत्रगुणाय नमः अर्घ्यं ॥२५१॥

जगमोहित जीव न पावत है, यह मंत्र सु धर्म कहावत है।
धरि भक्ति हिये गणराज सदा, प्रणमूं शिवास करे सुखदा ॥
ॐ ह्रीं सूरिधर्माय नम अर्घ्यं ॥२५२॥

चिद्रूप चिदातम भाव धरे, गुण सार यही अविरुद्ध करें। धरि०
ॐ ह्रीं सूरिचैतन्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥२५३॥

अविकार चिदाम आनन्द हो, परमातम हो परमानंद हो। धरि०
ॐ ह्रीं सूरिचिदानदाय नम अर्घ्यं ॥२५४॥

निज ज्ञान प्रमाण प्रकाश करै, सुख रूप निराकुलता सु धरै। धरि०
ॐ ह्रीं सूरिज्ञानानन्दाय नम अर्घ्यं ॥२५५॥

धरि योग महा शम भाव गहैं, सुख राशि महा शिववास लहै। धरि०
ॐ ह्रीं सूरिशमभावाय नम अर्घ्यं ॥२५६॥

सम भाव महा गुण धारत है, निज आनंद भाव निहारत है। धरि०
ॐ ह्रीं सूरितपोगुणानन्दाय नमः अर्घ्यं ॥२५७॥

शिवसाधनको विधिनाश कहा, विधिनाशनको तप करण महा। धरि०
ॐ ह्रीं सूरितपोगुणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥२५८॥

निज आतम विषै नित मगन रहैं, जगके सुखमूल न भूलि चहैं। धरि०

ॐ ह्रीं सूरिहंसाय नमः अर्घ्यं ॥२५९॥

बनवास उदास सदा जगतैं, पर आस न खास विलास रतैं। धरि०

ॐ ह्रीं सूरिहंसगुणाय नमः अर्घ्य ॥२६०॥

निज नाम महागुण मंत्र धरैं, छिन मात्र जपे भवि आश वरैं। धरि०

ॐ ह्रीं सूरिमन्त्रगुणानन्दाय नमः अर्घ्यं ॥२६१॥

परमोत्तम सिध परियाय कही, अति शुद्ध प्रसिद्ध सुखातम मही। धरि०

ॐ ह्रीं सूरिसिद्धानन्दाय नमः अर्घ्यं ॥२६२॥

(माला छन्द)-शशि सन्ताप कलाप निवारण ज्ञान कला सरसै,
मिथ्यातम हरि भवि आनंद करि अनुभव भाव दरसै।
सूरि निजभेद कियो परसै,
भये मुक्ति मैं नमूं शीश नित जोर युगल करसै।२६३।

ॐ ह्रीं सूरिअमृतचन्द्राय नमः अर्घ्यं ॥२६३॥

पूरण चन्द्र सरूप कलाधर ज्ञान सुधा बरसै।
भवि चकोर चित चाहत नित मनु चरण जोति परसै। सूरि०

ॐ ह्रीं सूरिसुधाचन्द्रस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥२६४॥

जगजिय ताप निवारण कारण विलसे अन्तरसैं ।
देव सुधा सम गुण निवाहकर, सकल चराचरसैं । सूरि०।२६५।

ॐ ह्रीं सूरिसुधागुणाय नम अर्घ्यं ।

जा धुनि सुनि संशय विनसैं जिम ताप मेघ वरसैं ।
मनहुँ कमल मकरंद बून्द अली पाय सुधारससैं । सूरि०।२६६।

ॐ ह्रीं सूरिसुधाध्वनये नम अर्घ्यं ।

अजर अमर सुखदाय भाय मन ज्यो मयूर हरसैं,
गाजत घन बाजत ध्वनि सुनि मनु भाजत भय उरसैं । सूरि०।२६७।

ॐ ह्रीं सूरिअमृतध्वनिसुरूपाय नमः अर्घ्यं ।

(चकोर छंद)-जो अपने गुण वा पर्याय, वरै निज धर्म न होत विनास ।
द्रव्य कहावत है सु अनंत स्वभाव धरे निज आत्म विलास ॥
सूरि कहाय सु कर्म खिपाइ, निजातम पायगये शिवधाम ।
सु आतमराम सदा अभिराम भये सुख काम नमूं वसु जाम ॥

ॐ ह्रीं सूरिद्रव्याय नम अर्घ्यं ॥ २६८ ॥

ज्यों शशि जोति रहै सियरा नित, ज्यों रवि जोति रहै नित ताप ।
ज्यो निज ज्ञानकला परपूरण, राजत हो निज करण सु आप ।सूरि०।

ॐ ह्रीं सूरिगुणद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥ २६९ ॥

हो अविनाश अनूपम रूप सु, ज्ञान मई नित केलि करान ।
पै न तजै मरजाद रहै, जिम सिन्धु कलोल सदा परिमाण ॥सूरि०॥

ह्रीं सूरिपर्यायाय नमः अर्घ्यं ॥२७०॥

जे कछु द्रव्य तनो गुण है, सु समस्त मिलै गुण आतम माहीं ।
ताकरि द्रव्य सरूप कहावत, है अविनाश नमै हम ताई ॥सूरि०।२७१।

ह्रीं सूरिगुणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

जा गुण मे गुण और न हो, निज द्रव्य रहै नित और न ठौर ।
सो गुण रूप सदा निवस, हम पूजत है करके कर जोर ॥सूरि०।२७२

ॐ ह्रीं सूरिगुणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

जो परिणाम धरै तिनसों, तिनमेकरहै वरतै तिस रूप ।
सो पर्याय उपाय विना नित, आप विराजत हैं सु अनूप ॥सूरि०।२७३।

ॐ ह्रीं सूरिपर्यायस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

हो नित ही परणाम समय प्रति, सो उत्पाद कहो भगवान ।
सोतुमभावप्रकाशकियो, निज यह गुणका उत्पाद महान।।सूरि०।२७४।

ॐ ह्री सूरिगुणोत्पादाय नम अर्घ्यं ।

ज्योमृतिका निज रूप न छांडत, है घटमांहि अनेक प्रकार ।
सो तुम जीव स्वभाव धरो नित, मुक्तभए जगवास निवार ।सूरि०।२७५

ॐ ह्री सूरिध्रुवगुणोत्पादाय नम अर्घ्यं ।

थे जगमे सब भाव विभाव, पराश्रित रूप अनेक प्रकार ।
ते सब त्याग भए शिवरूप, अबध अमन्द महासुखकार ।सूरि०।२७६।

ॐ ह्री सूरिव्ययगुणोत्पादाय नम अर्घ्यं ।

जे जगमे-षट् द्रव्य कहै, तिनमें इक जीव सु ज्ञान स्वरूप ।
और सभी विनज्ञान कहै, तुम राजत हो नित ज्ञान अनूप ।सूरि०।२७७

ॐ ह्री सूरिजीवतत्वाय नम अर्घ्यं ।

ज्ञान सुभाव धरो नित ही, नहीं छाँड़त हो कबहू निज वान ।
येही विशेष भयो सबसो नहीं, औरनमें गुण ये परधान ।सूरि०।२७८।

ॐ ह्री सूरिजीवतत्वगुणाय नम: अर्घ्यं ।

हो कर्तादि अनेक सुभाव, निजातम में परमै अनिवार।
सो परको न लगाव रहो, निजही निजकर्मरहोसुखकार ॥सूरि०।२७६।

ॐ ह्री सूरिनिजस्वभावधारकाय नम अर्घ्यं।

द्रव्य तथापि, विभाव दोऊ, विधि कर्म प्रवाह बहै विन आदि।
ते सब एक भये थिररूप, निजातम शुद्ध सुभाव प्रसाद।सूरि० ।२८०।

ॐ ह्री सूरिआश्रवविनाशाय नम. अर्घ्यं।

(मोदकछंद) बंध दऊ विधिके दुख कारण, नाशकियो भवपार उतारण।
सूरि भये निज ज्ञान कलाकार, सिद्ध भये प्रणमूं मै मनधर ॥

ॐ ह्री सूरिबंधतत्त्वविनाशाय नम अर्घ्यं ॥२८१॥

सम्वरतत्त्व महा सुख देत है, आश्रव रोकनको यह हेत है। सूरि०।

ॐ ह्री सूरिसवरतत्त्वसहिताय नमः अर्घ्यं ॥२८२॥

ज्यूं मणि दीप अडोल अनूपही, संवर तत्व निराकुलरूप ही। सूर०।

ॐ ह्री सूरिसवरतत्त्वस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ॥२८५।

संवरके गुण ते मुनि पावत, जो मुनि शुद्ध सुभाव सुध्यावत ।सूरि०।

ॐ ह्री सूरिसवरगुणाय नमः अर्घ्यं ॥२८४॥

संवर धर्मंतनो शिव पावहि, संवर धरम तहाँ दरशावहि ॥सूरि०॥

ॐ ह्ली सूरिसवरधर्माय नम अर्घ्यं ॥२८५॥

दोहा— एक देश वा सर्व विधि, दोनों मुक्ति स्वरूप ।
नमूं निरजरा तत्त्वसो, पायो सिद्ध अनूप ॥२८६॥

ॐ ह्ली सूरिनिर्जरातत्त्वाय नम. अर्घ्यं ।

शुद्ध सुभाव जहाँ तहाँ, कहो कर्मको नाश ।
एम निरजरा तत्त्वका, रूप कियो परकाश ॥२८७॥

ॐ ह्ली सूरिनिर्जरातत्त्वस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

कोटि जन्मके विघन सब, सूखे तृण सम जान ।
दहे निर्जरा अग्निसो, इह गुण है परधान ॥२८८॥

ॐ ह्ली सूरिनिजरागुणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

निज बल कर्म खपाइये, कहो निर्जरा धर्म ।
धर्मी सोई आत्मा, एक हि रूप सुपर्म ॥२८९॥

ॐ ह्ली सूरिनिर्जराधर्मस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ।

समय समय गुणश्रेणिका, खिरै कर्म बल ध्यान ।
ये सम्बन्ध निवार करि, करै मुक्ति सुख पान ॥२६०॥

ॐ ह्रीं सूरिनिर्जरानुबधाय नम अर्घ्यं ।

अतुल शक्ति थिर भावकी, सो प्रगटी तुम माँहि ।
यही निर्जरा रूप है, नमूं भक्ति कर ताहि ॥२६२॥

ॐ ह्रीं सूरिनिजरास्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

सर्व कर्म के नाश विन, लहै न शिव–सुखरास ।
निश्चय तुम ही निर्जरा, कियो प्रतीत प्रकाश ॥२६२॥

ॐ ह्रीं सूरिनिजराप्रतीताय नम अर्घ्यं ।

सकल कर्ममल नाशतें, शुद्ध निरंजन रूप ।
ज्यो कचन विन कालिमा, राजै मोक्ष अनूप ॥२६३॥

ॐ ह्रीं सूरिमोक्षाय नम. अर्घ्यं ।

द्रव्य भाव दोनो सुविधि, करै जगतमे वास ।
द्वै विध बन्ध उखारके, भये मुक्त सुखरास ॥२६४॥

ॐ ह्रीं सूरिबन्धमोक्षाय नम. अर्घ्यं ।

पर विकलप सुख दुख नहीं, अनुभव निज आनन्द ।
जन्म मरण विधि नाशकर, राजत शिवसुख कंद ।२६५।

ॐ ह्री सूरिमोक्षस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।

जहां न दुखको लेश है, उदय कर्म अनुसार ।
जो शिवपद पायो महा, नमूं भक्ति उर धार ।।२६६।।

ॐ ह्री सूरिमोक्षगुणाय नम अर्घ्यं ।

जो शिव सुगुण प्रसिद्ध है, तिनसों नित्त प्रबन्ध ।
जे जगवास विलास दुख, तिनकूं नमूं अबन्ध ।।२६७।।

ॐ ह्री सूरिमोक्षानुबधाय नम अर्घ्यं ।

जैसी निज तन आकृती, तज कीनो शिवास ।
ते तैसै नित अचल है, ज्ञानानन्द प्रकाश ।।२६८।।

ॐ ह्री सूरिमोक्षानुप्रकाशाय नम अर्घ्यं ।

क्षयोपशम परिणाम कर, साधे न जिनका रूप ।
वा निजपदमें लीनता, ये ही गुप्त स्वरूप ।।२६९।।

ॐ ह्री सूरिस्वरूपगुप्तये नम अर्घ्यं ।

इन्द्रियजनित न दुख जहां, सदा निजानन्द रूप।
निर-आकुल स्वाधीनता, वरतै शुद्ध स्वरूप ॥३००॥

ॐ ह्रीं सूरिपरमात्म-स्वरूपाय नम अर्घ्यं।

(रोला छन्द)—संपूरण श्रुत सार निजातम बोध लहानो,
निज अनुभव शिव मूल मानु उपदेश करानो।
शिष्यनके अज्ञान हरैं ज्यूं रवि अंधियारा,
पाठक गुण संभवै सिद्ध प्रति नमन हमारा ॥३०१॥

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यो नम अर्घ्यं।

मुक्ति मूल है आत्मज्ञान सोई श्रुत ज्ञानी,
तत्त्व ज्ञान सो लहै निजातम पद सुखदानी। शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षमण्डनाय नमः अर्घ्यं।

भवसागर ते भव्य जीव तारण अनिवारा,
तुममें यह गुण अधिक आप पायो तिस पारा। शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं।

दर्शन ज्ञान स्वभाव धरो तद्रूप अनूपी,
हीनाधिक बिन अचल विराजत शुद्ध सरूपी। शिष्यनके०
ॐ ह्री पाठकगुणस्वरूपेभ्यो नम. अर्घ्यं।

निज गुण वा परयाय अखण्डित नित्य धरै है।
तिहुँ काल प्रति अन्य भाव नहीं ग्रहण करै है। शिष्यनके०
ॐ ह्री पाठकद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥३०५॥

सहभावी गुण सार जहां परभाव न लेसा,
अगुरुलघू परणाम वस्तु सद्भाव विशेषा। शिष्यनके०
ॐ ह्री पाठकगुणपर्यायेभ्यो नम अर्घ्यं ॥३०६॥

गुण समुदायी द्रव्य याहितें निरगुण नाहीं।
सो अनन्त गुण सदा विराजत तुम पद माहीं। शिष्यनके०
ॐ ह्री पाठकगुणद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥३०७॥

सत सरूप सब द्रव्य सधै नीके अबाधकर।
सो तुम सत्य सरूप विराजो द्रव्य भाव धर। शिष्यनके०
ॐ ह्री पाठकद्रव्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥३०८॥

जे जे है परनाम बिना परनामी नाहीं ।
परनामी परनाम एक ही हैं तुम माहीं । शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यपर्यायाय नम अर्घ्यं ॥३०९॥

अगुरुलघू पर्याय शुद्ध परनाम बखानो,
निज सरूपमें अन्तरगत श्रुतज्ञान प्रमानो । शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकपर्यायस्वरूपाय नम: अर्घ्यं ॥३१०॥

जगतवास सब पापमूल जियको दुखदाई,
ताको नाशन हेतु कहो शिव मूल उपाई । शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकमगलाय नम अर्घ्यं ॥३११॥

जहां न दुखको लेश सर्वथा सुख ही जानो,
सोई मंगल गुण तुममें प्रत्यक्ष लखानो । शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकममगलगुणाय नम अर्घ्यं ॥३१२॥

औरन मंगलकरन आप मंगलमय राजै,
दर्शन कर सुखसार मिलै सब ही अघ भाजै । शिष्यनके०

ॐ ह्रीं पाठकमगलगणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥३१३॥

आदि अनत अविरुद्ध मंगलमय मूरति ।
निज सरूपमे बसै सदा परभाव विदूरित । शिष्यनके०

ॐ ह्री पाठकद्रव्यमगलाय नम अर्घ्यं ॥३१४॥

जितनी परणति धरो सबहि मंगलमय रूपी,
अन्य अवस्थित टार धार तद्रूप अनूपी । शिष्यनके०

ॐ ह्री पाठकमगलपर्यायाय नम अर्घ्यं ॥३१५॥

निश्चय वा विवहार सर्वथा मंगलकारी,
जग जीवनके विघन विनाशन सर्व प्रकारी । शिष्यनके०

ॐ ह्री पाठकद्रव्यपर्यायमगलाय नम अर्घ्यं ॥३१६।

भेदाभेद प्रमाण वस्तु सर्वस्व बखानो,
वचन अगोचर कहो तथा निर्दोष कहानो । शिष्यनके०

ॐ ह्री पाठकद्रव्यगुणपर्यायमगलाय नम अर्घ्यं ॥३१७॥

सब विशेष प्रतिभासमान मंगलमय भासे,
निर्विकल्प आनन्दरूप अनुभूति प्रकाशे । शिष्यनके०

ॐ ह्री पाठकस्वरूपमगलाय नम अर्घ्यं ॥३१८॥

(पायत्ता छंद)—निर्विघ्न निराश्रय होई, लोकोत्तम मंगल सोई।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥
ॐ ह्रीं पाठकमंगलोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥३१९॥

जगजीवनको हम देखा, तुम ही गुण सार विशेखा।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥
ॐ ह्रीं पाठकगुणलोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥३२०॥

षट्द्रव्य रचित जग सारा, तुम उत्तम रूप निहारा। तुम गुण०
ॐ ह्रीं पाठकद्रव्यलोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥३२१॥

निज ज्ञान शुद्धता पाई, जिस करि यह है प्रभुताई। तुम गुण०
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानाय नमः अर्घ्यं ॥३२२॥

जग जीव अपूरण ज्ञानी, तुम ही लोकोत्तम मानी। तुम गुण०
ॐ ह्रीं पाठकज्ञानलोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥३२३॥

युगपत निरभेद निहारा, तुम दर्शन भेद उघारा। तुम गुण०
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनाय नमः अर्घ्यं ॥ ३२४॥

हम सोवत हैं नित मोही, निरमोही लखे तुमको ही। तुम गुण०
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनलोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥३२५॥

दृगवंत महासुखकारा, तुम ज्ञान महा अविकारा ।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥

ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥३२६॥

निरशंस अनन्त अबाधा, निज बोधन भाव अराधा । तुम गुण०

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वाय नम अर्घ्यं ॥२२७॥

सम्यक्त्वमहासुखकारी, निज गुण स्वरूप अविकारी । तुम गुण०

ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वगुणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ ३२८ ।

निरखेद अछेद अभेदा, सुख रूप वीर्य निर्वेदा । तुम गुण०

ॐ ह्रीं पाठकवीर्याय नम अर्घ्यं ॥ ३२९ ॥

निज भोग कलेश न लेशा, यह वीर्य अनन्त प्रदेशा । तुम गुण०

ॐ ह्रीं पाठकवीर्य गुणाय नमः अर्घ्यं ॥ ३३० ॥

परनाम सुथिर निज माहीं, उपजै न कलेस कदाही । तुम गुण०

ह्रीं पाठकवीर्यपर्यायाय नम अर्घ्यं ॥ ३३१ ॥

द्रव्य भाव लहो तुम जैसो, पावै जगजन नहिं ऐसो । तुम गुण०

ह्रीं पाठकवीर्यद्रव्याय नम अर्घ्यं ॥ ३३२ ॥

निज ज्ञान सुधारस पीवत, आनंद सुभाव सु जीवत । तुम गुण०

ओ ह्री पाठकवीर्यगुणपर्यायाय नम अर्घ्यं ।। ३३३ ।।

अविशेष अनन्त सुभावा, तुम दर्शन माहिं लखावा । तुम गुण०

ओ ह्री पाठकदर्शनपर्यायाय नम अर्घ्यं ।। ३३४ ।।

इकबार लखे सबहीको, तद्रूप निजातम ही को । तुम गुण०

ओ ह्री पाठकदर्शनपर्यायस्वरूपाय नम अर्घ्यं ।। ३३५ ।।

सपरस आदिक गुण नाहीं, चिद्रूप निजातम माहीं । तुम गुण०

ॐ ह्री पाठकज्ञानद्रव्याय नमः अर्घ्यं ।। ३३६ ।।

शरणागति दीनदयाला, हम पूजत भाव विशाला । तुम गुण.

ॐ ह्री पाठरशरणाय नम अर्घ्यं ।। ३३७ ।।

जिनशरण गही शिव पायो, इम शरण महा गुणगायो । तुम गुण०

ॐ ह्री पाठकगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।। ३३८ ।।

अनुभव निज बोध करावै, यह ज्ञान शरण कहलावै । तुम गुण.

ॐ ह्री पाठकज्ञानगुणशरणाय नम अर्घ्यं ।। ३३९ ।।

दृग मात्र तथा सरधाना, निश्चय शिववास कराना । तुम गुण.

ॐ ह्री पाठकदर्शनशरणाय नम. अर्घ्यं ।। ३४० ।।

निरभेद स्वरूप अनूपा, है शर्ण तनी शिव भूपा।
तुम गुण अनन्त श्रुत गाया, हम सरधत शीश नवाया ॥
ॐ ह्रीं पाठकदर्शनस्वरूपशरणाय नम अर्घ्यं ॥ ३४१ ॥
निजआतम-स्वरूप लखाया, इह कारण शिवपद पाया। तुम गुण.
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वशरणाय नम अर्घ्यं ॥ ३४२ ॥
आतम–स्वरूप सरधाना, तुम शरण गहौ भगवाना। तुम गुण.
ॐ ह्रीं पाठकसम्यक्त्वस्वरूपाय नम. अर्घ्यं ॥ ३४३ ॥
निज आतम साधन माहीं, पुरुषारथ छूटै नाहीं। तुम गुण.
ओ ह्रीं पाठकवीर्यशरणाय नम अर्घ्यं ॥३४४॥
आतम शकती प्रगटावै, तब निज स्वरूप जिय पावै। तुम गुण.
ओ ह्रीं पाठकवीर्यस्वरूपशरणाय नम· अर्घ्य ॥३४५॥
परमातम वीर्य महा है, पर निमित न लेश तहां है। तुम गुण.
ओ ह्रीं पाठकवीर्यपरमात्मशरणाय नम अर्घ्यं ॥३४६॥
श्रुतद्वादशांग जिनवानी, निश्चय शिववास करानी। तुम गुण.
ओ ह्रीं पाठकद्वादशांगशरणाय नमः अर्घ्यं ॥३४७॥

दश पूर्व महा जिनवाणी, निश्चय अघहर सुखदानी। तुम गुण.

ओ ह्री पाठकदशपूर्वांगाय नम॰ अर्घ्यं ॥३४८॥

दश चार पूर्व जिनवानी, निश्चय शिववास करानी। तुम गुण.

ओ ह्री पाठकचतुर्दशपूर्वांगाय नम अर्घ्यं ॥३४९॥

निज आत्म चर्ण प्रकटावै, आचार अंग कहलावै। तुम गुण.

ओ ह्री पाठकाचारांगाय नम अर्घ्य ॥४५०॥

रेखता छन्द।

विविध शंकादि तुम टारी, निरन्तर ज्ञान आचारी।
पूर्ण श्रुतज्ञान फल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥

ॐ ह्री पाठकज्ञानाचाराय नम॰ अर्घ्यं ॥३५१॥

पराश्रित भाव विनशाया, सुथिर निजरूप दर्शाया। पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकतपसाचाराय नम॰ अर्घ्यं ॥३५२॥

मुक्तपद दैन अनिवारी, सर्व बुध चरण आचारी। पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकरत्नत्रयाय नम अर्घ्यं ॥३५३॥

शुद्ध रत्नत्रय धारी, निजातमरूप अविकारी। पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकरत्नत्रयसहायाय नम॰ अर्घ्यं ॥३५४॥

ध्रौव्य पंचमङ्गली पाई, जन्म पुनि मरण छुटकाई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान फल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥
ॐ ह्री पाठकध्र वग्रसंसाराय नमः अर्घ्यं ॥ ३५५ ॥
अनूपम रूप अधिकाई, असाधारण स्वपद पाई । पूर्ण.
ॐ ह्री पाठकएकत्वस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ ३५६ ॥
आन तुम सम न गुण होई, कहो एकत्व गुण सोई । पूर्ण.
ॐ ह्री पाठेकएकत्वगुणाय नम अर्घ्यं ॥३५७॥
निजानन्द पूर्ण पद पाया, सोई परमात्म कहलाया । पूर्ण.
ॐ ह्री पाठकएकत्वपरमात्मने नमः अर्घ्यं ॥३५८॥
उच्चगत मोक्षका दाता, एक निजधर्म विख्याता । पूर्ण.
ओ ह्री पाठकएकत्वधर्माय नम अर्घ्यं ॥ ३५९ ॥
जु तुम चेतनता परकासी, न पावै ऐसी जगवासी । पूर्ण.
ओ ह्री पाठकएकत्वचेतनाय नम. अर्घ्यं ॥ ३६० ॥
ज्ञान दर्शन स्वरूपी हो, असाधारण अनूपी हो । पूर्ण.
ओ ह्री पाठकएकत्वचेतन स्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६१ ॥

गहै नित निज चतुष्टयको, मिलै कबहूँ नहीं परसों । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकएकत्वद्रव्याय नम अर्घ्यं ॥ ३६२ ॥

स्वपद अनुभूत सुख रासी, चिदानन्द भाव परकासी । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकचिदानन्दाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६३ ॥

अन्त पुरुषार्थ साधक हो, जन्म मरणादि बाधक हो । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकसिद्धसाधकाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६४ ॥

स्वआतम ज्ञान दरशाया, ये पूरण ऋद्धि पद पाया । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकऋद्धिपूर्णाय नम अर्घ्यं ॥ ३६५ ॥

सकल विधि मूर्च्छा—त्यागी, तुम्ही, निरग्रन्थ बड़भागी । पूर्ण

ओं ह्रीं पाठकनिर्ग्रन्थाय नम अर्घ्यं ॥ ३६६ ॥

निजाश्रित अर्थ जगनाही, अबाधित अर्थ तुममाहीं । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकार्थविधानाय नम अर्घ्यं ॥ ३६७ ॥

न फिर संसार पद पाया, अपूरव बन्ध विनसाया । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकसंसारानुबन्धाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६८ ॥

आप कल्याणमय राजो, सकल जगवास दुख त्याजो । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठककल्याणाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६९ ॥

स्वपर हितकार गुणधारी, परम कल्याण अविकारी ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥

ओं ह्रीं पाठककल्याणगुणाय नमः अर्घ्यं ॥ ३७० ॥

अहित परिहार पद जो है, परम कल्याण तासो है । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठककल्याणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ३७१ ॥

स्वसुख द्रव्याश्रये माहीं, जहां कछु पर निमित्त नाहीं । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठककल्याणद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥ ३७२ ॥

जोहै सोहै अमित काला, अन्यथा भाव विधि टाला । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकतत्त्वगुणाय नमः अर्घ्यं ॥ ३७३ ॥

रहै नित चेतना माहीं, कहै चिद्रूप मुनि ताहीं । पूर्ण.

ओं ह्रीं पाठकचिद्रूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ३७४ ॥

सर्वथा ज्ञान परिणामी, प्रकट हैं चेतना नामी । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकचेतनाय नमोऽर्घ्यं ॥३७५॥

नहीं अन्यत्व भेदा है, गुणी गुण निरविछेदा है । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकचेतनागुणाय नमोऽर्घ्यं ॥३७६॥

घटाघट वस्तु परकाशी, धरे है जोति प्रतिभाशी । पूर्ण,

ॐ ह्री पाठकज्योतिप्रकाशाय नमोऽर्घ्यं ॥ ३७७ ॥

वस्तु सामान्य अवलोका, है युगपत दर्श सिद्धोंका । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकदर्शनचेतनाय नमोऽर्घ्यं ॥ ३७८ ॥

विशेषण युक्त साकारा, ज्ञान द्युति मे प्रगट सारा । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकज्ञानचेतनाय नमोऽर्घ्यं ।३७९॥

ज्ञानसो जीव नामी है, भेद समवाय स्वामी है । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकजीवचिदानन्दाय नम' अर्घ्यं ॥३८०॥

चराचर वस्तु स्वाधीना, एक ही समय लख लीना । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकवीर्यचेतनाय नमः अर्घ्यं ॥ ३८१ ॥

सकल जीवोके सुख कारन, शरण तुमही हो अनिवारन । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकसकलशरणाय नम अर्घ्यं । ३८२ ॥

तुम हो त्रयलोक हितकारी, अद्वितीय शरण बलिहारी । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकत्रैलोक्य शरणाय नम अर्घ्यं ॥ ३८३ ॥

तुम्हारी शरण तिहुँ काला, करन जग जीव प्रतिपाला । पूर्ण.

ॐ ह्री पाठकत्रिकालशरणाय नम अर्घ्यं ॥३८४॥

शरण अनिवार सुखदाई, प्रगट सिद्धान्तमें गाई ।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया ॥

ॐ ह्रीं पाठकनिमगलशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥३८५॥

लोकमे धर्म विख्याता, सों तुमही में सुखसाता । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकलोकशरणाय नम अर्घ्यं ॥३८६॥

जोग विन आश्रवै नाहीं, भये निर आश्रवा ताही । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकाश्रववेदाय नमः अर्घ्यं ॥३८७॥

आश्रव करमका होना, कार्य था आपना खोना । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकाश्रवविनाशाय नमः अर्घ्यं ॥ ३८८ ॥

तत्त्व निर्बाध उपदेशा, विनाशे कर्म परवेशा । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकआश्रव उपदेशछेदकाय नम. अर्घ्यं ॥ ३८९ ॥

प्रकृति सब कर्मको चूरी, भाव मल नाश दुख पूरी । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकबध अन्तकाय नम अर्घ्यं ॥३९०॥

न फिर संसार अवतारा, बन्ध विधि अन्त कर डारा । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकबधमुक्ताय नम अर्घ्यं ॥३९१॥

आश्रव कर्म दुखदाई, रुके संवर ये सुखदाई । पूर्ण०

ॐ ह्रीं पाठकसंवराय नमः अर्घ्यं ॥३६२॥

सर्वथा जोग विनसाया, स्वसंवर रूप दरशाया । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकसंवरस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥३६३॥

भावमें कलुषता नाहीं, भये संवर करण ताहीं । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकसंवरकरणाय नमः अर्घ्यं । ३६४॥

कुपरणति राग रुष नाशन, निरंजरा रूप प्रतिभासन । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकनिर्जरास्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥३६५।

कामदेव दाह जग सारा, आप तिस भस्म कर डारा । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठककंदर्पछेदकाय नमः अर्घ्यं ॥३६६॥

चहुँ विधि बंध विधि चूरा, ये विस्फोटक कहो पूरा । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकर्मविस्फोटकाय नमः अर्घ्यं ॥३६७॥

दऊ विधि कर्मका खोना, सोई है मोक्षका होना । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षाय नमः अर्घ्यं । ३६८॥

द्रव्य अर भाव मल टारा, नमूं शिवरूप सुखकारा । पूर्ण.

ॐ ह्रीं पाठकमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ३६९ ॥

अरति रति परिनिमित खोई, आत्म रति है प्रगट सोई।
पूर्ण श्रुतज्ञान बल पाया, नमूं सत्यार्थ उवझाया।

ओ ह्री पाठकआत्मरतये नम अर्घ्यं ॥४००॥

लोलतरग छन्द तथा बडी चौपाई।

अठाईस मूलसदागुणधारी, सो सब साधु वरैं शिव नारी।
साधु भये शिव साधनहारैं, सो तुम साधु हरो अघ म्हारैं॥

ओ ह्री सर्वसाधुभ्यो नम. अर्घ्यं ॥४०१॥

मूल तथा सब उत्तर गाये, ये गुण पालत साधु कहाये। साधु भये.

ओ ह्री सर्वसाधुगुणेभ्यो नम अर्घ्यं ॥४०२॥

साधुनके गुण साधुहि जाने, होत गुणी गुणही परमाने। साधु भये.

ओ ह्री सर्वसाधुगुणस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४०३॥

नेम थकी शिववास करे जो, द्रव्य थकी शिवरूप करै जो। साधुभये.

ओ ह्री सर्वसाधुद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥४०४॥

जीव सदा चित भाव विलासी, आपही आप सधै शिवराशी। साधुभये.

ओं ह्री सर्वसाधुगुणद्रव्याय नम अर्घ्यं ॥४०५॥

ज्ञानमई निज ज्योति प्रकाशी, भेद विशेष सबै प्रतिभासी। साधु भये.

ॐ ह्री साधुज्ञानाय नमः अर्घ्यं ॥ ४०६ ॥

एक हि वार लखाय अभेदा, दर्शनको सब रोग विछेदा। साधु भये.

ॐ ह्री साधुतदशनाय नम अर्घ्यं ॥ ४०७ ॥

आपहिसाधन साध्य तुम्हीहो, एक अनेक अबाध तुम्हीं हो। साधु भये.

ॐ ह्री माधुद्रव्यभावाय नम अर्घ्यं ॥ ४०८ ॥

चेतनता निजभाव न छारे; रूप स्पर्शन आदि न धारे। साधु भये

ॐ ह्री माधुद्रव्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ ४०९ ॥

जो उतपाद भये इकबारा, सो निरबाध रहै अविकारा। साधु भये.

ॐ ह्री साधुवीर्याय नम. अर्घ्यं ॥ ४१० ॥

है परनाम अभिन्न प्रणामी, सो तुम साधु भये शिवगामी। साधु भये.

ॐ ह्री साधुद्रव्यगुणपर्यायाय् नम. अर्घ्यं ॥ ४११ ॥

जो गुण वा परियाय धरो हो, हो निज माहीं अभिन्न वरो हो साधु।

ॐ ह्री साधुद्रव्यगुणपर्यायाय नम अर्घ्यं ॥ ४१२ ॥

मंगलमय तुम नाम कहावै, लेतहि नाम सु पाप नसावै। साधु. भये

ॐ ह्री साधुमंगलाय नमः अर्घ्यं ॥ ४१३ ॥

मंगल रूप अनूपम सोहै, ध्यान किये नित आनन्द होहै।
साधु भये शिव साधनहारै, सो तुम साधु हरो अघ म्हारै॥
ॐ ह्री साधुमगलस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ ४१४ ॥

पाप मिटै तुम शरण गहेतें, मंगल शरण कहाय लहैतें। साधु. ॥
ॐ ह्री साधुमगलशरणाय नम. अर्घ्यं ॥ ४१५ ॥

देखत ही सब पाप नसे है, आनन्द मंगलरूप लसे है। साधु. ॥
ॐ ह्री साधुमगलदर्शनाय नम अर्घ्यं ॥ ४१६ ॥

जानत है तुमको मुनि नीके, पाप कलाप मिटै तिनहीके। साधु. ॥
ॐ ह्री साधुमगलज्ञानाय नम अर्घ्यं ॥ ४१७ ॥

ज्ञानमई तुम हो गुणरासा, मंगल ज्योति धरो रविकासा। साधु. ॥
ॐ ह्री साधुज्ञानगुणमगलाय नम. अर्घ्यं ॥ ४१८ ॥

मंगल वीर्य तुम्हीं दर्शाया, काल अनन्त न पाप लगाया। साधु. ॥
ओ ह्री साधुवीर्यमगलाय नम अर्घ्यं ॥ ४१९ ॥

वीर्य महा सुखरूप निहारा, पाप बिना नित ही अविकारा। साधु. ॥
ओ ह्री साधुवीर्यमगलस्वरूपाय नमः ॥ ४२० ॥

मंगल वीर्य महा गुणधामी, निज पुरुषार्थ हि मोक्ष लहामी । साधु.॥
श्रो ह्री साधुवीर्यपरममंगलाय नमः अर्घ्यं । ४२१.॥

वीर्य स्वभाविक पूर्ण तिहारा, कर्म नशाय भये भवपारा । साधु.
श्रो साधुवीर्यद्रव्याय नम अर्घ्यं ॥ ४२२ ॥

तीन हि लोक लखे सब जोई, आप समान न उत्तम कोई । साधु,
श्रो ह्री साधुलोकोत्तमाय नम. अर्घ्यं ॥ ४२३ ॥

लोक सभी विधि बन्धन माही, तुम सम रूप धरे ते नाहीं । साधु.
श्रो ह्री साधुलोकोत्तमगुणाय नमः अर्घ्यं । ४२४ ।

लोकनके गुण पाप कलेशा, उत्तम रूप नहीं तुम जैसा । साधु.
श्रो साधुलोकोत्तमगुणस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ४२५ ॥

लोक अलोक निहारक नामी, उत्तम द्रव्य तुम्हीं अभिरामी । साधु ॥
श्रो ह्री साधुलोकोत्तमद्रव्याय नमः अर्घ्यं ॥ ४२६ ॥

लोक सभी षट्द्रव्य रचाया, उत्तम द्रव्य तुम्हीं हम पाया । साधु ॥
श्रो ह्री सधुालोकोत्तमद्रव्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥ ४२७ ॥

ज्ञानमई चित उत्तम सोहै, ऐसे लोक विषै अरु को है । साधु. ॥
श्रो ह्री साधुलोकोत्तमज्ञानाय नम· अर्घ्यं ॥ ४२८ ॥

ज्ञान स्वरूप सुभाव तिहारा, उत्तम लोक कहै इम सारा ।
साधु भये शिव साधनहारै, सो तुम साधु हरो अघ म्हारै ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमज्ञानस्वरूपाय नमं अर्घ्यं ॥ ४२६ ॥

देखनमे कुछ आड न आवै, लोग तनी सब उत्तम गावै । साधु. ॥

ओ ह्री माधुलोकोत्तमदर्शनाय नम अर्घ्यं ॥ ४३० ॥

देखन जानन भाव धरो हो, उत्तम लोकके हेतु गहै हो । साधु. ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमज्ञानदशनाय नम अर्घ्यं ॥४३१॥

जाकर लोग शिखरपद धारा, उत्तम धर्म कहो जग सारा । साधु. ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमधर्माय नम अर्घ्यं ॥४३२॥

धर्म स्वरूप निजातम मांही, उत्तम लोक विषै ठहराई । साधु. ॥

ओ ह्रीसाधुलोकोत्तमधर्मस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४३३॥

अन्य सहाय न चाहत जाको, उत्तम लोग कहै बल ताको । साधु. ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमवीर्याय नम. अर्घ्यं ॥४३४॥

उत्तम वीर्य सरूप निहारा, साधन मोक्ष कियो अनिवारा । साधु. ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमवीर्यस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४३५॥

पूरण आतमकला परकाशी, लोक विषै अतिशय अविनाशी। साधु॥

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमातिशयाय नम अर्घ्यं ॥४३६॥

राग विरोध न चेतन माही, ब्रह्म कहो जग उत्तम ताही। साधु ॥

ओ ह्री साधुलोकोत्तमब्रह्मज्ञानाय नम· अर्घ्यं ॥४३७॥

ज्ञान स्वरूप अकम्प अडोला, पूरण ब्रह्म प्रकाश अटोला ।साधु.॥

ॐ ह्री साधुलोत्तमब्रह्मज्ञानस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४ ८॥

राग विरोध जयो शिवगामी, आतम अनातम अन्तरजामी। साधु. ॥

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमजिनाय नम अर्घ्यं ॥४३९॥

भेद विना गुण भेद धरो हो, सांख्य कुवादिक पक्ष हरो हो। साधु.।

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमगुणसम्पन्नाय नम। अर्घ्यं ॥४४०॥

साधत आतम पुरुष सखाई, उत्तम पुरुष कहो जग ताई। साधु. ॥

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमपुरुषाय नमोऽर्घ्यं ॥४४१॥

साधु समान न दीनदयाला, शरण गहै सुख होत विशाला। साधु ॥

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४२॥

जे जन साधु शरण गही है, ते शिव आनन्द लब्धि लही है। साधु.॥

ॐ ह्री साधुलोकोत्तमगुणशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४३॥

साधुनके गुण द्रव्य चितारे, होत महासुख शरण उभारे। साधु० ॥

ॐ ह्रीं साधुगुणद्रव्यशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४४॥

लावनी छन्द।

तुमचितवतवाअवलोकतवासरधानी। इमशरण गहेंपावैनिश्चयशिवरानी
निजरूपमगनमन ध्यानधरैं मुनिराजैं, मैंनमूं साध सम सिद्धअकंपविराजैं

निजरूप० ह्रीं ॐ साधुदर्शनशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४५॥

तुमअनुभवकरि शुद्धोपयोगमनधारा, यहज्ञानशरणपायोनिश्चै अविकारा

निजरूप० ॐ ह्रीं साधुज्ञानशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४६॥

निजआतमरूपमें दृढसरधा तुमपाई, थिररूपसदा निवसों शिववासकराई

निजरूप० ॐ ह्रीं साधुआत्मशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४७॥

तुमनिराकारनिरभेद अछेवअनूपा, तुम निरावरण निरद्वंद स्वदर्शस्वरूपा।

निजरूप० ॐ ह्रीं साधुदर्शस्वरूपाय नमोऽर्घ्यं ॥४४८॥

तुमपरमपूज्यपरमेश परमपदपाया, हमशरणगही पूजैं नित मनवचकाया

निजरूप० ॐ ह्रीं साधुपरमात्मशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४४९॥

तुममनइन्द्रीव्यापार जीतसुअभीता, हमशरणगहीमनु आजकर्मरिपुजीता

निजरूप० ॐ ह्रीं साधुनिजात्मशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४५०॥

भववासदुखीजेशरणगहैं तुममनमे, तिनकोअवलम्बउभारो भयहर छिनमे

निजरूप० ॐ ह्री साधुवीर्यशरणाय नमोऽर्घ्यं ॥४५१॥

दृगबोधअनन्तानन्तधरोनिरखेदा, तुम बलअपारशरणागतिविघनविछेदा

निजरूप० ॐ ह्री साधुवीर्यातिमशरणाय नमोऽअर्घ्यं ॥ ४५२॥

निजज्ञानानन्दी महा लक्षिमी सोहै, सुर असुरनमे नितपरम मुनी मनमोहै

निजरूप० ॐ ह्री साधुलक्ष्मीअलकृताय नमोऽर्घ्यं ॥४५३॥

भववासमहादुखरासताहिविनशाया, अतिक्षीनलीनस्वाधीनमहासुखपाया

निजरूप० ॐ ह्री साधुलक्ष्मीप्रणीताय नमोऽर्घ्यं ॥४५४॥

त्रिभुवनका ईश्वरपना तुम्हींमेंपाया, त्रिभुवनकेपातिक हरौमनू रविछाया

निजरूप० ॐ ह्री साधुलक्ष्मीरूपाय नमोऽर्घ्यं ॥४५५॥

तुमकालअनंतानंतअबाधविराजो, परनिमित्तविकारनिवारसुनित्यसुछाजो

निजरूप० ॐ ह्री साधुध्रुवाय नमोऽर्घ्यं ॥४५६॥

तुमछायकलब्धि प्रभावपरमगुणधारी, निवसोनिजआनंदमांहिअचलअवि-
कारी। निजरूप० ॐ ह्री साधुगुणध्रुवाय नमोऽर्घ्यं ॥४५७॥

तेरमचौदस गुणथान द्रव्यहैजैसो, रहै काल अनन्तानन्त शुद्धता तैसो।

निजरूप० ॐ ह्री साधुद्रव्यगुणध्रुवाय नमोऽर्घ्यं ॥४५८॥

फिर जन्ममरण नहीं होयजन्मवोपाया, संसारविलक्षणनिजअपूर्वपदपाया।
निजरूपमगनमन ध्यानधरैं मुनिराजै, मैनमूं साध सम सिद्धअकंपबिराजै

ॐ ह्री साधुद्रव्योत्पादाय नमोऽर्घ्यं ॥४५९॥

सूक्षमअलब्धि पर्याप्त निगोद शरीरा, ते तुच्छ द्रव्य करनाश भयेभवतीरा।
निजरूप० ॐ ह्री साधुद्रव्यव्यापिने नमोऽर्घ्यं ॥४६०॥

रागादिपरिग्रहटारितत्त्वसरधानी, इमसाधुजीवनिजसाधत शिवसुखदानी
निजरूप० ॐ ह्री साधुजीवाय नमोऽर्घ्यं ॥४६१॥

स्वसंवेदनविज्ञान परमअमलाना, तजइष्टअनिष्ट विकल्प जाल दुखसाना।
निजरूप० ॐ ह्री साधुजीवगुणाय नम अर्घ्यं ॥४६२॥

देखन जानन चेतनसुरूप अविकारी, गुणगुणी भेदमेंअन्यभेद व्यभिचारी
निजरूप० ॐ ह्री साधुचेतनगुणाय नम अर्घ्यं ॥४६३।

चेतनकीपरिणति रहैसदाचित माहीं, ज्योंसिंधुलहरहींसिंधु औरकछुनाहीं
निजरूप० ॐ ह्री साधुचेतनस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४६४॥

चेतनविलाससुखरासनित्यपरकाशी, सो साधुदिगम्बरसाधुभये अविनाशी
निजरूप ॐ ह्री साधुचेतनाय नम अर्घ्यं ॥४६५॥

तुमअसाधारण अरु परमात्मप्रकाशी, नहींअन्यजीवयहलहै गहैभववासी

निजरूप० ॐ ह्री साधुपरमात्मप्रकाशाय नम अर्घ्यं ॥४६६॥

तुममोहतिमिरविनस्वयसूर्यपरकाशी, गुणद्रव्यपर्यसबभिन्नभिन्नप्रतिभासी

निजरूप० ॐ ह्री साधुज्योतिस्वरूपाय नम अर्घ्य ॥४६७॥

ज्योंघटपटादिदीपककीज्योतिदिखावै, त्योंज्ञानज्योतिसबभिन्न २ दरशावै

निजरूप० ॐ ह्री साधुज्योतिप्रदीपाय नम अर्घ्यं ॥४६८॥

सामान्यरूप अवलोकन युगपत सारा, तुमदर्शनज्योतिप्रदीपहरैअंधियारा

निजरूप० ॐ ह्री साधुदर्शनज्योतिप्रदीपाय नम अर्घ्यं ॥४६९।

साकार रूपसु विशेष ज्ञानद्युति माहीं, युगपतकरप्रतिबिंबित वस्तूप्रगटाई

निजरूप० ॐ ह्री साधुज्ञानज्योतिप्रदीपाय नम अर्घ्यं ॥४७०॥

जेअर्थजन्य कहैज्ञान वो झूठेवादी, हैस्वपर प्रकाशकआतम ज्योतिअनादी

निजरूप० ॐ ह्री साधुआत्मज्योतिषे नम अर्घ्यं ॥४७१॥

हैतारणतरणजहाजाश्रितभवसागर, हमशरणगहीपावै शिववासउजागर

निजरूप० ॐ ह्री साधुशरणाय नम अर्घ्यं ॥४७२॥

सामान्य रूप सब साधुमुक्ति मगसाधै, हमपावै निजपद नेमरूप आराधै ।

निजरूप० ॐ ह्री साधुमर्वशरणाय नम अर्घ्यं ॥४७३॥

त्रसनाडीही मैं तत्त्वज्ञान सरधानी, ताकर साधै निश्चय पावै शिवरानी।
निजरूपमगनमन ध्यानधरै मुनिराजै, मैनमूं साध सम सिद्धअकंपबिराजै
ॐ ह्री साधुलोकशरणाय नमः अर्घ्यं ॥४७४॥
तिहुँलोककरनहितवरते नित उपदेशा, हमशरणगही मेटो भववासकलेशा
निजरूप० ॐ ह्री साधुत्रिलोकशरणाय नम अर्घ्यं ॥४७५॥
संसारविषम दुखकारअसारअपारा, तिसछेदकवेदक सुखदायक हितकारा
निजरूप० ॐ ह्री साधुसंसारच्छेदकाय नम अर्घ्यं ॥४७६॥
यद्यपिइकक्षेत्र अवगाहअभिन्न विराजै, तद्यपिनिजसत्तामांहिं भिन्नतासाजै
निजरूप० ॐ ह्री साधुएकत्वाय नमः अर्घ्यं ॥४७७॥
यद्यपिसामान्यसरूपसु पूरणज्ञानी, तद्यपिनिज आश्रयभावभिन्न परनासी
निजरूप० ॐ ह्री साधुएकत्वगुणाय नम अर्घ्यं ॥४७८॥
हैअसाधारणएकत्व द्रव्य तुममाहीं, तुमसम संसार मंझारऔर कोउनाहीं
निजरूप ॐ ह्री साधुएकत्वद्रव्याय नम अर्घ्यं ४७९॥
यद्यपि सबहीहोअसंख्यात परदेशी, तद्यपिनिजमे निजरूपस्वद्रव्यसुदेशी
निजरूप० ॐ ह्री साधुएकत्वस्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥४८०॥

सामान्यरूप सबब्रह्मकहावैज्ञानी, तिनमें तुम वृषभ सुपरम ब्रह्मपरणामी

निजरूप० ॐ ह्री साधुपरब्रह्मणे नम अर्घ्यं ।।४८१।।

सापेक्षएक ही कहै सु नय विस्तारा, तुमभाव प्रकटकर कहै सुनिश्चै कारा

निजरूप० ॐ ह्री साधुपरमस्याद्वादाय नम अर्घ्यं ।।४८२।।

हैज्ञाननिश्रित यहवचनजाल परमाणा, है वाचकवाच्यसंयोगब्रह्मकहलान

निजरूप० ओ ह्री साधुशुद्धब्रह्मणे नम· अर्घ्यं ।।४८३।।

षट्द्रव्य निरूपण करैसोई आगम हो, तिसके तुम मूलनिधानसुपरमागमहो

निजरूप० ओ ह्री साधुपरमागमाय नम अर्घ्यं ।।४८४।।

तीर्थेश कहै सर्वज्ञदिव्यधुनिमाहीं, तुम गुण अपारइमकहो जिनागम ताही

निजरूप० ओ ह्री साधुजिनागमाय नम अर्घ्यं ।।४८५।।

तुमनाम प्रसिद्ध अनेक अर्थका वाची, ताके प्रबोधसोंहोप्रतीत मनसांची

निजरूप० ओ ह्री साधुअनेकार्थाय नम अर्घ्यं ।।४८६।।

लोभादिक मेटै विन न शौचता होई, है बृथा तीर्थ-स्नान करो भी कोई

निजरूप० ओ ह्री साधुशौचाय नम अर्घ्यं ।।४८७।

हैमिथ्यामोहप्रबलमलइनकाखोना, सोशुद्धशौचगुणयही न तनका धोना

निजरूप० ओ ह्री साधुशुचित्वगुणाय नमः अर्घ्यं ।।४८८।।

इकदेशकर्ममलनाश पवित्रकहायो, तुमसर्वकर्ममलनाशि परमपदपायो
निजरूपमगनमनध्यानधरै मुनिराजै, मैनमूं साधुसमसिद्धअकम्प विराजै

ओं ह्रीं साधुपवित्राय नमः अर्घ्यं ।।४८९।।

तुमरहो बंधसो दूरिएकांतसुखाई, ज्योनभअलिप्तसबद्रव्यरहोतिसमाहीं
निजरूप०   ओं ह्रीं साधुविमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।।४९०।।

सबद्रव्यभाव नोकर्मबध छुटकाया, तुमशुद्धनिरंजननिजसरूपथिरपाया
निजरूप०   ओं ह्रीं साधुबन्धमुक्ताय नमः अर्घ्यं ।।४९१।।

अडिल्ल छन्द ।

भावाश्रवविनअतिशयसहितअबंधहो, मेघपटलबिनज्योंरविकिरणअमंदहो
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु है, नमत निरंतर हमहूं कर्म रिपुकोदहै

ॐ ह्रीं साधुबन्धप्रतिबन्धकाय नमः अर्घ्यं ।।४९२।।

तुमस्वरूपमें लीन परम संवर करै, यह कारण अनिवार कर्म आवन हरैं
मोक्षमार्ग०   ॐ ह्रीं साधुसंवरकारणाय नमः अर्घ्यं ।।४९३।।

पुद्गलीक परिणाम आठ विधि कर्म है, तिनकीकरतनिर्जराशुद्धसु परम है
मोक्षमार्ग०   ॐ ह्रीं साधुनिर्जराद्रव्याय नमः अर्घ्यं ।।४९४।।

पर्म शुद्ध उपयोग रूप वरते जहां, छिनमें नन्तानन्त कर्म खिर है तहां

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री साधुनिर्जरानिमित्ताय नम' अर्घ्यं ।४९५।।

सकल विभाव अभाव निर्जरा करतहै, ज्योरवितेजप्रचड सकलतमहरतहैं

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री साधुनिर्जरागुणाय नम अर्घ्यं ।। ४९६ ।।

जेसंसार निमित ते सब दुखरूप है, तुम निमित्तशिव कारण शुद्धअनूप हैं

मोक्षमाग ॐ ह्री साधुर्निमित्तमुक्ताय नम अर्घ्यं ।।४९७।

संशयरहित सुनिश्चै सम्मतिदायहो, मिथ्या भ्रमतमनाशन सहजउपायहो

मोक्षमार्ग० ओ ह्री मावुबोधधर्माय नम अर्घ्यं ।।४९८।।

अतिविशुद्धनिजज्ञान स्वभावसुधरतहो, भव्यनकेसंशयआदिकतमहरत हो

मोक्षमार्ग० ओ ह्री साधुबोधगुणाय नम अर्घ्यं ।।४९९।।

अविनाशी अविकार परम शिवधामहो, पायोसोतुमसुगतमहाअभिरामहो

मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं माधुमुगतिभावाय नम अर्घ्यं ।। ५०० ।।

जासो परें न और जन्म वा मरण है, सो उत्तम उत्कृष्ट परम गतिको लहै

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री माधुकरमगतिभावाय नम अर्घ्यं ।।५०१।।

पर निमित्त रागादिक जे परनाम हैं, इन विभावसों रहित साधुशुभ नाम है

मोक्षमार्ग० ओ ह्री साधुविभावरहिताय नमः अर्घ्यं ।। ५०२ ।।

निजसुभाव सामर्थ सु प्रभुता पाइयो, इन्द्र फनेंद्र नरेंद्र शीश निजनाइयो
मोक्षमार्ग वा मोक्ष श्रेय सब साधु है, नमत निरंतर हमहूँ कर्म रिपुको दहैं
ओ ह्रीं साधुस्वभावसहिताय नमः अर्घ्यं ॥ ५०३ ॥

कर्मबंधसों रहित सोई शिवरूप है, निवसे सदा अबंध स्वशुद्ध अनूप है
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुमोक्षस्वरूपाय नमः अर्घ्यं ॥ ५०४ ॥

सकल द्रव्य पर्याय विषै स्वज्ञान हो, सत्यारथ निश्चल निश्चै परमाण हो
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुपरमानन्दाय नमः अर्घ्यं ॥५०५॥

तीन लोकके पूज्य यतीजन ध्यावही, कर्म-शत्रुको जीत अर्हं पद पावही
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुअर्हत्स्वरूपाय नम अर्घ्यं ॥५०६॥

परम इष्ट शिव साधत सिद्ध कहाइयो, तीन लोक परमेष्ट परमपद पाइयो
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुसिद्धपरमेष्ठिने नम अर्घ्यं ॥५०७॥

शिवमारगप्रकटावनकारणहोतुम्हीं, भविजनपतितउधारनतारनहोतुम्हीं
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुसूरिप्रकाशिने नम अर्घ्यं ॥५०८॥

स्वपरस्वहितकरि परमबुद्धि भरतारहो, ध्यानधरतआनंदबोधदातारहो
मोक्षमार्ग० ॐ ह्रीं साधुउपाध्यायाय नमः अर्घ्यं ॥५०९॥

पंच परम गुरु प्रकट तुम्हारो नाम है, भेदाभेद सुभाव सु आतमराम है

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री साधुअर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम अर्घ्यं ॥५१०॥

लोकालोकसुव्यापकज्ञानसुभावते, तद्यपिनिजपद लीनविहीनविभावतें।

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री साधुआत्मरतये नम अर्घ्यं ॥५११॥

रतनत्रय निज भाव विशेष अनंत है, पचपरमगुरुभये नमें नित संत हैं

मोक्षमार्ग० ॐ ह्री साधअर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुरत्नत्रयात्मकानंतगुणेभ्य नमः अर्घ्यं।

पंच परम गुरु नाम विशेषणको धरै, तीन लोकमे मंगलमय आनंद करैं

पूरणकर थुतिनाम अन्त सुख कारणं, पूजूं हूं युत भावसुअर्घ उतारणं

ॐ ह्री अर्हद्द्वादशाधिकपचशतगुणयुतसिद्धेभ्यो नम पूर्णार्घ्यम्।

अथ जयमाला।

रत्नत्रय भूषित महा, पंच सुगुरु शिवकार।
सकल सुरेन्द्र नमें नमूं, पाऊं सो गुणसार ॥१॥

पद्डी छन्द।

जय महामोह दल दलन सूरि, जय निर्विकल्प आनन्दपूर।
जय द्वै विधि कर्म विमुक्त देव, जय निजानन्द स्वाधीन एव ।१।

जय सशयादि भ्रमतम निवार, जय स्वामिभक्ति द्युतिथुति अपार
जय युगपत सकल प्रत्यक्षलक्ष, जय निरावरण निर्मल अनक्ष ।।२।।
जय जय जय सुखसागर अगाध, निरद्वन्द निरामय निर–उपाधि ।
जय मन वच तन ब्यापार नाश, जय थिरसरूप निज पद प्रकाश ।३।
जय पर निमित्त सुख दुख निवार, निरलेप निराश्रय निर्विकार ।
निजमें परको परमें न आप, परवेश न हो नित निर मिलाप ।।४।।
तुम परम धरम आराध्य सार, निज सम करि कारण दुर्निवार ।
तुम पंच परम आचार युक्त, नित भक्त वर्ग दातार मुक्त ।।५।।
एकादशांग सर्वांग पूर्व, स्वै अनुभव पायो फल अपूर्व ।
अन्तर बाहिर परिग्रह नसाय, परमारथ साधू पद लहाय ।।६।।
हम पूजत निज उर भक्ति ठान, पावें निश्चय शिवपद महान ।
ज्यो शशि किरणावलि सियर पाय, मणि चंद्रकाति द्रवता लहाय ।७।

घत्तानन्द छुन्द ।

जव भव–भयहारं, बन्धविडारं, सुख सारं शिव करतारं ।

नित "सन्त" सु ध्यावत, पाप नसावत, पावत पद निज अविकारं ॥

ॐ ह्रीं द्वादशाधिकपञ्चशतदलोपरिस्थितसिद्धेभ्यो नम पूर्णार्घ्यं ।

सोरठा—तुम गुण अमल अपार, अनुभवते भव भय नशैं ।
"सन्त" सदा चित धार, शांति करो भवतप हरो ॥

इत्याशीर्वादः ।

यहां 'ओ ह्रीं अ सि आ उ सा नम " १०८ बार जपना चाहिये ।

इति सप्तमी पूजा समाप्त ।

अथ अष्टमी पूजा १०२४ गुण सहित

(छप्पय छन्द)—ऊरध अधो सुरेफ सु बिन्दु हकार विराजै,
अकारादि स्वरलिप्त कर्णिका अन्त सु छाजै ।
वर्गनि पूरित वसुदल अम्बुज तत्त्व संधिधर,
अग्र भागमे मन्त्र अनाहत सोहत अतिवर ॥
पुनि अन्त ह्रीं बेढ्यो परम पद, सुर ध्यावत अरि नागको,

ह्वै केहरि सम पूजन निमित्त, सिद्धचक्र मंगल करो ॥

ॐ ह्री नमा सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन् ! १०२४ गुणसहित विराजमान अत्रावतरावतर सवौषट्, अत्र तिष्ठ २ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥१॥

इति यन्त्र स्थापन ।

दोहा—सूक्ष्मादि गुण सहित है, कर्म रहित निररोग ।

सिद्धचक्र सो थापहूँ, मिटै उपद्रव योग ॥

अथाष्टक गीताछन्द

निज आतमरूप सु तीर्थ मग नित, सरस आनन्द धार हो ।

नाशे त्रिविधि मल सकल दुखमय, भव जलधिके पार हो ॥

यातै उचित ही है जु तुमपद, नीरसों पूजा करूं ।

इक सहस अरु चौबीस गुण गण भावयुत मनमें धरूं ॥

ॐ ह्री श्री सिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामोति स्वाहा ॥१॥

शीतल सुरूप सुगन्ध चन्दन, एक भव तप नासही ।

सो भव्य मधुकर प्रिय सु यह, नहिं और ठौर सु बास ही ॥

याते उचित ही है जु तुमपद, मलयसो पूजा करूं । इक० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय सगारतापविनाशनाय चन्दन नि० ।२।
अक्षय अबाधित आदि अन्त, समान स्वच्छ सुभाव हो ।
ज्यों तुस विना तंदुल दिपै त्यू , निखिल अमल अभाव हो ॥
याते उचित ही है जु तुमपद, अक्षतं पूजा करूं । इक० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षत नि० ॥३॥
गुण पुष्पमाल विशाल तुम, भवि कंठ पहिरै भावसों ।
जिनके मधुप मनरसिक लुब्धित, रमत नित प्रति चावसो ॥
यातै उचित ही है जु तुमपद, पुष्पसों पूजा करूं । इक० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणमयुक्ताय श्रीकामबाणविनाशनाय पुष्प नि० ।४।
शुद्धात्म सरस सुपाक मधुर, समान और न रस कहीं ।
ताके हो आस्वादी सु तुम सम, और सतुष्टित नहीं ॥
यातै उचित ही है जु तुमपद, चरुनसों पूजा करूं । इक० ॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि० ॥५॥
स्वपर प्रकाश स्वभावधर ज्यूं, निज स्वरूप संभारते ।

त्यूं ही त्रिकाल अनंत द्रव्य, पर्याय प्रकट निहारते ।।
यातै उचित ही है जु तुमपद, दीपसों पूजा करूं । इक० ।।
ॐ ह्री श्रासिद्धपरमेष्ठिने ०२४ गुणसयुक्ताय मेहाधकारविनाशनाय दीप नि० ।।६।।

वर ध्यान अगनि जराय वसुविधि, ऊर्ध्वगमन स्वभावते ।
राजै अचल शिव थान नित, तिन धर्मद्रव्य अभावतें ।।
यातै उचित ही है जु तुमपद, धूपसों पूजा करूं । इक० ।।
ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय अष्टकर्मदहनाय धूप नि० ।।७।।

सर्वोत्कृष्ट सु पुण्य फल, तीर्थेश पद पायो महा ।
तीर्थेश पदको स्वरुचिधर, अव्यय अमर शिवफल लहा
यातै उचित ही है जु तुमपद, फलनसों पूजा करूं ।
इक सहस अरु चौबीस गुण गण भावयुत मनमें धरूं ।।
ॐ ह्री श्रीसिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय मोक्षफल प्राप्तये फल नि० । ८।।

अष्टांग मूल सु विधि हरो, निज अष्ट गुण पायो सही ।
अष्टार्द्ध गति संसार मेटि सु अचल ह्वै अष्टम मही ।।

यातै उचित ही है जु तुपपद, अर्घसो पूजा करूं । इक० ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने १०२४ गुणसयुक्ताय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य नि० ॥६॥

निर्मल सलिल शुभ वास चंदन, धवल अक्षत युत अनी ।
शुभपुष्प मधुकर नित रमै, चरुप्रचुर स्वादसुविधि घनी ॥
वर दीपमाल उजाल धूपायन रसायन फल भलै ।
करि अर्घ सिद्ध समूह पूजत, कर्मदल सब दलमलै ॥
ते क्रमावर्त नशाय युगपति, ज्ञान निर्मल रूप है ।
दुख जन्म टार अपार गुण, सूक्षम सरूप अनूप हैं ॥
कर्माष्ट विन त्रैलोक्य पूज्य, अदूज शिवकमलापती ।
मुनि ध्येय सेय अभेय चहुगुण-गेह द्यो हम शुभ मती ॥पूर्णार्घ्यं ॥

अथ १०२४ नाम गुण सहित अर्घ

॥ दोहा ॥

इन्द्रिय विषय कषाय है, अन्तर शत्रु महान ।
तिनको जीतत जिनभये, नमूं सिद्ध भगवान ॥ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः अर्घ्यं ।१

रागादिक जीते सु जिन, तिनमे तुम परधान ।
तातें नाम जिनेन्द्र है, नमूं सदा धरि ध्यान ॥ॐ ह्री अर्हं जिनेन्द्राय नम अर्घ्यं २।
रागादिक लवलेश विन, शुद्ध निरंजन देव ।
पूरण जिनपद तुम विषै, राजत हो स्वयमेव ॥ॐ ह्रीअर्हं जिनपूर्णताय नम अर्घ्यं ।३।
बाह्य शत्रु उपचरितको, जीतत जिन नहीं होय ।
अंतर शत्रु प्रबल जये, उत्तम जिन है सोय ॥ॐ ह्रीअर्हं जिनोत्तमाय नम अर्घ्यं । ४॥
इन्द्रादिकपूजत चरन, सेवत है तिहुँ काल ।
गणधरादिश्रुत केवली, जिनआज्ञानिज भाल ॥ॐ ह्रीअर्हं जिनप्रष्ठाय नम अर्घ्यं ॥५ ।
गणधरादि सत पुरुष जे, वीतराग निरग्रंथ ।
तुमको सेवत जिन भये, साधत है शिवपंथ ॥ॐ ह्री अर्हं जिनाधिपायनम अर्घ्यं ॥६
एक देश जिन सर्व मुनि, सर्व भाव अरहंत ।
द्रव्यभाव सर्वातमा, नमूं सिद्ध भगवंत ॥ओह्रीं अर्हं जिनाधीशाय नम अर्घ्यं ॥७।,
गणधरादिसेवत चरण, शुद्धातम लवलाय ।
तीन लोक स्वामी भये, नमूं सिद्ध अधिकाय ॥ओह्री अर्हंजिनस्वामिने नम अर्घ्यं ।८

नमत सुरासुर जिन चरन, तीन काल धरि ध्यान ।
सिद्ध जिनेश्वर मै नमूं, पाऊं शिवसुख थान ।। ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नम अर्घ्यं।९।

तीन लोक तारण तरण, तीन लोक विख्यात ।
सिद्ध महा जिननाथ है, सेवत पाप,नशात ।। ॐह्री अर्हं जिननाथाय नम अर्घ्यं ।।१०।।

एकदेश श्रावक तथा, सर्वदेश मुनिराज ।
नितप्रति रक्षकहो महा, सिद्धसु पुण्यसमाज ।। ॐह्री अर्हं जिनपतये नमःअर्घ्यं ।।११।

त्रिभुवन शिखाशिरोमणी, राजत सिद्ध अनंत ।
शिवमारग परसिद्धकर, नमतभवोदधि अंत ।। ॐह्री अर्हं जिनप्रभवे नम.अर्घ्यं ।१२।

जिन आज्ञा त्रिभुवनविषै, वरते सदा अखंड़ ।
मिथ्यामति दुरपक्षको, देत नीतिसों दंड ।। ॐह्री अर्हं जिनाधिराजायनम.अर्घ्यं ।१३।

तीन लोक परिपूर्ण है, लोकालोक प्रकाश ।
राजत है विस्तीर्ण जिन, नमूं हरो भववास ।। ॐह्री अर्हं जिनविभवे नमःअर्घ्यं ।१४।

आत्मज्ञ जिन नमत हैं, शुद्धातमके हेत ।
स्वामी हो तिहुँ लोकके, नमूं बसे शिवखेत ।। ॐ ह्रीं अर्हं जिनमत्र नम अर्घ्यं ।।१५।।

मिथ्यामतिको नाश करि, तत्त्वज्ञान परकाश ।
दीप्ति रूप रविसम सदा, करो सदा उरवास ॥ ॐ ह्री अर्हं तत्त्वप्रकाशाय नमः अर्घ्यं ।१६।

कर्मशत्रु जीते सु जिन, तिनके स्वामी सार ।
धर्ममार्ग प्रकटात हैं, शुद्ध सुलभ सुखकार ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनकर्मजितेनमः अर्घ्यं ।१७।

अमृत सम निज दृष्टिसो, यथाख्यात आचार ।
तिन सबके स्वामी नमूं, पायो शिवपद सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनेशाय नमः अर्घ्यं ॥१८॥

समोसरण आदिक विभव, तिसके तुम परधान ।
शुद्धातम शिवपद लहो, नमूं कर्मकी हान ॥ ॐ ह्री अर्हं जिननायकाय नमः अर्घ्यं ॥१९॥

सूरज तम तिहुँ लोकमें, मिथ्या तिमिर निवार ।
सहज दिखायो मोक्षमग, मैं बंदूं हित धार ॥ ॐ ह्री अर्हं जिननेत्रे नमः अर्घ्यं ॥२०।

जन्म मरण दुख जीतिकर, जिन जिन नाम धराय ।
नमूं सिद्ध परमातमा, भवदुख सहज नसाय ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनजेत्रे नमः अर्घ्यं ।।२१।

अचल अबाधित पद लहो, निज स्वभाव दृढ़ भाय ।
नमूं सिद्धकर-जोरिकर, भाव सहित उर लाय ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनपरिदृढाय नमः अर्घ्यं ।

सर्व—व्यापि परमातमा, सर्व पूज्य विख्यात ।
श्रीजिनदेवनमूं त्रिविध, सर्व पाप नशि जात ॥ॐ ह्रीं अर्हं जिनदेवाय नम अर्घ्यं ।२३।

श्रीजिनेश जिनराज हो, निज स्वभाव अनिवार ।
पर निमित्तविनशै सकल, बंदूं शिवसुखकार ॥ॐह्री अर्हं जिनेश्वराय नम अर्घ्यं।२४।

परम धर्म दातार हो, तीन लोक सुखदाय ।
तीनलोक पालक महा, मै बंदूं शिवराय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनपालकाय नम अर्घ्यं ।२५।

गणधरादि सेवत महा, तुम आज्ञा शिर धार ।
अधिकअधिकजिनपदलहो,नमूं करो भवपार ॐ ह्री अर्हं जिनाधिराजायनम अर्घ्यं २६

परम धर्म उपदेश करि, प्रकटायो शिवराय ।
श्रीजिन निज आनंद मै, वर्तै बंदूं ताय ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनशामनेशाय नम अर्घ्यं २७।

पूरण पद पावत निपुण, सब देवनके देव ।
मै पूजूं नित भावसों, पाऊं शिव स्वयमेव ॥ॐ ह्री अर्हंजिनदेवाधिदेवायनम अर्घ्यं २८

तीन लोक विख्यात हैं, तारण तरण जिहाज ।
तुमसम देव न और है, तुम सबके शिरताज ॥ॐ ह्री अर्हंजिनाद्विनीयायनम.अर्घ्यं ।२६

तीन लोक पूजत चरन, भाव सहित शिर नाय।
इन्द्रादिक थुति करि थके, मै बंदूं तिस पाय ।। ॐ ह्री अर्हं जिनाधिनाथाय नमः अर्घ्यं ३०
तुम समान नहीं देव है, भविजन तारन हेत।
चरणाम्बुज सेवत सुभग, पावै शिवसुखखेत ।। ॐ ह्री अर्हं जिनेन्द्रविवभाय नम अर्घ्यं ३१
भवातापकरि तप्त है, तिनकी विपति निवार।
धर्मामृत कर पोषियो, वरते शशि उनहार ।। ॐ ह्री अर्हं जिनचन्द्राय नम अर्घ्यं ।।३२।।
मिथ्यातम करि अन्ध थे, तीन लोकके जीव।
तत्त्व मार्ग प्रकटाइयो, रवि सम दीप्त अतीव ।। ॐ ह्री अर्हं जिनादित्याय नम अर्घ्यं ।३३
विन कारण तारण तरण, दीप्त रूप भगवान।
इन्द्रादिक पूजत चरण, करत कर्मकी हान ।। ॐ ह्री अर्हं जिनदीप्तरूपाय नम अर्घ्यं ।३४
जैसे कुंजर चक्रके, जाने दलको साज ।।
चार सघ नायक प्रभु, बंदूं सिद्ध समाज ।। ॐ ह्री अर्हं जिनकुञ्जराय नम अर्घ्यं ।३५।
दीप्त रूप तिहुं लोकमे, है प्रचण्ड परताप।
भक्तनको नित देत है, भोगै शिवसुख आप ।। ॐ ह्री अर्हं जिनार्काय नम अर्घ्यं ।।३६।।

रत्नत्रय मग साधकर, सिद्ध भये भगवान ।
पूरण निजसुखधरतहैं, निजमें निजपरिणाम ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनधौर्याय नमः अर्घ्यं ।३७
तीन लोकके नाथ हो, ज्यूं तारागण सूर्य ।
शिवसुखपायो परमपद, बंदो श्रीजिन धूर्य्य ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनधूर्याय नम अर्घ्यं ॥३८॥
पराधीन बिन परम पद, तुम बिन लहै न और ।
उत्तमातमा मैं नमूं, तीन लोक शिरमौर ॥ ॐ ह्रीअर्हं जिनोत्तमाय नम अर्घ्यं ॥३९॥
जहा न दुखको लेश है, तहाँ न परसो कार ।
तुमविन कहूँ न श्रेष्ठता, तीन लोक दुखटार॥ ॐ ह्री अर्हंत्रिलोकदुखनिवारणायनम अर्घ्यं
पूर्ण रूप निज लक्ष्मी, पाई श्री जिनराज ।
परमश्रेय परमातमा, बंदूं शिवसुख साज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनवराय नम अर्घ्यं ॥४१॥
निरभय हो निर आश्रयी, निःसंगी निर्बंध ।
निजसाधन साधक सुगुन, परसो नहिं संबंध ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिननि.सगाय ।म।अर्घ्यं ४२
अन्तराय विधि नाशकै, निजानन्द भयो प्राप्त ।
'संत' नमैं करजोरयुत, भव-दुख करो समाप्त ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनोद्वाहायनम अर्घ्यं ॥४३॥

शिवमारग में धरत हो, जग मारगतैं काढ़ ।
धर्मधुरन्धर मैं नमूं, पाऊं भव वन बाढ़ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनवृषभाय नम.अर्घ्यं ॥४४॥
धर्मनाथ धर्मेश हो, धर्म तीर्थ करतार ।
रहो सुथिर निज धर्म मे, मैं बंदूं सुखकार ॥ ॐ ह्री अर्हं जिनधर्माय नमःअर्घ्यं ॥४५॥
जगत जीव विधि धूलि सो, लिप्त न लहै प्रभाव ।
रत्नराशिसमतुमदिपो,निर्मल सहज सुभाव ॥ॐह्री अर्हं जिनरत्नायनम अर्घ्यं ॥४६॥
तीन लोकके शिखर पर, राजत हो विख्यात ।
तुमसम और न जगतमे, बड़ा कोई दिखलात॥ॐह्रीं अर्हंजिमोरमायनम'अर्घ्यं ॥४७॥
इन्द्रिय मन व्यापार बहु, मोह शत्रु को जीत ।
लहो जिनेश्वर सिद्धपद, तीन लोकके मीत ॥ॐ ह्री अर्हं जिनेशाय नम अर्घ्यं ॥४८॥
चारि घातिया कर्मको, नाश कियो जिनराय ।
घातिअघाति विनाश जिन, अग्रभयेसुखदाय ॥ॐ ह्रीं अर्हंजिनाग्रायनम अर्घ्यं॥४९॥
निज पौरुषकर साधियो, निज पुरुषारथ सार ।
अन्य सहाय नहीं चहै, सिद्ध सुवीर्य अपार ॥ॐ ह्रीं अर्हं जिनशादू लाय नम अर्घ्यं ।५०।

सिद्ध० वि० २६१

इन्द्रादिक नित ध्यावते, तुम सम और न कोय ।
तीन लोक चूड़ामणि, नमूं सिद्धगुण जोय ॥ॐ ह्रीं [illegible] ॥
निजानन्द पदको लहो, अविरोधी मल नास ।
समकितबिनतिहुँलोकमें, और नहीं सुखरास ॥ ॐ ह्रीं [illegible] ॥
जगत शत्रु को जीतिके, कलित जिन कहलाय ।
मोहशत्रु जीतेउ जिन,उत्तम सिद्ध सुभाय ॥ ॐ ह्रीं [illegible] ॥
द्रव्य भाव दोनों नहीं, उत्तम शिवसुख लीन ।
मनवचतनकरिमैंनमूं,निज समभाव सुलीन ॥ॐ ह्रीं [illegible] ॥
चार संघ नायक प्रभू, शिवमग सुलभ कराय ।
तारण तरण जहान के. मैं वंदूं शिवराय ॥ॐ ह्रीं [illegible] ॥
स्वयं बुद्ध शिवमार्ग में, आप चले अनिवार ।
भविजन अग्रेश्वर भये वंदूं भगति विचार ॥ॐ ह्रीं [illegible] ॥
शिवमारगके चिह्न हो, सुखसागरको पाल ।
शिवपुरके तुम हो धनी, धर्म नगर प्रतिपाल ॥ॐ ह्रीं [illegible] ॥

वर्धमान पूजा

तुम सम और न जगतमें, उत्तम श्रेष्ठ कहाय।
आप तिरै पर तार तै, बंदूं तिनके पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनसत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥५८॥

स्व पर कल्याणक हो प्रभू, पंचकल्याणक ईश।
श्रीपति शिव-शंकर नमूं, चरणाम्बुज धरिशीश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनप्रभवायनमः ।५९।

मोह महाबल दलमलो, विजय लक्ष्मीनाथ।
परमज्योति शिवपद लहो, चरण नमूं धरि माथ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमजिनायनम ।६०।

चहुँ गति दुःख विनाशिया, पूरा निज पुरुषार्थ।
नमूं सिद्ध कर-जोरिकै, पाऊं मैं सर्वार्थ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनचहुंगतिदुःखान्तकायनम ।६१।

जीते कर्म निकृष्टको, श्रेष्ठ भये जिनदेव।
तुम सम और न जगतमें, बंदूं मैं तिन भेव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनश्रेष्ठाय नम. अर्घ्यं । ६२॥

आप मोक्ष मग साधियो, औरन सुलभ कराय।
आदि पुरुष तुम जगतमे, धर्म रीत वरताय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनज्येष्ठायनम अर्घ्यं ॥६३॥

मुख्य पुरुषारथ मोक्ष है, साधत सुखिया होय।
मैं बंदूं तिन भक्तिकरि, सिद्ध कहावे सोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनमुख्याय नम अर्घ्यं ॥६४।

सूरज सम अग्रेश हो, निज—पर—भासनहार।
आप तिरे भवि तारियो, बंदूं योग संभार॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनाग्राय नमः अर्घ्यं ॥६५॥
रागादिक रिपु जीत तुम, श्री जिन नाम धराय।
सिद्ध भये कर जोरिके, बंदूं तिनके पाय॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजिनाय नमः अर्घ्यं ॥६६॥
विषय कषाय न लेश है, दृष्टि ज्ञान परिपूर्ण।
उत्तमजिन शिवपदलियो, नमतकर्मकोचूर्ण॥ ॐ ह्रीं अर्हं जिनोत्तमाय नमः अर्घ्यं ॥६७॥
चहुँ प्रकार के देवता, नित्य नमावत शीश।
तुम देवनके देव हो, नमूं सिद्ध जगदीश॥ ॐ ह्रीं जिनवृन्दारकाय नमः अर्घ्यं ॥६८॥
जो निज सुख होने न दे, सो सत रिपु है जोय।
ऐसे रिपुको जीतके, नमूं सिद्ध जो होय॥ ॐ ह्रीं अर्हं अरिजिताय नमः अर्घ्यं ॥६९॥
अविनाशी अविकार हो, अचलरूप विख्यात।
जामे विघ्न न लेश है, नमूं सिद्ध कहलात॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं ॥७०॥
रागदोष मद मोह अरु, ज्ञानावरण नशाय।
शुद्ध निरंजन सिद्ध है, बंदूं तिनके पाय॥ ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः अर्घ्यं ॥७१॥

मत्सर भाव दुखी करे, निजानन्द को घात ।
सोतुमनाशो छिनकर्मे,शम सुखियाकहलात ॥ ॐ ह्री अर्हं निरस्तमत्सरायनमः अर्घ्यं ॥
परकृत भाव न लेश है, भेद कह्यो नहिं जाय ।
वचन अगोचर शुद्ध हैं, सिद्ध महा सुखदाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नम अर्घ्यं ॥७३॥
रागादिक मल बिन दिपो, शुद्ध सुवर्ण समान ।
शुद्धनिरंजन पदलियो, नमूं चरण धरिध्यान ॥ ॐ ह्रीअर्हं निरजनायनम अर्घ्यं ।७५
ज्ञानावर्णी आदि ले, चार घतिया कर्म ।
तिनको अंत खिपाइके,लियो मोक्षपद पर्म ॥ ॐ ह्रींअर्हं घातिकर्मान्तकाय नम।अर्घ्यं ।।७६
ज्ञानावरणी पटल विन, ज्ञान दीप्त परकाश ।
शुद्ध सिद्ध परमातमा, बंदित भवदुख नाश ॥ ॐ ह्रीअर्हं जिनदोसय नम अर्घ्यं ॥७७॥
कर्म रुलावे आत्मा, रागादिक उपजाय ।
तिनको मर्म विनाशकै, सिद्ध भये सुखदाय ॥ ॐ ह्रीअर्हं कर्ममर्मभिदे नम अर्घ्यं ।७८।
पाप कलाप न लेश है, शुद्धाशुद्ध विख्यात ।
मुनि मन मोहनरूप है, नमूं जोरि जुग हाथ ॥ ॐ ह्रींअर्हं अनुदयाय नम अर्घ्यं ॥७९॥

राग नहीं थुतिकारसों, निंदकसो नहीं द्वेष ।
सम सुखिया आनंद-घन, बंदूं सिद्ध हमेश ॥ ॐ ह्रींअर्हं वीतरागाय नमः अर्घ्यं ॥८०॥

क्षुधा वेदनी नाशकर, स्व–सुख भुंजनहार ।
निजानन्द सतुष्ट है, बंदूं भाव विचार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अक्षुधाय नमः अर्घ्यं ॥८१॥

एक दृष्टि सबको लखें, इष्ट अनिष्ट न कोय ।
द्वेष अंश व्यापै नहीं, सिद्ध कहावत सोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अद्वेषाय नमः अर्घ्यं ॥८२॥

भवसागर के तीर हैं, शिवपुरके है राहि ।
मिथ्यातमहर सूर्य हैं, मै बंदूं हूँ ताहि ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः अर्घ्यं ॥८३॥

जगजनमें यह दोष है, सुखीदुखी बहु भेव ।
ते सब दोष निवारियो, उत्तम हो स्वयमेव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्दोषाय नमः अर्घ्यं ।८४।

जनम मरण यह रोग है, तिनको कठिन इलाज ।
परमौषध यह रोगकी, बंदूं मेटन काज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अगदाय नमः अर्घ्यं ॥८५॥

राग कहो ममता कहो, मोह कर्म सो होय ।
सो निज मोह विनाशियो, नमूं सिद्धहै सोय ॥ ॐ ह्रींअर्हंनिर्ममत्वाय नमः अर्घ्यं।८६।

तृष्णादुखकोमूल है, सुखी भये तिस नाश ।
मनवचतन करि मै नमूं, है आनन्दविलास ॥ॐ ह्रीं अर्हं वीततृष्णायनम अर्घ्यं ।८७।

अन्तर बाह्य निरिच्छ है, एकी रूप अनूप ।
निष्पृह परमेश्वर नमूं, निजानंद शिवभूप ॥ॐ ह्री अर्हं असगाय नम अर्घ्यं ।।८८।।

क्षायिक समकितको धरै, निर्भय थिरता रूप ।
निजानंदसो नहिं चिगें, मै बंदूं शिवभूप ॥ॐ ह्री अर्हं निर्भयाय नम अर्घ्यं ।।८६।।

स्वप्न प्रमादी जीवके, अल्प—शक्ति सो होय ।
निज बल अतुल महा धरै, सिद्ध कहावै सोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अस्वप्नाय नम अर्घ्यं ६०।

दर्श ज्ञान सुख भोगतै, खेद न रंचक होय ।
सो अनत बलके धनी, सिद्ध नमामी सोय ॥ ॐ ह्री अर्हं नि श्रमाय नम अर्घ्यं ।।६१।

युगपत सब प्रापत भये, जानत है सब भेव ।
संशय विन आश्चर्य नहीं, नमूं सिद्धस्वयमेव ॥ॐ ह्रीं अर्हं वीतविस्मयाय नमोऽर्घ्यं ।

सिद्ध सनातन कालतें, जगमें है परसिद्ध ।
तथा जन्म फिर नहीं धरें, नमूं जोर करसिद्ध ॥ॐ ह्रींअर्हं अजन्मिने नम अर्घ्यं ।६३।

भ्रम विन ज्ञान प्रकाश मे, भासै जीव अजी ।
संशय विन निश्चल सुखी, बंदूं सिद्ध सदीव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निःसंशयाय नम अर्घ्यं ॥९४॥

तुम पूरण परमातमा, सदा रहो इक सार ।
जरा न व्यापै तुम विषै, नमूं सिद्ध अविकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्जराय नम अर्घ्यं ॥९५॥

तुम पूरण परमात्मा, अन्त कभी नहीं होय ।
मरण रहित बंदूं सदा, देउ अमरपदसोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अमराय नम. अर्घ्यं ॥९६॥

निजानन्द के भोगमें कभी न आरत आय ।
यातें तुम अरतीत हो, बंदूं सिद्ध सुहाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अरत्यतीतायनम अर्घ्यं ॥९७॥

होत नहीं सोच न कभूं, ज्ञान धरै परतक्ष ।
नमूं सिद्ध परमात्मा, पाऊं ज्ञान अलक्ष ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निश्चिंताय नमःअर्घ्यं ॥९८॥

जानत है सब ज्ञेयको, पर ज्ञेयनतै भिन्न ।
यातें निर्विषयी कहे, लेश न भोगै अन्य ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्विषयाय नम अर्घ्यं ॥९९॥

अहंकार आदिक त्रिषट्, तुम पद निवसै नाहिं ।
सिद्ध भये परमात्मा मै, बन्दूं हूँ ताहिं ॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रिषष्टिजिते नम अर्घ्यं ॥१००॥

जेते गुण परजाय है, द्रव्य अनन्त सुकाल ।
तिनको तुम जानो प्रभू, बंदूं मैं नमि भाल ॥ॐ ह्री अर्हं सर्वज्ञाय नम. अर्घ्यं ।१०१।
ज्ञान आरसी तुम विषै, झलके ज्ञेय अनन्त ।
सिद्ध भये तिनको नमे, तीनो काल सु संत ॥ॐ ह्री अर्हं सर्वविदे नम अर्घ्यं ।१०२।
चक्षु अचक्षु न भेद है, समदर्शी भगवान ।
नमूं सिद्ध परमातमा, तीनों जोग प्रधान ॥ॐ ह्री अर्हं सर्वदर्शिने नम. अर्घ्यं ॥१०३॥
देखन कछु बाकी नहीं, तीनो काल मझार ।
सर्वालोकी सिद्ध हैं, नमूं त्रियोग सम्हार ॥ॐ ह्री अर्हं सर्वविलोकाय नम अर्घ्यं ।१०४
तुम सम प्राक्रम और सब, जगवासी मे नाहिं ।
निज बल शिवपद साधियो, मैं बंदूं हूं ताहि ॥ॐ ह्री अर्हं अनन्तविक्रमाय नमः अर्घ्यं १०५
निजसुख भोगत नहीं चिगे, वीर्य अनन्त धराय ।
तुम अनंत बलके धनी, बंदूं मनवचकाय ॥ ॐ ह्री अर्हं अनतवीर्याय नम अर्घ्यं ।१०६।
सुखाभास जग जीवके, पर निमित्तसै होय ।
निज आश्रय पूरण सुखी, सिद्ध कहावै सोय ॥ॐ ह्री अर्हं अनंतसुखायनम अर्घ्यं ।१०७।

निज सुखमे सुख होत है, पर सुखमे सुख नाहिं ।
सो तुम निज सुखके धनी, मै बंदूं हूं ताहि ॥ॐ ह्री अर्हं अनन्तसौख्यायनम अर्घ्यं १०८

तीन लोक तिहुँ कालके, गुण पर्यय कछु नाहिं ।
जाको तुम जानो नहीं, ज्ञान भानुके माहिं ॥ॐ ह्री अर्हं विश्वज्ञानायनम अर्घ्यं ।१०६

द्रव्य तथा गुण पर्यको, देखै एकीबार ।
विश्व दर्श तुन नाम है, बंदो भक्ति विचार ॥ॐ ह्री अर्हं विश्वदर्शिनेनम अर्घ्यं ।११०

संपूरण अवलोकते, दर्शन धरो अपार ।
नमूं सिद्ध कर-जोरिके, करो जगत से पार ॥ॐह्री अर्हंअखिलार्थदर्शिनेनम अर्घ्यं १११

इन्द्रिय ज्ञान परोक्ष है, क्रमवर्ती कहलाय ।
विन इंद्रिय प्रत्यक्ष है, धरो ज्ञान सुखदाय ॥ॐह्री अर्हं निष्पक्षदर्शनायनम अर्घ्यं ११२

विश्व मांहि तुम अर्थ सब, देखो एकीबार ।
विश्वचक्षु तुम नाम है, बंदूं भक्ति विचार ॥ॐह्री अर्हं विश्वचक्षुषेनम अर्घ्यं ।११३

तीन लोकके अर्थ जे, बाकी रहो न शेष ।
युगपततुम सब जानियो, गुण पर्याय विशेष ॥ॐ ह्री अर्हं अशेषविदेनम अर्घ्यं ।११४।

पराधीन अरु विघ्न विन, है सांचा आनन्द ।
सो शिवगतिमे तुम लियो, मै बंदूं सुखकंद ॥ॐ ह्री अर्हं आनदाय नम अर्घ्यं ।११५।
सत प्रशंसता नित बहै, या सद्भाव सरूप ।
सो तुममे आनंद है, बंदत हूं शिवभूप ॥ॐ ह्रीं अर्हं सदानदाय नम अर्घ्यं ।११६।।
उदय महा सत्रूप है, जामें असत न होय ।
अंतराय अरु विघन विन, सत्य उदै है सोय ॥ॐ ह्री अर्हं सदोदयाय नम अर्घ्यं।११७।
नित्यानन्द महासुखी, हीनादिक नहीं होय ।
नहीं गत्यंतर रूप हो, शिवगति में है सोय ॥ॐ ह्री अर्हं नित्यानदायनम.अर्घ्यं ।११८
जासों परे न और सुख, अहमिन्द्रनमे नाहिं ।
सोई श्रेष्ठ सुख भोगते, बंदूं हूं मै ताहि ॥ॐ ह्री अर्हं परमानदाय नम अर्घ्यं ।११९।
पूरण सुखकी हद धरै, सो महान आनन्द ।
सो तुम पायो शिव-धनी, बंदूं पद अरविंद ॥ॐ ह्री अर्हं महानदायनम अर्घ्यं ।१२०।
उत्तम सुख स्वाधीन है, परम नाम कहलाय ।
चारों गतिमें सो नहीं, तुम पायो सुखदाय ॥ॐ ह्री अर्हं परमानदायनम अर्घ्यं ।१२१

जामे विघन न लेश है, उदय तेज विज्ञान ।
जाकोहमजानतनहीं,सुलभरूप विधि ठान ।।ॐ ह्री अर्हं परोदयाय नम॰अर्घ्यं ।।१२२।
परम शक्ति परमातमा, पर सहाय विन आप ।
स्वयं वीर्य आनंदके, नमत कटै सब पाप ।।ॐ ह्री अर्हं परमौजसे नम अर्घ्यं ।।१२३।।
महातेजके पुंज हो, अविनाशी अविकार ।
झलकत ज्ञानाकार सब, दर्पणवत् आधार ।।ॐ ह्री अर्हं परमतेजसेनम.अर्घ्यं ।।१२४
परम धाम उत्कृष्ट पद, मोक्ष नाम कहलाय ।
जासोंफिरआवतनहीं, जन्ममरणनशि जाय ।।ॐह्री अर्हं परमतेजसेनम अर्घ्यं १२५
जगतगुरु सिद्ध परमातमा, जगत सूर्य शिव नाम ।
परमहंस योगीश हैं, लियो मोक्ष अभिराम ।।ॐह्रीं अर्हं परमहंसाय नम अर्घ्यं ।।१२६
दिव्यज्योति स्व-ज्ञानमें, तीन लोक प्रतिभास ।
शंकाविनविश्वासकर, निजपरकियोप्रकाश ।।ॐ ह्री अर्हं प्रत्यक्षज्ञानेनमःअर्घ्यं ।।१२७
निज विज्ञान सुज्योतिमे, संशय आदिक नाहिं ।
सो तुम सहज प्रकाशियो, मै बंदूं हूं ताहि ।।ॐह्री अर्हं ज्योतिषे नम अर्घ्यं ।।१२८।

शुद्ध बुद्ध परमातमा, परम ब्रह्म कहलाय ।
सर्व-लोक उत्कृष्ट पद, पायो बंदूं ताय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमब्रह्मणे नम.अर्घ्यं ॥१२९॥

चार ज्ञान नहिं जासमें, शुद्ध सरूप अनूप ।
परको नाहिं प्रवेश है, एकाकी शिवरूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमरहसे नम अर्घ्यं ॥१३०॥

निज गुण द्रव्य पर्यायमें, भिन्न भिन्न सब रूप ।
एक क्षेत्र अवगाह करि, राजत है चिद्रूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यक्षात्मने नम अर्घ्यं ॥१३१॥

शुद्ध बुद्ध परमातमा, निज विज्ञान प्रकाश ।
स्व-आतमके बोधतें, कियो कर्म को नाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोधात्मने नम·अर्घ्यं ।१३२

कर्म मैलसे लिप्त है, जगति आत्म दिन रैन ।
कर्म नाश महपद लियो, बंदूं हूं सुख देन ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नम.अर्घ्यं ॥१३३।

आतमको गुण ज्ञान है, यही यथारथ होय ।
ज्ञानानन्द ऐश्वर्यता, उदय भयो है सोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आत्ममहोदयायनम अर्घ्यं १३४

दर्श ज्ञान सुख वीर्यको, पाय परम पद होय ।
सो परमातम तुमभये, नमूं जोर कर दोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नम.अर्घ्यं । १३५।

मोहकर्म के नाशते, शान्ति भये सुखदेन ।
क्षोभरहित प्रशान्त हो, शांत नमूं सुखलेन ॥ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः अर्घ्यं ।१३६।

पूरण पद तुम पाइयो, यातैं परे न कोय ।
तुम समान नहीं और हैं, बंदूं हूं पददोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमोऽर्घ्यं ।।१३७।।

पुद्गल कृत तन छारकैं, निज आतममें वास ।
स्व प्रदेश गृहके विषै, नित ही करत विलास ॥ॐ ह्रीं अर्हं आत्मनिकेतनाय नमः अर्घ्यं ।

औरन को नित देत हैं, शिवसुख भोगैं आप ।
परमइष्ट तुमहो सदा, निजसम करत मिलाप ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं १३९

मोक्ष लक्ष्मी नाथ हो, भक्तन प्रति नित देत ।
महा इष्ट कहलात हो, बंदूं शिवसुख हेत ॥ॐ ह्रीं अर्हं महिष्टात्मने नमः अर्घ्यं ।१४०।

रागादिक मल नाशिकैं, श्रेष्ठ भये जगमांहि ।
सो उपासना करणकों, तुम सम कोई नाहिं ॥ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठात्मने नमः अर्घ्यं ।१४१

परमें ममत विनाशकैं, स्व आतम थिर धार ।
पर विकल्प संकल्प विन, तिष्ठो सुखआधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मनिष्ठिताय नमः अर्घ्यं

स्व आतममें मग्न है, स्व आतम लवलीन ।
परमें भ्रमण करै नहीं, सन्त चरण शिर दीन ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं ॥१४३
तीन लोकके नाथ हो, इन्द्रादिक कर पूज ।
तुमसम और महानता, नहिं धारत है दूज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाजेष्ठाय नमः अर्घ्यं ।१४४।
तीन लोक परसिद्ध हो, सिद्ध तुम्हारा नाम ।
सर्व सिद्धता ईश हो, पूरहु सबके काम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निरूढात्मने नमः अर्घ्यं ॥१४५॥
स्वै आतम थिरता धरैं, नहीं चलाचल होय ।
निश्चल परम सुभावमें, भये प्रकृतिको खोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दृढात्मने नमः अर्घ्यं १४६।
क्षयोपशम नानाविधै, क्षायक एक प्रकार ।
सो तुममें नहीं और मे, बंदूं योग संभार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं एकविधाय नमः अर्घ्यं ॥१४७॥
कर्म पटलके नाशते, निर्मल ज्ञान उदार ।
तुम महान विद्या धरो, बन्दूं योग संभार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय नमः अर्घ्यं ।१४८॥
परम पूज्य परमेश पद, पूरण ब्रह्म कहाय ।
पायो सहज महान पद, बंदूं तिनके पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महापदेश्वराय नमः अर्घ्यं ।१४९।

पच परम पद पाइयो, ब्रह्म नाम है एक ।
पूजूं मन वच काय करि, नाशै विघ्न अनेक ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पचब्रह्मणे नमः अर्घ्यं ॥१५०॥

निज विभूति सर्वस्व तुम, पायो सहज सुभाय ।
हीनाधिकबिनबिलसते, बंदूं ध्यान लगाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाय नमः अर्घ्यं ॥१५१॥

पूरण पण्डित ईश हो, बुद्ध धाम अभिराम ।
बंदूं मन वच काय करि, पाऊं मोक्ष सुधाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्येश्वराय नमः अर्घ्यं ।१५२

मोह कर्म चकचूरतें, स्वाभाविक शुभ चाल ।
शुध परिणाम धरै सदा, बंदूं नित नमि भाल ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः अर्घ्यं ॥१५३॥

ज्ञान दर्श आवर्ण विन, दीपो अनंताऽनंत ।
सकल ज्ञेयप्रतिभास है, तुम्हैं नमैं नित संत ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तये नमोऽर्घ्यं ॥१५४

इक इक गुण प्रतिछेदको, पार न पायो जाय ।
सो गुण रास अनंत है, बंदूं तिनके पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनंतात्मने नमः अर्घ्यं ॥१५५॥

अर्हमिंद्रनकी शक्ति जो, करो अनंती रास ।
सो तुमशक्ति अनंत गुण, करै अनंतप्रकाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशक्तये नमः अर्घ्यं ॥१५६

छायक दर्शन जोति में, निरावरण परकास ।
सो अनंतदृग तुम धरौ, नमै चरण नित दास ॥ ॐह्रीमर्हं अनतदर्शयेनम.अर्घ्यं १५७
जाकी शक्ति अपार है, हेत अहेत प्रसिद्ध ।
गणधरादि जानत नहीं मै बदूं नितसिद्ध ॥ ॐह्री अर्हं अनतशक्तयेनम.अर्घ्यं ॥१५८।
चेतन शक्ति अनंत है, निरावरण जो होय ।
सो तुम पायो सहज ही, कर्म पुंजको खोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनतचिदेशायनम अर्घ्यं।१५९
जो सुख है निज आश्रये, सो सुख परमें नाहिं ।
निजानन्द रस लीन है, मै बंदूं हूं ताहिं ॥ ॐ ह्री अर्हं अनतमुदे नम अर्घ्यं ॥१६०॥
जाकै कर्म लिपै न फिर, दिपै सदा निरधार ।
सदा प्रकाशजु सहित है, बंदूं योग सम्हार ॥ ॐह्रीमर्हं सदाप्रकाशाय नम·अर्घ्यं १६१
निजानन्दके माहि हैं, सर्व अर्थ परसिद्ध ।
सोतुम पायो सहजही, नमतमिले नवनिद्ध ॥ ॐ ह्रीअर्हं सर्वार्थसिद्धेभ्योनम अर्घ्यं। १६२
अति सूक्षम जे अर्थ है, काय अकाय कहाय ।
साक्षात् सबको लखो, बन्दूं तिनके पांय ॥ ॐ ह्रींअर्हंसाक्षात्कारिणेनम अर्घ्यं ।१६३

सकल गुणनमय द्रव्य हो, शुद्ध सुभाव प्रकाश ।
तुम समान नहीं दूसरो, बन्दत पूरै आस ॥ॐ ह्रीं अर्हं ममग्रद्धये नम अर्घ्यं ॥१६४॥
सर्व कर्मको छीन करि, जरी जेवरी सार ।
सो तुम धूलि उडाइयो, बंदूं भक्ति विचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं कर्मक्षीणायनम अर्घ्यं।१६५
चहुँ गति जगत कहात हैं, ताको करि विध्वंश ।
अमरअचल शिवपुर वसै, भर्म न राखो अंश ॥ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विध्वसिनेनम अर्घ्यं १६६
इन्द्री मन व्यापार में, जाको नहिं अधिकार ।
सो अलक्ष आतम प्रभू, होउ सुमति दातार ॥ॐ ह्रीं अर्हं अलक्षात्मने नम अर्घ्यं ।१६७
नहीं चलाचल अचल है, नहीं भ्रमण थिर धार ।
सो शिवपुरमे वसत हैं, बंदूं भक्ति विचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थानायनम अर्घ्यं।१६८
पर कृत निमत बिगाड है, सोई दुविधा जान ।
सो तुममें नहीं लेश है, निराबाध परणाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधायनम अर्घ्यं।१६९।
जैसे हो तुम आदिमें, सोई हो तुम अन्त ।
एक भांति निवसो सदा, बंदत हैं नित संत ॥ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्याय नमः अर्घ्यं ।१७०।

धर्मनाथ जगदीश हो, सुर मुनि मानै आन ।
मिथ्यामत नहीं चलतहै, तुम आगे परमाण ।। ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं १७१

ज्ञान शक्ति उत्कृष्ट है, धर्म सर्व तिस मांहि ।
श्रेष्ठ ज्ञानतम पुंज हो, परनिमित्तकछु नांहि ।। ॐ ह्रीं अर्हं विदावरायनमः अर्घ्यं।१७२

निज अभावसे मुक्त हो, कहै कुवादी लोग ।
भूतात्मा सो मुक्त है, सो तुम पायो जोग ।। ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः अर्घ्यं ।।१७३।।

सहज सुभाव प्रकाशियो, पर निमित्त कछु नांहि ।
सो तुम पायो सुलभतें, स्वसुभाव के मांहि ।। ॐ ह्रीं अर्हं सहजज्योतिषे नमः अर्घ्यं।१७४

विश्व नाम तिहुँ लोकमें, तिसमे करत प्रकाश ।
विश्वज्योतिकहलातहैं, नमत मोहतम नाश ।। ॐ ह्रीं अर्हंविश्वज्योतिषेनमः अर्घ्यं१७५

फरश आदि मन इन्द्रियां, द्वार ज्ञान कछु नांहि ।
यातें अतिइन्द्रिय कहो, जिन-सिद्धांतके मांहि ।। ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियायनमः अर्घ्यं।१७६

एक मान असहाय हो, शुद्ध बुद्ध निर अंश ।
केवल तुमको धर्म है, नमें तुम्हें नित संत ।। ॐ ह्रीं अर्हं केवलायनमः अर्घ्यं ।।१७७।।

लौकिक जन या लोकमें, तुम सारू गुण नाहिं।
केवल तुमही में बसै, मै बंदूं हूं ताहि ॥ॐ ह्री अर्हं केवलानोकाय नम'अर्घ्यं ॥१७८॥

लोक अनन्त कही सही, तातेंऽनन्तानन्त।
है अलोक अवलोकियो, तुम्हैं नमें नित सत ॥ॐ ह्री अर्हंलोकालोकावलोकायनम'अर्घ्यं

ज्ञान द्वार निज शक्ति हो, फैलो लोकालोक।
भिन्नभिन्न सब जानियों, नमूं चरण दे धोक ॥ॐह्रीं अर्हं विवृताय नम अर्घ्यं।१८०।

विन सहाय निज शक्ति हो, प्रकटो आपोआप।
स्वय बुद्ध स्व सिद्धहो, नमत नसै सब पाप ॥ॐ ह्री अर्हं केवलावलोकायनम अर्घ्यं।१८१

सूक्ष्म सुभग सुभावतें, मन इन्द्रिय नहिं ज्ञात।
वचन अगोचर गुण धरैं, नमूं चरन दिन रात ॥ॐह्रीअर्हंअव्यक्तायनम अर्घ्यं।१८२

कर्म उदय दुख भोगवैं, सर्व जीव संसार।
तिन सबको तुमही शरण, देहो सुक्ख अपार ॥ॐह्रीअर्हं सर्वशरणायनम।अर्घ्यं।१८३

चितवनमें आवै नहीं, पार न पावे कोय।
महा विभवके हो धनी, नमूं जोर कर दोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्य विभवाय नमःअर्घ्यं।

छहों कायके वासको, विश्व कहै सब लोक ।
तिनके थंभनहार हो, राज काजके जोग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृते नमः अर्घ्यं ॥१८५॥

घट घटमें राजो सदा, ज्ञान द्वार सब ठोर ।
विश्व रूप जीवात्म हो, तीन लोक सिरमोर ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं

घट घटमें नितव्याप्त हो, ज्यों घर दीपक जोति ।
विश्वनाथ तुम नाम है, पूजत शिवसुख होत ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं ।१८७

इन्द्रादिक जे विश्वपति, तुम पद पूजैं आन ।
यातें मुखिया हो सही, मैं पूजूं धरि ध्यान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं

ज्ञान द्वार सब जगतमें, व्यापि रहे भगवान ।
विश्वव्यापिमुनिकहतहै, ज्यूं नभमेंशशि भान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिनेनमः अर्घ्यं १८९

निरावरण निरलेप है, तेजरूप विख्यात ।
ज्ञान कला पूरण धरै, मैं बंदूं दिन रात ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं ॥१९०॥

चितवनमें आवै नहीं, धारै सुगुण अपार ।
मन वच काय नमूं सदा, मिटै सकल संसार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यात्मनेनमः अर्घ्यं ।१९१

नय प्रमाणको गमन नहीं, स्वयं ज्योति परकाश ।
अद्भुत गुण पर्यायमें, सुखसूं करै विलास ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ॥१९२॥
मती आदि क्रमवर्त्त विन, केवल लक्ष्मीनाथ ।
महाबोध तुम नाम है, नमूं पांय धरि माथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधाय नमः अर्घ्यं ॥१९३॥
कर्मयोगतें जगतमें, जीव शक्ति को नाश ।
स्वयंवीर्य अद्भुत धरैं, नमूं चरण सुखरास ॥ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः अर्घ्यं ॥१९४॥
छायक लब्धि महान है, ताको लाभ लहाय ।
महालाभ यातैं कहै, वंदूं तिनके पांय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महालाभाय नमः अर्घ्यं ॥१९५॥
ज्ञानावरणादिक पटल, छायो आतम ज्योति ।
ताको नाश भये विमल, दीप्त रूप उद्योत ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ॥१९६॥
ज्ञानानन्द स्व लक्ष्मी को, भोगैं बाधाहीन ।
पंचम गतिमें वास है, नमूं जोग पद लीन ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाभोगगुणाय नमः अर्घ्यं ॥१९७॥
पर निमित्त जामें नहीं, स्व आनन्द अपार ।
सोई परमानन्द है, भोगैं निज आधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाभोगाय नमः अर्घ्यं ॥१९८॥

दर्श ज्ञान सुख भोगते, नेक न बाधा होय।
अतुल वीर्य तुम धरत हो, मैं बंदूं हूं सोय ॥ॐ ह्री अर्हं अतुलवीर्यायनम:अर्घ्यं ।१९९

शिवस्वरूप आनन्दमय, क्रीडा करत विलास।
महादेव कहलात हैं, बन्दत रिपुगणनाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञार्हाय नमःअर्घ्यं ॥२० ॥

महा भाग शिवपति लहो, तासम भान न और।
सोई भगवत है प्रभू, नमूं पदाम्बुज ठौर ॥ॐ ह्री अर्हं भगवते नम अर्घ्यं ॥२०१॥

तीन लोकके पूज्य हैं, तीन लोकके स्वामि।
कर्म–शत्रु को छय कियो, तातैं अरहत नाम ॥ॐ ह्रीअर्ह अर्हते नम:अर्घ्यं ॥२०२॥

सुरनर पूजत चरण युग, द्रव्य अर्थ जुत भाव।
महाअर्घ तुम नाम हैं, पूजत कर्म अभाव ॥ॐ ह्री अर्हं महार्घाय नम अर्घ्यं ॥२०३॥

शत इन्द्रन करि पूज्य हो, अहमिंद्रनके ध्येय।
द्रव्य भाव करि पूज्य हो, पूजक पूज्य अभेय ॥ॐ ह्री अर्हंमघवार्चितायनम अर्घ्यं।२ ४

छहो द्रव्य गुणपर्यको, जानत भेद अनन्त।
महापुरुष त्रिभुवन धनी, पूजतहैं नित संत ॥ॐह्रीअर्हंभूतार्थयज्ञपुरुषायनम अर्घ्यं२०५

तुमसो कछु छाना नहीं, तीन लोकका भेद ।
दर्पण तल सम भास है, नमत कर्ममल छेद ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२०६॥
सकल ज्ञेयके ज्ञानतें, हो सबके सिरमौर ।
पुरुषोत्तम तुम नाम है, तुम लग सबकी दौर ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२०७॥
स्वयं बुद्ध शिवमग चरत, स्वयंबुद्ध अविरुद्ध ।
शिवमगचारी नित जजैं, पावैं आतम शुद्ध ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२०८॥
सब देवनके देव हो, तीन लोक के पूज्य ।
मिथ्या तिमिर निवारतें, सूरज और न दूज ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२०९॥
सुरनर मुनिके पूज्य हो, तुमसे श्रेष्ठ न कोय ।
तीन लोकके स्वामि हो, पूजत शिवसुख होय ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२१०॥
महा पूज्य महा मान्य हो, स्वयंबुद्ध अविकार ।
मन वच तनसे ध्यावते, सुरनर भक्ति विचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२११॥
महाज्ञान केवल कहो, सो दीखे तुम मांहि ।
महा नामसों पूजिये, संसारी दुख नाहिं ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥२१२॥

पूज्यपणा नहीं और में, इक तुम ही में जान ।
महा अर्हं तुम गुण प्रभू, पूजत हो कल्याण ॥ॐह्रीं अर्हं महार्हाय नमः अर्घ्यं ।२१३।
अचल शिवालय के विषै, अमित काल रहैं राज ।
चिरजीवी कहलात हो, बंदूं शिवसुख काज ॥ॐह्रीं अर्हं तत्रायुषे नमः अर्घ्यं ।२१४।
मरण रहित शिवपद लसै, काल अनन्तानन्त ।
दीर्घायू तुम नाम है, बन्दत नितप्रति सत ॥ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घायुषे नमः अर्घ्यं ।२१५।
सकल तत्त्व के अर्थ कहि, निराबाध निरशंस ।
धर्ममार्ग प्रकटाइयो, नमत मिटै दुख अंश ॥ॐह्रीं अर्हं अर्थवाचे नमः अर्घ्यं ।।२१६।
मुनिजन नितप्रति ध्यावतें, पावे निज कल्याण ।
सज्जन जन आराध्य हो, मै ध्याऊं धरि ध्यान ॥ॐह्रीं अर्हं सज्जनवल्लभाय नमः ०
शिवसुख जाको ध्यावतै, पावै सन्त मुनीन्द्र ।
परमराध्य कहात हो, पायो नाम अतीन्द्र ॥ॐह्रीं अर्हं परमाराध्यायनमः अर्घ्यं।२१८
पंचकल्याण प्रसिद्ध हैं, गर्भ आदि निर्वाण ।
देवन करि पूजित भये, पायो शिवसुखथान ॥ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणपूजितायनमः ०

देखो लोकालोकको, हस्त रेखकी सार ।
इत्यादिक गुण तुम विषै, दीखै उदय अपार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिगुणोदयायनम
छायक समकितको धरै, सौधर्मादिक इन्द्र ।
तुम पूजन परभावतें, अन्तिम होय जिनेन्द्र ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुराचिंताय नम अर्घ्यं ।२२१
निर्विकल्प शुभ चिह्न है, वीतराग सो होय ।
सो तुम पायो सहजही, नमूं जोर कर दोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तात्मने नम अर्घ्यं ।२२२ ।
स्वर्ग आदि सुख थानके, हो परकाशन हार ।
दीप्त रूप बलवान है, तुम मारग सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यौजसे नम. अर्घ्यं ॥२२३॥
गर्भ कल्याणक के विषै, तुम माता सुखकार ।
षट् कुमारिका सेवती, पावैं भवदधि पार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गर्भोत्सवितमातृकायनम अर्घ्यं ।
अति उत्तम तुम गर्भ है, भवदुख जन्म निवार ।
रत्नराशि दिवलोकतें, वर्षै मूसलधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नम अर्घ्यं ॥२२५॥
सुर शोधनतें गर्भमें, दर्पण सम आकार ।
यों पवित्र तुम गर्भ है, पावै शिवसुख सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पूतगर्भाय नमः अर्घ्यं ॥२२६॥

जाके गर्भागमनतै, पहले उतसव ठान ।
दिव्य नारि मंगल सहित, पूजत श्रीभगवान ॥ॐ ह्रीं अर्हंगर्भोत्सवसहिताय नम अर्घ्यं
नित नित आनन्द उरधरैं, सुर सुरीय हरषात ।
मंगल साज समाज सब, उपजावै दिन रात ॥ॐ ह्री अर्हं नित्योपचारोपचितायनम
केवलज्ञान सुलक्षमी, धरत महा विस्तार ।
चरणकमल सुर मुनि जजैं, हमपूजतहितधार ॥ॐ ह्री अर्हं पद्मप्रभवे नम अर्घ्यं।२२९।
तिहुँविध विधि मल धोयकर, उज्ज्वल निर्मल होय ।
शिव आलयमें वसत है, शुद्ध सिद्ध है सोय ॥ ॐ ह्री अर्हं निस्कलाय नम॰अर्घ्यं ॥२३०॥
असंख्यात परदेशमे, अन्य प्रदेश न होय ।
स्वयं स्वभाव स्वजात हैं, मैं प्रणमामी सोय ॥ॐह्रींअर्हंस्वयस्वभावायनमः अर्घ्यं २३१
पूज्य यज्ञ आराधना, जो कुछ भक्ति प्रमाण ।
तुम ही सबके मूल हो, नमत अमंगल हान ॥ॐह्री अर्हंसर्वीयजन्मने नम अर्घ्यं।।२३२।
सूर्य सुमेरु समान हो, या सुरतरुकी ठौर ।
महा पुन्यकी राशि हो, सिद्ध नमूं कर जोर ॥ॐह्री अर्हं पुण्यराशाय नम अर्घ्यं॥२३३॥

ज्यूं सूरज मध्याह्नमे, दिपै अनंत प्रभाव ।
त्यों तुम ज्ञानकला दिपै, मिथ्यातिमिरअभाव ॥ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः अर्घ्यं २३४

चहुँविधि देवनमे सदा, तुम सम देव न आन ।
निजानंदमे केलिकर, पूजत हूं धरि ध्यान ॥ॐ ह्रीं अर्हंमद्भुतदेवाय नम अर्घ्य।२३५

विश्व ज्ञात युगपत धरै, ज्यूं दर्पण आकार ।
स्वपर प्रकाशकहोसही, नमूं भक्ति उरधार ॥ॐ ह्री अर्हं विश्वज्ञातृमम्भृतेनम अर्घ्यं

सत स्वरूप सत ज्ञान है, तुम ही पूज्य प्रधान ।
पूजत है नित विश्वजन, देव मान परमान ॥ॐ ह्रीं अर्हंविश्वदेवाय नम. अर्घ्यं।२३७

सृष्टिको सुख करत हो, हरत दुक्ख भववास ।
मोक्ष लक्ष्मी देत हो, जन्म जरा मृत नास ॥ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टिनिवृंत्तायनम अर्घ्यं।२३

इन्द्र सहस लोचन किये, निरखत रूप अपार ।
मोक्ष लहै सो नेमतैं, मै पूजूं मनधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षदृगुत्सवाय नमः अर्घ्यं।२३६

संपूरण निज शक्ति के, है परताप अनन्त ।
सो तुम विस्तीरण करो, नमे चरण नित संत ॥ॐ ह्री अर्हंसर्वशक्तयेनम अर्घ्यं २४०

ऐरावतपर रूढ़ हैं, देव नृत्यता मांड ।
पूजत है सो भक्तिसो, मेटि भवार्णव हांड ।।ॐ ह्रीं अर्हं देवैरावतासीनायनमः अर्घ्यं ।
सुरनर चारण मुनि जजैं, सुलभ गमन अकाश ।
परिपूरण हर्षात हैं, पूरै मन की आश ।।ॐ ह्रीं अर्हं हर्षाकुलामरखगचारणर्षिमतोत्सवाय
रक्षक हो षट कायके, शरणागति प्रतिपाल ।
सर्वव्यापि निज ज्ञानतैं, पूजत होय निहाल ।।ॐ ह्रीं अर्हं विष्णवे नम अर्घ्यं ।।२४३।।
महा उच्च आसन प्रभू, है सुमेर विख्यात ।
जन्माभिषेक सुरेन्द्र करि, पूजतमनउमगात ।।ॐ ह्रीं अर्हंस्नानपीठताद्दसराजे नम अर्घ्यं
जाकरि तरिए तीर्थसो, मानै मुनिगण मान्य ।
तुम सम कौन जु श्रेष्ठ हैं, असत्यार्थ है अन्य ।।ॐ ह्रीं अर्हंतीर्थसामान्यदुग्धाब्धयेनम अर्घ्यं
लोकस्नान गिलानता, मेटै मैल शरीर ।
आतम प्रक्षालितकियो, तुम्हीं ज्ञान सु नीर ।।ॐ ह्रीं अर्हं स्नानाम्बुस्वावासवायनम अर्घ्यं
तारण तरण सुभाव है, तीन लोक विख्यात ।
ज्यूं सुगंध चम्पाकली, गन्धमई कहलात ।।ॐ ह्रीं अर्हंगन्धपवित्रितत्रिलोकायनम अर्घ्यं २४७

सूक्षम तथा स्थूलमें, ज्ञान करै परवेश ।
जाको तुम जानों नहीं, खाली रहो न देश ॥ ॐ ह्री अर्हं वज्रसूचयेनमःअर्घ्यं ।२४८।

औरन प्रति आनन्द करि, निर्मल शुचि आचार ।
आप पवित्र भये प्रभू, कर्म धूलिको टार ॥ ॐ ह्री अर्हं शुचिश्रवसे नम. अर्घ्यं ॥२४९॥

कर्मों करि किरतार्थ हो, कृत फल उत्तम पाय ।
करपर कर राजत प्रभू, बंदूं हूं युग पाय ॥ ॐ ह्रीअर्हंकृतार्थंकृतहस्तायनम अर्घ्यं।२५०

दर्शन इन्द्र अघात हैं, इष्ट मान उर माहिं ।
कर्म नाशि शिवपुर बसै, मैं बंदूं हूं ताहि ॥ ॐ ह्री अर्हं शक्रेष्टाय नमःअर्घ्यं ॥२५१॥

मघवा जाके नृत्य करि, ताकै तृप्ति महान ।
सो मैं उनको जजत हूं, होय कर्मको हान ॥ ॐ ह्री अर्हंइन्द्रनृत्यतृप्तिकाय नम. अर्घ्यं ।

शची इन्द्र अरु काम ये, जिन दासनके दास ।
निश्चयमनमें नमन कर, नितवंदित पदजास ॥ ॐ ह्री अर्हंशचीविस्मापितायनम अर्घ्यं

जिनके सनमुख नृत्य करि, इन्द्र हर्ष उपजाय ।
जन्म सुफल मानै सदा, हम पर होउ सहाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हंशक्राख्यानदनृत्याय नम।अर्घ्यं।

धन सुवर्णतें लोकमें, पूरण इच्छा होय ।
चक्रवर्ती पद पाइये, तुम पूजत है सोय ।।ॐ ह्रीं अर्हं रैदपूर्णमनोरथाय नमः अर्घ्यं ।२५५
तुम आज्ञा मे हैं सदा, आप मनोरथ मान ।
इद्रसदा सेवन करै, पाप विनाशक जान ।।ॐ ह्रीं अर्हं आज्ञार्थीन्द्रकृतसेवाय नमः अर्घ्यं।।
सब देवनमे श्रेष्ठ हो, सब देवन सिरताज ।
सब देवन के इष्टहो, बंदत सुलभ सुकाज ।।ॐ ह्रीं अर्हं देवश्रेष्ठायनमःअर्घ्यं।।२५७।।
तीन लोकमे उच्च हो, तीन लोक परशंस ।
सोशिवगति पायोप्रभू, जजत कर्मविध्वंस ।।ॐ ह्रींअर्हंशिवोद्यमानायनम अर्घ्यं।२५८।
जगत्पूज्य शिवनाथ हो, तुम ही द्रव्य विशिष्ट ।
हित उपदेशकपरमगुरू, मुनिजनमाने इष्ट ।।ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्यशिवनाथनम अर्घ्यं ।
मति, श्रुत अवधि, अवर्णको, नाश कियो स्वयमेव ।
केवलज्ञान स्वतै लियो, आप स्वयंभू देव ।। ॐ ह्रीं अर्हं स्वयभुवे नम अर्घ्यं ।।२६०।।
समोसरण अद्भुत महा, और लहै नहीं कोय ।
धनपति रचो उछाहसों, मै पूजूं हूं सोय ।।ॐ ह्रीं अर्हं कुवेररचितस्थानाय नमः अर्घ्यं ।

जाको अन्त न हो कभी, ज्ञान लक्ष्मी नाथ ।
सोईशिवपुरके धनी, नमूं भाव धरि नाथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तश्रीगुणे नमः अर्घ्यं ।२६२।
गणधरादि नित ध्यावतैं, पावैं शिवपुर वास ।
परम ध्येय तुम नाम है, पूरैं मनकी आश ॥ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वराभिवन्दिताय नमः अर्घ्यं २६३
परम ब्रह्मका लाभ हो, तुम पद पायो सार ।
त्रिभुवन ज्ञाताहोसही, नय निश्चय व्यवहार ॥ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं ।२६४।
सर्व तत्त्वके आदिमें, ब्रह्म तत्त्व परधान ।
तिसके ज्ञाता हो प्रभू, मैं बंदूं धरि ध्यान ॥ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वाय नमः अर्घ्यं ।२६५।
द्रव्य भाव द्वै विधि कही, यज्ञ यजनकी रीति ।
सो सब तुमही हेतहैं, रचत नशै सब भीति ॥ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः अर्घ्यं ।।२६६।
महादेव शिवनाथ हो, तुमको पूजत लोक ।
मैं पूजूं हूं भावसौं, मेटो मनको शोक ॥ॐ ह्रीं अर्हं शिवनाथाय नमः अर्घ्यं । २६७।।
कृत्य भए निज भावमें, सिद्ध भये सब काज ।
पायो निज पुरुषार्थको, बंदूं सिद्ध समाज ॥ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं ।।२६८।।

यज्ञविधानके अंग हो, मुख नामी परधान।
तुमविन यज्ञ न होकभी, पूजत होय कल्यान ॥ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं।२६९।

मरण रोगके हरणसे, अमर भये हो आप।
शरणागतिको अमरकर, अमृतहो निष्पाप ॥ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नम.अर्घ्यं॥२७०॥

पूजन विधि अस्थान हो, पूजत शिवसुख होय।
सुरनर नित पूजन करै, मिथ्या मतिको खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नम.अर्घ्यं।२७१।

जो हो सो सामान्य कर, धरत विशेष अनेक।
वस्तु सुभाव यही कहो, बंदूं सिद्ध प्रत्येक ॥ॐ ह्रीं अर्हंवस्तूत्पादकायनम.अर्घ्यं।२७२।

इन्द्र सदा तुम थुति करै, मनमें भक्ति उपाय।
सर्वशास्त्रमे तुम थुति, गणधरादि करि गाय ॥ॐ ह्रीं अर्हंस्तुतीश्वराय नम.अर्घ्यं २७३

मगन रहो निज तत्त्वमें, द्रव्य भाव विधि नाश।
जो है सो है विविध विन, नमूं अचलअविनाश ॥ॐ ह्रीं अर्हंभावाय नम.अर्घ्यं।२७४।

तीन लोक सिरताज है, इन्द्रादिक करि पूज्य।
धर्मनाथ प्रतिपाल जग, और नहीं है दूज्य ॥ॐ ह्रीं अर्हंमहपतये नम अर्घ्यं॥२७५॥

महाभाग सरधानतें, तुम अनुभव करि जीव ।
सो पुनि सेवत पाप तज, निजसुख लहै सदीव ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाभागज्ञायनम अर्घ्यं २७६
यज्ञ-विधि उपदेशमे, तुम अग्रेश्वर जान ।
यज्ञ रचावनहार तुम, तुम ही हो यजमान ॥ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाजनायनम. अर्घ्यं ॥२७७॥
तीन लोकके पूज्य हो, भक्ति भाव उर धार ।
धर्म अर्थ अरु मोक्षके, दाता तुम हो सार ॥ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्याय नमः अर्घ्यं ।२७८।
दया मोह पर पापतें, दूर भये स्वैतंत्र ।
ब्रह्मज्ञानमे लय सदा, जपूं नाम तुम मंत्र ॥ॐ ह्रीं अर्हं दयापराय नम. अर्घ्यं ॥२८९।
तुम ही पूजन योग्य हो, तुम ही हो आराध्य ।
महा साधु सुख हेतुतें, साधे है निज साध्य ॥ॐ ह्रीं अर्हं पूज्यार्हायनम. अर्घ्यं ।।२८०॥
निज पुरुषारथ सधनको, तुमको अर्चंत जक्त ।
मनवांछित दातारहो, शिव सुख पावै भक्त ॥ॐ ह्रीं अर्हं जगदार्चितायनमः अर्घ्यं २८१
ध्यावत है नितप्रति तुम्है, देव चार परकार ।
तुम देवनके देव हो, नमूं भक्ति उर धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं देवाधिदेवायनम. अर्घ्यं ।२८२।

इन्द्र समान न भक्त हैं, तुम समान नहीं देव ।
ध्यावत है नित भावसों, मोक्ष लहैं स्वयमेव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शकार्चितायनमः अर्घ्यं २८३
तुम देवन के देव हो, सदा पूजने योग्य ।
जे पूजत है भावसो, भोगै शिवसुख भोग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः अर्घ्यं ॥२८४॥
तीन लोक सिरताज हो, तुम से बड़ा न कोय ।
सुरनर पशु खग ध्यावते, दुविधामन की खोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गुरवे नमः अर्घ्यं २८५
जोहो सोही तुम सही, नहीं समझमे आय ।
सुरनर मुनिसब ध्यावते, तुम वाणीको पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं देवसंघाचार्याय नमः अर्घ्यं
ज्ञानानन्द स्वलक्ष्मी, ताके हो भरतार ।
स्वसुगंध वासित रहो, कमल गंधकी सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनन्दाय नमः अर्घ्यं ॥२८७॥
सब कुवादि वादी हते, वज्र शैल उनहार ।
विजयध्वजा फहरात है, बंदूं भक्ति विचार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जयध्वजाय नमः अर्घ्यं ।२८८।
दशोदिशा परकाश है, तनकी ज्योति अमंद ।
भविजन कुमुद विकास हो, बंदूं पूरण चंद ॥ ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलिने नमः अर्घ्यं ।२८९।

चमरनि करि भक्ति करै, देव चार परकार।
यह विभूति तुम ही विषै, बंदूं पाप निवार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्टीचामरायनमः अर्घ्यं।
देव दुंदुभी शब्द करि, सदा करै जयकार।
तथा आप परसिद्ध हो, ढोल शब्द उनहार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं देवदुंदुभिय नमः अर्घ्यं॥२६१॥
तुम वाणी सब मनन कर, समझत है इकसार।
अक्षरार्थ नहीं भ्रम पड़े, संशय मोह निवार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं साङ्गस्पष्टायनमः अर्घ्यं॥२६२॥
धनपति रचि तुम आसनं, महा प्रभूता जान।
तथा स्वआसन पाइयो, अचल रहो शिवथान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं लब्धासनायनमःअर्घ्यं।२६३।
तीन लोकके नाथ हो, तीन छत्र विख्यात।
भव्यजीव तुम छाहमें, सदा स्व आनंद पात ॥ ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयाय नमः अर्घ्यं॥२६४।
पुष्प वृष्टि सुर करत है, तीनो काल मझार।
तुमसुगंधदशदिशरमी, भविजनभ्रमर निहार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टयेनमः अर्घ्यं।२६५।
देव रचित आशोक है, वृक्ष महा रमणीक।
समोसरण शोभा प्रभु, शोक निवारण ठीक ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याशोकायनमः अर्घ्यं।२६६

मानस्तम्भ निहारके कुमतिन मान गलाय ।
समोसरण प्रभुता कहै, नमूं भक्ति उर लाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मानस्थम्भाय नमः अर्घ्यं २९७

सुरदेवी संगीत कर, गावै शुभ गुण गान ।
भक्ति भाव उरमें जगे, बंदत श्रीभगवान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं संगीतार्हाय नमः अर्घ्यं ।२९८।

मंगल सूचक चिह्न हैं, कहै अष्ट परकार ।
तुम समीप राजत सदा, नमूं अमंगल टार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलाय नमः अर्घ्यं ।२९९।

भविजन तरिये तीर्थसो, तुम हो श्रीभगवान ।
कोई न भंगे आन जिन, तीर्थ चक्रसो जान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थचक्रवर्तिने नमः अर्घ्यं ।३००।

सम्यग्दर्शन धरत हो, निश्चै परमवगाढ ।
संशय आदिक मेटिके, नासो सकल विगाढ़ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं ॥३०१॥

कर्त्ता हो शिव काजके, ब्रह्मा जगकी रीति ।
वर्णाश्रमको थापकें, प्रकटायो शुभ नीति ॥ ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्यं ॥३०२॥

सत्य धर्म प्रतिपालके, पोषत हो संसार ।
यति श्रावक दो धर्मके, भये नाथ सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंमर्त्रे नमः अर्घ्यं ।३०३।

धर्म तीर्थ मुनिराज है, तिनके हो तुम स्वामि ।
धर्मनाथ तुम जानके, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थेशाय नमः अर्घ्यं ।३०४।

लोक तीर्थ में गिनत हैं, धर्मतीर्थ परधान ।
सो तुम राजत हो सदा, मै बंदूं धरि ध्यान ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थयुताय नमः अर्घ्यं ३०५

तुम बिन धर्म न हो कभी, ढूंढो सकल जहान ।
दश लक्षण स्वधर्मके, तीरथ हो परधान ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थयुताय नमः अर्घ्यं ।३०६।

धर्म तीर्थ करतार हो, श्रावक या मुनिराज ।
दोनो विधि उत्तम कहो, स्वर्ग मोक्षके काज ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थङ्कराय नमः अर्घ्यं ।३०७

तुमसे धर्म चले सदा, तुम्ही धर्मके मूल ।
सुरनर मुनि पूजैं सदा, छिदहिं कर्मके शूल ॥ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थप्रवर्त्तकाय नमः अर्घ्यं ३०८॥

धर्मनाथ जगमे प्रकट, तारण तरण जिहाज ।
तीन लोक अधिपति कहो, बंदूं सुखके काज ॥ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थवेधसे नमः अर्घ्यं ॥३०९॥

श्रावक या मुनि धर्मके, हो दिखलावनहार ।
अन्य लिंग नहीं धर्मके, बुधजन लखो विचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थविधायकाय नमः अर्घ्यं ।

स्वर्ग मोक्ष दातार हो, तुम्ही मार्ग सुखदान ।
अन्य कुभेषिनमे नहीं, धर्म यथारथ ज्ञान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्यतीर्थंकरायनम. अर्घ्यं ।३११।
सेवन योग्य सु जक्तमें, तुम्हीं तीर्थ हो सार ।
सुरनर मुनि सेवन करै मै बंदूं सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थसेव्याय नम अर्घ्यं।३१२॥
भव समुद्र भवसे तिरै, तुम तीर्थ कहाय ।
हो तारण तिहुँ लोकमें, सेवत हूँ तुम पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थतारकाय नम. अर्घ्यं ।३१३
सर्व अर्थ परकाश, करि, निर इच्छा तुम बैन ।
धर्म सुमार्ग प्रवर्त्तको, तुम राजत हो ऐन ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाक्याधिपाय नम अर्घ्यं ।३१४
धर्म मार्ग परगट करै, सो शासन कहलाय ।
सो उपदेशक आप हो, तिस सकेत कहाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय नम अर्घ्यं ॥३१५॥
अतिशय करि सर्वज्ञ हो, ज्ञानावरण विनाश ।
नेमरूप भविसुनत हो, शिवसुख करत प्रकाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिशासनाय नम अर्घ्यं०
कहैं कथञ्चित धर्मको, स्यात् वचन सुखकार ।
सो प्रमाणतै साधियो, नय निश्चय व्यवहार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्याद्वादिनेनम. अर्घ्यं ।३१७

निर अक्षर वाणी खिरै, दिव्य मेघ की गर्ज्ज ।
अक्षरार्थ हो परिणवै, सुन भव्यन मन अर्ज्ज ॥ॐह्रीं अर्हं दिव्यध्वनयेनम अर्घ्यं।३१८।
नय प्रमाण नहीं हतत है, तुम परकाशे अर्थ ।
शिवसुखके साधन विषै, नहीं गिनत है व्यर्थ ॥ॐह्री अर्हं अव्याहतार्थाय नम अर्घ्यं०
करै पवित्र सु आत्मा, अशुभ कर्ममल खोय ।
पहुँचावै ऊंची सुगति, तुम दिखलायो सोय ॥ॐह्रीअर्हं पुण्यवाचे नम अर्घ्यं ॥३२०॥
तत्त्वारथ तुम भासियो, सम्यक विषै प्रधान ।
मिथ्या जहर निवारणं, अमृत पान समान ॥ॐह्रीअर्हं अर्थवाचे नमः अर्घ्यं॥३२१॥
देव अतिशयसो खिरत हो, अक्षरार्थ मय होय ।
दिव्यध्वनि निश्चयकरै, संशय तमको खोय ॥ॐह्रींअर्हंअर्द्धमागधीयुक्तयेनम अर्घ्यं।३२२
सब जीवनको इष्ट है, मोक्ष निजानन्द वास ।
सो तुमने दिखलाइयो, संशय मोह विनाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हंइष्टवाचे नम अर्घ्यं ॥३२३।
नय प्रमाण ही कहत है, द्रव्य पर्याय सु भेद ।
अनेकांत साधै सही, वस्तु भेद निरखेद ॥ॐ ह्रीअर्हंअनेकातदर्शिनेनम.अर्घ्यं ॥३२४॥

दुर्नय कहत एकांतको, ताको अन्त कराय।
सम्यक्मति प्रकटाइयो, पूजूं तिनके पाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं दुर्नयांतकाय नमः अर्घ्यं ॥३२५॥
एक पक्ष मिथ्यात्व है, ताको तिमिर निवार।
स्यादवाद सम न्यायतें, भविजन तारे पार ॥ॐ ह्रीं अर्हं एकांतध्वांतभिदे नमः अर्घ्यं ३२६
जो है सो निज भावमें, रहै सदा निरवार।
मोक्ष साध्यमें सार है, सम्यक् विषैं अपार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्ववाचे नमः अर्घ्यं ॥३२७॥
निज गुण निज परयायमें, सदा रहो निरभेद।
शुद्ध बुद्ध अव्यक्त हो, पूजूं हूं निरखेद ॥ॐ ह्रीं अर्हं पृथक्कृते नमः अर्घ्यं ॥३२८॥
स्यातकार उद्योतकर, वस्तु धर्म निरशंस।
तासुध्वजा निर्विघ्नको, भाषो विधि विध्वंस ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्यात्कारध्वजावाचे नम०
परम्परा इह धर्मको, उपदेशो श्रुत द्वार।
भवि भवसागर-तीरलह, पायोशिवसुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं वाचे नम अर्घ्यं ॥३३ ॥
द्रव्य दृष्टि नहिं पुरुष कृत, हैं अनादि परमान।
सो तुम भाष्यौ है सही, यह पर्याय सुजान ॥ॐ ह्रीं अर्हं अपौरुषेयवाचे नम. अर्घ्यं ॥३३१॥

नहीं चलाचल होठ हो, जिस वाणी के होत ।
सो मैं बंदूं हों किया, मोक्षमार्ग उद्योत ।। ॐ ह्रीं अर्हं अचलोष्ठवाचे नमः अर्घ्यं।३३२।

तुम सन्तान अनादि हैं, शाश्वत नित्य स्वरूप ।
तुमको बंदूं भावसो, पाऊँ शिव—सुख कूप ।।ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नम अर्घ्यं।३३३।

हीनादिक वा और विधि, नहीं विरुद्धता जान ।
एक रूप सामान्य है, सब ही सुखकी खान ।।ॐ ह्रीं अर्हं अविरुद्धाय नम अर्घ्यं ।३३४।

नय विवक्षते सधत है, सप्त भंग निरवाध ।
सो तुम भाष्यो नमत हूं, वस्तु रूपको साध ।।ॐ ह्रीं अर्हं सप्तभंगीवाचे नम अर्घ्यं ।

अक्षर विन वाणी खिरे, सर्व अर्थ करि युक्त ।
भविजन निज सरधानतें, पावै जगतें मुक्त ।।ॐ ह्रीं अर्हं अवर्णगिरे नम अर्घ्यं ।३३६

क्षुद्र तथा अक्षुद्र मय, सब भाषा परकाश ।
तुम मुखतें खिरकै करै, भर्म तिमिरको नाश ।।ॐ ह्रीं अर्हं सर्वभाषामयगिरे नम अर्घ्यं ।

कहने योग्य समर्थ सब, अर्थ करै परकाश ।
तुम वाणी मुखतै खिरे, करै भरम तमनाश ।।ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तिगिरे नम. अर्घ्यं ।३३८।।

तुम वाणी नहीं व्यर्थ है, भंग कभी नहीं होय ।
लगातार मुखतें खिरे, संशय तमको खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नम अर्घ्यं ॥३३६॥

वस्तु अनन्त पर्याय है, वचन अगोचर जान ।
तुम दिखलाये सहज ही, हरी कुमति मतिवान ॥ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यानतवाचे नम अर्घ्यं

वचन अगोचर गुण धरो, लहै न गणधर पार ।
तुम महिमा तुमहीं विषै, मुझ तारो भवपार॥ॐ ह्रीं अर्हं अवाचे नम अर्घ्यं ।३४१॥

तुम सम वचन न कहि सकै, असतमती छद्मस्थ ।
धर्म मार्ग प्रकटाइयो, मेटी कुमति समस्त ॥ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैतगिरे नमः अर्घ्यं ।३४२।

सत्य प्रिय तुम बैन हैं, हितमित भविजन हेत ।
सो मुनिजन तुम ध्यावतै, पावै शिवपुर खेत ॥ॐ ह्रीं अर्हं सूनृतगिरे नमः अर्घ्यं ।३४३

नहीं सांच नहीं झूठ है, अनुभव वचन कहात ।
सो तीर्थंकर ध्वनि कही, सत्यारथ सत बात ॥ॐ ह्रीं अर्हं सत्यानुभयगिरेनमः अर्घ्यं ३४४

मिथ्या अर्थ प्रकाश करि, कुगिरा ताकौ नाम ।
सत्यारथ उद्योत करै, सुगिरा ताको नाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नम अर्घ्यं ॥३४५॥

योजन एक चहूँ दिशा, हो वाणी विस्तार।
श्रवण सुनत भविजन लहैं, आनंदहियेअपार ॥ॐ ह्रीं अर्हं योजनव्यापिगिरे नम अर्घ्यं

निर्मल क्षीर समान है, गौर श्वेत तुम बैन।
पाप मलिनता रहित है, सत्य प्रकाशक ऐन ॥ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरगौरगिरे नम अर्घ्यं ३४७

तीर्थ तत्त्व जो नहीं तजै, तारण भविजन वान।
यातें तीर्थंकर प्रभू, नमत पाप मल हान ॥ॐ ह्री अर्हं तीर्थतत्त्वगिरे नम अर्घ्यं ॥३४८।

उत्तमार्थं पर्याय करि, आतम तत्त्वको जान।
सो तुम सत्यारथ कहो, मुनिजन उत्तम मान ॥ॐ ह्री अर्हं परमार्थंगवेनम अर्घ्यं ३४९

भव्यनिको श्रवणनि सुखद, तुम वाणी सुख देन।
मैं बंदूं हूँ भावसों, धर्म बतायो एन ॥ॐ ह्री अर्हं भव्यैकश्रवणगिरे नम॰अर्घ्यं ॥३५०॥

संशय विभ्रम मोहको, नाश करो निर्मूल।
सत्य वचन परमाण तुम, छेदत मिथ्या शूल ॥ॐ ह्रीं अर्हं सद्गवे नम अर्घ्यं ।३५१।

तुम वाणीमे प्रकट हैं, सब सामान्य विशेष।
नानाविध सुन तर्कमे, संशय रहै न शेष ॥ॐ ह्री अर्हं चित्रगवे नमःअर्घ्यं ॥३५२॥

परम कहै उतकृष्टको, अर्थ होय गम्भीर ।
सो तुम वाणीमें खिरै, बंदत भवदधि तीर ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थगवेनमः अर्घ्यं।३५३।

मोह क्षोभ परशांत हो, तुम वाणी उरधार ।
भविजनको संतुष्ट कर, भव आताप निवार ॥ॐ ह्रीं अर्हंप्रशातगवे नम अर्घ्यं ३५४

बारह सभासु प्रश्न कर, समाधान करतार ।
मिथ्यामति विध्वंस करि, बंदूं मनमें धार ॥ॐ ह्रीं अर्हं प्राश्निकगिरे नम अर्घ्यं।३५५

महापुरुष महादेव हो, सुरनर पूजन योग ।
वाणी सुन मिथ्यात तज, पावै शिवसुख भोग ॥ॐ ह्रींअर्हंयाज्युश्रुतेनम॰अर्घ्यं ३५६

शिवमग उपदेशक सुश्रुत, मनमे अर्थ विचार ।
साक्षात् उपदेश तुम, तारे भविजन पार ॥ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतये नम अर्घ्यं ॥३५७॥

तुम समान तिहुँ लोकमे, नहीं अर्थ परकाश ।
भविजन सम्बोधे सदा, मिथ्यामतिको नाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाश्रुतये नम अर्घ्यं ३५८

जो निज आतम-कल्याणमे, बरतै सो उपदेश ।
धर्म नाम तिस जानियो, बंदूं चरण हमेश ॥ॐ ह्रींअर्हं धर्मश्रुतये नम अर्घ्यं ॥३५९।

जिन शासनके अधिपती, शिवमारग बतलाय ।
वा भविजन संतुष्ट करि, बंदूं तिनके पांय ॥ॐ ह्री अर्हं श्रुतपतये नम अर्घ्यं ।३६०

धारण हो उपदेशके, केवल ज्ञान संयुक्त ।
शिवमारग दिखलात हो, तुमको बंदन युक्त ॥ॐ ह्री अर्हंश्रुतघृतायनम अर्घ्य ३६१

जैसो है तैसो कहो, परम्पराय सु रीत ।
सत्यारथ उपदेशतें, धर्म मार्गकी रीत ॥ॐ ह्री अर्हं ध्रुवश्रुतये नमःअर्घ्यं ॥३६२॥

मोक्ष मार्गको देखियो, और न को दिखलाय ।
तुम सम हितकारक नहीं, बंदूं हूं तिन पांय ॥ॐह्रीअर्हं निर्वाणमार्गोपदेशकायनमः०

स्वर्ग मोक्ष मारग कहो, यति श्रावकको धर्म ।
तुमको बन्दत सुख महा, लहैब्रह्मपद पर्म ॥ॐह्रीअर्हं यतिश्रावकमार्गदेशकायनमोऽर्घ्यं

तत्त्व अतत्त्वसु जानियो, तुम सब ही परतक्ष ।
निज आतम संतुष्ट हो, देखो लक्ष अलक्ष ॥ॐ ह्रीं अर्हं तत्वमार्गदृशे नम अर्घ्यं। ३६४

सार तत्त्व वर्णन कियो, अयथार्थ मत नाश ।
स्वपर प्रकाशक हो महा, बंदे तिनको दास ॥ॐह्री अर्हंसारतत्त्वयथार्थाय नमःअर्घ्यं

आप तीर्थ औरन प्रति, सर्व तीर्थ करतार ।
उत्तम शिवपुर पहुँचना, यही विशेषण सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्तमतीर्थंकृताय नम: अर्घ्यं
दृष्टा लोकालोकके, रेखा हस्त समान ।
युगपत सबको देखिये, कियो भर्म तम हान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टाय नम: अर्घ्यं ॥३६८॥
जिनवाणीके रसिक हो, तासो रति दिन रैन ।
भोगोपभोग करो सदा, बंदत ह्वै सुखचैन ॥ ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मीश्वराय नम: अर्घ्यं ।३६९।
जो संसार—समुद्रसे, पार करत सो धर्म ।
तुम उपदेश्या धर्मकूं, नमत मिटै भव भर्म ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मशासनाय नम: अर्घ्यं ।३७०
धर्म रूप उपदेश है, भवि जीवन हितकार ।
मै बंदूं तिनको सदा, करौ भवार्णव पार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नम: अर्घ्यं ।३७१।
सब विद्याके ईश हो, पूरन ज्ञान सु जान ।
तिनको बंदूं भावसे, पाऊं ज्ञान महान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नम: अर्घ्यं ॥३७२।
सुमति नार भरतार हो, कुमति कुसौत विडार ।
मै पूजूं हूँ भावसों, पाऊं सुमती सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रयीनाथाय नम: अर्घ्यं ।३७३।

धर्म अर्थ अरु मोक्षके, हो दाता भगवान ।
मै नित प्रति पायन परूं, देहु परम कल्याण ।।ॐ ह्रीमर्हं त्रिभगीशायनम अर्घ्य ३७४
गिरा कहै जिन वचनको, तिसका अन्त सु धर्म ।
मोक्ष करै भविजननको, नाशै मिथ्या भर्म ।।ॐ ह्री अर्ह गिरापतये नम अर्घ्यं। ३७५।
जाकी सीमा मोक्ष है, पूरण सुख स्थान ।
शरणागत को सिद्ध है, नमूं सिद्ध धरि ध्यान ।।ॐ ह्रींअर्हं सिद्धागायनम अर्घ्यं ।३७६।
नय प्रमाणसो सिद्ध है, तुम वाणी रवि सार ।
मिथ्या तिमिर निवारकै, करै भव्य जन पार ।।ॐ ह्रीमर्ह सिद्धवाङ्मयायनम अर्घ्यं।
निज पुरुषारथ साधकै, सिद्ध भये सुखकार ।
मन वच तन करि मैं नमूं, करो जगतसै पार ।।ॐ ह्रींअर्हं सिद्धाय नम अर्घ्यं ।३७८।
सिद्ध करै निज अर्थको, तुम शासन हितकार ।
भविजन मानै सरदहै, करै कर्म रज छार ।।ॐ ह्रींअर्हं सिद्धशासनाय नम. अर्घ्यं ३७६
तीन लोकमे सिद्ध है, तुम प्रसिद्ध सिद्धान्त ।
अनेकात परकाश कर, नाशै मिथ्या ध्वांत ।।ॐ ह्री अर्हं जगत्प्रसिद्धसिद्धाताय नम:

ओंकार यह मंत्र है, तीन लोक परसिद्ध ।
तुम साधक कहलात हो, जपत मिलै नवनिद्ध ।।ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धमन्त्रायनमः अर्घ्यं ३८१

सिद्ध यज्ञको कहत है, संशय विभ्रम नाश ।
मोक्षमार्ग मे ले धरै, निजानन्द परकाश ।।ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धवाचे नम अर्घ्य ।।३८२।।

मोहरूप मलसो दुरी, वाणी कही पवित्र ।
भव्य स्वच्छता धारिके, लहै मोक्षपद तत्र ।।ॐ ह्रीं अर्हं शुचिवाचे नम अर्घ्यं ।३८३।।

कर्ण विषयमें होत ही, करै आत्म—कल्याण ।
तुम वाणी शुचिता धरै, नमै संत धरि ध्यान ।।ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे नम अर्घ्यं ।३८४

वचन अगोचर पद धरो, कहते पंडित लोग ।
तुम महिमा तुमहीं विषै, सदा बंदने योग्य ।।ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्ताय नम.अर्घ्यं ।३८५

सुरनर माने आन सब, तुम आज्ञा शिर धार।
मानो तत्र विधान करि, बांधे एक लगार ।।ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नम अर्घ्यं । ३८६।।

जाकरि निश्चय कीजिए, वस्तु प्रमेय अपार ।
सो तुमसे परकट भयो, न्यायशास्त्र रुचि धार ।।ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नम अर्घ्यं

गुण अनन्त पर्याय युत, द्रव्य अनन्तानन्त ।
युगपति जानो श्रेष्ठ युत, धरो महा सुखवत ।। ॐ ह्रीं अर्हं महाज्येष्ठायनम अर्घ्यं ३८८।

तम पद पावै सो महा, तुम गुण पार लहाय ।
शिवलक्ष्मी के नाथ हो, पूजूं तिनके पाय ।। ॐ ह्रीं अर्हं महानन्दाय नम. अर्घ्यं ।३८९।

तुम सम कविवर जगतमे, और न दूजो कोय ।
गणधरसे श्रुतकार भी, अर्थ लहैं नहीं सोय ।। ॐ ह्रीं अर्हं कवीन्द्राय नम अर्घ्यं ।३९०

हित करता षट् कायके, महा इष्ट तुम बैन ।
तुमको बंदूं भावसो, मोक्ष महासुख दैन ।। ॐ ह्रीं अर्हं महेष्टाय नम अर्घ्यं ।।३९१।

मोक्ष दान दातार हो, तुम सम कौन महान ।
तीन लोक तुमको जजै, मनमें आनंद ठान ।। ॐ ह्रीं अर्हं महनददात्रेनम अर्घ्यं।३९२।

द्वादशांग श्रुतको रचैं, गणधर से कविराज ।
तुम आज्ञा शिर धारके, नमूं निजातम काज ।। ॐ ह्रीं अर्हंकवीश्वराय नम अर्घ्यं ३९३

देव महा ध्वनि करत हैं, तुम सन्मुख धर भाव ।
केवल अतिशय कहत हैं, मैं पूजूं युतचाव ।। ॐ ह्रीं अर्हंदु दुमीश्वराय नमःअर्घ्यं ।३९४

इन्द्रादिक नित पूजते, भक्ति पूर्व शिर नाय।
त्रिभुवन नाथ कहातहो, हम पूजत नित पाँय ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवननाथाय नमः अर्घ्यं ।
गणी मुनीश फणीशपति, कल्पेन्द्रनके नाथ। (यह दोहा व अर्घ मूलप्रति में नहीं है।)
अहमिन्द्रके नाथ हो, तुमहि नमूं धरि माथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं महानाथाय नमः अर्घ्यं ।३९६
भिन्न भिन्न देख्यो सकल, लोकालोक अनन्त।
तुम सम दृष्टि न औरकी, तुमैं नमैं नित सत ॥ॐ ह्रीं अर्हं परदृष्टे नमः अर्घ्यं ३९७।
सब जगके भरतार हो, मुनिगणमें परधान।
तुमको पूजै भावसों, होत सदा कल्याण ॥ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः अर्घ्य ।३९८।
श्रावक या मुनिराज हो, तुम आज्ञा शिर धार।
वरतैं धर्म पुरुषार्थ में, पूजत हूँ सुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः अर्घ्यं ।।३९९।।
धर्म कार्य करता सही, हो ब्रह्मा परमार्थ।
मालिक हो तिहुँ लोकके, पूजनीक सत्यार्थ ॥ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः अर्घ्य ।।४००।।
तीन लोकके नाथ हो, शरणागत प्रतिपाल।
चार संघके अधिपती, पूजूं हूँ नमि भाल ॥ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विधसंघाधिपतये नमः अर्घ्यं।

तुम सम और विभव नहीं, धरो चतुष्ट अनंत ।
क्यों न करो उद्धार अब, दास कहावै 'संत' ॥ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीयविभवधारकाय नमः.

जामें विघन न हो कभी, ऐसी श्रेष्ठ विभूत ।
पाई निज पुरुषार्थ करि, पूजत शुभ करतूत ॥ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः अर्घ्यं ॥४०३॥

तुम सम शक्ति न औरकी, शिवलक्ष्मीको पाय ।
भोगै सुख स्वाधीन कर, बंदूं तिनके पाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितीयशक्तिधारकाय नमः अर्घ्यं

तुमसे अधिक न औरमें, पुरुषारथ कहुं पाइ ।
हो अधीश सब जगतके, बंदूं तिनके पांइ ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं ॥४०५।

अग्रेश्वर चउ संघ के शिवनायक शिरमोर ।
पूजत हूं नित भावसों, शीश दोऊ कर जोर ॥ॐ ह्रीं अर्हं अग्रीशाय नमः.अर्घ्यं ।४०६।

सहज सुभाव प्रयत्न विन, तीन लोक आधीश ।
शुद्ध सुभाव विराजते, बंदूं पद धर शीश ॥ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाधीशाय नमः अर्घ्यं ।४०७।

छायक सुमति सुहावनी, बीजभूत तिस जान ।
तुमसै शिवमारग चलै, मैं बंदूं धरि ध्यान ॥ॐ ह्रीं अर्हं अधीशित्रे नमः।अर्घ्यं ।४०८

स्वयं बुद्ध शिवनाथ हो, धर्म तीर्थ करतार ।
तुम सम सुमति न को धरै, मै बंदूं निरधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थंकर्त्रे नम अर्घ्यं ४०९
पूरण शक्ति सुभाव धर, पूजत ब्रह्म प्रकाश ।
पूरण पद पायो प्रभू, पूजत पाप विनाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णपदप्राप्ताय नम अर्घ्यं ॥४१०।
तुमसे अधिक न और है, त्रिभुवन ईश कहाय ।
तीन लोक अत्यन्त सुख, पायो बंदूं ताय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाधिपतयेनम अर्घ्यं ।४११
तीन लोक पूजत चरण, ईश्वर तुमको जान ।
मै पूजों हो भावसो, सबसे बड़े महान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ईशाय नम अर्घ्यं ॥४१२॥
सूरज सम परकाश कर, मिथ्या तम परिहार ।
भविजन कमल प्रबोधको, पायोनिजहितकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नम. अर्घ्यं ४१३
क्रीडा करि शिवमार्ग मे, पाय परम पद आप ।
आज्ञा भग न हो कभी, बदत नाशे पाप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्राय नमः अर्घ्यं ॥४१४॥
उत्तम हो तिहुँ लोकमे, सबके हो सिरताज ।
शरणागत प्रतिपाल हो, पूजूं आतम काज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकोत्तमाय नम अर्घ्यं ४१५

अधिक भूतिके हो धनी, सर्व सुखी निरधार ।
सुरनर तुम पदको लहैं, पूजत हूं सुखकार ।।ॐ ह्री अर्हं अधिभुवे नम अर्घ्यं।४१६।

तीन लोक कल्याण कर, धर्म मार्ग बतलाय ।
सब देवनके देव हो, महादेव सुखदाय ।।ॐ ह्रीं अर्ह महेश्वराय नमः अर्घ्यं ।।४१७।।

महा ईश महाराज हो, महा प्रताप धराय ।
महा जीव पूजें चरण, सब जन शरण सहाय ।।ॐह्रीअर्हं महेशाय नम अर्घ्यं ।४१८।

परम कहो उत्कृष्टको, धर्म तीर्थ वरताय ।
परमेश्वर यातें भये, बंदूं तिनके पाय ।।ॐ ह्री अर्हं परमेश्वराय नमःअर्घ्यं ।।४१९।।

तुम समान कोई नहीं, जग ईश्वर जगनाथ ।
महा विभव ऐश्वर्यको, धरो नमूं निज माथ ।।ॐ ह्री अर्हं महेशित्रे नम.अर्घ्यं।४२०

चार प्रकारनके सदा, देव तुम्हैं शिर नाय ।
सब देवनमें श्रेष्ठहो, नमूं युगल तुम पांय ।।ॐह्री अर्हं अधिदेवाय नम अर्घ्यं ।।४२१।।

तुम समान नहिं देव अरु, तुम देवनके देव ।
यों महान पदवी धरौ, तुम पूजत हूं एव ।।ॐह्री अर्हं महादेवाय नम अर्घ्यं ।४२२।।

शिवमारग तुममें सही, देव पूजने योग ।
सहचारी तुम सुगुण हैं, और कुदेव अयोग ।।ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः अर्घ्यं ।।४२३।।
तीन लोक पूजत चरण, तुम आज्ञा शिर धार ।
त्रिभुवन ईश्वर हो सही, मै पूजूं निरधार ।। ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनेश्वरायनम अर्घ्यं ।४२४
विश्वपती तुमको नमैं, निज कल्याण विचार ।
सर्व विश्वके तुम पती, मैं पूजूं उर धार ।।ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं ।।४२५।।
जगत जीव कल्याण कर, लोकालोक अनन्द ।
षट्कायिक आह्लादकर, जिम कुमोदनी चंद ।।ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नम अर्घ्यं।
इन्द्रादिक जे विश्वपति, तुमको पूजत आन ।
यातें तुम विश्वेश हो, सांच नमूं धर ध्यान ।।ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नम अर्घ्यं ।४२७।
विश्व बन्ध दृढ़ तोड़के, विश्व शिखर ठहराय ।
चरण कमल तल जगत है, यूं सब पूजत पांय ।।ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेश्वरायनम अर्घ्यं।४२८।
शिव मारगकी रीति तुम, बरतायो शुभ योग ।
तिहूं काल तिहुं लोकमे, और कुनीति अयोग ।।ॐ ह्रीं अर्हं अधिराजे नम. अर्घ्यं ।४२९

लोक तिमिर हर सूर्य हो, तारण लोक जिहाज ।
लोकशिखर राजत प्रभू, मैं बंदूं हित काज ॥ ॐह्रीअर्हं लोकेश्वरायनम अर्घ्यं।४३०
तीन लोक प्रतिपाल हो, तीन लोक हितकार ।
तीन लोक तारण तरण, तीन लोक सरदार ॥ ॐह्री अर्हं लोकपतये नम अर्घ्यं४३१
लोक पूज्य सुखकार हो, पूजत हैं हित धार ।
मैं पूजो नित भावसों, करो भवार्णव पार ॥ ॐह्रीअर्हं लोकनाथाय नम अर्घ्यं ।४३२।
पूजनीक जगमे सही, तुम्हैं कहैं सब लोग ।
धर्म मार्ग प्रकटित कियो, यातैं पूजन योग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जगपूज्याय नम अर्घ्यं ।४३३।
ऊरध अधो सु मध्य है, तीन भाग यह लोक ।
तिनमे तुम उत्कृष्ट हो, तुम्है देत नित धोक ॥ ॐह्री अर्हं त्रिलोकनाथायनम अर्घ्य ।
तुम समान समरथ नहीं, तीन लोकमे और ।
स्वयं शिवालय राजते, स्वामी हो शिरमौर ॥ ॐ ह्री अर्हं लोकेशायनम अर्घ्यं ।४३५।
जगत नाथ जग ईश हो, जगपति पूजे पाँय ।
मैं पूजूं नित भाव युत, तारण तरण सहाय ॥ ॐ ह्री अर्हंजगन्नाथाय नम अर्घ्यं।४३६

महा भूति इस जगतमे, धारत हो निरभंग ।
सब विभूति जग जीतिकै, पायो सुख सरवंग ॥ॐ ह्री अर्हं जगत्प्रभवे नम अर्घ्यं ।४३७
मुनि मन करण पवित्र हो, सब विभावको नाश ।
तुमको अंजुलि जोरकर, नमूं होत अघनाश ॥ॐ ह्री अर्हं पवित्राय नम अर्घ्यं ।४३८।
मोक्ष रूप परधान हो, ब्रह्मज्ञान परवीन ।
बंध रहित शिव-सुख सहित, नमैसंत आधीन ॥ॐ ह्री अर्हंपराक्रमायनम अर्घ्यं।४३९
जामें जन्म मरण नहीं, लोकोत्तर कियो वास ।
अचल सुथिर राजै सदा, निजानंद परकाश ॥ॐ ह्री अर्हं परत्राय नम अर्घ्यं ।४४०।
मोहादिक रिपु जीतके, विजयवन्त कहलाय ।
जैत्र नाम परसिद्ध है, बंदूं तिनके पाय ॥ॐ ह्री अर्हं जैत्रे नमः अर्घ्यं । ४४१॥
रक्षक हो षट् कायके, कर्म शत्रु क्षयकार ।
विजय लक्ष्मी नाथ हो, मै पूजूं सुखकार ॥ॐ ह्री अर्हं जिष्णवे नम अर्घ्यं ।४४२।
करता हो विधि कर्मके, हरता पाप विशेष ।
पुन्यपाप सु विभाग कर, भ्रम नहीं राखो लेश ॥ॐ ह्रीअर्हं कर्त्रे नम अर्घ्य ।४४३।

स्वानंद ज्ञान विनाश विन, अचल सुथिर रहै राज ।
अविनाशी अविकारहो, वंदूं निजहित काज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं
इन्द्रादिक पूजित चरन, महा भक्ति उर धार ।
तुम महान ऐश्वर्यको, धारत हो अधिकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] ९९५
गुण समूह गुरुता धरै, महा भाग सुख रूप ।
तीन लोक कल्याण कर, पूजूं हूं शिव भूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ९९६
महा विभवको धरत हैं, हितकारण मितकार ।
धर्म—नाथ परमेश हो, पूजत हूं सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ९९७।
विन कारण असहाय हो, स्वयं प्रभा अविरुद्ध ।
तुमको वंदूं भावसों, निज आतम कर शुद्ध ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ९९८
लोकवासको नाश कर, लोक सम्बन्ध निवार ।
अचल विराजै शिवपुरी, पूजत हूं उर धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ९९९।
विश्व नाम संसार हैं, जन्म मरण सो होय ।
सोई व्याधि विनासियो, जजूं जोड़ करदोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं १०००

विश्व कषाय निवारके, जग सम्बन्ध विनाश ।
जनममरण विन ध्रुव लसै, नमूं ज्ञानपरकाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजेत्रे नमः अर्घ्यं ४५१

विश्व-वास तुम जीतियो, विश्व नमावै शीश ।
पूजत है हम भक्तिसौं, जयवन्तो जगदीश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः अर्घ्यं ॥४५२।

इन्द्रादिक जिनको नमें, ते तुम शीश नवाय ।
विश्वजीत तुम नाम है, शरणागत सुखदाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिन्वराय नमः अर्घ्यं ।

तीन लोककी लक्ष्मी, तुम चरणांबुज ठौर ।
यातै सब जग जीतिके, राजत हो शिरमौर । ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जेत्राय नमः अर्घ्यं ४५४।

तीन लोक कल्याण कर, कर्मशत्रुको जीत ।
भव्यन प्रति आनंद कर, मेटत तिनकी भीति ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जिष्णवे नमः अर्घ्यं ४५५

जग जीवनको अन्ध कर, फैलो मिथ्या घोर ।
धर्म मार्ग प्रकटायकर, पहुँचायो शिव ठौर ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नेत्राय नमः अर्घ्यं ४५६

मोहादिक जिन जीतियो, सोई जगमें नाम ।
सो तुम पद पायो महा, तुम पद करूं प्रणाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जगज्जयिने नमः अर्घ्यं ।४५७।

जो तुम धर्म प्रकट करि, जिय आनन्दित होय ।
अग्र भये कल्यान कर, तुम पद प्रणमूं सोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्ये नम अर्घ्यं ।४५८।
रक्षा करि षट कायकी, विषय कषाय न लेश ।
त्रास हरो जमराजको, जयवन्तो गुण शेष ॥ ॐ ह्रीं अर्हं दयामूर्तये नमःअर्घ्यं४५९।
सत्य असत्य लखना करै, सोई नेत्र कहाय ।
पुद्गल नेत्र न नेत्र हो, सांचे नेत्र सुखाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यनेत्राय नम अर्घ्यं।४६०।
सुरनर मुनि तुम ज्ञानतै, जानै निज कल्याण ।
ईश्वर हो सब जगतके, आनंद संपति खान ॥ॐह्रींअर्हं अधीश्वरायनमःअर्घ्यं ।४६१
धर्म्माभास मनोक्तके, मूल नाश कर दीन ।
सत्य मार्ग बतलाइयो, कियो भव्य सुख लीन ॥ॐह्रीं अर्हं धर्म्मनायकाय नमःअर्घ्यं
ऋद्धिनमें परसिद्ध है, केवल ऋद्धि महान ।
सो तुम पायो सहज ही, योगीश्वर मुनि मान ॥ॐह्रींअर्हंऋद्धीशाय नमःअर्घ्यं ४६३
जो प्राणी संसारमे, तिन सबके हितकार ।
आनंदसों सब नमत है, पावै भवदधि पार ॥ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमःअर्घ्यं ॥४६४।

प्राणिनके भरतार हो, दुख टारन सुखकार ।
तुम आश्रय करिजीवसब, आनंद लहैं अपार ॥ॐ ह्री अर्हं भूतमत्रें नम अर्घ्यं ।४६५।
सत्य धर्मके मार्ग हो, ज्ञान मात्र निरशंस ।
तुम ही आश्रय पायके, रहै न अघको अंश ॥ॐ ह्री अर्हं जगत्पात्रे नम।अर्घ्यं ॥४६६॥
अतुल वीर्य स्वशक्ति हो, जीते कर्म जरार ।
तुम सम बल नहीं और मे, होउ सहायअवार ॥ॐ ह्रीअर्हंअतुलबलायनम:अर्घ्यं४६७
धर्म मूर्ति धरमातमा, धर्म तीर्थ बरताय ।
स्व सुभाव सो धर्म है, पायो सहज उपाय ॥ ॐ ह्री अर्हं वृपाय नम अर्घ्यं ॥४६८॥
हिंसाको वर्जित कियो, जे अपराध महान ।
परिग्रह अर आरंभ के, त्यागी श्री भगवान ॥ॐह्रींअर्हंपरिग्रहत्यागीजिनायनम अर्घ्यं
सर्व सिद्ध तुम सुलभ कर, पायो स्वयं उपाय ।
सांचे हो वश करणको, जगमें मंत्र कराय ॥ ॐ ह्री अर्हं मत्रकृते नम अर्घ्यं ॥४७०॥
जितने कछु शुभ चिह्न हैं, दीप्त अशेष स्वरूप ।
शुभ लक्षण सोहत अति, सहजे तुम शिवभूप ॥ॐह्रींअर्हंशुभलक्षणायनम अर्घ्यं ।४७१

लोकविषै तुम मार्गको, मानत हैं बुधवन्त ।
तर्क हेतु करुणा लिये, यातैं माने संत ॥ॐ ह्रीं अर्हं लोकाव्यक्ताय नम अर्घ्यं । ४७२ ।
काहूके वशमे नहीं, काहू नमत न शीश ।
कठिन रीति धारै प्रभू, नमूं सदा जगदीश ॥ॐ ह्रीं अर्हं दुरोभ्रष्टाय नम अर्घ्यं ।४७३
दासनिके प्रतिपाल कर, शरणागति हितकार ।
भवि दुखियनको पोषकर, दियो अखै पदसार ॥ॐ ह्रींअर्हं भव्यबन्धवे नम अर्घ्यं ।४७४
निराकरण करि कर्मको, सरल सिद्ध गति धार ।
शिवथल जाय सुवास लहि, धर्म द्रव्यसहकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तकर्माय नमःअर्घ्यं
मुनि ध्यावैं पावैं सुपद, निकट भव्य धरि ध्यान ।
पावे निज कल्याण नित, ध्यान योग तुममान ॥ॐ ह्रींअर्हंपरमध्येयजिनायनमःअर्घ्यं ।
रक्षक हो जगके सदा, धर्म दान दातार ।
पोषित हो सब जीवके, बंदूं भाव लगार ॥ॐ ह्रीं अर्हं जगनापहराय नमः अर्घ्यं।४७७।
मोह प्रचंड बली जयो, अतुल वीर्य भगवान ।
शीघ्र गमन करि शिवगये, नमूं हेत कल्याण ॥ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिजयाय नमः अर्घ्यं॥

तीन लोक शिरमौर तुम, सब पूजत हरषाय ।
परमेश्वर हो जगतके, बंदत हूँ तिन पाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं ४७९

लोकशिखरपर अचल नित, राजत है तिहुँ काल ।
सर्वोत्तम आसन लियो, लोक शिरोमणिभाल ॥ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिने नम अर्घ्यं । ४८०

विश्वभूति प्राणीनके, ईश्वर है भगवान ।
सबके शिरपर पग धरै, सर्व आन तिन मान ॥ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नम अर्घ्यं ४८१

मोक्ष संपदा होत ही, नित अक्षय ऐश्वर्य ।
कौन मूढ़ कौड़ी लहै, सर्वोत्तम धनवर्य ॥ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः अर्घ्यं ॥४८२॥

त्रिभुवन ईश्वर हो तुम्हीं, और जीव है रंक ।
तुम तज चाहै औरको, ऐसो को बुध बंक ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं ।

उत्तरोत्तर तिहुँ लोकमे, दुर्लभ लब्धि कराय ।
तुम पद दुर्लभ कठिन है, महा भाग सो पाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगदुर्लभाय नम अर्घ्यं

बढवारी परणामसो, पूर्ण अभ्युदय पाय ।
भई अनंत विशुद्धता, भये विशुद्ध अथाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अभ्युदयाय नम अर्घ्यं ॥४८५।

तीन लोक मंगल करण, दुखहारण सुखकार ।
हमको मंगल द्यो महा, पूजो बारम्बार ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं ।४८६

आप धर्मके सामने, और धर्म लुप जाँय ।
धर्म चक्र आयुध धरो, शत्रु नाश तब पाँय ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं ॥४८७।

सत्य शक्ति तुम ही सही, सत्य पराक्रम जोर ।
है प्रसिद्ध इस जगतमे, कर्म शत्रु शिरमोर ॥ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः अर्घ्यं ॥४८८।

मंगलमय मंगलकरण तीन, लोक विख्यात ।
सुमरणध्यानसु करतही, सकलपापनशि जात ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकमंगलाय नमः अर्घ्यं।

द्रव्य भाव दऊ वेद विन, स्वातम रति सुख मान ।
पर आलिंगन रतिकरण, निरइच्छुकभगवान ॥ॐ ह्रीं अर्हं अवेदाय नमः अर्घ्यं ।४९०

घातिरहित स्वपर दया, निजानन्द रसलीन ।
सुखसों अवगाहन करैं, संत चरण आधीन ॥ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाताय नमः अर्घ्यं।४९१।

निजानन्द स्व-देशमें, खंड खंड नहीं होय ।
पूरण अविनाशी सुखी, पूजत हूँ भ्रम खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं ॥४९२।

सिद्ध समान सु शुभ नहीं, और नाम विख्यात ।
कभू न जगमे जन्म फिर, सोई दृढ़ कहलात ।।ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः अर्घ्यं ।।४९३।।
जन्म मरणके कष्टसे, सर्व लोक भयवंत ।
ताको नाश अभय करण, तुम्है नमे जियसंत ।।ॐ ह्रींअर्हं अभयकराय नम अर्घ्यं।४९४
ज्ञानानन्द स्व लक्ष्मी, भोगत हो निरखेद ।
महा भोग याते भये, है स्वाधीन अवेद ।।ॐ ह्री अर्हं महाभोगाय नम अर्घ्यं ।।४९५।।
असाधारण असमान हो, सर्वोत्तम उतकृष्ट ।
परसो भिन्न अखिन्न हो, पायो पद अविनष्ट ।।ॐ ह्री अर्हं निरौपम्यायनम अर्घ्यं।४९६
दश लक्षण शुभ धर्मके, राजसम्पदा भोग ।
नायक हो निज धर्मके, पूजि नमै तिहुं योग ।।ॐ ह्रीअर्हं धर्मसाम्राज्यनायकायनमः अर्घ्यं
अधिपति स्वामि स्वभाव निज, पर कृत भाव विडार ।
तिहूं वेद रति मान बिन, संपूरण सुखकार ।।ॐ ह्रीअर्हं निर्वेदप्रवृत्ताय नम अर्घ्यं४९८
यथायोग्य पद पाइयो, यथायोग्य संपूर्ण ।
नमूं त्रियोग संभारिके, करू पाप मल चूर्ण ।।ॐ ह्रींअर्हंसपूर्णयोगिने नमः अर्घ्यं ।४९९

सब इन्द्रिय मन रोककैं, आरोहण तिस भाव।
श्रेणी उच्च चढ़ावमें, तत्पर अन्त सु पाव ॥ॐ ह्रीं अर्हं समारोहणतत्पराय नम. अर्घ्यं।

एकाश्रय निज धर्ममें, परसों भिन्न सदीव।
सहज स्वभाव विराजते, सिद्धराज सबजीव ॥ॐ ह्रीं अर्हं सहजसिद्धस्वरूपाय नमः अर्घ्यं

राग द्वेष विन सहज ही, राजत शुद्ध स्वभाव।
मन विकल्प नहीं भावमें, पूजत हों धरि चाव ॥ॐ ह्रीं अर्हं सामायिकाय नम' अर्घ्यं।

निजानन्द निज लक्षमी, भोगत ग्लानि न होय।
अतुल वीर्य परभावतै, परमादी नहीं होय ॥ॐ ह्रीं अर्हं निष्प्रमादाय नमः अर्घ्यं ।५०

है अनादि संतान करि, कभी भयो नहीं आदि।
नित्य शिवालय पूर्णता, बसै जगत अघवादि ॥ॐ ह्रीं अर्हं अकृताय नम अर्घ्यं ।५०४

पर पदार्थ नहीं इष्ट है, निजपदमें लवलीन।
विघ्न हरण मंगल करण, तुम पद मस्तक दीन ॥ॐ ह्रीं अर्हं परममावाय नमः अर्घ्यं

नित्य शौच संतोष मय, पर पदार्थसों रोक।
निश्चय सम्यक् भाव मय, है प्रधान द्यूं धोक ॥ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः अर्घ्यं ।५०६।

ज्ञान ज्योति निज धरत हो, निश्चल परम सुठाम ।
लोकालोक प्रकाश कर, मै बंदू सुख धाम ।।ॐ ह्रीं अर्हंस्वभासपरमासनाय नमःअर्घ्यं।
एक स्थान सु थिर सदा, निश्चय चारित भूप ।
शुध उपयोग प्रभावतें, कर्म खिपावन रूप ।।ॐह्रींअर्हं प्राणायामचरणाय नम'अर्घ्यं ।
विषय स्वादसो हट रहै, इन्द्री मन थिर होय ।
निज आतम लवलीन है, शुद्ध कहावै सोय ।।ॐह्रीअर्हं शुद्धप्रत्याहारायनम अर्घ्यं ५०९।
इन्द्री विषयन वश रहै, निज आतम लवलाय ।
सो जिनेन्द्र स्वाधीन है, बंदू तिनके पाय ।।ॐह्रीअर्हं जितेन्द्रियाय नमःअर्घ्यं ।।५१०।।
ध्यान विषै सो धारणा, निज आतम थिर धार ।
ताके अधिपति हो महा, भये भवार्णव पार ।।ॐ ह्री अर्हं धारणाधीश्वरायनमः अर्घ्यं
रागादिक मल नाशिके, ध्यान सु धर्म लहाय ।
अचल रूप राजै सदा, बदूं मन वच काय ।।ॐ ह्रीअर्हं धर्मध्याननिष्ठायनम अर्घ्यं ।५१२
निजानन्दमे मगन है, पर पद राग निवार ।
समदृष्टी राजत सदा, हमें करो भव पार ।।ॐ ह्रीं अर्हं,समाधिराजे नम.अर्घ्यं ।५१३।

वीतराग निर्विकल्प है, ज्ञान उदय निरशंस ।
समरसभाव परम सुखी, नमत मिटै दुख अंश ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्फुरितसमरसीभावायनम
एकै रूप विराजते, नय विकल्प नहिं ठौर ।
वचन अगोचर शुद्धता, पाप विनाशो मोर ॥ॐ ह्रीं अर्हं एकीभावनयरूपाय नमः अर्घ्यं
परम दिगम्बर मुनि महा, समदृष्टी मुनिनाथ ।
ध्यावै पावैं परम पद, नमूं जोर जुग हाथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थनाथायनमः अर्घ्यं ५१६
योग साधि योगी भये, तिनको इन्द्र महान ।
ध्यावत पावत परम पद, पूजत निज कल्याण ॥ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्रायनम अर्घ्यं।५१७
शिव मारग सिद्धांतके, पार भये मुनि ईश ।
तारण तरण जिहाजहो, तुम्हेनमूं नित शीश ॥ॐ ह्रीं अर्हं ऋषये नम अर्घ्यं ॥५१८।
निज स्वरूपको साधिकर, साधु भये जग माहिं ।
निजपर हितकर गुणधरैं, तीनलोकनमिताहिं ॥ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नम अर्घ्यं ।५१६।
रागादिक रिपु जीतके, भये यती शुभ नाम ।
धर्म धुरंधर परम गुरु, जुगपद करूं प्रणाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः अर्घ्यं ॥५२०॥

पर संपतिसूं विमुख हो, निजपद रुचिकरि नेम ।
मुनि मन रंजन पद महा, तुम धारत हो एम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नम.अर्घ्यं।५२१।
महाश्रेष्ठ मुनिराज हो, निज पद पायो सार ।
महा परम निरग्रन्थ हो, पूजत हूं मन धार ॥ॐ ह्रीं अर्हं महर्षिणे नम अर्घ्यं ॥५२२।
साधु भार दुर गमन हैं, ताहि उठावन हार ।
शिव-मन्दिर पहुँचात हो, महाबली सुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं साधुधौरेयायनम अर्घ्यं५२३
इन्द्री मन जित जे जती, तिनके हो तुम नाथ ।
परम्परा मरजाद धर, देहु हमें निज साथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं यतीनाथाय नमःअर्घ्यं ।५२४।
चार संघ मुनिराजके, ईश्वर हो परधान ।
पर हितकर सामर्थ्यहो, निज समकरि भगवान ॥ॐ ह्रीं अर्हंमुनीश्वराय नम अर्घ्यं ।
गणधरादि सेवक महा, तिन आज्ञा शिरधार ।
समकित ज्ञान सु लक्षमी, पावतहैं निरधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमःअर्घ्यं ।५२६।
महामुनि सर्वस्व हो, धर्म मूर्ति सरवांग ।
तिनको बंदूं भाव युत, पाऊं मैं धर्मांग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमःअर्घ्यं ॥५२७॥

इष्टानिष्ट विभाव विन, समदृष्टी स्वध्यान ।
मगन रहै निज पद विषै, ध्यान रूप भगवान ॥ॐ ह्रींग्रर्हं महाध्यानिने नम ग्रर्घ्यं ।
स्व सुभाव नहीं त्याग है, नहीं ग्रहण पर माहिं ।
पाप कलाप न ग्रापमें, परम शुद्ध नमूं ताहि ॥ॐ ह्रीं ग्रर्हं महाव्रतिने नम. ग्रर्घ्यं ।५२९
क्रोध प्रकृति विनाशके, धरैं क्षमा निज भाव ।
समरस स्वादसु लहत है, बंदूं शुद्ध स्वभाव ॥ॐ ह्रींग्रर्हं महाक्षमाय नमः ग्रर्घ्यं ।५३०।
मोह रूप सन्ताप विन, शीतल महा स्वभाव ।
पूरण सुख ग्राकुल नहीं, बंदूं मन धर चाव ॥ॐ ह्रीं ग्रर्हंमहाशीतलाय नम ग्रर्घ्यं ।५३१
मन इन्द्रिय के क्षोभ विन, महा शांति सुखरूप ।
निजपद रमण स्वभाव नित, मैं बंदूं शिव भूप ॥ॐ ह्रींग्रर्हं महाशांताय नमः ग्रर्घ्यं ।
मन इन्द्रिय को दमन कर, पायो ज्ञान ग्रतीन्द्र ।
स्वाभाविक स्वशक्ति कर बंदूं भये जितेन्द्र ॥ॐ ह्रींग्रर्हं महोदयाय नम ग्रर्घ्यं ।५३३।
पर पदार्थ को क्लेश तजि, व्यापै निजपद माहिं ।
स्वच्छ स्वभाव विराजते, पूजत हूँ नित ताहिं ॥ॐ ह्रींग्रर्हं निर्लेपायनमः ग्रर्घ्यं ।५३४।

संशयादि दृष्टी नहीं, सम्यक ज्ञान मझार ।
सब पदार्थ प्रत्यक्ष लख, महा तुष्ट सुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं निर्भ्रांतायनम अर्घ्यं।५३५
शांतिरूप निज शांति गुण, सो तुमही मे पाय ।
निज मन शांति सुभावधर, पूजत हूँ युगपाय ॥ॐ ह्री अर्हं प्रशाताय नमः अर्घ्यं।५३६
मुनि श्रावक द्वै धर्मके, तुम अधिपति शिवनाथ ।
भविजनको आनंद करि, तुम्हें नवाऊं माथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षायनम अर्घ्यं।५३७
दया नीति बरताइयो, सुखी किये जगजीव ।
कल्पितरागग्रसत नहीं, जानत मार्ग सदीव ॥ॐ ह्री अर्हं दयाध्वजायनमः अर्घ्यं।५३८।
केवल ब्रह्म स्वरूप हो, अन्तर बाह्य अदेह ।
ज्ञान ज्योतिघन नमत हूँ मनवचतनधरि नेह ॥ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं।५४०।
स्वयं बुद्ध अविरुद्ध हो, स्वयं ज्ञान परकाश ।
निज परभाव दिखात हो, दीपकसमप्रतिभास ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्वयबुद्धायनमः अर्घ्यं ५४०
रागादिक मल नाशियो, महापवित्र सुखाय ।
शुद्ध स्वभाव धरै करै, सुरनर थुति न अघाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नम अर्घ्यं।५४१

वीतराग श्रद्धानता, संपूरण वैराग ।
द्वेषरहितशुभगुणसहित, रहूं सदापगलाग ॥ ॐ ह्री अर्हं स्नातकाय नम अर्घ्यं ।५४२।
माया मद आदिक हरे, भये शुद्ध सुख खान ।
निर्मल भाव थकी जजूं, होत पाप की हान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अमदमायायनम अर्घ्यं ।५४३
अतुल वीर्य जा ज्ञानमें, सूर्य समान प्रकाश ।
मोक्ष नाथ निज धर्म जुत, स्व ऐश्वर्य विलास ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमैश्वर्यायनम. अर्घ्यं ।५४४
मत्सर क्रोध जु ईर्ष्या, पर में द्वेष सुभाव ।
सो तुम नाशो सहजहो, निंदितदुषित विभाव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नम अर्घ्यं ।
धरम भार सिर धारकर, समाधान परकाज ।
तुमसमश्रेष्ठ न धर्म अरु, तारण तरणजिहाज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मवृषायनम अर्घ्य ५४६
क्रोध कर्म जडसै नसौ, भयो क्षोभ सब दूर ।
महा शांति सुखरूप हो, पूजत अघ सब चूर ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभाय नम अर्घ्यं ।५४७
इष्टमिष्ट बादरझरी, विद्युत विधि कर खण्ड ।
जिष्णुमहा कल्याणकर, शिवमग भागप्रचण्ड ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाविधिखंडायनम अर्घ्य

अमृतमय तुम जन्म है, लोक तुष्टताकार ।
जन्म कल्याणक इन्द्र कर, क्षीरनीर करधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं ।५४९
इन्द्री विषय सुविषहरण, काम पिशाच विडार ।
मूर्तीक शुभ मंत्र हो, देव जजैं हित धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः अर्घ्यं ॥५५०॥
सौम्य दशा प्रकटी घनी, जाति विरोधी जीव ।
वैर छांड समभाव धर, सेवत चरण सदीव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्वैरसौम्यभावाय नमः अर्घ्यं
पराधीन इन्द्री विना, राग विरोध निवार ।
हो स्वाधीन न कर्णपर, स्वयं सिद्ध सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः अर्घ्यं ।५५२
ब्रह्मरूप नहीं बाह्य तन, संभव ज्ञान स्वरूप ।
स्वयंप्रकाश विलास धर, राजत अमल अनूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसम्भवाय नमः अर्घ्यं ५५३
आनन्दधार सु मगन है, सब विकल्प दुख टार ।
पर आश्रित नहीं भाव है, पूजूं आनंद धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं ।५५४।
परिपूरण गुण सीम है, सर्व शक्ति भण्डार ।
तुमसे सुगुण न शेष हैं, जो न होय सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्बुधये नमः अर्घ्यं ।५५५।

ग्रहणत्यागको भाव तज, शुभ वा अशुभ अभेद ।
व्याधिकार है वस्तुमे, तुम्हे नमूं निरखेद ।। ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापनिरोधकाय नमः अर्घ्यं।
सूक्षम रूप अलक्ष हैं, गणधर आदि अगम्य ।
आप गुप्त परमातमा, इन्द्रिय द्वार अरम्य ।। ॐ ह्रीं अर्हं महागम्यगूढमहत्पायनम अर्घ्यं
अन्तरगुप्त स्व आतमरस, ताको पान करात ।
पर प्रवेश नहीं रंच है, केवल मगन सुजात ।। ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं ।५५८।
निजकारक निज कर्णकर, निजपद निज आधार ।
सिद्धकियो निज रस लियो, पूजतहूं हितकार ।। ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं। ५५६
नित्य उदै बिन अस्त हो, पूरण दुति घन आप ।
ग्रहै न राहू जास शशि, सो हो हर सन्ताप ।। ॐ ह्रीं अर्हं निरातन्कायनमः अर्घ्यं ५६०
लियो अपूरव लाभको, अचल भये सुखधाम ।
पूज रचै जे भावसों, पूर्ण होइ सब काम ।। ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्शाय नमः अर्घ्यं ।५६१।
हैं प्रशंस तिहुँ लोकमें, तुम पुरुषार्थ उपाय ।
पायो धर्म सु धामको, पूजों तिनके पाय ।। ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः अर्घ्यं ।५६२।

गणधरादि जे जगतपति, तथा सुरेन्द्र सुरीश ।
तुमको पूजत भक्तिकरि, चरणधरैं निजशीश॥ ॐ ह्रीअर्हंजगत्पितामहायनम अर्घ्यं
तुमहीसो भवि सुख लहै, तुम विन दुख ही पाय ।
नेमरूप यही है तुम्हें, महानाम हम गाय ॥ ॐह्रीअर्हंमहाकारुणिकायनम अर्घ्यं ।५६४
महासुगुण की रास हो, राजत हो गुण रूप ।
लौकिक गुण औगुणसही, सब ही द्वेष सरूप॥ ॐह्रीअर्हंशुद्धगुणाय नम.अर्घ्यं।५६५
जन्म मरण आदिक महा, क्लेश ताहि निरवार ।
परम सुखी तुमको नमूं, पाऊं भवदधि पार॥ ॐह्रीअर्हंमहाक्लेशनिवारणायनम.अर्घ्यं
रागादिक नहीं भाव है, द्रव्य देह नहीं धार ।
दोऊ मलिनता छांडिके, स्वच्छ भये निरधार ॥ ॐह्रीअर्हं महाशुचयेनम अर्घ्यं ५६७
आधि व्याधि नहीं रोग है, नित प्रसन्न निज भाव ।
आकुलताविनशांति सुख, धारतसहज सुभाव॥ ॐह्रीअर्हं अरजे नम अर्घ्यं ।।५६८ ।
यथायोग्य पद थिर सदा, यथायोग्य निज लीन ।
अविनाशी अविकार है, नमैं संत चित दीन॥ ॐह्रीअर्हं सदायोगाय नम.अर्घ्यं।५६९।

स्वामृत रसको पान करि, भोगत है निज स्वाद ।
पर निमित्ति चाहैं नहीं, करै न तिनको याद ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः अर्घ्यं ५७०
निर उपाधि निज धर्ममें, सदा रहै सुखकार ।
रत्नत्रयकी मूरती, अनागार आगार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सदाधृतये नमः अर्घ्यं ॥५७१॥
रागद्वेष नहीं मूल है, है मध्यस्थ स्वभाव ।
ज्ञाता दृष्टा जगतके, परसो नही लगाव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमौदासीनाय नमः अर्घ्यं
आदि अन्त विन वहत है, परम भाम निरधार ।
अन्तर परत न एकछिन, निज सुख परमाधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः अर्घ्यं
मूल देह आकृति रहैं, हो नहिं अन्य प्रकार ।
सत्याशन इम नाम हैं, पूजूं भक्ति लगार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशने नमः अर्घ्यं
परम शांतिसुखमय सदा, क्षोभ रहित तिस स्वामि ।
तीनलोकप्रतिशांतिकर, तुम पद करूं प्रणामि ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनायकाय नमः अर्घ्यं ।
काल अनंतानत करि, रुल्यो जीव जगमांहि ।
आत्मज्ञान नहीं पाइयो, तुम पायो है ताहि ॥ ॐ ह्रीं अर्हंमपूर्वविद्याय नमः अर्घ्यं ।५७६

यथाख्यात चारित्रको, जानो मानो भेद ।
आत्मज्ञान केवल थकी, पायो पद निरभेद ॥ॐ ह्रीं अर्हं योगज्ञायकाय नमः अर्घ्यं ।५७७।

धर्ममूर्ति सर्वस्व हो, राजत शुद्ध स्वभाव ।
धर्ममूर्ति तुमको नमूं, पाऊं मोक्ष उपाव ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्ममूर्तये नम. अर्घ्यं ॥।५७८॥

स्व आतम परदेशमें, अन्य मिलाप न होय ।
आकृतिहै निजधर्मकी, निज विभावको खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हंधर्मदेहाय नम अर्घ्यं ।५७९

स्वामीहो निजआत्म के, अन्य सहाय न पाय ।
स्वयं सिद्ध परमातमा, हम पर होउ सहाय ॥ॐ ह्रीमर्हं धर्मेशाय नम अर्घ्यं ।५८०।

निज पुरुषारथ करि लियो, मोक्ष परम सुखकार ।
करना था सो करि चुके, तिष्ठै सुख आधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृतये नम अर्घ्यं ।५८१

असाधारण तुम गुण धरत, इन्द्रादिक नहीं पाय ।
लोकोत्तम बहु मान्य हो, बंदूं हूँ युग पाय ॥ॐ ह्रीं मर्हं गुणात्मकाय नम अर्घ्यं॥५८२॥

तुम गुण परम प्रकाश कर, तीन लोक विख्यात ।
सूर्य समान प्रताप धर, निरावरण उघरात ॥ॐ ह्रीमर्हं निरावरणगुणप्रकाशायनम •

समय मात्र नहीं आदि हैं, वहै अनादि अनंत ।
तुम प्रवाह इस जगतमें, तुम्है नमैं नित संत ॥ॐह्रीअर्हं निर्निमेषाय नम अर्घ्यं ।५८३।
योग द्वारा विन करम रज, चढै न निज परदेश ।
ज्योविन छिद्र न जलग्रहै, नवका शुद्ध हमेश ॥ॐह्रींअर्हं निराश्रवायनम अर्घ्यं ।५८५
परम ब्रह्म पद पाइयो, पूरण ज्ञान प्रकाश ।
तीन लोकके जीव सब, पूजें चरण निवास॥ॐह्रींअर्हं महाब्रह्मपतयेनम अर्घ्यं ५८६
द्रव्य पर्यार्थिक दोऊ, साधत वस्तु स्वरूप ।
गुण अनंत अवरोधकर, कहत सरूप अनूप ॥ॐह्री अर्हं सुनयतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं ।
सूर्य समान प्रकाश कर, कर्म दुष्ट हनि सूर ।
शरण गही तुमचरणकी,करो ज्ञान दुति पूरि ॥ॐह्रीअर्हं सूरये नमःअर्घ्यं ॥५८८।
तुम सम और न जगतमे, सत्यारथ तत्त्वज्ञ ।
सम्यग्ज्ञान प्रभावतें, हो अदोष सर्वज्ञ ॥ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञाय नम अर्घ्यं ॥५८९॥
तीन लोक हितकार हो, शरणागति प्रतिपाल ।
भव्यनि मन आनंद करि बंदूं दीनदयाल ॥ॐ ह्रीं अर्हं महामित्राय नम अर्घ्यं।५९०।

समता सुखमे मगन हैं, राग द्वेष संक्लेश ।
ताकोनाशि सुखीभये,युगयुग जिऔ जिनेश ॥ ॐ ह्रीअर्हं साम्यभावधारकजिनायनमः०

निरावरण निज ज्ञानमें, संशय विभ्रम नाहिं ।
सम्यग्यज्ञान प्रकाशते, वस्तु प्रमाण दिखाय ॥ ॐह्रीअर्हंप्रक्षीणबन्धायनम अर्घ्यं ५६२

एक रूप परकाश कर, दुविधि भाव विनशाय ।
पर निमित्त लवलेश नहीं, बंदूं तिनके पाय ॥ ॐह्री अर्हं निद्वन्द्वाय नम अर्घ्यं ।५६३।

मुनि विशेष स्नातक कहे, परमातम परमेश ।
तुम ध्यावत निर्वाण पद, पावै भविक हमेश ॥ ॐह्री अर्हंस्नातकाय नम अर्घ्यं ।५६४।

पंच प्रकार शरीर बिन, दीप्त रूप निजरूप ।
सुर मुनि मन रमणीय हैं, पूजत हूँ शिवभूप ॥ ॐह्रीअर्हं अनगाय नम.अर्घ्यं ।५६५।

द्वय प्रकार बन्धन रहित, नित हो मोक्ष सरूप ।
भविजन बंध विनाशकर, देहो मोक्ष अनूप ॥ ॐह्री अर्हं निर्वाणाय नमःअर्घ्यं ।५६६।

सगुण रत्नकी राशके, आप महा भण्डार ।
अगम अथाह विराजते, बदूं भाव विचार ॥ ॐ ह्री अर्हं सागराय नम अर्घ्यं ।।५६७

मुनिजन ध्यावैं भावयुत, महा मोक्षप्रद साध ।
सिद्ध भये मैं नमत हूँ, चहूँ संघ आराध ॥ॐ ह्रीं अर्हं महामाधवे नम अर्घ्यं ॥५९८॥

ज्ञान ज्योति प्रतिभासमें, रागादिक मल नाहिं ।
विशद अनूपम लसतहो, दीप्तज्योतिशिवराह॥ॐ ह्रीं अर्हं विमलामायनमः अर्घ्यं ५९९

द्रव्यभाव मल नाशकर, शुद्ध निरंजन देव ।
निजआतममें रमत हो, आश्रय विन स्वयमेव ॥ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धात्मने नमः अर्घ्यं ।६००

शुद्ध अनन्त चतुष्ट गुण, धरत तथा शिवनाथ ।
श्रीधर नाम कहात हो, हरिहर नावत माथ ॥ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधराय नम. अर्घ्यं।६०१।

मरणादिक भयसे सदा, रक्षित हैं भगवान ।
स्वयं प्रकाश बिलासमे, राजत सुख की खान ॥ॐ ह्रीं अर्हं मरणभयनिवारणाय नमः०

राग द्वेष नहीं भावमे, शुद्ध निरंजन आप ।
ज्योकेत्यो तुम थिर रहो, तनक न व्यापै पाप ॥ॐ ह्रीं अर्हं अमन्मायायनम अर्घ्यं६०३

भवसागर से पार हो, पहुँचे शिवपद तीर ।
भावसहिततिन नमतहूँ, लहूँ न पुनि भव पीर॥ॐ ह्रीं अर्हं उद्धरणायनमः अर्घ्यं।६०४।

अग्निदेव या अग्नि दिश, ताके देव विशेष।
ध्यावत हैं तुम चरणयुग, इन्द्रादिक सुर शेष ॥ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदेवाय नम. अर्घ्यं।६०५।
विषय कषाय न रंच है, निरावरण निरमोह।
इन्द्री मनको दमन कर, बंदूं सुन्दर सोह ॥ॐ ह्री अर्हं संयमाय नम. अर्घ्यं ॥६०६॥
मोक्षरूप कल्याण कर, सुख—सागरके पार।
महादेव स्वशक्ति धर, विद्या तिय भरतार॥ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नम' अर्घ्यं।६०७।
पुष्पभेट धरजजत सुर, निजकर अजुंलि जोड़।
कमलापति कर कमलमे, धरै लक्ष्मी होड़॥ॐ ह्री अर्हं पुष्पाजलये नम' अर्घ्यं।६०८।
पूरण ज्ञानानद मय, अजर अमर अमलान।
अविनाशीध्रुवअखिलपद, अधिकारीसबमान॥ॐ ह्रीं अर्हं शिवगुणायनम अर्घ्यं।६०९
रोग शोक भय आदि विन, राजत नित आनन्द।
खेदरहित रतिअरति विन, विकसत पूरणचंद्र ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्साहजिनायनम
जो गुण शक्ति अनन्त है, ते सब ज्ञान मझार।
एकनिष्ठ आकृति विविध, सोहतहै अविकार॥ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाय नम अर्घ्यं ६११।

परम पूज्य परधान है, परम शक्ति आधार।
परम पुरुष परमातमा, परमेश्वर सुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नम अर्घ्यं ।६१२।
दोष अकोष अरोष हो, सम सन्तोष अलोष।
पंच परम पद धारियत, भविजनको परिपोष॥ॐ ह्रीं अर्हं विमलेशायनम अर्घ्यं ६१३
पचकल्याणक युक्त है, समोसरण ले आदि।
इन्द्रादिक नितकरतहैं, तुम गुणगण अनुवाद ॥ॐ ह्रीं अर्हं यशोधराय नम अर्घ्य ।६१४
कृष्ण नाम तीर्थेश है, भावी काल कहाय।
सुमति गोपियन संग रमत, निजलीला दर्शाय॥ॐ ह्रीं अर्हं कृष्णाय नम अर्घ्यं ।६१५।
सम्यग्ज्ञान जु समति धर, मिथ्या मोह निवार।
परहितकर उपदेश हैं, निश्चय वा व्यवहार ॥ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमतये नमःअर्घ्य ।६१६
वीतराग सर्वज्ञ हैं, उपदेशक हितकार।
सत्यारथ परमाण कर, अन्य सुमति दातार ॥ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमतये नमःअर्घ्यं ।६१७
मायाचार न शल्य है, शुद्ध सरल परिणाम।
ज्ञानानंद स्वलक्ष्मी, भोगत हैं अभिराम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमःअर्घ्यं ॥६१८॥

शील स्वभाव सुजन्म लै, अन्त समय निरवाण।
भविजन आनंदकार हैं, सर्व कलुषता हान ॥ॐह्रींअर्हं शांतिजिनायनमःअर्घ्यं।६१९।

धरम रूप अवतार हो, लोक पापको भार।
मृतक स्थल पहुँचाइयो,सुलभकियोसुखकार॥ॐह्रीं अर्हं वृषभाय नमः अर्घ्यं।६२०

अन्तर बाहिर शत्रुको, निमिष परै नहीं जोर।
विजय लक्ष्मी नाथ हो, पूजूं द्वय कर जोर॥ॐह्रीं अर्हं अजिताय नमःअर्घ्यं॥६२१।

तीन लोक आनद हो, श्रेष्ठ जन्म तुम होत।
स्वर्ग मोक्ष दातार हो, पावत नहीं कुमोत॥ॐ ह्रीं अर्हं सम्भवाय नमः अर्घ्यं।६२२।

परम सुखी तुम आप हो, पर आनंद कराय।
तुमको पूजत भावसों, मोक्ष लक्ष्मी पाय॥ॐह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमःअर्घ्यं।६२३

सब कुवादि एकांतको, नाश कियो छिन मांहि।
भविजन मन संशयहरण, और लोकमें नांहि॥ ॐह्रींअर्हं सुमतयेनमः अर्घ्यं।६२४।

भविजन मधुकर कमल हो, धरत सुगन्ध अपार।
तीन लोकमें विस्तरी, सुयश नामको धार॥ॐह्रींअर्हं पद्मप्रभायनमः अर्घ्यं।६२५।

पारस लोहा हेम करि, तुम भव बंध निवार ।
मोक्ष हेतु तुम श्रेष्ठ गुण, धारत हो हितकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं ।१२६।
तीन लोक आताप हर, मुनि–मन–मोदन चन्द ।
लोक प्रिय अवतार हो, पाऊं सुख तुम चंद ॥ ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रप्रभाय नमः अर्घ्यं ।१२७।
मन मोहन सोहन महा, धारै रूप अनूप ।
दरशत मन आनंद हो, पायो निज रस रूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पदंताय नमः अर्घ्यं ।१२८।
भव भव दाह निवार कर, शीतल भए जिनेश ।
मानो अमृत सींचियो, पूजत सदा सुरेश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शीतलनाथाय नमः अर्घ्यं ।१२९।
तीर्थंकर श्रेयांस हम देहो श्री शुभ भाग ।
श्रीसु अनंत चतुष्ट हो, और सकल दुरभाग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं ।१३०।
त्रस नाड़ी या लोकमें, तुम हो पूज्य प्रधान ।
तुमको पूजत भावसो, पाऊं सुख निरवाण ॥ ॐ ह्रीं अर्हं वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं ।१३१।
द्रव्य भाव मल रहित हैं, महा मुनिनके नाथ ।
इन्द्रादिक पूजत सदा, नमूं पदांबुज माथ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं विमलनाथाय नमः अर्घ्यं ।१३२।

जाको पार न पाइयो, गणधर और सुरेश।
थकित रहै असमर्थ करि, प्रणमे संत हमेश।। ॐह्रीमर्हं अनंतनाथायनम अर्घ्यं।६३३
अनागार आगारके, उद्धारक जिनराज।
धर्मनाथ प्रणमूं सदा, पाऊं शिवसुख साज।। ॐह्रीमर्हं धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं।६३४।
शांति रूप पर शांति कर, कर्म दाह विनिवार।
शांति हेतु बंदूं सदा, पाऊं भवदधि पार।। ॐह्री अर्हं शांतिनाथाय नम. अर्घ्यं।६३५।
क्षुद्र वीर्य सब जीवके, रक्षक है तीर्थेश।
शरणागत प्रतिपाल कर, ध्यावै सदा सुरेश।। ॐह्री अर्हंकुन्थुनाथायनमः अर्घ्यं६३६
पूजनीक सब जगतके, मंगलकारक देव।
पूजत है हम भावसो, विनशै अघ स्वयमेव।। ॐह्री अर्हं अरनाथाय नम अर्घ्यं।६३७।।
मोह काम भट जीतियो, जिन जीतो सब लोक।
लोकोत्तम जिनराजके, नमूं चरण दे धोक।। ॐह्रीमर्हं मल्लिनाथाय नम अर्घ्यं ६३८
पंच पापको त्यागकरि, भव्य जीव आनन्द।
भये जासु उपदेशतें, पूजत हूं पद वृन्द।। ॐ ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रताय नम अर्घ्यं ।।६३९।।

सुरनर मुनि नित नमन करि, जान धरम अवतार ।
तिनको पूजूं भाव युत, लहूँ भवार्णव पार ॥ॐ ह्रीं अर्हं नमिनाथायनम अर्घ्यं६४०
नेम धर्म में नित रमे, धर्मधुरा भगवान ।
धर्मचक्र जगमे फिरे, पहुँचावे शिव थान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नेमिनाथाय नम अर्घ्यं ।।६४१।
शरणागति निज पास दो, पाप फांस दुख नाश ।
तिसको छेदो मूलसों, देह मुकत गति वास ॥ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नम अर्घ्यं ।६४२।
वृद्ध भावतें उच्चपद, लोक शिखर आरूढ ।
केवल लक्ष्मी बर्द्धता, भई सु अन्तर गूढ ॥ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमानाय नम अर्घ्यं ।।६४३।।
अतुल वीर्य तन धरत हैं, अतुल वीर्य मन बीच ।
कामिन वश नही रंचभी, जैसे जल बीचमीच ॥ॐ ह्रीं अर्हं महावीरायनम.अर्घ्यं।६४४
मोह सुभटकूं पटकियो, तीन लोक परशंस ।
श्रेष्ठ पुरुष तुम जगतमें, कियो कर्म विध्वंस ॥ॐ ह्रीं अर्हं सुवीराय नमःअर्घ्यं ।६४५।
मिथ्या–मोह निवार करि, महा सुमति भण्डार ।
शुभ मारग दरशाइयो, शुभअरुअशुभ विचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं सन्मतये नम.अर्घ्यं।६४६

निज आश्रय निर्विघ्न नित, निज लक्ष्मी भण्डार ।
चरणाम्बुजनितनमत हम, पुष्पांजलिशुभधार ॐह्रीं अर्हं महापद्माय नम अर्घ्यं ६४७।

हो देवाधीदेव तुम, नमत देव चउ भेव ।
धरो अनत चतुष्टपद, परमानंद अभेव॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुरदेवाय नम अर्घ्यं ॥६४८॥

निरावर्ण आभास है, ज्यो बिन पटल दिनेश ।
लोकालोक प्रकाश करि, सुन्दर प्रभा जिनेश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नम अर्घ्यं ॥

आतमीक जिन गुण लिये, दीप्ति सरूप अनूप ।
स्वयं ज्योति परकाशमय, बंदत हूं शिवभूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्वयप्रभाय नम अर्घ्यं ।

निजशक्ती निज करण है, साधन वाह्य अनेक ।
मोहसुभट क्षयकरनको, आयुध राशि विवेक॥ ॐ ह्रीं अर्हं सर्वायुधाय नम अर्घ्यं ।

जयजय सुरधुनि करत है, तथा विजय निधिदेव ।
तुम पद जे नर नमत है, पावै सुख स्वयमेव॥ ॐ ह्रीं अर्हं जयदेवाय नम अर्घ्यं ॥

तुम सम प्रभा न औरमें, धरो ज्ञान परकाश ।
नाथ प्रभा जगमे भये, नमत मोहतम नाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं प्रभादेवाय नम अर्घ्यं ।६५३

रक्षक हो षट्कायके, दया सिन्धु भगवान ।
शशिसमजिय आह्लादकरिपूजनीकधरिध्यान॥ॐह्रीअर्हं उदकाय नम.अर्घ्यं।६५४
समाधान सबके करै, द्वादश सभा मझार ।
सर्वअर्थ परकाश कर, दिव्य ध्वनि सुखकार ॥ॐह्री अर्हं प्रश्नकीर्तये नमःअर्घ्यं ।
काहू विधि बाधा नहीं, कबहूं नहीं व्यय होय ।
उन्नति रूप विराजते, जयवन्तो जग सोय ॥ॐ ह्री अर्हं जयाय नम अर्घ्यं ॥६५६।
केवल ज्ञान स्वभावमे, लोकत्रय इक भाग ।
पूरणताको पाइयो, छांडि सकल अनुराग ॥ ॐ ह्री अर्हं पूर्णांबुधाय नमःअर्घ्यं ।
पर आलिंगन भाव तज, इच्छा क्लेश विडार ।
निज संतोष सुखी सदा, पर संबंध निवार ॥ॐह्री अर्हं निजानंदसंतुष्टजिनाय नम अर्घ्यं
मोहादिक मल नाशकर, अतिशय करि अमलान ।
विमल जिनेश्वर मैं नमूं,तीन लोक परधान॥ॐह्रीअर्हं विमलप्रभायनम अर्घ्यं।६५९
स्वपदमे नित रमत है, कभी न आरति होय ।
अतुलवीर्य विधि जीतियो,नमूं जोरकरदोय॥ॐह्रीअर्हं महाबलाय नम.अर्घ्यं।६६०।

द्रव्य भाव मल कर्म है, ताको नाश करान ।
शुद्धनिरंजन होरहै, ज्यों बादल विन भान ।।ॐ ह्री अर्हं निर्मलाय नम अर्घ्यं ।६६१।

तुम चित्राम अरूप है, सुरनर साधु अगम्य ।
निराकार निर्लेप है, धारत भाव असम्य ।। ॐ ह्रीअर्हं चित्रगुप्ताय नम अर्घ्यं ।६६२।

मग्न भये निज आतममें, पर पदमें नहिं वास ।
लक्ष अलक्ष विराजते, पूरो मन की आश ।।ॐ ह्रीअर्हंसमाधिगुप्तये नम अर्घ्यं।।६६३।।

निजगुण आतम ज्ञान है, पर सहाय नहीं चाह ।
स्वयं भाव परकाशियो, नमत मिटै भव दाह ।।ॐह्रीं अर्हं स्वयभुवे नम अर्घ्यं ।६६४।

मन मोहन सोहन महा, मुनि मन रमण अनन्द ।
महातेज परताप हैं, पूरण ज्योति अमन्द ।।ॐ ह्री अर्हं कदर्पाय नमःअर्घ्यं ।।६६५ ।

विजय लक्ष्मी नाथ है, जीते कर्म प्रधान ।
तिनको पूजै सर्व जग, मै पूजो धरि ध्यान ।।ॐह्रीअर्हं विजयनाथाय नम अर्घ्यं।६६६।

गणधरादि योगीश जे, विमलाचारी सार ।
तिनके स्वामी हो प्रभू, राग द्वेष मल जार ।।ॐह्री अर्हं विमलेशाय नम अर्घ्यं ।।६६७।

दिव्य अनक्षर ध्वनि खिरै, सर्व अर्थ गुणधार ।
भविजन मन संशय हरन, शुद्ध बोध आधार ।ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यवादायनम अर्घ्यं।६६८।
नहीं पार जा वीर्यको, स्वाभाविक निरधार ।
सो सहजै गुण धरत हो, नमूं लहूँ भवपार ।।ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्याय नम अर्घ्यं६६९
पुरुषोत्तम परधान हो, परम निजानंद धाम ।
चक्रपती हरिबल नमे, मै पूजूं निष्काम ।।ॐ ह्री अर्हं महापुरुषदेवाय नम अर्घ्यं।६७०।
शुभ विधि सब आचरण हैं, सर्व जीव हितकार ।
श्रेष्ठ बुद्ध अति शुद्ध है, नमूं करो भवपार ।।ॐ ह्री अर्हं सुविधये नमोऽर्घ्यं ।।६७१।।
है प्रमाण करि सिद्ध जे, ते हैं बुद्धि प्रमाण ।
सो विशुद्धमय रूप है, संशय तुमको भान ।।ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापरिमाणाय नम अर्घ्यं६७२
समय प्रमाण निमित तनी, कभी अन्त नहीं होय ।
अविनाशी थिर पद धरै, मैं प्रणमूं हूँ सोय ।।ॐ ह्री अर्हं अव्ययाय नम अर्घ्यं ।६७३।
प्रतिपालक जगदीश है, सर्वमान परमान ।
अधिकशिरोमणिलोकगुरु,पूजतनितकल्याण।।ॐ ह्री अर्हं पुराणपुरुषाय नम अर्घ्यं

धर्म सहायक हो प्रभू, धर्म मार्ग की लीक ।
शुभ मर्यादा बंध प्रति, करण चलावन ठीक।। ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसारथये नम अर्घ्यं।६७५
शिव मारग दिखलाय कर, भविजन कियो उद्धार ।
धर्म सुयश विस्तार कर, बतलायो शुभ सार।। ॐ ह्रीं अर्हं शिवकीर्तिजिनाय नमः अर्घ्यं।
मोह अन्ध हन सूर्य हो, जगदीश्वर शिवनाथ ।
मोक्षमार्ग परकाश कर, नमूं जोर जुगहाथ।। ॐ ह्रीं अर्हं मोहांधकारविनाशकजिनाय नम
मन इन्द्री व्यापार विन, भाव रूप विध्वंश ।
ज्ञान अतीन्द्रिय धरतहो, नमत नशै अघवंश।। ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियज्ञानरूपजिनायनम
पर उपदेश परोक्ष विन, साक्षात् परतक्ष ।
जानत लोकालोक सब, धारै ज्ञान अलक्ष ।। ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानजिनाय नम अर्घ्यं ६७९
व्यापक हो तिहुँ लोकमें, ज्ञान ज्योति सब ठौर ।
तुमको पूजत भावसों, पाऊं भवदधि ओर ।। ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतये नम. अर्घ्यं।६८०।
इन्द्रादिक कर पूज्य हो, मुनिजन ध्यान धराय ।
तीन लोक नायक प्रभू, हमपर होउ सहाय।। ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं ।

तुम देवनके देव हो, महादेव है नाम ।
विन ममत्व शुद्धात्मा, तुम पद करूं प्रणाम ।।ॐ ह्री अर्हंदिगम्बराय नम अर्घ्यं ।६८२
सर्व व्यापि कुमती कहैं, करो भिन्न विश्राम ।
जगसों तजी समीपता, राजत हो शिवधाम ।।ॐह्रींअर्हं निरतरजिनायनम अर्घ्यं ६८३
हितकारी अति मिष्ट हैं, अर्थ सहित गम्भीर ।
प्रियवाणी कर पोखते, द्वादश सभासु तीर ।।ॐह्रीअर्हं मिष्टदिव्यध्वनिजिनायनमःअर्घ्यं
भवसागरके पार हो, सुखसागर गलतान ।
भव्य जीव पूजत चरन, पावै पद निरवान ।।ॐह्रीअर्हं भवांतकाय नमःअर्घ्य ।६८५।
नहीं चलाचल भाव हैं, पाप कलाप न लेश ।
दृढ़ परिणत निजआत्मरति,पूजूं श्रीमुक्तेश ।।ॐह्रीअर्हं दृढव्रताय नम अर्घ्यं ।६८६
असंख्यात नय भेद है, यथायोग्य वच द्वार ।
तिन सबको जानोसुविध,महानिपुणमतिलार ।।ॐह्रीअर्हंनयात्तु गायनम अर्घ्यं।६८७
क्रोधादिक सु उपाधि हैं, आत्म विभाव कराय ।
तिनको त्याग विशुद्ध पद,पायो पूजूं पाय ।।ॐह्रीअर्हं निष्कलकाय नम.अर्घ्यं ।६८८।

ज्यों शशि किरण उद्योत है, पूरण प्रभा प्रकाश ।
कलाधार सोहै सु इम, पूजत अघ-तम नाश ॥ॐ ह्रीअर्हं पूर्णकलावरायनमः अर्घ्यं ६८९
जन्म मरणको आदि ले, जगमे क्लेश महान ।
तिसके हर्ता हो प्रभू, भोगत सुख निर्वाण ॥ॐ ह्रीअर्हं सर्वक्लेशहराय नम अर्घ्यं।६९०।
ध्रुव स्वरूप थिर हैं सदा, कभी अन्त नहीं होय ।
अव्याबाध विराजते, पर सहायको खोय ॥ॐ ह्रीअर्हं ध्रौव्यरूपजिनायनम.अर्घ्यं ६९१
व्यय उत्पाद सुभाव हैं, ताको गौण कराय ।
अचलअनंतस्वभावमें,तीनलोकसुखदाय ॥ॐ ह्रीअर्हं अक्षयानतस्वभावात्मकजिनाय
स्व ज्ञानादि चतुष्ट पद, हृदय माँहि विकसाय ।
सोहत हैं शुभ चिह्न करि,भवि आनंद कराय ॥ॐ ह्रीअर्हं श्रीवत्सलाछनायनमः अर्घ्यं।
धर्म रीति परकट कियो, युगकी आदि मझार ।
भविजन पोषे सुख सहित,आदि धर्मअवतार ॥ॐ ह्रीअर्हंअ दिब्रह्मणेनम अर्घ्यं।६९४
चतुरानन परसिद्ध हैं, दर्श होय चहुँ ओर ।
चउ अनुयोग बखानते, सब दुख नासौ मोर ॥ॐ ह्रीअर्हं चतुर्मुखाय नम अर्घ्यं।६९५।

जगत जीव कल्याण कर, धर्म मर्याद बखान ।
ब्रह्म ब्रह्म भगवान हो, महामुनी सब मान ॥ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं ॥६६६

प्रजापति प्रतिपाल कर, ब्रह्मा विधि करतार ।
मन्मथ इन्द्री वश करन, बंदूं सुख आधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः अर्घ्यं ॥६६७॥

तीन लोकको लक्ष्मी, तुम चरणाम्बुज वास ।
श्रीपति श्रीधर नाम शुभ, दिव्यासन सुखरास ॥ॐ ह्रीं अर्हं कमलासनाय नमः अर्घ्यं ।

बहुरि न जगमें भ्रमण है, पंचम गति में बास ।
नित्य अमरता पाइयो, जरा मृत्युको नाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं अब्जभुवे नमः अर्घ्यं ॥६६९

पांच काय पुद्गलमई, तामें एक न होय ।
केवल आत्म प्रदेश ही, तिष्ठत है दुख खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं ७००।

लोक शिखर सुखसों रहै, ये ही प्रभुता जान ।
धारत हैं तिहुँ लोकमें, अधिक प्रभा परधान ॥ॐ ह्रीं अर्हं लोकशिखरदिवासिने नमः अर्घ्यं,

अधिकप्रतापप्रकाश है, मोह तिमिरको नाश ।
शिवमग दिखलावत सही, सूरजसमप्रतिभास ॥ॐ ह्रीं अर्हं सुरज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं ।७०२।

प्रजापाल हित धार उर, शुभ मारग बतलाय ।
सत्यारथ ब्रह्मा कहै, तुमरे बंदू पाय ।।ॐ ह्री अर्हं प्रजापतये नम.अर्घ्यं ।।७०३।।
गर्भ समय षट्मास ही, प्रथम इन्द्र हर्षाय ।
रत्नवृष्टि नित करत है, उत्तम गर्भ कहाय ।।ॐह्रीअर्हं हिरण्यगर्भाय नम.अर्घ्यं ।७०४
तुम हि चार अनुयोगके, अंग कहै मुनिराज ।
तुमसो पूरण श्रुत सही, नान्तर मंगल काज ।।ॐह्रीअर्हं वेदांगाय नम अर्घ्यं।।७०५।।
तुम उपदेश थको कहै, द्वादशांग गणराज ।
पूरण ज्ञाता हो तुम्हीं, प्रणमूं मै शिवकाज ।।ॐ ह्री अर्हं पूर्णवेदज्ञानाय नम.अर्घ्यं ।
पार भये भवसिंधु के, तथा सुवर्ण समान ।
उत्तम निर्मल थुति धरै, नमत कर्ममल हान ।।ॐह्रीअर्हं भवसिंधुपारगायनम अर्घ्यं ।
सुखाभास पर निमित्तते, पर उपाधिते होत ।
स्वतः सुभाव धरो सही, सत्यानन्द उद्योत ।।ॐ ह्रीअर्हं सत्यानन्दाय नम अर्घ्यं ।७०८
मोहादिक परबल महा, सो इसको तुम जीत ।
औरनकी गिनती कहां, तिष्ठो सदा अभीत ।।ॐह्री अर्हं अजयाय नम अर्घ्यं।७०९।

दिव्य रत्नमय ज्योतिहो, असित अकंप अडोल ।
मनवांछित फलदाय हो, राजत अखय अमोल ॥ॐ ह्रीं अर्हं मनवांछितफलदाय नम •

देह धार जीवन मुकत, परमातम भगवान ।
सूर्यसमान सुदीप्त धर, महा ऋषीश्वर जान ॥ॐ ह्रीं अर्हं जीवनमुक्तजिनाय नम अर्घ्यं

स्व भय आदिकसे परै, पर भय आदि निवार ।
पर उपाधि बिन नित सुखी, बंदूं भाव सम्हार ॥ॐ ह्रीं अर्हं शतानदायनम अर्घ्यं ७१२

ईश्वर हो तिहुँ लोकके, परम पुरुष परधान ।
ज्ञानानन्द स्वलक्ष्मी, भोगत नित अमलान ॥ॐ ह्रीं अर्हं विष्णवे नम.अर्घ्यं ।७१३।

रत्नत्रय पुरुषार्थ करि, हो प्रसिद्ध जयवंत ।
कर्मशत्रुको क्षय कियो, शीश नमें नित संत॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिविक्रमाय नम अर्घ्यं ।७१४।

सूरज हो शिवराहके, कर्म दलन बल सूर ।
संशय केतुनि ग्रहणसम, महासहजसुखपूर॥ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमार्गप्रकाशकादित्यरूप जिनाय

सुभग अनंत चतुष्टपद, सोई लक्ष्मी भोग ।
स्वामी हो शिवनारिके, नमूं जोरि तिहुँ योग ॥ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नम:अर्घ्यं ।७१६।

इन्द्रादिक पूजत जिन्हैं, पंचकल्याणक थाप ।
अद्भुत पराक्रमको धरैं, नमंत नसै भव पाप ॥ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषोत्तमायनमः अर्घ्यं ७१७
निज प्रदेशमें बसत हैं, परमातमको वास ।
आप मोक्षकेनाथ हो, आप हि मोक्ष निवास ॥ॐ ह्रीं अर्हं वैकुण्ठाधिपतयेनमः अर्घ्यं ।७१८
सर्व लोक कल्याणकर, विष्णु नाम भगवान ।
श्री अरहंत स्व लक्ष्मी, ताके भरता जान ॥ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकश्रेयस्करजिनायनम ०
मुनिमन कुमुदनि मोदकर, भव संताप विनाश ।
पूरण चन्द्र त्रिलोकमें, पूरण प्रभा प्रकाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमोऽर्घ्यं ॥७२०।
दिनकर सम परकाश कर, हो देवनके देव ।
ब्रह्माविष्णु कहातहो, शशि समदुति स्वयमेव ॥ॐ ह्रीं अर्हं हरये नमोऽर्घ्यं ॥७२१।
स्वयं विभवके हो धनी, स्वयं ज्योति परकाश ।
स्वयंज्ञानदृग वीर्य सुख, स्वयं सुभाव विलास ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्वयम्भुवे नमः अर्घ्यं।७२२।
धर्म-भारधर धारिणी, हो जिनेन्द्र भगवान ।
तुमको पूजों भावसो, पाऊं पद निर्वाण ॥ॐ ह्रीं अर्ह विश्वम्भरायनम अर्घ्यं ॥७२३॥

असुर काम अर हास्य इन, आदि कियो विध्वंश ।
महाश्रेष्ठ तुमको नमूं, रहै न अघको अंश ।।ॐ ह्रीं अर्हं असुरध्वंसिने नमः अर्घ्यं ।७२४।

सुधाधार द्यो अमरपद, धर्म थूलकी बेल ।
शुभ मति गोपिन संगमें, हमे राख निज गेल ।।ॐ ह्रीं अर्हं माधवाय नमः अर्घ्यं ।७२५

विषय कषाय स्व वश करी, बलि वश कियो जु काम ।
महा बली परसिद्ध हो, तुम पद करूं प्रमाण ।।ॐ ह्रीं अर्हं बलिबन्धनाय नमः अर्घ्यं ।७२६

तीन लोक भगवान हो, निज परके हितकार ।
सुरनर पशु पूजत सदा, भक्ति भाव उर धार ।।ॐ ह्रीं अर्हं अधोक्षजाय नम अर्घ्यं ।७२७

हितमित मिष्ट प्रिय वचन, अमृत सम सुखदाय ।
धर्म मोक्ष परगट करन, बंदूं तिनके पाय ।।ॐ ह्रीं अर्हं हितमितप्रियवचनजिनाय नम. अर्घ्यं

निज लीलामे मगन हैं, सांचा कृष्ण सु नाम ।
तीन खंड तिहुँ लोकके, नाथ करूं परणाम ।।ॐ ह्रीं अर्हं केशवाय नम अर्घ्यं ।।७२६।

सूखे तृण सम जगत की, विभव जान करवास ।
धरै सरलता जोगमै, करै पापको नाश ।।ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं ।।७३०।

श्रीकहिये आतम विभव, ताकरि हो शुभ नीक।
सोहत सुन्दर वदनकरि, सज्जनचित रमणीक॥ ॐ ह्रीअर्ह श्रीवत्सलाछनाय नम ।
सर्वोत्तम अतिश्रेष्ठ है, जिन सन्मति थुति योग।
धर्म मोक्ष मारग कहै, पूजत सज्जन लोग॥ ॐ ह्री अर्ह श्रीमतये नम अर्घ्यं ॥७३२॥
अविनाशी अविकार है, नहीं चिगे निज भाव।
स्वयं सुआश्रय रहत है, मै पूजूं धर चाव॥ ॐ ह्रीअर्ह अच्युताय नम.अर्घ्यं ।७३३।
नाशी लौकिक कामना, निर इच्छुक योगीश।
नार श्रृंगार न मन बसै, बंदत हूं लोकीश॥ ॐ ह्रींअर्हं नरकान्तकाय नमःअर्घ्यं ।७३४।
व्यापक लोकालोक मे, विष्णु रूप भगवान।
धर्मरूप तरु लहि लहै, पूजत हूं धर ध्यान॥ ॐ ह्री अर्हं विश्वसेनाय नम.अर्घ्यं ।७३५।
धर्म चक्र सन्मुख चलै, मिथ्यामति रिपुघात।
तीन लोक नायक प्रभू, पूजत हूं दिनरात॥ ॐ ह्रीं अर्ह चक्रपाणये नम.अर्घ्यं ।७३६।
सुभग सुरूपी श्रेष्ठ अति, जन्म धर्म अवतार।
तीन लोकको लक्ष्मी, है एकत्र उधार॥ ॐ ह्री अर्हं पद्मनामाय नम अर्घ्यं।७३७।

मुनिजन आदर जोग हो, लोक सराहन योग ।
सुरनरपशु आनंद कर,सुभग निजातम भोग ।। ॐ ह्रीं अर्हं जनार्दनाय नम अर्घ्यं ।७३८

सब देवनके देव हो, महादेव विख्यात ।
ज्ञानामृत सुखसों खिरै, पीवत भवि सुख पात ।। ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकण्ठायनम अर्घ्यं ।७३९

पाप पुञ्जका नाश करि, धर्म रीत प्रगटाय ।
तीन लोकके अधिपती, हमपर दया कराय ।। ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाधिपणकराय नम. अर्घ्यं

स्वयं व्यापि जिन ज्ञान करि, स्वयं प्रकाश अनूप ।
स्वयं भाव परमातमा, बंदूं स्वयं सरूप ।। ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभवे नम अर्घ्यं ।७४१।

सब देवनके देव हो, महादेव है नाम ।
स्वपर सुगंधित रूपहो,तुम पद करूं प्रणाम ।। ॐ ह्रीं अर्हं लोकपालाय नम अर्घ्यं ।७४२

धर्मध्वजा जग फरहरै, सब जग माने आन ।
सबजगशीशनमेचरण, सब जगको सुखदान ।। ॐ ह्रीं अर्हं वृषभकेतवे नम अर्घ्यं ।७४३।

जन्म जरा मृत जीतिकै, निश्चल अव्यय रूप ।
सुखसों राजत नित्य हो, बंदूं हूं शिवभूप ।। ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युञ्जयाय नम. अर्घ्यं ।७४४।

सब इन्द्री मन जीतिके, करि दीनो तुम व्यर्थ ।
स्वयं ज्ञान इन्द्री जग्यौ, नमूं सदा शिव अर्थ ।। ॐ ह्री अर्हं विरूपाक्षाय नम अर्घ्यं ।७४५।

सुन्दररूप मनोज्ञ है, मुनिजन मन वशकार ।
असाधारण शुभ अंगु लगें, केवलज्ञान मझार ।। ॐ ह्रीअर्हं कामदेवाय नमःअर्घ्यं ।७४६।

सम्यग्दर्शन ज्ञान अरु, चारित एक सरूप ।
धर्म मार्ग दरशात है, लोकत रूप अनूप ।। ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नम अर्घ्यं ।७४७।

निजानन्द स्व लक्ष्मी, ताके हो भरतार ।
शिवकामिनि नितभोगते, परमरूप सुखकार ।। ॐ ह्रींअर्हं उमापतये नम अर्घ्यं ।७४८

जे अज्ञानी जीव हैं, तिन प्रति बोध करान ।
रक्षक हो षट् कायके, तुम सम कौन महान ।। ॐ ह्री अर्हं पशुपतये नमःअर्घ्यं ।।७४९।।

रमण भाव निज शक्तिसो, धरैं तथा द्युति काम ।
कामदेव तुम नाम है, महाशक्ति बल धाम ।। ॐ ह्रीं अर्हं शम्बरारये नम अर्घ्यं ।७५०।

कामदाहको दम कियो, ज्यो अगनी जलधार ।
निजआतमआचरणनित, महाशीलश्रियसार ।। ॐ ह्रीअर्हं त्रिपुरान्तकाय नम'अर्घ्यं ।

निज सन्मति शुभ नारसो, मिले रलै अरधांग ।
ईश्वर हो परमातमा, तुम्हैं नमूं सर्वांग ॥ ॐ ह्रीमर्हं अर्द्धनारीश्वराय नम. अर्घ्यं।७५२
नहीं चिगे उपयोगसे, महा कठिन परिणाम ।
महावीर्य धारक नमूं, तुमको आठों जाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं रुद्राय नम अर्घ्यं ॥७५३॥
गुण पर्याय अनन्त युत, वस्तु स्वयं परदेश ।
स्वयं काल स्व क्षेत्र हो, स्वयं सुभाव विशेष । ॐ ह्रीमर्हं भावाय नम अर्घ्यं । ७५४॥
सूक्षम गुप्त स्वगुण धरै, महा शुद्धता धार ।
चारज्ञान धर नहीं लखै, मै पूजूं सुखकार ॥ ॐ ह्रीअर्हंगभकल्याणकजिनायनमः अर्घ्यं०
शिव तिय संग सदा रमें, काल अनत न और ।
अविनाशी अविकार हो, महादेव शिरमौर ॥ ॐ ह्री अर्हंसदाशिवाय नम. अर्घ्यं।७५६
जगत कार्य तुमसो सरै, सब तुमरे आधीन ।
सबके तुम सरदार हो, आप धनी जगदीन ॥ ॐ ह्री अह जगत्कर्त्रे नम अर्घ्यं ।७५७।
महा घोर अंधियार है, मिथ्या मोह कहाय ।
जगमे शिव मंग लुप्तथा, ताको तुम दरशाय ॥ ॐ ह्रींअर्हं अन्धकारातकायनम. अर्घ्यं७५८

संतति पक्ष जुदी नहीं, नहीं आदि नहिं अन्त ।
सदा काल बिन काल तुम, राजत हो जयवंत ॥ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय नम अर्घ्यं
तीन लोक आराध्य हो, महा यज्ञको ठाम ।
तुमको पूजत पाइये, महा मोक्षसुख धाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं हराय नम अर्घ्य ॥७६०॥
महा सुभट गुणरास हो, सेवत हैं तिहुँ लोक ।
शरणागत प्रतिपालकर, चरणांबुज दूं धोक ॥ॐ ह्रीं अर्हं महासेनायनम. अर्घ्यं ।७६१
गणधरादि सेवें चरण, महा गणपती नाम ।
पार करो भवसिंधुतें, मंगलकर सुखधाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं महागणपतिजिनाय नम. अर्घ्य
चार संघके नाथ हो, तुम आज्ञा शिर धार ।
धर्म मार्ग प्रवर्त्त कर, बंदूं पाप निवार ॥ॐ ह्रीं अर्हं गणनाथाय नम अर्घ्य ॥७६३॥
मोह सर्पके दमनको, गरुड समान कहाय ।
सबके आदरकार हो, तुम गणपति सुखदाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं महाविनायकाय नम अर्घ्य ।
जे मोही अल्पज्ञहैं, तिनसों हो प्रतिकूल ।
धर्माधर्म विरोध कर, धरूं शीश पग धूल ॥ॐ ह्रीं अर्हं विरोधविनाशकजिनाय नम अर्घ्यं

जितने दुख संसारमे, तिनको वार न पार ।
इक तुम ही जानो सही, ताहि तजो दुखभार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः
सब विद्याके बीज हो, तुम वाणी परकाश ।
सकल अविद्या मूलतें, इक छिनमें हो नाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।१७६७
पर निमित्तसे जीवको, रागादिक परिणाम ।
तिनको त्याग सुभावमें, राजत है सुखधाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।१७६८
अन्तर बाहिर प्रबल रिपु, जीत सके नहीं कोय ।
निर्भयअचल सुथिर रहै, कोटि शिवालयसोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।१७६९
घन सम गर्जत वचन हैं, भागे कुनय कुवादि ।
प्रबल प्रचंड सुवीर्य है, धरैं सुगुण इत्यादि ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।१७७०
पाप सघन वन, दाह दव, महादेव शिव नाम ।
अतुल प्रभा धारो महा, तुम पद करूं प्रणाम ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।१७७१
तुम अजन्म विन मृत्यु हो, सदा रहो अविकार ।
ज्योंके त्यो मणि दीप सम, पूजत हूं मन धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं

संस्कारादि स्वगुण सहित, तिन करि हो आराध्य ।
तुमको बंदों भावसों, मिटै सकल दुख व्याध्य ॥ॐ ह्रीं अर्हं द्विजाराध्याय नमः अर्घ्यं ७७३
निज आतम निज ज्ञान है, तामे रुचि परतीत ।
पर पद सोहै अरुचिता, पाई अक्षय जीत ॥ॐ ह्रीं अर्हं सुधाशोचिषे नमः अर्घ्यं ।७७४।
जन्म मरणको आदि लै, सकल रोगको नाश ।
दिव्य औषधि तुम धरों, अमर करनसुखरास ॥ॐ ह्रीं अर्हं औषधीशाय नमः अर्घ्यं ।७७५।
पूरण गुण परकाश कर, ज्यो शशि किरण उद्योत ।
मिथ्य तप निरवारतै, दर्शित आनंद होत ॥ॐ ह्रीं अर्हं कमलानिधये नमः अर्घ्यं ।७७६।
सूर्य प्रकाश धरै सही, धर्म मार्ग दिखलाय ।
चार संघ नायक प्रभू, बंदूं तिनके पाय ॥ॐ ह्रीं अर्हं नक्षत्रनाथाय नमः अर्घ्यं ।७७७।
भव-तप-हर हो चन्द्रमा, शीतलकार कपूर ।
तुमको जो नर सेवते, पाप कर्म हो दूर ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शुभ्राशवे नमः अर्घ्यं ।७७८।
स्वर्गादिकको लक्ष्मी, तासो भी जु ग्लान ।
स्वै पदमें आनंद है, तीन लोक भगवान ॥ॐ ह्रीं अर्हं सौम्यभावरताय नमः अर्घ्यं ।७७९।

पर पदार्थ को इष्ट लखि, होत नहीं अभिमान ।
हो अबंध इस कर्मते, स्व आनन्द निधान ॥ॐ ह्रीं अर्हं कुमुदयाघवाय नम॰अर्घ्यं।७८०।
सब विभावको त्याग करि, है स्वधर्ममें लीन ।
तातें प्रभुता पाइयो, है नहीं बन्धाधीन ॥ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरतये नम अर्घ्यं ॥७८१॥
आकुलता नहीं लेश है, नहीं रहै चित भंग ।
सदा सुखी तिहुं लोकमें, चरन नमूं सब अंग ॥ॐ ह्रीं अर्हं आकुलतारहितजिनायनम ०
शुभ परिणति प्रकटायके, दियो स्वर्गको दान ।
धर्मध्यान तुमसे चले, सुमरत हो शुभ ध्यान ॥ॐह्री अर्हंपुण्यजिनाय नमःअर्घ्यं।७८३
भविजन करत पवित्र अति, पाप मैल प्रक्षाल ।
ईश्वर हो परमातमा, नमूं चरन निज भाल ॥ॐह्रीअर्हंपुण्यजिनेश्वरायनम अर्घ्यं।७८४
श्रावक या मुनिराज हो, धर्म आपसे होय ।
धर्मराज शुभ नीति करि, उन्मार्गनको खोय ॥ॐह्रीअर्हं धमराजाय नम अर्घ्यं ।७८५
स्वयं स्व आतम रस लहो, ताही कहिये भोग ।
अन्य कुपरिणतित्यागियो, नमूं पदांबुजयोग ॥ॐ ह्रींमर्हं भोगराजायनमःअर्घ्यं।७८६

दर्शन ज्ञान सुभाव धरि, ताहीके हो स्वामि ।
सब मलिनतात्यागियो,भयेशुद्धपरिणामि ।।ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनज्ञानचारित्रात्मजिनाय०

सत्य उचित शुभ न्यायमें, है आनन्द विशेख ।
सब कुनीतिको नाशकर, सर्व जीव सुख देख ।।ॐह्रीअर्हं भूतानन्दायनम अर्घ्यं।७८८

पर पदार्थके संगसे, दुखित होत सब जीव ।
ताके भयसो भय रहित,भोगें मोक्ष सदीव ।।ॐ ह्रींअर्हं सिद्धिकान्तजिनाय नम अर्घ्यं ।

जाको कभी न अन्त हो, सो पायो आनन्द ।
अचलरूपनिज आत्ममय, भाव अभावी द्वंद ।।ॐह्रींअर्हंअक्षयानदाय नम अर्घ्यं ।७९०

शिव मारग परकट कियो दोष, रहित वरताय ।
दिव्यध्वनि करि गर्ज सम, सर्व अर्थ दिखलाय ।।ॐह्रीअर्हं वृहतापतयेनम अर्घ्यं।७९१

चौपई छन्द——हितकारक अपूर्व उपदेश,तुमसम और नहीं देवेश ।
सिद्धसमूह जजूं मनलाय, भव भवमे सुखसंपतिदाय ।।
ॐ ह्रीं अपूर्वदेवोपदेष्ट्रे नमः अर्घ्यं ।।७९२।।

कर्मविषैं संस्कार विधान, तीनलोकमे विस्तर जान । सिद्धसमूह० ॥

ॐ ह्रीअर्हं सिद्धसमूहेभ्यो नम अर्घ्यं ॥ ७९३ ॥

धर्म उपदेश देत सुखकार, महाबुद्ध तुम हो अवतार । सिद्धसमूह० ॥

ॐ ह्री अर्हं शुद्धबुद्धाय नम अर्घ्यं ॥ ७९४ ॥

तीन लोकमे हो शशि सूर, निज किरणावलि करि तम चूर ।सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं तमोभेदने नम अर्घ्यं ॥ ७९५ ॥

धर्ममार्ग उद्योत करान, सब कुवादको कर हो हान । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं धर्ममार्गदशकजिनाय नम अर्घ्यं ॥ ७९६ ॥

सर्व शास्त्र मिथ्या वा सांच, तुम निज दृष्टि लियो है जांच । सिद्ध०

ॐ ह्री अर्हं सवशास्त्रनिर्णायिकजिनाय नम॰ अर्घ्यं ॥७९७॥

पंचमगति विन श्रेष्ठ न और, सो तुम पाय त्रिजग शिरमौर । सिद्ध०

ॐ ह्री अर्हं पचमगतिर्जिनाय नम अर्घ्यं । ७९८ ॥

श्रेष्ठ सुमति तुम्हीं हो एक, शिवमारग को जानो टेक । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं श्रेष्ठसुमतिदात्रीजिनाय नम अर्घ्यं ॥७९९॥

वृष मर्जाद भली विधि थाप, भविजन मेटे सब संताप । सिद्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नम॰ अर्घ्यं ॥ ८ • ॥

श्रेष्ठ करै कल्याण सु ज्ञान, सम्पूरण संकल्प निशान ।
सिद्धसमूह जजूं मनलाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ।।

ॐ ह्री अर्हं श्रेष्ठकल्याणकारकजिनाय नम. अर्घ्यं ।। ८०१ ।।

निज ऐश्वर्य धरो संपूर्ण, पर विभूति विन हो अघ चूर्ण । सिद्ध० ।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वरीयसम्पन्नाय नम॰ अर्घ्यं ।।८०२।।

श्रेष्ठ शुद्ध निजब्रह्म रमाय, मंगलमय पर मंगलदाय । सिद्ध० ।।

ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे नम॰ अर्घ्यं ।। ८०३ ।।

श्री जिनराज कर्मरिपु जीति, पूजनीक है सबके मीत । सिद्ध० ।।

ॐ ह्री अर्हं कर्मारिजिते नम अर्घ्यं ।। ८०४ ।।

षट् पदार्थ नव तत्त्व कहाय, धर्म अधर्म भलीविधि गाय । सिद्ध० ।।

ॐ ह्री अर्हं सर्वशास्त्रज्ञजिनाय नम अर्घ्यं । ८०५ ।।

है शुभ लक्षण मय परिणाम,पर उपाधिको नहिं कछु काम। सिद्ध०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुलक्षणजिनाय नम अर्घ्यं ।। ८०६ ।।

सत्य ज्ञानमय है तुम बोध, हेय अहेय बतायो सोध । सिद्ध० ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वबोधसत्वाय नम॰ अर्घ्यं ।।८०७।।

इष्टानिष्ट न राग न द्वेष, ज्ञाता दृष्टा हो अविशेष। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्विकल्पाय नमः अर्घ्यं ॥८०८॥

दूजो तुम सम नहीं भगवान, धर्माधर्म रीति बतलान। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं अद्वितीयबोधजिनाय नमः अर्घ्यं ॥८०९॥

महादुखी संसारी जान, तिनके पालक हो भगवान। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं लोकपालाय नमः अर्घ्यं ॥ ८१० ॥

जगविभूति निरइच्छुक होय, मानरहित आतम रत सोय। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं आत्मरसरतजिनाय नमः अर्घ्यं ॥ ८११ ॥

ज्यों शशि तापहरै अनिवार, अतिशय सहित शांति करतार। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं शांतिदात्रे नमः अर्घ्यं ॥ ८१२ ॥

हो निरभेद अछेद अशेष, सब इकसार स्वयं परदेश। सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं अभेद्याछेद्य-जिनाय नमः अर्घ्यं ॥८१३॥

मायाकृत सम पांचो काय, निजसों भिन्न लखो मत भाय। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचस्कंधमयात्मदृशे नमः अर्घ्यं ॥८१४॥

बीती बात देख संसार, भवतन भोग विरक्त उदार। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतार्थभावनासिद्धाय नमोऽर्घ्यं ॥ ८१५ ॥

धर्माधर्म जान सब ठीक, मोक्षपुरी दिखलायो लीक ।
सिद्धसमूह जजूं मनलाय, भव भवमें सुखसंपतिदाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननजिनाय नमः अर्घ्यं ॥८१६॥

वीतराग सर्वज्ञ सु देव, सत्यवाक वक्ता स्वयमेव । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं सत्यवक्त्रे नमः अर्घ्यं ॥८१७॥

मन वच काय योग परिहार, कर्मवर्गणा नाहिं लगार । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं निराश्रवाय नमः अर्घ्यं ॥८१८॥

चार अनुयोग कियो उपदेश, भव्य जीव सुख लहत हमेश । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं चतुर्भूमिकशासनाय नम अर्घ्यं ॥८१९॥

काहू पदसों मेल न होय, अन्वय रूप कहावै सोय । सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अन्वयाय नम अर्घ्यं ॥८२०॥

हो समाधिमे नित लवलीन, विन आश्रय नित ही स्वाधीन । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं समाधि-निमग्न-जिनाय नमः अर्घ्यं ॥८२१॥

लोक भाल हो तिलक अनूप, हो लोकोत्तम शेष स्वरूप । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं लोकमालतिलकजिनाय नमः अर्घ्यं ॥८२२॥

अक्षाधीन हीन है शक्त, तिसको नाश करी निज व्यक्त । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं तुच्छभावभिदे नम अर्घ्यं ॥८२३॥

जीवादिक षट् द्रव्य सुजान, तिनको भलीभांति है ज्ञान । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं षट्द्रव्यदृशे नमः अर्घ्यं ॥८२४॥

विकलरूप नय सकल प्रमाण, वस्तु भेद जानो स्वज्ञान । सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकलवस्तुविज्ञात्रे नम अर्घ्यं ॥८२५॥

सब पदार्थ दर्शन तुम बैन, संशय हरण करण सुख चैन । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं षोडशपदार्थवादिने नम. अर्घ्यं ॥८२६॥

वर्णन करि पंचासतिकाय, भव्य जीव संशय विनशाय । सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पचास्तिकायबोधकजिनाय नम अर्घ्यं ॥८२७॥

प्रतिबिंबित हो आरसि माहि, ज्ञानाध्यक्ष जान हो ताहि । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं ज्ञानाध्यक्ष जिनाय नमः अर्घ्यं ॥८२८॥

जामे ज्ञान जीव को एक, सो परकाशो शुद्ध विवेक । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं समवायसार्थक जिनाय नम अर्घ्य ॥८२९॥

भक्तनिके हो साध्य सु कर्म, अन्तिम पौरुष साधन धर्म । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं भक्तैकसाधकधर्माय नम अर्घ्यं ॥८३०॥

बाकी रहो न गुण शुभ एक, ताको स्वाद न हो प्रत्येक ।
सिद्धसमूह जजूं मनलाय, भव भवमे सुखसंपतिदाय ॥

ॐ ह्री अर्हं निरवशेषगुणामृताय नमः अर्घ्यं ॥८३१॥

नय सुपक्ष करि सांख्य कुवाद, तुम निरवाद पक्षकर वाद । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं साख्यादिपक्षविध्वंसकजिनाय नम अर्घ्यं ॥८३२॥

सम्यग्दर्शन है तुम वैन, वस्तु परीक्षा भाखो ऐन । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं समीक्षकाय नम अर्घ्यं ।८३३॥

धर्मशास्त्रके हो कर्तार, आदि पुरुष धारो अवतार । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं आदि पुरुष जिनाय नम अर्घ्यं ॥८३४॥

नय साधत नैयायक नाम, सो तुम पक्ष धरो अभिराम । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं पचविंशतितत्त्ववेदकाय नम अर्घ्यं ॥८३५॥

स्वपर चतुष्क वस्तुको भेद, व्यक्ताव्यक्त करो निरखेद । सिद्ध० ॥

ॐ ह्री अर्हं व्यक्ताव्यक्तज्ञानविदे नम अर्घ्यं ॥८३६॥

दर्शन ज्ञान भेद उपयोग, चेतनामय है शुभ योग । सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचैतन्यभेददृशे नम अर्घ्यं ॥८३७॥

स्वसंवेदन शुद्ध धराय, अन्य जीव हैं मलिन कुभाय। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेदनज्ञानधारिणे नमः अर्घ्यं ।८३८॥

द्वादश सभा करै सतकार, आदर योग वैन सुखकार। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं समवसरण-द्वादशसभापतये नमः अर्घ्यं ।८३९।

आगम अक्ष अनक्ष प्रमान, तीन भेदकर तुम पहचान। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिप्रमाणाय नमः अर्घ्यं ॥८४०॥

विशद शुद्ध मति हो साकार, तुमको जानत है सु विचार। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यक्षप्रमाणाय नमः अर्घ्यं ॥८४१॥

नयसापेक्षक है शुभ वैन, है प्रशंस सत्यारथ ऐन। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्याद्वादवादिने नमः अर्घ्यं ॥८४२॥

लोकालोक क्षेत्रके मांहि, आप ज्ञान है सब दरशाहिं। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं ॥८४३॥

अन्तर बाह्य लेश नहीं और, केवल आतम मई अघोर। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धात्म जिनाय नमः अर्घ्यं ॥८४४॥

अन्तिम पौरुष साध्यो सार, पुरुष नाम पायो सुखकार। सिद्ध० ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषात्म-जिनाय नमः अर्घ्यं ॥८४५॥

चहुँगतिमे नरदेह मझार, मोक्ष होत तुम नर आकार ।
सिद्धसमूह जजू मनलाय, भव भवमे सुखसंपतिदाय । सिद्ध० ॥

ओ ह्री अर्हं नराधिपाय नम अर्घ्यं ॥८४६॥

दर्श ज्ञान चेतन की लार, निरावर्ण तुम हो अविकार । सिद्ध० ॥

ओ ह्री अर्हं निरावरणचेतनाय नम अर्घ्यं ॥८४७॥

भावन वेद वेद नरदेह, मोक्ष रूप है नहिं सन्देह । सिद्ध० ॥

ओं ह्रीं अर्हं मोक्षरूपजिनाय नम अर्घ्यं ॥८४८॥

सत्य यथारथ हो सब ठीक, स्वयं सिद्ध राजो शुभ नीक ।
सिद्धसमूह जजूं मनलाय, भव भवमे सुखसंपतिदाय । सिद्ध० ॥

ओ ह्रीं अर्हं अकृत्रिम जिनाय नम अर्घ्यं ॥८४९॥

दोहा—जाकरि तुमको जानिये, सो है अगम अलक्ष ।
निर्गुण यातै कहत हैं, भव भयतै हम रक्ष ॥ ॐ ह्री अर्हं निर्गुणाय नम अर्घ्यं ॥८५०॥
चेतनमय हैं अष्टगुण, सो तुममें इक नाम ।
शुद्ध अमूरत देव हो, स्व प्रदेश चिदराम ॥ ओं ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नम. अर्घ्यं ॥८५१॥

उमापती त्रिभुवन धनी, राजत भू भरतार ।
निजानन्दको आदि ले, महा तुष्ट निरधार ॥ॐ ह्रीं अर्हं उमापतये नमःअर्घ्यं।८५२।

व्यापक लोकालोकमे, ज्ञान ज्योतिके द्वार ।
लोकशिखर तिष्ठत अचल, करो भक्त उद्धार॥ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगताय नम अर्घ्यं ।८५३

योग प्रबन्ध निवारियो, राग द्वेष निरवार ।
देहरहित निष्कंपहो, भये अक्रिया सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियाय नमः अर्घ्यं ॥८५४॥

सर्वोत्तम अति उच्च गति, जहां रहो स्वयमेव ।
देव वास है मोक्ष थल, हो देवनके देव ॥ॐ ह्रीं अर्हं देवेष्टजिनाय नमःअर्घ्यं ।८५५।

भवसागर के तीर हो, अचलरूप अस्थान ।
फिर नहीं जगमें जन्म है, राजत हो सुखथान ॥ॐ ह्रीं अर्हं तटस्थाय नम अर्घ्यं ॥८५६।

ज्योके त्यो नित थिर रहो, अचलरूप अविनाश ।
निजपदमयराजत सदा, स्वयं ज्योतिपरकाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नम.अर्घ्यं।८५७

तत्त्व अतत्त्व प्रकाशियो, ज्ञाता हो सब भास ।
ज्ञानमूर्ति हो ज्ञानघन, ज्ञान ज्योति अविनाश ॥ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञात्रे नमःअर्घ्यं ।८५८।

पर निमित्तके योगतै, व्यापै नहीं विकार ।
निज स्वरूपमें थिर सदा, हो अबाध निरधार ॥ ॐ ह्री अर्ह निराबाधायनम अर्घ्यं ८५९

चारवाक वा सांख्यमत, झूठी पक्ष धरात ।
अल्प मोक्ष नहीं होत है, राजत हो विख्यात ॥ ओं ह्रीं अर्हं निरामावाय नम अर्घ्यं।८६०

तारण तरण जिहाज हो, अतुल शक्तिके नाथ ।
भव वारिधि से पारकर, राखो अपने साथ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं भववारिधिपारकरायनमः अर्घ्यं

बन्ध मोक्षकी कहन है, सो भी है व्यवहार ।
तुम विवहार अतीत हो, शुद्ध वस्तु निरधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षरहिताय नम. अर्घ्यं ।

चारो पुरुषारथ विषै, मोक्ष पदारथ सार ।
तुमसाधो परधान हो, सबमें सुख आधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षसाधनप्रधानजिनायनम ०

कर्ममैल प्रक्षालकै, निज आतम लवलाय ।
होप्रसन्न शिवथलविषै, अन्तरमल विनशाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं कर्मबंधमोक्षरहितायनम अर्घ्यं

निज सुभाव जिन वस्तुता, निज सुभावमें लीन ।
बंदूं शुद्ध स्वभावमय, अन्य कुभाव मलीन ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निजस्वभावस्थितिजिनायनमः ०

निज स्वरूप परकाश है, निरावर्ण ज्यों सूर ।
तुमको पूजत भावसों, मोह कर्मको चूर ॥ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणमूर्यं जिनाय नम अर्घ्यं।

निज भावनते मोक्ष हो, ते ही भाव रहात ।
स्वगुण स्व परजायमे, थिरता भाव धरात ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपारूढजिनाय नम अर्घ्यं।

सब कुभावको जीतियो, शुद्ध भये निरमूल ।
शुद्धातम कहलात हो, नमत नशे अघ शूल ॥ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतिप्रियायनम अर्घ्यं ।८६८

निज सन्मतिके सन्मती, निज बुधके बुधवान ।
शुभ ज्ञाता शुभ ज्ञान हो, पूजत मिथ्या हान ॥ॐ ह्रीं अर्हं विशुद्धसन्मतिजिनायनम अर्घ्यं।

कर्म प्रकृतिको अंश बिन, उत्तर हो या मूल ।
शुद्धरूप अति तेज घन, ज्यो रविबिंब अधूल॥ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धरूपजिनायनम अर्घ्यं ।८७०

आदि पुरुष आदीश जिन, आदि धर्म अवतार ।
आदि मोक्ष दातार हो, आदि कर्म हरतार ॥ॐ ह्रीं अर्हं आद्यवेदसे नमोऽर्घ्यं ।८७१।

नहिं विकार आवै कभी, रहो सदा सुखरूप ।
रोग शोक व्यापै नहीं, निवसै सदा अनूप ॥ॐ ह्रीं अर्हं निर्विकृतये नमोऽर्घ्यं ८७२।

निज पौरुष करि सूर्य सम, हरो तिमिर मिथ्यात ।
तुम पुरुषारथ सफल हैं, तीन लोक विख्यात ॥ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यातिमिरविनाशकायनम

वस्तु परीक्षा तुम विना, और झूठ कर खेद ।
अंध कूप मे आप सर, डारत है निरभेद ॥ॐ ह्री अर्हं मीमांसकाय नम अर्घ्यं ॥८७४॥

होनहार या हो लई, या पइये इस काल ।
अस्तिरूप सब वस्तु है,तुम जानो यह हाल॥ॐ ह्रीं अर्हं अस्तिसर्वज्ञाय नम अर्घ्यं ।८७५।

जिनवाणी जिन सरस्वती, तुम गुणसों परिपूर ।
पूज्य योग तुमको कहैं, करै मोहमद चूर ॥ॐ ह्री अर्हं श्रुतपूज्याय नमःअर्घ्यं ॥८७६॥

स्वयं स्वरूप आनंद हो, निज पद रमत सुभाव ।
सदा विकासित हो रहैं, बंदूं सहज सुभाव ॥ॐ ह्रीं अर्हं सदोत्सवाय नम.अर्घ्यं ।८७७

मन इन्द्री जानत नहीं, जाको शुद्ध स्वरूप ।
वचनातीत स्वगुणसहित,अमल अकाय अरूप॥ओं ह्रीं अर्हं परोक्षज्ञानागम्याय नम।

जो श्रुतज्ञान कला धरै, तिनको हो तुम इष्ट ।
तुमको नित प्रति ध्यावते,नाशेसकल अनिष्ट ॥ओं ह्रीं अर्हं इष्टपाठकाय नम.अर्घ्यं ।

निज समरथ कर साधियो, निज पुरुषारथ सार ।
सिद्धभये सबकाम तुम, सिद्ध नाम सुखकार ।।ॐह्रीं अर्हं सिद्धकर्मक्षयाय नम.अर्घ्यं८८०
पृथ्वी जल अगनी पवन, जानत इनके भेद ।
गुण अनंत पर्याय सब, सो विभाग परिछेद ।।ॐह्री अर्हं मिथ्यामतनिवारकाय नम.अर्घ्यं।
निज सवेदन ज्ञानमे, देखत होय प्रत्यक्ष ।
रक्षक हो तिहुँ लोकके,हम शरणागत पक्ष ।।ॐह्रीअर्हं प्रत्यक्षैकप्रमाणाय नम·अर्घ्यं ।
विद्यमान शिवलोकमे, स्वगुण पर्य समेत ।
कहै अभाव कुमती मती, निजपर धोका देत।।ॐह्रीअर्हं अस्तिमुक्ताय नम:अर्घ्यं।३८८
तुम आगमके मूल हो, अपर गुरू हैं नाम ।
तुम वानी अनुराग ही, भये शास्त्र अभिराम।।ॐह्रीअर्हं गुरुश्रुतये नम:अर्घ्यं ।८८४।
तीन लोकके नाथ हो, ज्यो सुरगणमें इन्द्र ।
निजपद रमन स्वभाव धर, नमे तुम्हे देवेन्द्र।।ॐह्रींअर्हं त्रिलोकनाथाय नम:अर्घ्यं।८८५।
सब स्वभाव अविरुद्ध है, निजपर घातक नांहिं ।
सहचारी परिणाम है, निवसत है तुममांहिं।।ॐह्रीअर्हं स्वस्वभावाविरुद्ध जिनाय नम ।

ब्रह्म ज्ञानको वेदकर, भये शुद्ध अविकार ।
पूरण ज्ञानी हो नमूं, लहो वेदको सार ॥ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नम:अर्घ्यं ॥८८७॥

शब्द ब्रह्मके ज्ञानते, आतम तत्त्व विचार ।
शुक्लध्यानमेलय भए, हो अतर्क अविचार ॥ॐ ह्रीं अर्हं शब्दाद्वैतब्रह्मणे नम अर्घ्यं ८८८

सूक्षम तत्त्व प्रकाश कर, सूक्षम कर्म उच्छेद ।
मोक्षमार्ग परगट कियो, कहोसु अन्तर भेद ॥ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मतत्त्वप्रकाशजिनाय नमः ।

तीन शतक त्रेसठ जु है, सब मानै पाखण्ड ।
धर्म यथारथ तुमकहो, तिन सबको करि खंड ॥ॐ ह्रीं अर्हं पाखण्डखण्डकाय नम अर्घ्यं ।

कर्णरूप करतार हो, कोइक नयके द्वार ।
सुरमुनि करि पूजत भए, माननीक सुखकार ॥ॐ ह्रीं अर्हं नयावीनजे नमःअर्घ्यं ।८९१।

केवलज्ञान उपाइके, तदनन्तर हो मोक्ष ।
साक्षात् बडभागसै, पूजूं इहां परोक्ष ॥ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नम:अर्घ्यं ।।८९२॥

शरणागतको पार कर, देत मोक्ष अभिराम ।
तारण तरणसु नाम है, तुम पद करूं प्रणाम ॥ॐ ह्रीं अर्हं पारकृते नमःअर्घ्यं ।८९२।

भव समुद्र गम्भीर है, कठिन जासको पार ।
निज पुरुषार्थ करि तिरै, गहो किनारो सार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं तीरप्राप्ताय नमः अर्घ्यं ।८९४।

एकवार जो शरण गहि, ताके हो हितकार ।
यातैं सब जग जीवके, हो आनंद दातार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परहितस्थिताय नमः अर्घ्यं ।८९५।

रत्नत्रय निज नेत्रसो, मोक्षपुरी पहुँचात ।
महादेव हो जगत पितु, तीन लोक विख्यात ॥ ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रयनेत्रजिनायनम अर्घ्यं ।

तीन लोकके नाथ हो, महा ज्ञान भण्डार ।
सरल भाव विन कपट हो, शुद्ध बुद्ध अविकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धबुद्धजिनाय नमः अर्घ्यं ।

निश्चै वा व्यवहार के, हो तुम जाननहार ।
वस्तुरूप निज साधियो, पूजत हूँ निरधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकर्मसमुच्चयिने नम अर्घ्यं ।

सुरनर पशु न अघावते, सभी ध्यावते ध्यान ।
तुमको नितही ध्यावते, पावैं सुख निर्वाण ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नित्यतृप्तजिनायनम अर्घ्यं ८९९

कर्म मैल प्रक्षाल करि, तीनों योग सम्हार ।
पापशैल चकचूर कर, भये अयोग सुखार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पापमलनिवारकजिनाय नम अर्घ्य

सूरज हो निज ज्ञान घन, ग्रहण उपद्रव नाहिं ।
बेखटके शिवपंथ सब, दीखत है जिस माहिं ।।ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणज्ञानघनजिनायनम ०

जोग योग संकल्प सब, हरो देहको साथ ।
रहो अकंपित थिर सदा, मैं नाऊं निज माथ।।ॐ ह्रीं अर्हं उच्छिन्नयोगाय नम अर्घ्यं ९०२

जोग सुथिरताको हरै, करै आगमन कर्म ।
तुम तासों निर्लेप हो, नशौ मोहमद शर्म ।।ॐ ह्रीं अर्हं योगकृतनिर्लेपायनम. अर्घ्यं।९०३

निज आतममें स्वस्थ है, स्वपद योग रमाय ।
निर्भय तुम निर इच्छु हो, नमूं जोरकर पांय ।।ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थलयोगरवजिनायनम ०

महादेव गिरिराज पर, जन्म समै जिम सूर ।
योग किरण विकसात हो, शोकतिमिर करदूर ।।ॐ ह्रीं अर्हं गिरिसयोगजिनायनम अर्घ्यं

सूक्ष्म निज परदेश तन, सूक्ष्म क्रिया परिणाम ।
चितवत मन नहिं वच चलै, राजत हो शिवधाम।।ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मीकृतवपु क्रियायनम. अर्घ्यं

सूक्ष्म तत्त्व परकाश है, शुभ प्रिय वचनन द्वार ।
भविजनको आनंदकरि, तीनजगत गुरुसार।।ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मवाक्मितयोगाय नम अर्घ्यं

कर्म रहित शुद्धात्मा, निश्चल क्रिया रहात ।
स्वप्रदेश मय थिर सदा,कृत्याकृत्य सुख पात ।।ॐह्रींअर्हंनिष्कर्मशुद्धात्मजिनायनम'अर्घ्यं
विद्यमान प्रत्यक्ष है, चेतनराय प्रकाश ।
कर्म कालिमासो रहित, पूजतहो अघनाश ।।ॐह्रींअर्हं भूताभिव्यक्तचेतनाय नम'अर्घ्यं
गृहस्थाचरण सुभेद करि, धर्मरूप रसरास ।
एकतुम्हीं हो धर्मकरि, पायो शिवपुर वास ।।ॐह्रींअर्हं धर्मरासजिनायनम:अर्घ्यं६१०
सूर्यप्रकाशन मोह तम, हरता हो शुभ पंथ ।
पाप क्रिया विन राजते, महायती निरग्रंथ ।।ॐह्रींअर्हं परमह साय नम:अर्घ्यं ।६११।
बन्ध रहित सर्वस्व करि, निर्मल हो निर्लेप ।
शुद्ध सुवर्ण दिपै सदा, नहीं मोह मल लेप ।।ॐह्रीं अर्हं परमसवरायनम.अर्घ्यं ।६१२
मेघ पटल विन सूर्य जिम, दीप्त अनन्त प्रताप ।
निरावरण तुम शुद्ध हो,पूजत मिटि है पाप।।ॐह्रींअर्हं निरावरणाय नम अर्घ्यं ६१३
कर्म अंश सब झर गिरे, रहो न एक लगार ।
परम शुद्धता धारकै, तिष्ठो हो अविकार ।।ॐह्रीं अर्हंपरमनिर्जरायनम.अर्घ्यं ।६१४

तेज प्रचण्ड प्रभाव है, उदय रूप परताप ।
अन्यकुदेवकुआगिया, जुग जुग धरत कलाप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्वलितप्रभावाय नम अर्घ्यं
भये निरर्थक कर्म सब, शक्ति भई है हीन ।
तिनको जीते छिनकमे, भये सुखी स्वाधीन॥ ॐ ह्रीं अर्हं समस्तकर्मक्षयजिनाय नम अर्घ्यं
कर्म प्रकृतिक रोग सम, जानो हो क्षयकार ।
निज स्वरूप आनन्दमे, कहो विगार निहार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं कर्मविस्फोटकायनम अर्घ्यं
हीन शक्ति परमादको, आप कियो है अन्त ।
निज पुरुषार्थ सुवीर्यंयो, सुखीभए सुअनंत ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनतवीर्यजिनाय नम अर्घ्यं ६१८
एक रूप रस स्वादमे, निर आकुलित रहाय ।
विविध रूपरस पर निमित, ताको त्यागकराय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं एकाकाररसास्वादायनम
इन्द्री मनके सब विषय, त्याग दिये इक लार ।
निजानंदमे मगन हैं, छांडो जग व्यापार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निश्चाकाररसाकुलितायनमःअर्घ्यं ।
पर सम्बन्धी प्राण विन, निज प्राणनि आधार ।
सदा रहैं जीतव्यता, जरा मृत्यु को टार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सदाजीविताय नम अर्घ्यं ।६२१।

निज रसके सागर धनी, महा प्रिय स्वादिष्ट ।
अमर रूप राजै सदा, सुर मुनिके हो इष्ट ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नम अर्घ्यं ॥९२२॥
पूरण निज आनन्दमें, सदा जागते आप ।
नहिं प्रमादमे लिप्त है, पूजत विनशे पाप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जाग्रते नम.अर्घ्यं॥९२३॥
क्षीण ज्ञान ज्ञानावरण, करै जीवको नित्य ।
सो आवर्ण विनाशियो, रहो अस्वप्न सुवित्य ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अस्वप्नाय नमः अर्घ्यं ।९२४
स्व प्रमाणमे थिर सदा, स्वयं चतुष्टय सत्य ।
निराबाध निर्भय सुखी, त्यागतभाव असत्य ॥ ॐ ह्रीं अर्हं स्वप्रमाणस्थिताय नमः अर्घ्यं ९२५
श्रमकरि नहिं आकुलितहो, सदा रहो निरखेद ।
स्वस्थरूप राजो सदा, वेदो ज्ञान अभेद ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निराकुलितजिताय नम अर्घ्यं ९२६।
मन वच तन व्यापार था, तावत रहो शरीर ।
ताको नाश अकंप हो, बन्दूं मन धर धीर ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अयोगिने नम अर्घ्यं॥९२७॥
जितने शुभ लक्षण कहे, तुममे हैं एकत्र ।
तुमको बंदूं भावसों, हरो पाप सर्वत्र ॥ ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिलक्षणाय नम अर्घ्यं ।९२८।

तुम लक्षण सूक्षम महा, इन्द्रिय विषय अतीत ।
वचन अगोचर गुणधरो, निर्गुण कहत सुनीत ।।ॐह्रीअर्हंअगुणायनम'अर्घ्यं।६२६।

अगुरुलघू पर्याय के, भेद अनन्तानन्त ।
गुण अनंत परिणामकरि, नित्यनमे तुम संत।।ॐह्रीअर्हंअनतानन्तपर्यायाय नम.अर्घ्यं ।

राग द्वेष के नाशते, नहीं पूर्व संस्कार ।
निज सुभावमे थिर रहै, अन्य वासना टार ।।ॐ ह्री अर्हंपूवसम्कारनाशकायनम.अर्घ्यं

गुण चतुष्टमे वृद्धता, भई अनन्तानन्त ।
तुम सम और न जगतमे, सदा रहो जयवंत ।।ॐह्रीअर्हं अनन्तचतुष्टवृद्धाय नम.अर्घ्यं ।

आर्ष कथित उत्तम वचन, धर्म मार्ग अरहन्त ।
सो सब नाम कहो तुम्हीं, शिवमारगके संत ।।ॐह्रीअर्हं प्रियवचनाय नम:अर्घ्यं ६३३।

महाबुद्धिके धाम हो, सूक्षम शुद्ध अवाच्य ।
चार ज्ञान नहीं गम्य हो, वस्तुरूप सो साच्य ।।ॐह्रीअर्हं निरवचनीयाय नम.अर्घ्यं ।

सूक्षमतें सूक्षम विषै, तुमको है परवेश ।
आपै सूक्षम रूप हो, राजत निज परदेश ।।ॐह्रीअर्हं अनीशाय नम: अर्घ्यं ।।६३५।।

कर्म प्रबन्ध सुघन पटल, ताको छाय निवार।
रविघन ज्योति प्रकट भई, पूरणता विधि धार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं।

निज प्रदेशमें थिर सदा, योग निमित्त निवार।
अचल शिवालयके विषे, तिष्ठै सिद्ध अपार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] ॥९३७॥

सन्त नमन प्रिय हो अती, सज्जन वल्लभ जान।
मुनि जन मन प्यारे सही, नमत होतकल्याण ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥९३८॥

काल अनन्तानन्त लौं, करें शिवालय वास।
अव्यय अविनाशी सुथिरस्वयंज्योतिपरकाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ९३९

स्व आतममें वास है, रुलत नहीं संसार।
ज्योंके त्यों निश्चल सदा, वंदत भवदधि पार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible]

सुभग सरावन योग्य हैं, उत्तम भाव धराय।
तीन लोकमे सार है, मुनिजन वंदितपाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible]।

सबके अग्रेसर भये, सबके हो सिरताज।
तुमसे बड़ा न और है, सबके कर हो काज ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] अर्घ्यं ॥९४२॥

स्व प्रदेश निष्कम्प है, द्रव्य भाव विधि नाश ।
इष्टानिष्ट निमितधरै, निज आनन्दविलास।। ॐ ह्रीं अर्ह निष्कपप्रदेशजिनायनम अर्घ्यं
उचित क्षमादिक अर्थ सब, सत्य सुन्यास सुलब्ध ।
तिन सबके स्वामीनमूं, पूरण सुखी सुअब्ध ।। ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमक्षमादिगुणाब्धिजिनाय०
महा कठिन दुःशक्य है, यह संसार निकास ।
तुमपायो पुरुषार्थ करि, लह्योस्वलब्धि अवास ।। ॐ ह्रीं अर्हंपूज्यपादजिनाय नम अर्घ्यं ।
परमारथ निज गुण कहैं, मोक्ष प्राप्तिमें होय ।
स्वारथ इन्द्रियजन्य वे, सो तुम इनको खोय ।। ॐ ह्रीं अर्हंपरमार्थगुणनिधानायनम अर्घ्यं।
पर निमित्त या भेद करि, या उपचरित कहाय ।
सो तुममें सब लय भये, मानो सुप्त कराय ।। ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहारसुप्ताय नम अर्घ्यं । ६४७।
स्व पदमे नित रमन है, अप्रमाद अधिकाय ।
निज गुण सदाप्रकाशहै, अतुलबलीनमुं पाय।। ॐ ह्रीं अर्ह अतिजागरूकाय नम अर्घ्यं। ६४८
सकल उपद्रव मिटि गये, जे थे परकी साथ ।
निर्भय सदा सुखी भये, बंदूं नमि निजमाथ ।। ॐ ह्रीं अर्हं अतिसुस्थिताय नम. अर्घ्यं । ६४६

कहै हुवे हो नेमसैं, परमाराध्य अनादि ।
तुम महातमा जगतके, और कुदेव कुवादि ॥ ॐ ह्रीं अर्हं उदितोदितनाऽऽशनायनमः अर्घ्यं
तत्त्वज्ञान अनुकूल सब, शब्द प्रयोग विचार ।
तिसके तुम अध्याय हो, अर्थ प्रकाशन हार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शब्दशास्त्रानुकूलनिरायनमः अर्घ्यं
ना काहूँ सो जन्म हो, ना काहूँ सो नाश ।
स्वयंसिद्ध विन पर निमित, स्व-स्वरूपपरकाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अकारणाय नमः अर्घ्यं १५२
अप्रमाण अत्यन्त है, तुम सन्मति परकाश ।
तेजरूप उत्सवमई, पाप-तिमिरको नाश ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अमेयमहिम्ने नमः अर्घ्यं ॥१५३॥
रागादिक मलको हरैं, तनक नहीं अनवास ।
महाविशुद्ध अत्यंत है, हरो पाप-अहि-डांस ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तशुद्धाय नमः अर्घ्यं ।१५४
स्वयं सिद्ध भरतार हो, शिव कामिनिके संग ।
रमण भाव निज योगमे, मानो अति आनंद ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिस्वयंवराय नमः अर्घ्यं
विविध प्रकार न धरत है, है अजन्म अव्यक्त ।
सूक्षम सिद्ध समान है, स्वयं स्वभाव सव्यक्त ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धानुजाय नमः अर्घ्यं

मोक्षरूप शुभ वासके, आप मार्ग निरखेद ।
भविजन सुलभगमन करै, जगत वासको छेद ॥ॐह्रीं अर्हं शिवपुरीपथायनमः अर्घ्यं ९५७

गुणसमूह अत्यन्त है कोई न पावै पार ।
थकित रहे श्रुतकेवली, निज बल कथन अगार ॥ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगुणसमूहजिनायनमः०

इक अवगाह प्रदेशमें, हो अवगाह अनन्त ।
पर उपाधि निग्रहकियो, मुख्य प्रधान अनंत ॥ॐह्रीं अर्हं परउपाधिनिग्रहकारकजिनाय०

स्वयं सिद्ध निज वस्तु हो, आगम इन्द्रिय ज्ञान ।
कर्त्तादिक लक्षण नहीं, स्वयं स्वभाव प्रमान ॥ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं सिद्धजिनायनमः अर्घ्यं।

हो प्रछन्न इन्द्रिय अगम, प्रकट न जाने कोय ।
सकलअगुणको लयकियो, निजआतमसेखोय ॥ॐह्रीं अर्ह इन्द्रियागम्यजिनायनमः अर्घ्यं

निज गुण करि निज पोषियो, सकल क्षुद्रता त्याग ।
पूरण निजपद पाय करि, तिष्ठत हो बड़भाग ॥ओंह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः अर्घ्यं ।९९२।

ब्रह्मचर्य पूरण धरै, निजपद रमता धार ।
सहसअठारह भेदकरि, शील सुभाव सु सार ॥ॐह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलेश्वरायनमः ।

महा पुन्य शिवपदकमल, ताके दल विकसान ।
मुनि मन भ्रमर रमरण सुथल, गंधानंद महान ।।ॐ ह्रीं अर्हंपुण्यसकुलायनम अर्घ्यं।९६४

मति श्रुत अवधि त्रिज्ञान युत, स्वयं बुद्ध भगवान ।
कृतयुगमें मुनि वृत धरो, शिवसाधकपरधान ।।ॐ ह्रीं अर्हं यताप्रयुग्यायनम अर्घ्यं।९६५

परम शुक्ल शुभ ध्यानमे, तुम सेवन हितकार ।
संत उपासक आपके, कर्मबंध छुटकार ।।ॐ ह्रीं अर्हं परमशुक्लध्यानिने नमःअर्घ्यं ।९६६

क्षारवार इस जलधिको, शीघ्र कियो तुम अन्त ।
गोखुरकार उलघियो, धरो स्व भुज बलवंत ।।ॐ ह्रीं अर्हं ससारसमुद्रतारकजिनायनमः

एक समयमे गमन कर, कियो शिवालय वास ।
काल अनंत अचल रहो, मेटो जग भ्रम त्रास ।।ॐ ह्रीं अर्हं क्षेपिष्ठाय नमःअर्घ्यं ।९६८।

पंचाक्षर लघु जापमे, जितना लागे काल ।
अंतिम पाया शुक्लका, ध्याय बसै जग भाल ।।ॐ ह्रींअर्हंपञ्चलघ्वक्षरस्थितयेनमःअर्घ्यं।

प्रकृति त्रयोदश शेष है, जबतक मोक्ष न होय ।
सर्वप्रकृति थिति मेटकै, पहुँचेशिवपुर सोय ।।ॐ ह्रींअर्हंत्रयोदशप्रकृतिस्थितिविनाशकाय

तेरह विधि चारित्रके, तुम हो पूरण शूर ।
निजपुरुषारथकरिलियो,शिवपुर आनंद पूर ॥ ओं ह्रीं अर्हं त्रयोदशचारित्रपूर्णताय नमः

निज सुखमें अन्तर नहीं, परसो हानि न होय ।
स्वस्थरूप परदेश जिन, तिन पूजत हूँ सोय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्यजिनायनमः अर्घ्यं ।९७२।

निज पूजनतें देत हो, शिव संपति अधिकाय ।
याते पूजन योग्य हो, पूजूं मन वच काय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं शिवदात्रीजिनाय नम अर्घ्यं ।९७३

मोह महा परचण्ड बल, सकै न तुमको जीत ।
नमूं तुम्हे जयवंत हो, धार सु उरमें प्रीत ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अजयजिनाय नमः अर्घ्यं ।९७४।

यग विधानमे जजत हो, आप मिले निधि रूप ।
तुमसमान नहीं और धन, हरत दरिद दुखकूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं याज्याय नम अर्घ्यं। ९७५।

लोकोत्तर सम्पद विभव, है सर्वस्व अधाय ।
तुमसे अधिक न औरहै, सुख विभूतिशिवराय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनर्घपरिग्रहायनमः अर्घ्यं ।

तुमरो आह्वानन यजन, प्रासुक विधिसे योग ।
त्रिजगअमोलिक निधिसही, देतपर्म सुखभोग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनर्घहेतवेनमः अर्घ्यं ।९७७

एक देश मुनिराज हैं, सर्व देश जिनराज ।
भव तन भोग विरक्तता, निर्ममत्व सुख साज ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमनिर्ग्रन्थाय नमः अर्घ्यं।

परदुखमें दुख हो जहां, मोह प्रकृतिके द्वार ।
दया कहै तिसको सुमति, सोतुम मोहनिवार ॥ॐ ह्रीं अर्हं परमकारुणिकाय नमः अर्घ्यं

स्वयं बुद्ध भगवान हो, सुर मुनि पूजन योग ।
विन शिक्षा शिवमार्गको, साधोहो धरि योग ॥ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं ।६८०

तुम एकत्व अन्यत्व हो, परसो नहीं सम्बन्ध ।
स्वयसिद्ध अविरुद्ध हो, नाशो जगत प्रबन्ध ॥ ॐ ह्रीं अर्हं [illegible] नमः अर्घ्यं

काहूको नहिं यजन करि, गुरुका नहिं उपदेश ।
स्वयंबुद्ध स्व-शक्ति हो, राजो शुद्ध हमेश ॥ॐ ह्रीं अर्हं परोक्षाय नमः अर्घ्यं । ६८२॥

तुम त्रिभुवनके पूज्य हो, यजो न काहू और ।
निजहितमें रतहो सदा, पर निमित्त को छोर ॥ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनपूज्याय नमः अर्घ्यं ।

अरहन्तादि उपासना, मोह उदयसो होय !
स्वय ज्ञानमें लय भए, मोह कर्मको खोय ॥ॐ ह्रीं अर्हं परोक्षकाय नमः अर्घ्यं ॥६८४।

गौण रूप परिणाम हैं, मुख ध्रुवता गुण धार ।
अक्षयअविनश्वरस्वपद, स्वस्थसुथिर अविकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः अर्घ्यं ९८५

सूक्षम शुद्ध स्वभाव हैं, लहैं न गणधर पार ।
इन्द्र तथा अहमिन्द्र सब, अभिलाषितउरधार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यायनम अर्घ्यं।९८६

अचल शिवलायके विषै, टंकोत्कीर्ण समान ।
सदाविराजो सुखसहित, जगत भ्रमणको हान ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अगमकायनमः अर्घ्यं।९८७

रमण योग छद्मस्थके, नाहिं अलिंग सरूप ।
पर प्रवेश विन शुद्धता, धारत सहज अनूप ॥ ओं ह्रीं अर्हं अरम्याय नम अर्घ्यं ।९८८।

पर पदार्थ इच्छुक नहीं, इष्टानिष्ट निवार ।
सुथिर रहो निज आतममें, बंदत हूँ हितधार ॥ ओं ह्रीं अर्हं निजात्मसुथिराय नम. अर्घ्यं ।

जाको पार न पाइयो, अवधि रहित अत्यन्त ।
सो तुम ज्ञान महान है, आशा राखे संत ॥ ओं ह्रीं अर्हं ज्ञाननिर्भराय नमः अर्घ्यं ।९९०

मुनिजन जिन सेवन करैं, पावैं निज पद सार ।
महा शुद्ध उपयोग मय, वरतत हैं सुखकार ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वरायनमः अर्घ्यं ९९१।

भाव शुद्ध सो देहमे, द्रव्य शुद्ध विन देह ।
कर्म वर्गणा विन लिये, पूजत हूँ धरि नेह ।।ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यशुद्धाय नम अर्घ्यं ।९९२।
पंच प्रकार शरीरको, मूल कियो विध्वंश ।
स्व प्रदेशमय राजते,पर मिलाप नहीं अंश ।।ॐ ह्रीं अर्हं प्रदेशाय नम अर्घ्यं ।९९३।
जाको फेर न जन्म है, फिर नाहीं संसार ।
सो पंचमगति शिवमई, पायो तुम निरधार ।।ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवायनम अर्घ्यं ।९९४
सकल इन्द्रियां व्यर्थ करि, केवलज्ञान सहाय ।
सब द्रव्यनिको ज्ञान है, गुण अनंत पर्याय ।।ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकविदे नमःअर्घ्यं ।९९५।
जीव मात्र निज धन सहित, गुण समूह मणि खान ।
अन्य विभाव विभव नहीं, महा शुद्ध अविकार ।।ॐ ह्रीं अर्हं जीवधनायनमःअर्घ्यं९९६
सिद्ध भये परसिद्ध तुम, निज पुरुषारथ साध ।
महा शुद्ध निज आतम मय,सदा रहे निरबाध ।।ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नम अर्घ्यं।९९७
लोकशिखरपर थिर भए, ज्यो मंदिर मणि कुम्भ ।
निजशरीर अवगाहमें,अचल सुथान अलुम्भ ।।ॐ ह्रीं अर्हं लोकाग्रस्थितायनम अर्घ्यं ९९८

सहज निरामय भेद विन, निराबाध निस्संग ।
एक रूप सामान्य हो, निज विशेष मई अंग ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्दाय नम. अर्घ्यं ॥९९९॥

जे अविभाग प्रछेद हैं, इक गुणके सु अनत ।
तुममें पूरण गुण सही, धरो अनंतानन्त ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानतगुणायनम अर्घ्यं १०००

पर मिलाप नहीं लेश है, स्वप्रदेशमय रूप ।
क्षयोपशम ज्ञानी तुम्हें, जानत नहीं स्वरूप ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आत्मरूपाय नम॰ अर्घ्यं।१००१।

क्षमा आत्मको भाव है, क्रोध कर्मसों घात ।
सो तुम कर्म खिपाइयो, क्षमा सु भाव धरात ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमायनम अर्घ्यं १००२

शील सुभाव सु आत्मको, क्षोभ रहित सुखदाय ।
निर आकुलता धार है, बंदूं तिनके पाय ॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नम अर्घ्यं ।१००३।

शशि स्वभाव ज्यों शांति धर, और न शांति धराय ।
आप शांतिपर शांतिकर, भवदुख दाह मिटाय॥ ॐ ह्रीं अर्हं महाशातायनम अर्घ्यं१००४

तुम सम को बलवान है, जीत्यो मोह प्रचंड ।
धरोअनंत स्व वीर्यको, निजपद सुथिर अखंड ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अनतवीर्यात्मकायनम. अर्घ्यं।



लोकालोक विलोकियो, संशय विन इकवार ।
खेद रहित निश्चल सुखी, स्वच्छ आरसी सार ।। ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकज्ञायनम अर्घ्यं ।
निरावर्ण स्वै गुण सहित, निजानन्द रस भोग ।
अव्यय अविनाशीसदा, अजरअमर शुभयोग ।। ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणायनम अर्घ्यं १००७
परम मुनीश्वर ध्यान धर, पावै निजपद सार ।
ज्यों रविबिंब प्रकाशकर, घटपटसहज निहार ।। ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयगुणाय नम. अर्घ्यं । १००८
कवलाहारी कहत हैं, महा मूढ़ मतिमंद ।
अशन असाता पीरविन, आप भये सुखकंद ।। ॐ ह्रीं अर्हं अनशनदग्धायनमः अर्घ्यं । १००९
लोक शीश छवि देत हो, धरो प्रकाश अनूप ।
बुधजन आदर जोग हो, सहज अकम्प सरूप ।। ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकमणयेनम अर्घ्यं १०१०
महा गुणन की रास हो, लोकालोक प्रजन्त ।
सुर मुनि पार न पावते, तुम्है नमै नित संत ।। ॐ ह्रीं अर्हं अनतगुणप्राताय नम अर्घ्यं ।
परम सु गुण परिपूर्ण हो, मलिन भाव नहीं लेश ।
जगजीवन आराध्य हो, हम तुम यही विशेष ।। ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः अर्घ्यं । १०१२

केवल ऋद्धि महान है, अतिशय युत तप सार ।
सो तुम पायो सहज हो, मुनिगण बंदनहार ।। ॐ ह्रीं अर्हं महाऋषये नम अर्घ्यं ।१०१३
भूत भविष्यत् कालको, कभी न होवे अन्त ।
नितप्रति शिवपद पायकर, होत अनंतानंत ।। ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसिद्धेभ्योनम अर्घ्यं ।१०१४
निर्भय निर आकुलित हो, स्वयं स्वस्थ निरखेद ।
काहू विधि घबराट नहीं, निज आनंद अभेद ।। ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभायनम अर्घ्यं ।१०१५
जो गुण गुणी सुभेद करि, सो जड़ मती अजान ।
निज गुण गुणी सु एकता, स्वयंबुद्ध भगवान ।। ॐ ह्रीं अर्हं स्वयबुद्धाय नम अर्घ्यं ।१०१६
निरावरण निज ज्ञानमे, सर्व स्पष्ट दिखाय ।
संशयविन नहिं भरमहै, सुथिर रहो सुखपाय ।। ॐ ह्रीं अर्हं निरावरणज्ञानायनम अर्घ्य ।
राग द्वेष के अंश मे, मत्सर भाव कहात ।
सो तुम नासो मूल ही, रहै कहांसो पात ।। ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नम अर्घ्यं ।१०१८।
अणुवत् लोकालोक है, जाके ज्ञान मझार ।
सो तुम ज्ञान अथाह है, बंदूं मै चित धार ।। ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्तज्ञानाय नम अर्घ्यं ।१०१९

हस्तरेख सम देख हो, लोकालोक सरूप ।
सो अनंत दर्शन धरो, नमत मिटै भ्रम कूप ॥ॐह्रीअर्हंअनतानतदर्शनाय नम अर्घ्यं ।

तीन लोकका पूज्यपन, प्रकट कहै दिखलाय ।
तीनलोक शिरवास है, लोकोत्तम सुखदाय ॥ॐह्रीअर्हंलोकशिखरवासिने नम अर्घ्यं।

निज पदमे लवलीन है, निज रस स्वाद अघाय ।
परसों इह रस गुप्त है, कोटि यत्न नहीं पाय ॥ॐह्रीअर्हंसगुप्तात्मनेनम अर्घ्यं।१०२२

कर्म प्रकृतिको मूल नहीं, द्रव्य रूप यह भाव ।
महा स्वच्छ निर्मल दिपै,ज्यो रवि मेघअभाव ॥ॐह्रीअर्हंपूतात्मनेनम अर्घ्यं ।१०२३

हीन अभाव न शक्ति है, कर्मबन्धको नाश ।
उदय भये तुम गुणसकल,महा विभवकी राश ॥ॐह्री अर्हंमहोदयाय नम अर्घ्यं१०२४

पाप रूप दुख नाशियो, मोक्ष रूप सुख रास ।
दासन प्रति मंगलकरण,स्वयं'संत'हैदास॥ॐह्रींअर्हं महामगलात्मकजिनाय नम अर्घ्यं ।

दोहा—कहैं कहालो तुम सुगुण, अंशमात्र नहीं अन्त ।
मंगलीक तुम नाम हो, जानि भजै निज 'संत' ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्णस्वगुणजिनाय नमः अर्घ्यं, पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला ।

दोहा—होनहार तुम गुण कथन, जीभ द्वार नहीं होय ।
काष्ठ पांवसै अनिल थल, नाप सकै नहीं कोय ॥१॥
सूक्षम शुद्ध स्वरूपका, कहना है व्यवहार ।
सो व्यवहारातीत है, यातें हम लाचार ॥२॥
पै जो हम कछु कहत है, शान्ति हेत भगवन्त ।
वार वार थुति करनमें, नहिं पुनरुक्त भनन्त ॥३॥

पद्धडी छन्द मात्रा—१६ ।

जय स्वयं शक्ति आधार योग, जय स्वयं स्वस्थ आनंद भोग ।
जय स्वयं विकास आभास भास, जय स्वयं सिद्ध निजपद निवास॥४॥

जय स्वयंबुद्ध संकल्प टार, जय स्वयं शुद्ध रागादि जार ।
जय स्वय स्वगुण आचार धार, जय स्वयं सुखी अक्षय अपार ॥५॥
जय स्वयं चतुष्टय राजमान, जय स्वयं अनन्त सुगुण निधान ।
जय स्वयं स्वस्थ सुस्थिर अयोग, जय स्वयं स्वरूप मनोग योग ॥६॥
जय स्वयं स्वच्छ निज ज्ञान पूर, जय स्वयं वीर्य रिपु वज्र चूर ।
जय महामुनिन आराध्य जान, जय निपुणमती तत्त्वज्ञ मान ॥७॥
जय सन्तनि मन आनन्दकार, जय सज्जन चित वल्लभ अपार ।
जय सुरगण गावत हर्ष पाय,जय कवि यश कथन न करि अघाय ॥८॥
तुम महा तीर्थ भवि तरण हेत, तुम महाधर्म उद्धार देत ।
तुम महामंत्र विष विघ्न जार, अघ रोग रसायन कहो सार ॥९॥
तुम महाशास्त्रका मूल ज्ञेय, तुम महा तत्त्व हो उपादेय ।
तिहुँ लोक महामंगल सु रूप, लोकत्रय सर्वोत्तम अनूप ॥१०॥
तिहुँ लोक शरण अघ-हर महान, भवि देत परम पद सुख निधान ।
संसार महासागर अथाह, नित जन्म मरण धारा प्रवाह ॥११॥

सो काल अनन्त दियो बिताय, तामे झकोर दुख रूप खाय ।
मो दुखी देख उर दया आन, इम पार करो कर ग्रहण पान ॥१२॥
तुम ही हो इस पुरुषार्थ जोग, अरु हैं अशक्त करि विषय रोग ।
सुर नर पशु दास कहें अनन्त, इनमें से भी इक जान 'सन्त' ॥१३॥

घत्ता—कवित्त ।

जय विघन जलधि जल हनन पवन बल सकल पाप मल जारन हो ।
जय मोह उपल हन वज्र असल दुख अनिल ताप जल कारन हो ॥
ज्यूं पंगु चढ़ै गिर, गूंग भरे सुर, अभुज सिन्धु तर कष्ट भरैं ।
त्यो तुम थुति काम महा लज ठाम, सु अंत 'संत' परणाम करैं ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विंशत्यधिकसहस्रगुणयुक्तसिद्धेभ्यो नम अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
इति पूर्णार्घ्यं ।

दोहा—तीन लोकचूड़ामणि, सदा रहो जयवन्त ।
विघ्नहरण मंगल करन, तुम्हैं नमें नित 'संत' ॥१॥

इत्याशीर्वाद ।

[पूर्ण आशीर्वाद] अडिल्ल छन्द ।

पूरण मंगलरूप महा यह पाठ है;सरस सुरुचि सुखकार भक्तिकोठाठ है।
शव्दअर्थमे चूकहोय तो होकहीं;थुतिवाचक सबशब्द अर्थ यामेंसही ।१।
जिनगुणकरणआरंभहास्यकोधामहै;वायसका नहिंसिंधु उतीरण कामहै
पै भक्तनिकी रीति सनातनहै यही;क्षमाकरो भगवंत शांति पूरणमही।२

इत्याशीर्वाद —परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इति श्री सिद्धचक्रपाठ भाषा—कवि सन्तलालजी कृत समाप्त ।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नम ।।१०८।।

★ श्री सिद्धचक्र की आरती ★

जय सिद्धचक्र देवा जय सिद्धचक्र देवा ।
करत तुम्हारी निश दिन मन मे सुरनरमुनि सेवा ।। जय ।।
ज्ञानावर्ण दर्शनावरणी मोह अन्तराया ।
नाम गोत्र वेदनि आयु को नाशि मोक्ष पाया ।। जय. ।।
ज्ञान अनत अनत दर्श सुख बल अनतधारी ।
अव्याबाध अमूर्ति अगुरुलघु अवगाहनधारी ।। जय. ।।

तुम अशरीर शुद्ध चिन्मूरति स्वातम रसभोगी।
तुम्हे जपे आचार्योपाध्याय सर्वसाधुयोगी ।। जय. ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश गणेश तुम्हे ध्यावें।
भवि-अलि तुम चरणाम्बुज सेवत निर्भयपद पावे ।। जय. ।।
सकट टारन अधम उधारन-भवसागर तरणा।
अष्ट दुष्ट रिपु कर्म नष्ट करि जन्म मरण हरणा ।। जय ।।
दीन दुखी असमर्थ दरिद्री निर्धन तन रोगी।
सिद्धचक्र को ध्याय भये ते सुर नर सुख भोगी ।। जय ।।
डाकिनि शाकिनि भूत पिशाचिनि व्यन्तर उपसर्गा।
नामलेत भगिजाय छिनकमे सब देवीदुर्गा ।। जय ।।
वन रन शत्रु अग्निजल पर्वत विषधर पचानन।
मिटे सकल भय कष्ट करैं जे सिद्धचक्र सुमिरन ।। जय. ।।
मैनासुन्दरि कियो पाठ यह पर्व अठाइनिमे।
पति युत सात शतक कोढिन का गया कुष्ट छिनमें ।जय ।।
कार्तिक फागुन साढ आठ दिन सिद्धचक्र पूजा।
करैं शुद्ध भावो से 'मक्खन' लहैं न भव दूजा ।। जय. ।।

—: भजन :—

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी, फल पायो मैना राणी ।।टेक।।

मैना सुन्दरि इक नारी थी, कोढी पति लखि दुखिया थी ।
नही पडे चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ।। फल पायो० ।।

जो पति का कष्ट मिटाऊ गी, तो उभय लोक सुख पाऊ गी ।
नहिं अजागलस्तनवत् निष्फल जिन्दगानी ।। फल पायो० ।।

इक दिवस गई जिन मन्दिर मे, दर्शन करि अति हर्षी उरमे ।
फिर लखे साधु निर्ग्रंथ दिगम्बर ज्ञानी ।। फल पायो० ।।

बैठी मुनिको करि नमस्कार, निज निन्दा करती बार बार ।
भरि अश्रु नयन कही मुनि सो दुखद कहानी ।। फल पायो० ।।

बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो ।
नहिं रहे कुष्ठ की तन मे नाम निशानी ।। फल पायो० ।।

सुनि साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होय झूठ मुनि के बैना ।
करि के श्रद्धा श्री सिद्धचक्र की ठानी ।। फल पायो० ।।

जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया है ।
सब के तन छिडका यन्त्र ह्लवन का पानी ।। फल पायो० ।।

भव भोग भोगि योगीश भये, श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये।
दूजे भव मैंना पावें शिव रजधानी ॥ फल पायो० ॥
जो पाठ करै मन वच तन से, वे छूटि जाय भव-बन्धन से।
"मक्खन" मत करो विकल्प कहा जिन-वानी ॥ फल पायो० ॥

॥ समाप्त ॥